समकालीन कला के विकास में कला संगठनों की भूमिका : राजस्थान के सन्दर्भ में

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

'डॉक्टर ऑफ फिलोसफी' (चित्रकला)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

(कला संकाय)

शोध निर्देशक :

डॉ. राजीव गर्ग

उपाचार्य (से.नि.)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

टोंक (राज.)

शोधार्थी :

योगेन्द्र सिंह नरूका

व्याख्याता–चित्रकला

राजकीय से.आ.ला.पो. मूक बधिर संस्थान

जयपुर (राज.)

चित्रकला विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

टोंक (राज.)

2016

CERTIFICATE TO ACCOMPANY THE THESIS

It is certified that the

(i) Thesis entitled "समकालीन कला के विकास में कला संगठनों की भूमिका : राजस्थान के सन्दर्भ में" Submitted by **Mr. YOGENDRA SINGH NARUKA** is an original piece of research work carried out by the candidate under my supervision.

(ii) Literary presentation is satisfactory and the thesis is in a form suitable for publication.

(iii) Work evinces the capacity of the candidate for critical examination and independent judgment.

(iv) Candidate has put in at least 200 days of attendance every year.

To the best of my knowledge, this work has not been submitted for the degree of Ph.D. in any other University.

I recommend the submission of the thesis.

Date : …………..

Place : ………….

Dr. Rajiv Garg

Supervisor

Vice Principal (Retd.)

Govt. P.G. College, Tonk (Raj.)

<u>शपथ–पत्र</u>

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के पीएच.डी. (चित्रकला) में ''**समकालीन कला के विकास में कला संगठनों की भूमिकाः राजस्थान के सन्दर्भ में**'' विषय पर लिखित शोध–कार्य मेरे द्वारा किया गया पूर्णतः मौलिक कार्य है।

शोधार्थी

योगेन्द्र सिंह नरूका
चित्रकला
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

स्थान :

दिनांक :

प्राक्कथन

भारत में समकालीन कला संगठनों का अस्तिव पारम्परिक कला व बंगाल स्कूल की रूढ़िवादिता के विरोधस्वरूप उभर कर सामने आया। विभिन्न कला प्रवृत्तियों, राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, कला शिक्षा व प्रशिक्षण तथा वैश्विक परिवर्तन के दौर से राजस्थान के समकालीन कला संगठन भी प्रभावित हुए। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की परिकल्पना का आधार राजस्थान के समकालीन कला संगठनों पर एक सुनियोजित प्रस्तुतीकरण रहा है। राजस्थान के कला जगत में परिवर्तन की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप में क्रमवार हुई जो तर्कसंगत एवं अवश्यम्भावी हैं। शोध प्रबन्ध का प्रारम्भ कला व कला संगठनों की अवधारणा से किया है। शोध अध्ययन में भारत व राजस्थान के समकालीन कला संगठनों के उद्भव एवं विकास के परिप्रेक्ष्य में सहयोगी कारणों, परिस्थितियों व उनके योगदान पर प्रकाश डाला गया है। विविध दृष्टिकोणों व संदर्भों में राजस्थान के कला संगठनों पर समग्र प्रस्तुतीकरण का प्रयास किया गया हैं।

राजस्थान में कला संगठनों के स्थापना के बाद से ही कलाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन का कार्य प्रारम्भ हुआ। कला के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों को कला रसिकों, प्रशंसकों के समक्ष रखने के लिए कला संगठनों द्वारा समय–समय पर विभिन्न कलात्मक गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जाता रहा हैं। वार्षिक कला प्रदर्शनी, कला शिविर, कला वार्ताएं आदि आयोजन करने के साथ ही कला संगठन आमजन को कला सरोकारों से जोड़ने के लिए भी प्रयासरत हैं।

वस्तुत यह शोध प्रबन्ध राजस्थान की समकालीन कला के विकास में योगदान देने वाले कला संगठनों के बारे में विस्तृत अध्ययन है। साथ ही उसके प्रमुख कलाकारों, उनकी प्रमुख शैलियों, वर्तमान शताब्दी में कला की स्थिति, नवीन पद्धतियों, तकनीकों, सम्भावनाओं के संदर्भ में भी अपेक्षित सामग्री इस शोध प्रबन्ध में उपलब्ध हैं। इस दृष्टि से यह शोध प्रबन्ध महत्वपूर्ण एवं समयानुकूल होने के कारण कला–मर्मज्ञों व भावी शोधार्थियों के लिए स्थायी महत्व का सिद्ध होगा।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में समकालीन कला के विकास में कला संगठनों की भूमिका पर व्यापक शोध कार्य हुआ हैं। इस शोध–प्रबन्ध को छः अनुच्छेदों में विभाजित किया गया हैं।

प्रथम अनुच्छेद में विषय का अध्ययन क्षेत्र, प्रस्तुत प्रबन्ध की प्रेरणा एवं नवीनता पर विचार किया गया है। इसी अनुच्छेद में कला संगठनों की अवधारणा, कला में आधुनिकता या समसामयिकता पर प्रकाश डाला गया हैं।

द्वितीय अनुच्छेद में समकालीन भारतीय कला, भारत में कला का क्रमिक विकास व भारतीय कला पर यूरोपीय कला प्रवृत्तियों के प्रभाव का अध्ययन किया गया हैं।

तृतीय अनुच्छेद में भारत के प्रमुख कला संगठन यंग तुर्कस, मुम्बई; कलकत्ता ग्रुप, कोलकाता; प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, मुम्बई; प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट एसोशिएशन, श्रीनगर; शिल्पी चक्र, नई दिल्ली; बाम्बे ग्रुप, मुम्बई; ग्रुप–1890, नई दिल्ली तथा चोला मण्डल कला परिदृश्य, चेन्नई पर विचार किया गया हैं।

चतुर्थ अनुच्छेद में राजस्थान का समकालीन कला परिदृश्य प्रस्तुत किया गया हैं तथा राजस्थान के प्रमुख कला केन्द्रों व कला शिक्षण संस्थाओं पर व्यापक प्रकाश डाला गया है।

पंचम अनुच्छेद में समकालीन कला के विकास में राजस्थान के प्रमुख कला संगठनों की भूमिका पर व्यापक शोध कार्य किया गया हैं। इस अनुच्छेद में राजस्थान के प्रमुख कला संगठन–तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर; टखमण–28, उदयपुर; प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर; कलावृत्त, जयपुर; आज, उदयपुर आदि सम्मिलित हैं।

षष्ठम अनुच्छेद में राजस्थान के कला संगठनों के संस्थापकों एवं उनके प्रमुख कलाकारों की उपलब्धियां व इनके समकालीन कला में योगदान की विवेचना की गई हैं।

उपसंहार में राजस्थान के प्रमुख कला संगठनों द्वारा समकालीन कला में दिये गये योगदान की सारगर्भित विवेचना की गई है।

परिशिष्ट के अन्तर्गत प्रमुख कला संगठनों के संस्थापकों व कलाकारों से साक्षात्कार के छाया चित्र प्रस्तुत किये गये हैं व भारत की प्रमुख कला शिक्षण संस्थाओं, अकादमियों, कला दीर्घाओं की सूची को समाविष्ट किया गया है। अन्त में शोधार्थी द्वारा शोध कार्य से सम्बन्धित विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों व विभिन्न शोध संगोष्ठियों के सहभागिता प्रमाण–पत्र संलग्न किये गये है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की सामग्री का बिखराव अधिक होने तथा निर्धारित समय में प्रामाणिक व तथ्यपूर्ण सामग्री एकत्र करना वास्तव में एक चुनौतिपूर्ण कार्य रहा। शोध सामग्री एकत्रण हेतु प्रत्येक दिवस किसी न किसी विद्वान, कला–समीक्षक से मिलना, विभिन्न कला संगठनों, संस्थाओं, अकादमियों व कला दीर्घाओं में जाना तथा वहाँ से प्राप्त सामग्री को अपने शब्दों में उतारना वास्तव में रोचकतापूर्ण लगा। मैंने यह कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ व्यापक चिन्तन–मनन के पश्चात् परिपूर्ण किया है।

शोध प्रबन्ध के पृष्ठों का अनावश्यक विस्तार न हों, इसका ध्यान रखा गया है। संदर्भों को सीमित रखने में शोधार्थी का एक ही उद्देश्य रहा है कि वह अभिष्ठ विषय के विवेचन के अन्तर्गत कहीं पृष्ठ–विस्तार के चक्कर में विषयान्तर न कर बैठे। उदाहरण चाहे कम संकलित किये जाए किन्तु कथ्य स्पष्ट रहे इसका विशेष ध्यान रखने की चेष्टा की गई है।

दिनांक :

शोधकर्ता

योगेन्द्र सिंह नरूका
शोधार्थी (चित्रकला)
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रस्तुति से लेकर उसकी संपूर्ति तक इस कार्य में मेरे शोध निर्देशक डॉ. राजीव गर्ग, सेवानिवृत्त उपाचार्य, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक (राजस्थान) व उनकी धर्मपत्नी डॉ. वीना गर्ग, आचार्य, जीव विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक (राजस्थान) ने जो प्रेरणा दी व जिस आत्मीयता से मार्गदर्शन किया वह मेरे लिए सदैव स्मरणीय रहेगा। इस हेतु इनका आभार प्रदर्शन करने के लिए मैं मेरे शब्दों में इतना वजन नहीं पाता हूँ कि उसे व्यक्त कर सकूं। इनकी कृपा ही कहूँगा जिसके फलस्वरूप यह शोध कार्य सम्पन्न किया जा सका है।

इस शोध प्रबन्ध की सम्पूर्ति में कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के कुलपति प्रो. पी.के. दशोरा, निदेशक (शोध) डॉ. ओ.पी. ऋषि, उप रजिस्ट्रार (शोध) डॉ. विपुल शर्मा, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक की प्राचार्या डॉ. निशा भट्‌ट व चित्रकला विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. गीता शर्मा की प्रेरणा और सहयोग को भी मैं कदापि नहीं भूला सकता। इनके सहयोग से ही इस शोध प्रबन्ध को प्रस्तुत करना सम्भव हो सका है।

मैं गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्‌स एण्ड क्राफ्ट्‌स, कोलकाता; सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई; गवर्नमेंन्ट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्‌स, थिरूवन्थपुरम, केरल; विश्वभारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन, पश्चिम बंगाल; कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्‌स, लखनऊ; शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट, नई दिल्ली; गवर्नमेंट (देवलालीकर) कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्‌स, इन्दौर; कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी; कर्नाटक चित्रकला परिषद्, बेंगलुरू; गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट, चण्डीगढ़; रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता; राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर; मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर; महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर; कोटा विश्वविद्यालय, कोटा; जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर; वनस्थली विद्यापीठ, टोंक; राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर; राजकीय महाविद्यालय, बून्दी; राजकीय महाविद्यालय, कोटा; राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा; राजकीय महाविद्यालय टोंक; डी.ए.वी. कॉलेज, अजमेर व राजकीय सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान, जयपुर के प्राचार्य, कला संकाय के डीन, आचार्यों एवं विभागीय कर्मचारीगणों का भी विनम्र आभारी हूँ।

समकालीन कला के विकास में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रही बोम्बे आर्ट सोसायटी, मुम्बई; आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया, मुम्बई; ऑल इण्डिया फाइन आर्ट्‌स एण्ड क्राफ्ट्‌स सोसायटी (आईफेक्स), नई दिल्ली; बिड़ला एकेडमी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर, कोलकाता; मोहिले–पारीख सेन्टर फॉर द विजुअल आर्ट्‌स, मुम्बई; भारत–भवन, भोपाल;

केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली; राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा (नगमा), नई दिल्ली; गढ़ी कलाकार परिसर, नई दिल्ली; राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर; जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के निदेशक एवं विभागीय कर्मचारीगणों के प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूँ, इनके सहयोग से ही मैं समकालीन कला संगठनों पर प्रामाणिक तथ्य जुटा पाया।

राजस्थान के समकालीन कला संगठन तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर; टखमण–28, उदयपुर; प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर; कलावृत्त, जयपुर; आज, उदयपुर; राजस्थान कला केन्द्र, जयपुर; आदर्श लोक, बीकानेर; रंगबोध, कोटा; साहित्य कला मन्दिर, कोटा; कलम, बून्दी; धोरा कला संस्थान, जोधपुर; मयूर–6, वनस्थली; फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी (फेस), जयपुर; चितेरा, जोधपुर; आर्ट कौन्सिल ऑफ राजस्थान, जयपुर; आकार कला समूह, अजमेर; सरस्वती कला केन्द्र, जयपुर; वी, कोटा; विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स, वास्ट (महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, राजस्थान), उदयपुर; हस्ताक्षर, जयपुर; आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर; आकृति कला संस्थान, भीलवाडा आदि के संस्थापकों व उनसे जुड़े कलाकारों का भी मैं ह्रदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध–प्रबन्ध हेतु अल्प–समय में महत्वपूर्ण आवश्यक शोध सामग्री प्राप्त करने में मेरी सहायता व मार्गदर्शन प्रदान किया।

शोधकार्य में अमूल्य सहयोग व आशीर्वचन के लिए मैं मेरे पिताश्री एन.बी. सिंह (अपराध शोध लेखक) व माता श्रीमती गिर्राज कंवर के सहयोग के प्रति श्रद्धानवत् हूँ। अपनी पत्नी श्रीमती सुनिता राठौड़ (कनिष्ठ लिपिक, पुलिस मुख्यालय, जयपुर), अनुज आचार्य श्री पुष्पेन्द्र सिंह नरूका (जिला संयोजक, संस्कृत भारती, टोंक) व पुत्र मानवेन्द्र सिंह के सहयोग को भी मैं कदापि नहीं भूला सकता। इनके सहकार के अभाव मैं न तो विगत तीन वर्षों मैं मेरी मनःस्थिति इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु ऐसी बनी रह सकती थी और न व्यावहारिक दृष्टि से ही इसे प्रस्तुत करना सम्भव हो सकता था।

इस शोध के लेख में जिन अनुभवी शोधकर्ताओं, विद्वानों, लेखकों, पत्रकारों एवं कला समीक्षकों का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से जो सहयोग मिला हैं। मैं उनका भी विनम्र आभारी हूँ।

दिनांक :

शोधकर्ता

योगेन्द्र सिंह नरूका
शोधार्थी (चित्रकला)
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठ संख्या
अध्याय–प्रथम	**1–23**
विषय–प्रवेश, विषय का अध्ययन क्षेत्र एवं महत्व प्रतिपादन	
1.1 शोध की क्रिया विधि	
1.1.1 सूत्र संग्रह या टिप्पणी विधि	
1.1.2 प्रश्नोत्तर विधि	
1.1.3 साक्षात्कार विधि	
1.2 प्रस्तुत प्रबन्ध की प्रेरणा एवं नवीनता	
1.3 विषय का अध्ययन क्षेत्र और महत्व	
1.4 साहित्य के अतीत और वर्तमान का पुनर्विलोकन	
1.5 शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य	
1.6 कला का अर्थ और अवधारणाएँ	
1.6.1 कला का अर्थ	
1.6.2 कला के विषय में भारतीय अवधारणाएँ	
1.6.3 कला के विषय में पश्चिम की अवधारणाएँ	
1.7 संगठन का अर्थ एवं परिभाषा	
1.7.1 संगठन विचारधारा	
1.7.2 संगठन की विशेषताएँ	
1.7.3 संगठन विचारधारा के उपयोग	
1.7.4 संगठनात्मक व्यवहार	
1.8 कला में समकालीनता अथवा आधुनिकता	
अध्याय–द्वितीय	**24–58**
भारत का समकालीन कला परिदृश्य	
2.1 भारत में कला का क्रमिक विकास	
2.1.1 भारत के प्रमुख कला विद्यालय	
2.1.1.1 गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, चेन्नई	
2.1.1.2 गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, कोलकाता	

2.1.1.3 सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई

2.1.1.4 राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर

2.1.1.5 मेयो कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट, लाहौर

2.1.1.6 कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, थिरुवन्थपुरम, केरल

2.1.1.7 इन्स्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स, कला–भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन, पश्चिम बंगाल

2.1.1.8 कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, लखनऊ

2.1.1.9 शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट, नई दिल्ली

2.1.1.10 गर्वनमेन्ट (देवलालीकर) कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, इन्दौर

2.1.1.11 चित्रकला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

2.1.1.12 कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली

2.1.1.13 फेकल्टी ऑफ विजुअल आर्ट, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

2.1.1.14 कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, कर्नाटक चित्रकला परिषद, बेंगलुरू

2.1.1.15 गर्वनमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट, चण्डीगढ़

2.1.1.16 रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता

2.1.1.17 चित्रकला विभाग, मोहल लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

2.1.1.18 फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

2.1.2 कला संस्थाएं एवं कला केन्द्र

2.1.2.1 इण्डस्ट्रियल आर्ट सोसायटी, कोलकाता

2.1.2.2 बाम्बे आर्ट सोसायटी, मुम्बई

2.1.2.3 इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट, कोलकाता

2.1.2.4 आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया, मुम्बई

2.1.2.5 आल इण्डिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी, नई दिल्ली

2.1.2.6 बिड़ला एकेड़मी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर, कोलकाता

2.1.2.7 गढ़ी कलाकार परिसर, नई दिल्ली

2.1.2.8 भारत भवन, भोपाल

2.1.2.9 मोहिले–पारीख सेन्टर फॉर द विजुअल आर्ट्स, मुम्बई

2.1.2.10 जवाहर कला केन्द्र, जयपुर

2.1.3 कला दीर्घाएँ

2.1.3.1 राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली

2.1.4 कला अकादमी

2.1.4.1 राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली

2.2 भारतीय पृष्ठभूमि में समकालीन कला

2.3 यूरोपीय प्रवृत्तियों का प्रभाव

2.3.1 प्रभाववादी प्रवृत्ति

2.3.2 अभिव्यंजनावादी या फाववादी प्रवृत्ति

2.3.3 घनवादी प्रवृत्ति

2.3.4 अतियथार्थवादी प्रवृत्ति

2.3.5 तांत्रिक प्रवृत्ति

2.3.6 छापा–चित्रण

अध्याय–तृतीय **59–75**

भारत के प्रमुख कला संगठन

3.1 यंग तुर्कस, मुम्बई

3.2 कलकत्ता ग्रुप, कोलकाता

3.3 प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, मुम्बई

3.4 प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स एसोसिएशन, श्रीनगर, कश्मीर

3.5 दिल्ली शिल्पी चक्र, नई दिल्ली

3.6 बोम्बे ग्रुप, मुम्बई

3.7 ग्रुप 1890, नई दिल्ली

3.8 चोलामंडल, चेन्नई

अध्याय–चतुर्थ **76–99**

राजस्थान में कला व कला शिक्षा प्रोन्नति के प्रमुख केन्द्र एवं राजस्थान का समकालीन कला परिदृश्य

4.1 राजस्थान में कला प्रोन्नति के प्रमुख केन्द्र

4.1.1 राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर

4.1.2 जवाहर कला केन्द्र, जयपुर

4.2 राजस्थान में कला शिक्षा की शैक्षणिक संस्थाऐं

4.2.1 राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर

4.2.2 वनस्थली विद्यापीठ, टोंक

4.2.3 राजकीय महाविद्यालय, बूंदी

4.2.4 राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक–बधिर संस्थान, जयपुर

4.2.5 राजकीय महाविद्यालय, कोटा

4.2.6 दयानन्द कॉलेज, अजमेर

4.2.7 मोहल लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

4.2.8 राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

4.2.9 राजस्थान महाविद्यालय, नाथद्वारा

4.2.10 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक

4.2.11 जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

4.3 राजस्थान की समकालीन कला

अध्याय–पंचम **100–191**

समकालीन कला के विकास में प्रमुख कला संगठनों की भूमिका (राजस्थान के सन्दर्भ में)

5.1 राजस्थान के प्रमुख कला संगठन

5.1.1 तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर

5.1.2 टखमण–28, उदयपुर

5.1.3 प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर

5.1.4 कलावृत्त, जयपुर

5.1.5 आज, उदयपुर

5.2 राजस्थान के अन्य प्रमुख कला संगठन

5.2.1 राजस्थान कला केन्द्र, जयपुर

5.2.2 आदर्श लोक, बीकानेर

5.2.3 रंगबोध, कोटा

5.2.4 साहित्य कला मन्दिर, कोटा

5.2.5 कलम, बूंदी

5.2.6 धोरा कला संस्थान, जोधपुर

5.2.7 मयूर–6, वनस्थली

5.2.8 फाइन ऑर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी, जयपुर

5.2.9 चितेरा, जोधपुर

5.2.10 आर्ट कौन्सिल ऑफ राजस्थान, जयपुर

5.2.11 आकार कला समूह, अजमेर

5.2.12 अंकन, भीलवाड़ा

5.2.13 अलंकृति कलाकार समूह, अजमेर

5.2.14 सरस्वती कला केन्द्र, जयपुर

5.2.15 वी, कोटा

5.2.16 विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स, उदयपुर

5.2.17 हस्ताक्षर, जयपुर

5.2.18 आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर

5.2.19 आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा

5.2.20 बून्दी ब्रश, बून्दी

अध्याय–षष्ठम **192–253**

राजस्थान के समकालीन कला संगठनों के प्रमुख कलाकारों की समकालीन कला में भूमिका

6.1 तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर के कलाकार

6.1.1 कलाविद् मोनी सान्याल

6.1.2 कलाविद् गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा'

6.1.3 कलाविद् प्रो. परमानन्द चोयल

6.1.4 अरुण चन्द्रायण

6.1.5 नारायण शाकद्वीपी

6.1.6 तेज सिंह

6.1.7 रामेश्वर सिंह

6.1.8 देवेन्द्र दाहिमा

6.2 टखमण–28, उदयपुर के प्रमुख कलाकार

6.2.1 ओमदत्त उपाध्याय

6.2.2 कलाविद् प्रो. सुरेश शर्मा

6.2.3 लक्ष्मी लाल वर्मा

6.2.4 शब्बीर हसन काजी

6.2.5 अब्दुल करीम

6.2.6 डॉ. विद्यासागर उपाध्याय

6.2.7 ललित शर्मा

6.2.8 दिलीप सिंह चौहान

6.2.9 रघुनाथ शर्मा

6.2.10 डॉ. विष्णु प्रकाश माली

6.2.11 चरण शर्मा

6.2.12 डॉ. गगन बिहारी दाधीच

6.2.13 विनय शर्मा

6.2.14 हेमन्त द्विवेदी

6.2.15 भूपेश कावड़िया

6.2.16 हेमन्त जोशी

6.2.17 दीपक खण्डेलवाल

6.3 प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर के प्रमुख कलाकार

6.3.1 कलाविद् मोहन शर्मा

6.3.2 कलाविद् रणजीत सिंह जे. चूडावाला

6.3.3 कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी

6.3.4 आनन्दी लाल वर्मा

6.3.5 गोपाल वर्मन

6.3.6 डॉ. रमेश सत्यार्थी

6.3.7 डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ

6.3.8 कलाविद् राधाबल्लभ गौतम

6.3.9 पारस भंसाली

6.3.10 चन्दू लाल चौहान

6.3.11 कलाविद् कन्हैया लाल वर्मा

6.3.12 प्रो. भवानी शंकर शर्मा

6.3.13 शैलेन्द्र भटनागर

6.3.14 डॉ. नाथू लाल वर्मा

6.3.15 सुभाष केकरे

6.3.16 लाल चन्द मारोठिया

6.3.17 राजेन्द्र मिश्रा

6.3.18 मंजू मिश्रा

6.3.19 डॉ. राजीव गर्ग

6.3.20 सुरभी बिरमीवाल

6.3.21 डॉ. जगमोहन माथोड़िया

6.3.22 डॉ. ममता चतुर्वेदी

6.4 कलावृत, जयपुर के प्रमुख कलाकार

6.4.1 पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय

6.4.2 कलाविद् सुरेश चन्द्र राजोरिया

6.4.3 डॉ. महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र'

6.4.4 वीरेन्द्र पाटनी

6.4.5 वीरेन्द्र कुमार शर्मा

6.5 आज, उदयपुर के प्रमुख कलाकार

6.5.1 शैल चोयल

6.5.2 अम्बालाल दमामी

6.5.3 प्रभा शाह

6.5.4 सुरजीत कौर चोयल

6.5.5 नील कमल

6.5.6 हर्ष छाजेड

6.5.7 किरण मुर्ड़िया

6.5.8 बसन्त कश्यप

6.5.9 अब्बास बाटलीवाला

6.5.10 त्रिलोक श्रीमाली

6.5.11 भानु भारती

6.6 मयूर–6, वनस्थली के प्रमुख कलाकार

6.6.1 कलाविद् प्रो. देवकीनन्दन शर्मा

6.7 फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी, जयपुर के प्रमुख कलाकार

6.7.1 पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत

6.7.2 वेदपाल शर्मा 'बन्नू'

6.7.3 समदर सिंह खंगारोत 'सागर'

6.7.4 पद्मश्री अर्जुन प्रजापति

6.8 आकार समूह, अजमेर के प्रमुख कलाकार

6.8.1 डॉ. अनुपम भटनागर

6.8.2 प्रहलाद शर्मा

6.8.3 लक्ष्यपाल सिंह राठौड़

6.9 अंकन, भीलवाडा के प्रमुख कलाकार

6.9.1 कलाविद् रमेश गर्ग

6.10 अलंकृति कला समूह, अजमेर के प्रमुख कलाकार

6.10.1 कलाविद् राम जैसवाल

6.11 आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर के प्रमुख कलाकार

6.11.1 प्रो. चिन्मय शेष मेहता

6.12 आकृति कला संस्थान के प्रमुख कलाकार

6.12.1 गोवर्धन सिंह पंवार

उपसंहार **254–265**

समकालीन कला के विकास में राजस्थान के कला संगठनों का योगदान

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची **266–282**

परिशिष्ट **i - xxxiii**

परिशिष्ट–1

भारत के प्रमुख कलाकारों, कला लेखकों एवं कला समीक्षकों से शोधार्थी द्वारा साक्षात्कार

परिशिष्ट–2

राजस्थान के प्रमुख कला संगठनों के संस्थापकों एवं उनके प्रमुख कलाकारों से शोधार्थी द्वारा साक्षात्कार

परिशिष्ट–3

भारत के प्रमुख कला शिक्षा संस्थान

परिशिष्ट–4

भारत के प्रमुख कला केन्द्र

परिशिष्ट–5

भारत की प्रमुख कला दीर्घाएँ

परिशिष्ट–6

भारत की प्रमुख कला अकादमियाँ

परिशिष्ट–7

राजस्थान के प्रमुख कलाविद् कलाकार

परिशिष्ट–8

राजस्थान के प्रमुख कला संगठन

परिशिष्ट–9

शोधार्थी द्वारा विभिन्न शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध–पत्र

परिशिष्ट–10

शोधार्थी द्वारा विभिन्न शोध संगोष्ठियों में भागीदारी के प्रमाण–पत्र

चित्र सूची

चित्र–1	:	'द बांबे ग्रुप ऑफ कंटेम्परेरी इंडियन आर्टिस्ट्स' की प्रथम प्रदर्शनी–1941 ई. की विवरणिका।
चित्र–2	:	प्रदोषदास गुप्ता।
चित्र–3	:	प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, मुम्बई, 1949 ई. के संस्थापक कलाकार।
चित्र–4	:	प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, मुम्बई की प्रथम प्रदर्शनी विवरणिका व घोषणा–पत्र 1949 ई.।
चित्र–5	:	प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, मुम्बई के कुछ प्रमुख कलाकार व सहयोगी।
चित्र–6	:	पी.एन. काचरू, संस्थापक सदस्य–प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स एसोसिएशन, श्रीनगर, कश्मीर।
चित्र–7	:	दिल्ली शिल्पी चक्र, नई दिल्ली की विभिन्न प्रदर्शनियों के बारे में प्रमुख अंग्रेजी समाचार–पत्रों में प्रकाशित समाचार।
चित्र–8	:	मोहन सामंत।
चित्र–9	:	ग्रुप–1890 के सदस्य कलाकार।
चित्र–10	:	चोला मण्डल, चेन्नई।
चित्र–11	:	24 नवम्बर 1957 ई. को राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के स्थापना दिवस पर प्रथम प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् अवलोकन करते हुए तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन व तत्कालीन राज्यपाल महामहिम गुरुमुख निहालसिंह को एक अन्य प्रदर्शनी का अवलोकन कराते हुए अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष पी.जी. मेहता।
चित्र–12	:	जवाहर कला केन्द्र, जयपुर।
चित्र–13	:	तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर के चित्रकार–1968 ई.।
चित्र–14	:	केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली एवं तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ग्राम्य एवं लोक कला प्रदर्शनी–1974 ई. की विवरणिका।
चित्र–15	:	तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर द्वारा आयोजित कला शिविर, ऋषभ देव–1977 ई.।
चित्र–16	:	तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर की 14वीं कला प्रदर्शनी 1981–82 ई. की विवरणिका एवं 'जय राजस्थान' समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार।

चित्र–17 : तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर की 24वीं कला प्रदर्शनी–2002 ई. की विवरणिका।

चित्र–18 : टखमण–28, उदयपुर के प्रारम्भिक युवा चित्रकार।

चित्र–19 : टखमण–28, उदयपुर, प्रथम प्रदर्शनी विवरणिका–1968 ई.।

चित्र–20 : टखमण–28, उदयपुर द्वारा आयोजित छापा चित्रकार शिविर में चित्रकारों के मध्य तत्कालीन गृह सचिव एच.एस. रमणी।

चित्र–21 : टखमण–28, उदयपुर, कला प्रदर्शनी विवरणिका–1983 ई.।

चित्र–22 : टखमण–28, उदयपुर द्वारा आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय छापा प्रदर्शनी–1987 ई.।

चित्र–23 : टखमण–28, उदयपुर द्वारा आयोजित इण्टरनेशनल स्टोन स्कल्पर्ट्स सिम्पोजियम–1998 ई. की विवरणिका एवं सिम्पोजियम का उद्घाटन करते महाराणा श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़ व मुख्य अतिथियों द्वारा मूर्तिशिल्प कार्यशाला का अवलोकन।

चित्र–24 : टखमण–28, उदयपुर परिसर।

चित्र–25 : टखमण–28, उदयपुर पर प्रकाशित एक समाचार।

चित्र–26 : पैग, मुम्बई के संस्थापक सदस्य एम.एफ. हुसैन के साथ पैग, जयपुर के संस्थापक सदस्य डॉ. आर.बी. गौतम, डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी व अन्य।

चित्र–27 : पैग, जयपुर का विधान पत्र–1978 ई.।

चित्र–28 : पैग, जयपुर द्वारा स्व. श्री भूरसिंह शेखावत की स्मृति में आयोजित चित्रकला प्रदर्शनी–1982 ई. की विवरणिका।

चित्र–29 : पैग, जयपुर के सचिव आर.बी. गौतम द्वारा पैग, मुम्बई के संस्थापक सदस्य एफ.एन. सूजा का अभिनन्दन करते हुए तथा सूजा के जयपुर प्रवास पर पैग, जयपुर द्वारा प्रकाशित एक पुस्तिका।

चित्र–30 : पैग, जयपुर द्वारा आयोजित कला संगोष्ठि में कलावार्ता प्रस्तुत करते हुए वरिष्ठ चित्रकार रामगोपाल विजयवर्गीय।

चित्र–31 : पैग, जयपुर द्वारा केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से मध्यप्रदेश कला परिषद्, भोपाल की विथिका में आयोजित कला प्रदर्शनी की विवरणिका–1992 ई.।

चित्र–32 : पैग, जयपुर द्वारा प्रकाशित विविध कला प्रकाशन।

चित्र–33 : पैग, जयपुर द्वारा राजस्थान के समकालीन चित्रकारों पर प्रकाशित पोर्टफोलियों–1994 ई.।

चित्र–34 : पैग, जयपुर के सदस्य चित्रकारों की कलानेरी कलादीर्घा, जयपुर में आयोजित समूह चित्र प्रदर्शनी–2011 ई.।

चित्र–35 : पैग, जयपुर के सक्रिय चित्रकार कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी की स्मृति में उनके कलाकर्म पर आधारित पैग, जयपुर द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनी–2012 ई.।

चित्र–36 : पैग, जयपुर द्वारा आयोजित विभिन्न समूह प्रदर्शनियों की विवरणिकाऐं।

चित्र–37 : पैग, जयपुर द्वारा आयोजित जयपुर आर्ट समिट–2013 ई.।

चित्र–38 : पैग, जयपुर द्वारा भारत और नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ नई दिल्ली की डी.सी. आर्ट गैलेरी में आयोजित समूह प्रदर्शनी–2015।

चित्र–39 : पैग, जयपुर द्वारा आयोजित जयपुर आर्ट समिट–2015 ई.।

चित्र–40 : कलावृत्त पत्रिका के विभिन्न अंक।

चित्र–41 : कलावृत्त संगठन की कार्यकारिणी–1978 ई.।

चित्र–42 : कलावृत्त द्वारा वयोवृद्ध चित्रकार श्याम सुन्दर का सम्मान व प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात अवलोकन करती राजस्थान की तत्कालीन कला एवं संस्कृति मंत्री श्रीमती कमला।

चित्र–43 : कलावृत्त द्वारा आयोजित 'कला शिक्षा रूप और प्रारूप' विषय पर आयोजित विचार गोष्ठी–1979 ई.।

चित्र–44 : कलावृत्त द्वारा आयोजित नवम् अखिल भारतीय युवा मूर्तिशिल्प शिविर–1991 ई.।

चित्र–45 : कलावृत्त द्वारा आयोजित चौबीसवाँ अखिल भारतीय मूर्तिशिल्प शिविर–2006 ई.।

चित्र–46 : सम्पादक सुमहेन्द्र द्वारा सम्पादित कलावृत्त पत्रिका का 50वाँ अंक।

चित्र–47 : कलावृत्त के संस्थापक सुमहेन्द्र की स्मृति में कलावृत्त संस्था और राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के दृश्य–कला विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित मूर्तिशिल्प कार्यशाला–2015 ई.।

चित्र–48 : कलावृत्त के संस्थापक सुमहेन्द्र की स्मृति में कलावृत्त संस्था और राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के दृश्य–कला विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित लघुचित्रण शिविर–2015 ई.।

चित्र–49 : कलावृत्त के संस्थापक सुमहेन्द्र द्वारा निर्मित रवीन्द्रनाथ ठाकुर की आदमकद मूर्ति (रवीन्द्र मंच, जयपुर)।

चित्र–50 : 'आज' समूह उदयपुर, प्रथम प्रदर्शनी विवरणिका–1979 ई.।

चित्र–51 : 'आज' समूह उदयपुर द्वारा आयोजित प्रथम अखिल भारतीय ग्राफिक प्रदर्शनी–1979 ई.।

चित्र–52 : मौलेला गाँव के टेराकोटा कला के लोक–कलाकारों के साथ आज संगठन के सदस्य कलाकार–1979 ई.।

चित्र–53 : भारतीय पारम्परिक कला विषय पर वार्ता प्रस्तुत करते हुए प्रो. पी.एन. चोयल–1980ई.।

चित्र–54 : 'आज' संगठन, उदयपुर द्वारा विकलांग बच्चों के लिए आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता–1980 ई.।

चित्र–55 : 'आज' संगठन, उदयपुर को राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर से मान्यता प्रमाण–पत्र–1981 ई.।

चित्र–56 : 'आज' संगठन, उदयपुर के मध्य चित्रकार लक्ष्मण पै–1982 ई.।

चित्र–57 : 'आज' संगठन, उदयपुर के संस्थापक सदस्य शैल चोयल 'भारतीय समकालीन ग्राफिक कला' पर वार्ता प्रस्तुत करते हुए–1982 ई.।

चित्र–58 : 'आज' संगठन, उदयपुर द्वारा प्रकाशित मोनोग्राफ्स एवं विभिन्न प्रदर्शनियों की विवरणिकाएँ।

चित्र–59 : 'आज' संगठन, उदयपुर एवं भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय चित्रकार शिविर–1995 ई.।

चित्र–60 : 'आज' संगठन, उदयपुर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय छापा कला शिविर–1997 ई.।

चित्र–61 : प्रो. पी.एन. चोयल द्वारा निर्देशित कलात्मक नाटक 'चलते–फिरते बुत'।

चित्र–62 : 'आज' संगठन व दिशा नाट्य संस्थान, उदयपुर द्वारा निर्मित 'काल–कथा' नाटक।

चित्र–63 : रंगबोध संस्थान की ओर से आयोजित चित्रकला प्रदर्शनी–2002 ई.।

चित्र–64 : 'साहित्य कला मंदिर' कोटा द्वारा आयोजित चित्र प्रदर्शनी–1985 ई.।

चित्र–65 : मयूर–6, वनस्थली द्वारा आयोजित समूह कला प्रदर्शनी–1980 ई. की विवरणिका।

चित्र–66 : फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी (फेस), जयपुर द्वारा आयोजित बारहमासा कला शिविर–जून, 1987 ई.।

चित्र–67 : चितेरा, जोधपुर की समूह कला प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं चितेरा जोधपुर द्वारा आयोजित बाल शिविर–2000 ई.।

चित्र–68 : आर्ट कौंसिल ऑफ राजस्थान, जयपुर के संस्थापक सदस्य समदर सिंह खंगारोत 'सागर' ब्रिटेन के वेल्स राज्य में सजृनरत (ब्रिटेन के वेल्स राज्य के प्रसिद्ध समाचार पत्र–साउथ वेल्स 'ईको' में 21 मई, 1993 ई. में प्रकाशित समाचार)।

चित्र–69 : आकार कला समूह, अजमेर द्वारा नेहरू आर्ट सेन्टर, मुम्बई में आयोजित समूह कला प्रदर्शनी–2013 ई.।

चित्र–70 : अंकन कला समूह, भीलवाड़ा की विभिन्न कलात्मक गतिविधियाँ।

चित्र–71 : अलंकृति कला समूह, अजमेर की एक समूह कला प्रदर्शनी की विवरणिका।

चित्र–72 : सरस्वती कला केन्द्र, जयपुर के द्वारा आयोजित चित्रकला प्रशिक्षण शिविर–2000 ई.।

चित्र–73 : वी, कोटा की समूह प्रदर्शनी–2003 ई.।

चित्र–74 : विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स–वास्ट (महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, राजस्थान), उदयपुर द्वारा प्रकाशित शोध–पत्रिका 'वास्ट एण्ड विजन' के विविध अंक।

चित्र–75 : हस्ताक्षर, जयपुर द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय कलाकार शिविर–1992 ई'।

चित्र–76 : आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर की एक समूह कला प्रदर्शनी की विवरणिका।

चित्र–77 : आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा की विभिन्न कलात्मक गतिविधियाँ।

चित्र–78 : कलाविद् मोनी सान्याल की कृति 'स्नानमग्न युवती'।

चित्र–79 : कलाविद् गोवर्धन लाल जोशी की कृति 'खलिहान की झांकी'।

चित्र–80 : कलाविद् प्रो. पी.एन. चोयल की कृति 'एलेवेशन–10'।

चित्र–81 : अरूण चन्द्रायण की कृति 'स्वतंत्रता सेनानी'।

चित्र–82 : नारायण शाकद्वीपी की एक रेखाकंन कृति।

चित्र–83 : तेज सिंह की कृति 'उदयपुर'।

चित्र–84 : रामेश्वर सिंह की कृति 'उदयपुर'।

चित्र–85 : देवेन्द्र दाहिमा की कृति 'देवता–5'।

चित्र–86 : ओमदत्त उपाध्याय की कृति 'संयोजन'।

चित्र–87 : सुरेश शर्मा की कृति 'शीर्षकहीन'।

चित्र–88 : लक्ष्मीलाल वर्मा की कृति 'ऑर्केस्ट्रा'।

चित्र–89 : शब्बीर हसन काजी की कृति 'शीर्षकहीन'।

चित्र–90 : अब्दुल करीम की कृति 'तनाव'।

चित्र–91 : विद्यासागर उपाध्याय की कृति 'शीर्षकहीन'।

चित्र–92 : ललित शर्मा की कृति 'उदयपुर'।

चित्र–93 : दिलीप सिंह चौहान की कृति 'केनवास'।

चित्र–94 : रघुनाथ शर्मा की कृति 'सन्देश'।

चित्र–95 : विष्णु प्रकाश माली की कृति 'अरण्य'।

चित्र–96 : चरण शर्मा की कृति 'बुद्धम शरणम्'।

चित्र–97 : गगन बिहारी दाधीच की कृति 'यक्षिणी–द्वितीय'।

चित्र–98 : विनय शर्मा की एक कृति।

चित्र–99 : हेमन्त द्विवेदी की कृति 'अक्ष'।

चित्र–100 : भूपेश कावड़िया का एक मूर्ति शिल्प 'मदर एण्ड चाइल्ड'।

चित्र–101 : हेमन्त जोशी का एक मूर्ति शिल्प।

चित्र–102 : दीपक खण्डेलवाल की एक कृति।

चित्र–103 : कलाविद् मोहन शर्मा की कृति 'लैण्डस्केप'।

चित्र–104 : कलाविद् रणजीत सिंह चूड़ावाला की कृति 'मालण'।

चित्र–105 : कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी की कृति 'स्वप्नलोक'।

चित्र–106 : आनन्दी लाल वर्मा का एक मूर्ति शिल्प 'डान्स'।

चित्र–107 : गोपाल बर्मन की एक कृति।

चित्र–108 : रमेश सत्यार्थी की कृति 'सन्यासी'।

चित्र–109 : डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ की कृति 'नव–विवाहिताएँ' ।

चित्र–110 : कलाविद् डॉ. आर.बी. गौतम की कृति 'मेन एण्ड नेचर'।

चित्र–111 : पारस भंसाली की कृति 'संयोजन'।

चित्र–112 : चन्दुलाल चौहान की एक कृति।

चित्र–113 : कन्हैया लाल वर्मा की कृति 'डाण्डिया उत्सव'।

चित्र–114 : प्रो. भवानी शंकर शर्मा की कृति 'इन द जंगल'।

चित्र–115 : शैलेन्द्र भटनागर की एक कृति।

चित्र–116 : डॉ. नाथू लाल वर्मा की कृति 'राम–रावण युद्ध'।

चित्र–117 : सुभाष केकरे की कृति 'संयोजन'।

चित्र–118 : लाल चन्द मारोठिया की एक कृति।

चित्र–119 : राजेन्द्र मिश्रा का एक मूर्ति शिल्प।

चित्र–120 : मन्जू मिश्रा की एक कृति।

चित्र–121 : डॉ. राजीव गर्ग की कृति 'लैण्डस्केप'।

चित्र–122 : डॉ. सुरभी बिरमीवाल की एक कृति।

चित्र–123 : जगमोहन माथोडिया की कृति 'श्वान'।

चित्र–124 : डॉ. ममता चतुर्वेदी की एक कृति।

चित्र–125 : रामगोपाल विजयवर्गीय की कृति 'मेघदूत'।

चित्र–126 : सुरेश चन्द्र राजोरिया की कृति 'भू–दृश्य'।

चित्र–127 : एम.के. शर्मा 'सुमहेन्द्र' की एक कृति।

चित्र–128 : वीरेन्द्र पाटनी की एक ग्राफिक कृति।

चित्र–129 : वीरेन्द्र शर्मा की कृति 'स्वप्न'।

चित्र–130 : शैल चोयल की कृति 'उदयपुर'।

चित्र–131 : ए.एल. दमामी की कृति 'राग विराग'।

चित्र–132 : प्रभा शाह की एक कृति।

चित्र–133 : सुरजीत चोयल की कृति 'पुरातनता'।

चित्र–134 : नील कमल की एक कृति।

चित्र–135 : हर्ष छाजेड़ की कृति 'ट्रायएंगल व क्यूब'।

चित्र–136 : किरण मुर्डिया की एक कृति।

चित्र–137 : बसन्त कश्यप की कृति 'म्हारे लेरियारा'।

चित्र–138 : अब्बास बाटलीवाला की एक कृति।

चित्र–139 : त्रिलोक श्रीमाली की एक कृति 'एचिंग'।

चित्र–140 : भानु–भारती द्वारा निर्देशित नाटक 'पशु–गायत्री'।

चित्र–141 : कलाविद् देवकीनन्दन शर्मा की कृति 'कौऐं'।

चित्र–142 : पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत की कृति 'पाबूजी राठौड़'।

चित्र–143 : वेदपाल शर्मा 'बन्नू' की कृति 'लेड़ी'।

चित्र–144 : समदर सिंह खंगारोत 'सागर' की कृति 'राम–परशुराम'।
चित्र–145 : पद्मश्री अर्जुन प्रजापति का एक मूर्ति शिल्प 'लेड़ी'।
चित्र–146 : अनुपम भटनागर की एक कृति।
चित्र–147 : प्रहलाद शर्मा की कृति 'मत्स्य कन्या'।
चित्र–148 : लक्ष्यपाल सिंह राठौड़ की एक कृति।
चित्र–149 : रमेश गर्ग की कृति 'संयोजन'।
चित्र–150 : कलाविद् राम जैसवाल की कृति 'बसंत आगमन'।
चित्र–151 : सी.एस. मेहता की एक कृति 'संयोजन'।
चित्र–152 : गोवर्धन सिंह पंवार का एक मूर्ति शिल्प 'संयोजन'।
चित्र–153 : तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर के संस्थापक सदस्य गोवर्धनलाल जोशी को 'कलाविद्' (1972–73 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए राजस्थान ललित कला अकादमी के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामनिवास मिर्धा।
चित्र–154 : तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर के संस्थापक सदस्य प्रो. पी.एन. चोयल को 'कलाविद्' (1981–82 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए प्रख्यात चित्रकार के.के. हेब्बार।
चित्र–155 : टखमण–28 के संस्थापक सदस्य सुरेश शर्मा को 'कलाविद्'/फैलोशिप (1984–85 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए रामनिवास मिर्धा।
चित्र–156 : प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर के सक्रिय सदस्य डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी को 'कलाविद्' (1986–87 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए राजस्थान विधान सभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री गिर्राज प्रसाद तिवाड़ी।
चित्र–157 : प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर के संस्थापक सदस्य डॉ. आर.बी. गौतम को 'कलाविद्' (1995–96 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय।
चित्र–158 : कलावृत्त संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री रामगोपाल विजयवर्गीय को 'कलाविद्' (1970 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री शिवचरण माथुर।
चित्र–159 : 'आज' संगठन, उदयपुर की संस्थापक सदस्य किरण मुर्डिया को केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के राष्ट्रीय कला पुरस्कार (1989 ई.) से सम्मानित करते हुए तत्कालीन उप–राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा।

चित्र–160 : फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी (फेस), जयपुर के संरक्षक पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत को 'कलाविद्' (1979–80 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए राजस्थान के तत्कालीन मुख्य सचिव श्री मोहन मुखर्जी।

चित्र–161 : फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी (फेस), जयपुर के सचिव व आर्ट कौंसिल ऑफ राजस्थान, जयपुर के सूत्रधार समदर सिंह खंगारोत 'सागर' को फेडरेशन ऑफ राजस्थान हैण्डीक्राफ्ट एक्सपोटर्स–2005 ई. के पुरस्कार से सम्मानित करते हुए तत्कालीन उपराष्ट्रपति महामहिम श्री भैंरोसिंह शेखावत।

चित्र–162 : मयूर–6, वनस्थली के संस्थापक सदस्य प्रो. देवकीनंदन शर्मा को 'कलाविद्'(1980–81 ई.) की उपाधि से सम्मानित करते हुए तत्कालीन महामहिम राज्यपाल रघुकुल तिलक।

अध्याय-प्रथम

विषय-प्रवेश, विषय का अध्ययन क्षेत्र एवं महत्त्व प्रतिपादन

अपने शोध निर्देशक डॉ. राजीव गर्ग (उपाचार्य, से.नि., राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक)
से शोध सम्बन्धित मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए
शोधार्थी योगेन्द्र सिंह नरूका

विषय–प्रवेश, विषय का अध्ययन क्षेत्र एवं महत्त्व प्रतिपादन

ज्ञान का क्षेत्र असीमित है। इसकी शाखा–प्रशाखाओं का विस्तार भी अपरिमेय है। शोधार्थी का कर्तव्य है कि वह ज्ञान के विस्तृत सागर में गोता लगाकर उन मोतियों की तलाश करें जो परस्पर सम्बद्ध एवं ज्ञान–प्रकाश की माला पिरोने की संभावनाओं से युक्त है। किसी भी विषय के शोध कार्य में प्रमुखतः सम्बद्ध सामग्री के संग्रहण, उसके परीक्षण, वर्गीकरण और विश्लेषण के बाद कुछ निष्कर्षो पर पहुंचने की प्रक्रिया को अपनाया जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा शोधार्थी अपने अभीष्ट के प्रति संचेष्ट रहता है तथा विधिवत् एवं क्रमबद्ध सामग्री प्रस्तुत करके शोध कार्य में विषय के सभी पहलुओं का दिग्दर्शन कराने में समर्थ होता है। इस कार्य में निर्देशन की प्रथा भी इसीलिए है कि इस प्रक्रिया के दौरान शोधार्थी अपने कार्य में सतर्क रहकर नियमित रूप से उसको कर सके। नियमित क्रिया विधि को अपनाकर निकाले गये निष्कर्ष सदा प्रमाणिक, भावी शोधार्थियों के लिए प्रेरक और नए मानदण्ड स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

1.1 शोध की क्रिया विधि

शोध क्रिया विधि के चार प्रमुख अंग माने गए है जो निम्न प्रकार है–

i. विषय से सम्बद्ध सामग्री का संकलन।
ii. शोधकार्य की दृष्टि से उस सामग्री का परीक्षण या प्रमाणीकरण तथा ग्राह्य एवं त्याज्य सामग्री का निर्णय।
iii. शोध विषय की कसौटी पर संग्रहीत एवं ग्राह्य सामग्री का विश्लेषण एवं वर्गीकरण।
iv. वर्गीकृत शोध सामग्री के आधार पर निष्कर्ष एवं निर्णय।

क्रियाविधि के प्रथम अंग सामग्री संकलन के अन्तर्गत सामान्यतः तीन प्रमुख विधियों का प्रचलन हैः–

i. सूत्र संग्रह अथवा टिप्पणी विधि।
ii. प्रश्नोत्तर विधि।
iii. साक्षात्कार विधि।

1.1.1 सूत्र संग्रह या टिप्पणी विधि

शोधकार्य की यह प्रायः सर्वाधिक प्रचलित विधि है, जिसके द्वारा शोधार्थी विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त सूचना को संक्षिप्त टिप्पणियों के रूप में बाद में उपयोग करने के उद्देश्य से एकत्रित करता है। इसके लिए तरह–तरह के उपायों का प्रयोग किया जाता है। इनमें सबसे अधिक सुगम उपाय है कार्ड़ों का उपयोग। यह विधि प्रायः सभी प्रकार के शोधार्थियों के लिए आवश्यक है परन्तु साहित्यिक अनुसंधान के नवीन शोध–विज्ञान के अनुसंधान में इसकी उपयोगिता अनिवार्य एवं सर्वाधिक महत्व की है।

1.1.2 प्रश्नोत्तर विधि

इसमें शोधार्थी विषय के विभिन्न पक्षों से सम्बद्ध प्रश्नावली तैयार करता है और उनके उत्तर के आधार पर शोध विषय के संश्लेषण और विश्लेषण के बाद निष्कर्षों तक पहुंचता है।

1.1.3. साक्षात्कार विधि

इसके अनुसार विषय से सम्बद्ध सामग्री संकलन तथा मत संग्रह किया जाता है। उसके बाद ही निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाते हैं।

क्रिया विधि का दूसरा अंग है सामग्री का परीक्षण एवं प्रमाणीकरण। इसके लिये शोध–विज्ञान में अनेक उपायों की व्यवस्था है। इनकी उपयोगिता प्रायः अप्रत्यक्ष ही होती है। कभी–कभी इस प्रकार के अनर्थक प्रयोगों के द्वारा शोधार्थी विषय के मर्म से दूर हटकर तरह–तरह के कौतूक करने लगते है जिनमें विषय के अध्ययन में कोई सहायता नहीं मिलती।[1]

शोधार्थी के लिए अभीष्ट है कि शोध विषय से सम्बद्ध सामग्री को संग्रहीत करके निश्चित करें कि कौनसी सामग्री उसके उपयोग की है तथा कौनसी सामग्री उसके लिए त्याज्य है। उपयोग की सामग्री का निर्णय करके वह आगे बढ़ता है। इस तरह तीसरे प्रकार से तय की गई क्रिया विधि के द्वारा सामग्री का विश्लेषण, विवेचन सरलता से सम्भव हो जाता है। शोध की कसौटी पर यह विश्लेषण विषय को स्पष्ट करने तथा उसका क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तुत करने में पर्याप्त सहायक सिद्ध होता है।

उपयोग की सामग्री का वर्गीकरण कर लेने के पश्चात उसके आकलन, विषय की कसौटी पर परीक्षण तथा गहराई के साथ अध्ययन करने तथा उसके निष्कर्ष पर पहुंचने की प्रक्रिया सम्पन्न की जाती है। इसमें भाषा–शैली की एकरसता तथा सन्दर्भों की अर्थवत्ता का विशेष रूप से ध्यान रखना होता है। शोधार्थी के निष्कर्ष सही और भावी शोधार्थियों के लिए प्रेरक सिद्ध हो सके, इस हेतु वर्गीकृत सामग्री का उपलब्ध होना अतिआवश्यक है।

1.2. प्रस्तुत प्रबन्ध की प्रेरणा एवं नवीनता

प्रस्तुत प्रबन्ध की प्रेरणा **कलाविज्ञ डॉ. राजीव गर्ग** से प्राप्त हुई। इस प्रबन्धन में प्रस्तुत विषय 'समकालीन कला के विकास में कला संगठनों की भूमिका : राजस्थान के संदर्भ में' पर अभी तक व्यापक रूप से शोध कार्य नहीं हो सका है। कला संगठनों की स्थापना, उनके उद्देश्य, कार्य तथा उनके समकालीन कला में दिये गये योगदान को उद्घाटित कर उनकी गवेषणां करना हमारे शोध का अभिष्ट है तथा भविष्य के शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा। इस दृष्टि से यह शोध कार्य सर्वथा नवीन है।

1.3 विषय का अध्ययन क्षेत्र और महत्व

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का विषय अध्ययन क्षेत्र राजस्थान के प्रमुख समकालीन कला संगठन, उनके क्रियाकलाप और उनके द्वारा समकालीन कला को दिया गया योगदान है। इस शोध प्रबन्धन में राजस्थान की कला शिक्षण संस्थाओं (राजकीय–गैर राजकीय, महाविद्यालय/विश्वविद्यालयों) पर बहुत विस्तार से चर्चा ना करके अपना केन्द्र बिन्दू राजस्थान के प्रमुख कला संगठनों को बनाया गया है क्योंकि अन्य विषयों पर पूर्व में अनेक शोध कार्य सम्पन्न किये जा चुके हैं। इनमें –

गोयल,निशी : **राजस्थान के कलात्मक वैभव में प्रदेश की कला शिक्षण संस्थाओं का महत्व एवं योगदान, राजस्थान विश्वविद्यालय की पीएच.डी. का शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), वर्ष 2000 ई.**

रघुनाथ : **राजस्थान की समकालीन कला में दृश्यकला विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के योगदान का प्रदेश के अन्य समकक्ष विभागों से तुलनात्मक अध्ययन, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर की पीएच.डी. का शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित), वर्ष 2012 ई.** प्रमुख है।

प्रस्तुत शोधकार्य समकालीन राजस्थानी कला के एक ऐसे पहलू को सिद्ध करने वाला होगा जो अभी भी शोधार्थी, समालोचक और पाठकों के समक्ष नहीं रखा गया है।

समकालीन राजस्थान की कला का विस्तार व उनके कलाकारों द्वारा दिये गये योगदान में कला संगठनों की विशेष भूमिका है किन्तु वर्तमान में इस अनछुये प्रसंग पर व्यापक शोध का अभाव हैं। यह शोध समकालीन कला के अनेक अनछूये पहलुओं का उद्घाटन करेगा साथ ही राजस्थान में परम्परागत व आधुनिक कला के विस्तार व कलाकारों को मान्यता दिलाने आदि में कला संगठनों की महत्ता सिद्ध करने में उपयोगी होगा तथा आने वाले समय में इस क्षेत्र में अध्ययन व शोध के नये आयाम विकसित होगे।

1.4 साहित्य के अतीत और वर्तमान का पुनर्विलोकन (रिव्यू)

रूढ़िवादी कलाओं के विरोध स्वरूप जन्में विश्वभर के कला संगठनों का इतिहास व उनके कलाकारों पर आवश्यक साहित्य कोर्टोल्ड इन्स्टीट्यूट ऑफ आर्ट, लन्दन; फिलोडेल्फिया संग्रहालय, प्रभाववादी संग्रहालय, पेरिस, शिकागों; आर्ट इन्स्टीट्यूट, शिकागों; ललित कला संग्रहालय, बोस्टन; क्रोलर–मूलर फाउण्डेशन, आर्टर्लों वार्न फाउण्डेशन, मेरिअन पेनसिल्वानिया; ब्रुसेल संग्रहालय; रालैण्ड पेन–रोज संग्रहालय, लन्दन के आर्ट जर्नल्स व समय–समय पर प्रकाशित होने वाले अन्य आर्ट जर्नल्स यथा 'अमेरिकन आर्टिस्ट', 'आर्ट टुडे' आदि में मिलता हैं। स्पेन के इक्वियों 57 ग्रुप, ग्रुप 'टी' (1959 ई.), मिलान, इटली; ग्रुप 'एन' (1960 ई.), पादुआ तथा ग्रुप 'जीरो', डसेलड्राफ, जर्मनी (1957 ई.) इत्यादि पर भी साहित्य उपलब्ध होता है। इनमें विशेष रूप से अमेरिकन व यूरोपीय समकालीन कला संगठनों के क्रियाकलापों की व्यापक जानकारी मिलती हैं।

राष्ट्रीय व राज्य स्तर के चर्चित–यंग तुर्कस, मुम्बई; प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, मुम्बई; शिल्पी चक्र, दिल्ली; बाम्बे ग्रुप, मुम्बई; ग्रुप 1890, नई दिल्ली; कलकत्ता ग्रुप–43, कोलकाता; तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर; टखमण–28, उदयपुर; पैग, जयपुर; कलावृत्त, जयपुर; आज, उदयपुर; जैसे कला संगठनों का विवरण पत्र–पत्रिकाओं (समकालीन कला, मार्ग, कला त्रैमासिक, आकृति बुलेटिन); लेखों, पुस्तकों (मुखर्जी, 1964; भारद्वाज, 1982; गोस्वामी 1995, चतुर्वेदी, 2000) में मिलता है।

राजस्थान के कला संगठनों में से एक 'टखमण–28' पर वर्ष 1997 ई. में शोधार्थी **शब्बीर हसन काजी** ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में शोध प्रबन्धन **'टखमण–28 एवं राजस्थान की समसामयिक कला'** प्रस्तुत किया। इसके अलावा राजस्थान के किसी समसामयिक कला संगठन पर इतना व्यापक शोधकार्य नहीं हो सका।

यद्यपि कला संगठनों की नवीनतम जानकारी समय–समय पर प्रकाशित केटेलोग्स, मोनोग्राफ्स, दैनिक समाचार पत्र, मासिक, त्रैमासिक, छःमाही, वार्षिक पत्रिकाओं के लेखों द्वारा दी जाती हैं, परन्तु इनमें राजस्थान के कला संगठनों का विस्तृत चिन्तन अभी तक भी उपलब्ध नहीं हैं।

1.5 शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य

यों तो समकालीन राजस्थान की कला व कलाकारों की चर्चा समय–समय पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं व पुस्तकों में होती रही है और उन पर शोधकार्य भी हुए हैं परन्तु यहाँ की कला व कलाकारों को मान्यता दिलाने में राजस्थान के जिन प्रमुख कला संगठनों का योगदान रहा है उन पर व्यापक शोध कार्य नहीं हो सका हैं। जिससे इन कला संगठनों का संघर्षमय व स्वर्णिम इतिहास व उनके द्वारा राजस्थानी कला को दिये गये योगदान का कलाकारों व कलाप्रियजन को उचित ज्ञान नहीं है। वर्तमान में समकालीन राजस्थान की कला का जो अध्ययन किया जा रहा है उसका प्रमुख आधार कला और कलाकारों का अध्ययन है न कि कला संगठनों का परन्तु हमारी दृष्टि में कला संगठनों के गम्भीर अध्ययन के बिना समकालीन राजस्थान की कला का अध्ययन अधूरा रहता हैं। अतः इस क्षेत्र में व्यापक शोध की अत्यन्त आवश्यकता है। इसी

को दृष्टिगत रखते हुए इस दिशा में यह शोध एक विनम्र प्रयास है। इससे उक्त विषय में वांछित शोध एवं कला संगठनों का विवेचनात्मक अनुशीलन होकर उक्त रिक्तता की पूर्ति सम्भव हो सकेगी।

1.6 कला का अर्थ और अवधारणाएँ

'कला' मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। 'कला' कल्याण की जननी है। कल्पना की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति का नाम ही कला है। कल्पना की अभिव्यक्ति भिन्न–भिन्न प्रकार से एवम् विभिन्न माध्यमों द्वारा हो सकती है। यह अभिव्यक्ति जिस भी माध्यम एवम् जिस भी प्रकार से हो वही कला का पर्याय कहलाती है।

1.6.1 कला का अर्थ

''मनुष्य की रचना, जो उसके जीवन में आनन्द प्रदान करती है, कला (Art) कहलाती है।''

भारतीय कला 'दर्शन' है। शास्त्रों के अध्ययन से पता चलता है कि सर्वप्रथम 'कला' शब्द का प्रयोग 'ऋग्वेद' में हुआ है – ''यथा कला, यथा शफ, मध, शृण स नियामति।''[2] व कला शब्द का यथार्थवादी प्रयोग 'भरत मुनि' ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में प्रथम शताब्दी में किया– ''न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न साविधा–न सा कला।''[3] अर्थात् ऐसा कोई ज्ञान नहीं, जिसमें कोई शिल्प नहीं, कोई विधा नहीं, जो कला न हो। भरत मुनि, ज्ञान, शिल्प और विधा से भी अलग 'कला' का क्या अभिप्राय ग्रहण करते थे, यह कहना कठिन है ? अनुमान यही लगता है कि भरत के द्वारा प्रयुक्त 'कला' शब्द यहाँ 'ललित कला' के निकट है और 'शिल्प' शायद उपयोगी कला के लिये।[4] हमारे यहाँ कला उन सारी जानकारियों या क्रियाओं को कहते हैं, जिसमें थोड़ी सी भी चतुराई की आवश्यकता है।

कला संस्कृत भाषा से संबंधित शब्द है। इसकी व्युत्पत्ति 'कल्' धातु से मानी जाती है, जिसका अर्थ है–प्रेरित करना। कुछ विद्वान इसकी व्युत्पत्ति 'क' धातु से मानते हैं–''कं (सुखम्) लाति इति कलम्, कं आनन्दं लाति इति कला।'' संस्कृत साहित्य में इसका प्रयोग अनेकार्थों में हुआ है, जिसमें प्रमुख किसी वस्तु का 'सोलहवां भाग', 'समय का एक भाग', किसी भी कार्य के करने में अपेक्षित चातुर्य–कर्म आदि विशेषतः उल्लेखनीय है। भरत मुनि से पूर्व 'कला' शब्द का

प्रयोग काव्य को छोड़कर दूसरे प्रायः सभी प्रकार के चातुर्य–कर्म के लिए होता था और इस चातुर्य–कर्म के लिए विशिष्ट शब्द था–'शिल्प', जीवन से संबंधित कोई उपयोग व्यापार ऐसा न था, जिसकी गणना शिल्प में न हो।[5]

कला का अर्थ है–सुन्दर, मधुर, कोमल और सुख देने वाला एवं शिल्प, हुनर अथवा कौशल। कला के संबंध में 'पाश्चात्य दृष्टिकोण' भी कुछ इसी प्रकार का है– अंग्रेजी भाषा में कला को 'आर्ट' कहा गया है। फ्रेंच में 'आर्ट' और लेटिन में 'आर्टम' और 'आर्स' से कला को व्यक्त किया गया है। यहाँ शारीरिक या मानसिक कौशल 'आर्ट' माना गया है।[6] इनके अर्थ वे ही हैं, जो संस्कृत भाषा में मूल धातु 'अर' के हैं। 'अर' का अर्थ है– बनाना, पैदा करना या रचना करना। इन अर्थों के अन्तर्गत कुछ सुखद, सुन्दर एवं मधुर सृजन है। कला शिल्प कौशल की प्रक्रिया है। अतः कला का अर्थ है–''शिल्प कौशल की प्रक्रिया से युक्त सुन्दर व सुखद सृजन रूप।'' दूसरे शब्दों में ''सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् की अभिव्यक्ति ही कला है।''[7]

1.6.2 कला के विषय में भारतीय अवधारणाएँ

भारतीय कला चिंतन में सदैव मन की सात्विक प्रवृत्तियों को उजागर करने पर बल दिया गया है। हमारी कला में आत्मचैतन्य की प्रधानता है। कला विचार भौतिक स्वरूप में परिवर्तित होता है लेकिन उसका उद्देश्य मात्र वस्तु के भौतिक स्वरूप को दर्शाना नहीं होता अपितु उसके आन्तरिक लक्षणों को भी दर्शाना होता है। उसमें कलाकार के अतर्मन की प्रतिच्छाया देखी जा सकती है। वह स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रस्थान करने वाली है। स्थूल में सूक्ष्म की चेतना को जागृत करना ही भारतीय कलाकारों का सर्वोपरि उद्देश्य रहा है। कला सृजन से मन और आत्मा का साक्षात्कार सौन्दर्य से होता है। उसे शांति मिलती है। कलाकार का सृजन, कला का सृजन है। उसकी अनुभूति कला की अनुभूति है। कला के माध्यम से रूप और सौन्दर्य का सृजन होता है। कला अव्यक्त को व्यक्त करने वाली तथा अमूर्त को मूर्त प्रदान करने वाली है। भारतीय दृष्टिकोण से कला रसानुभूति के लिए किया गया सृजन है। कला मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। अतः दार्शनिकों ने कहा है–''कला ही जीवन है'' वास्तव में कला जीवन जीने की पद्धति, जीने का एक ढंग है। कला के द्वारा ही जीवन को पूर्णता व दक्षता के साथ बिताया जा सकता है। कला मानवीय क्रिया है, जिसमें उसकी प्रकृति, रूप और भाव सम्मिलित रहते हैं। सर्वश्रेष्ठ कला सदैव चेतना को स्पर्श करती है।

'नाट्य शास्त्र' में कलाओं का वर्गीकरण 'गौण' एवं 'मुख्य' कला के रूप में किया गया है। वही कला आगे चलकर 'कारू' और 'चारू' कलाएँ कहलाई। जिसे 'आश्रित' और 'स्वतंत्र' कला भी कहा जा सकता है। विद्वानों ने काव्य, संगीत, चित्र–शिल्प, नृत्य–नाट्य और वास्तु सभी में परस्पर तादात्म्य स्थापित करते हुए, इन्हें ग्रंथों में सम्मिलित किया है। ये सभी ललित कलाएँ स्वतंत्र शास्त्र के रूप में पहचानी जाती हैं।

'मार्कण्डेय मुनि' रचित 'विष्णु धर्मोत्तर पुराण' के 'चित्रसूत्र' अध्याय में इसके महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। काव्य की भाँति चित्र को भी धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष देने वाली कला माना गया है। जहाँ इसकी प्रतिष्ठा की जाती है, वहाँ मंगल होता है, यथा–

कलानां प्रवरं चित्र,
धर्म कामार्थ मोक्षदम्।
मांगल्यं प्रथमं चैतद्,
गृहे यत्र प्रतिष्ठितम्।।[8]

जयशंकर प्रसाद के अनुसार–"ईश्वर की कर्त्तव्य शक्ति का मानव द्वारा शारीरिक तथा मानसिक कौशलपूर्ण निर्माण कला है।"[9]

'के.सी. पाण्डे' के अनुसार – "आनन्द देने वाली वस्तु कला है।"[10]

'डॉ. नगेन्द्र' के अनुसार – 'कलाएँ प्रीतिकर होती हैं।'

यह प्रीति का भाव जड़ को चेतन बना देता है।
वैज्ञानिक पदार्थ को सत्य मानकर,
अपना शोध कार्य करता है, इसलिए वह मात्र
जड़ता का ही विश्लेषण करता है,
बदले में उसे पदार्थ ही हाथ लगता है।
जिसे वह छूकर, देखकर और चखकर ही,
सत्य मानता है क्योंकि बुद्धि की वृत्ति
संदेह परक होती है। जबकि एक रचनाकार
सभी में सौन्दर्य खोजता है और उसे
एक नया सौन्दर्य हाथ लगता है

क्योंकि वह उस पर विश्वास करता है
और नव सृजन को जन्म देता है;
यही है, चेतना का गुण और
कला की उदात्त प्रवृत्ति। इस प्रकार विज्ञान
वस्तु को टटोलता है, कला चेतना को।
अतः विज्ञान को कला अथवा
कला को विज्ञान समझना
ललित कला की स्वतंत्रता का हनन है।[11]

1.6.3 कला के विषय में पश्चिम की अवधारणाएँ

कला का स्वरूप अत्यन्त व्यापक है। कला के सम्बन्ध में जिस प्रकार भारतीय दार्शनिकों, विद्वानों विचारकों और साहित्यकारों ने अपने विचार प्रकट किए हैं, परिभाषाएँ दी हैं, उसी प्रकार पश्चिमी विद्वानों ने भी कला को अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है।

महान् विचारक प्लेटो ने कला के विषय में अनेक ठोस विचार रखे। प्लेटो के अनुसार–प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर वस्तु को अपना प्रेमास्पद चुनता है, अतः कला का प्राण सौन्दर्य है। उन्होंने कला को 'सत्य' की अनुकृति की अनुकृति माना है।[12] अरस्तु उसे अनुकरण कहते है।[13] हीगेल ने कला को आदिभौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है। क्रौचे की दृष्टि से कला बाह्रय प्रभाव की आन्तरिक अभिव्यक्ति है।[14] टॉल्सटॉय की दृष्टि में क्रिया, रेखा, रंग, ध्वनि, शब्द आदि के द्वारा भावों की वह अभिव्यक्ति जो श्रोता, दर्शक और पाठक के मन में भी वही भाव जागृत कर दे, 'कला' है।[15] फ्रायड ने कला को मानव की दमित वासनाओं का उभार माना है। हरबर्ट रीड़ अभिव्यक्ति के आल्हादक या रंजक स्वरूप को कला मानते है।[16]

भारतीय व पाश्चात्य विचारकों ने कला की भिन्न–भिन्न परिभाषाएँ करते हुए कला के अनेक पहलुओं को हमारे समक्ष रखा है। उसकी विविध दिशाओं की ओर इंगित किया है। किसी ने नैतिकता पर बल दिया है तो कोई उसकी सृजनात्मकता पर बल देता है। किसी ने कला को कल्पनाजन्य सृजन का माध्यम बताया है तो किसी ने उसे ईश्वरीय जगत के सामंजस्य का प्रतीक बताया है। कुछ दार्शनिकों ने कला में विचारों की प्रधानता को तरजीह दी है तो कुछ उसे अभिव्यंजना की कला मानते हैं। कला के रूप सौन्दर्य की उपस्थिति का पक्ष

भी अनेक विचारकों ने लिया है। कला को कुछ विद्वान सहज ज्ञान से प्रेरित बताते हैं तो कुछ उसे अर्धचेतन मस्तिष्क की उपज कहते हैं। कला वस्तुतः सत्य की अभिव्यक्ति है। सत्य और स्वस्थ कल्पना के अभाव में उसका कोई अस्तित्व नहीं। उसमें विचार तो अवश्य होना चाहिए किन्तु उस पर उपयोगिता और आदर्श का दबाव नहीं होना चाहिए। कला और कलाकार सदैव स्वच्छन्द रहकर ही अपने वास्तविक आदर्श की पूर्ति कर सकते हैं।

1.7 संगठन का अर्थ एवं परिभाषा

प्रबन्ध की दृष्टि से 'संगठन' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है। प्रथम अर्थ में, संगठन से आशय 'संगठन के ढाँचे' (Structure of organisation or Entity) से है। इस अर्थ में संगठन मूलतः ऐसे व्यक्तियों का समूह है, जो औपचारिक सम्बन्धों द्वारा संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु साथ मिलकर प्रयास करते हैं।

द्वितीय अर्थ में, संगठन से आशय एक प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा उपक्रम की विभिन्न क्रियाओं को परिभाषित किया जाता है, उन्हें समूह में बाँटा जाता है तथा उनके बीच अधिकार सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस प्रक्रिया में यह निर्धारित किया जाता है कि निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कौन–कौन सी क्रियाएँ की जायेंगी तथा इन क्रियाओं को विभिन्न व्यक्तियों में निष्पादन हेतु किन–किन समूहों में बाँटा जायेगा। इस प्रक्रिया द्वारा ही विभिन्न व्यक्तियों के मध्य कार्य निष्पति हेतु अधिकार एवं उत्तरदायित्व सौंपे जाते हैं।

संगठनात्मक सिद्धान्त की विषयवस्तु के रुप में 'संगठन' शब्द का प्रयोग 'संगठित इकाई' (Organised unit) के रुप में किया जाता है। मेक्स वेबर ने संगठन को निगम समूह के रुप में परिभाषित किया है, जिसमें आदेश की एक निश्चित व्यवस्था होती है, जो एक संगठन को अन्य संगठन से (जैसे– परिवार, समुदाय आदि) पृथक् करती है।[17] बनार्ड ने संगठन को समन्वित क्रियाओं की सचेतन पद्धति या दो या अधिक व्यक्तियों की क्रियाओं में समन्वय स्थापित करने वाली पद्धति के रुप में परिभाषित किया है।[18] इनमें संगठन के निम्न तत्वों पर बल दिया है– (1) सम्प्रेषण (2) सेवा की इच्छा तथा (3) समान उद्देश्य

1.7.1 संगठन विचारधारा

संगठन विचारधारा को संगठन के ढ़ाँचे, कार्य–प्रणाली तथा निष्पादन, जिसके भीतर व्यक्ति तथा समूह का व्यवहार भी सम्मिलित है, के अध्ययन के रुप में परिभाषित किया जा सकता है। हेनरी एल. टोसी के अनुसार, ''संगठन विचारधारा अन्तर्सम्बन्धित अवधारणाओं, परिभाषाओं तथा गुणों का एक समूह है, जो व्यक्तियों तथा उप–समूहों के व्यवहार को व्यवस्थित रुप में प्रस्तुत करता है; जो कि आपस में अन्तक्रिया करते हैं तथा जिसका विचार लक्ष्य–अभिमुखी होता है।''[19] हॉज तथा जानसन का मत है कि संगठन विचारधारा निम्न आठ संघटकों से निर्मित होती है–लक्ष्य, कार्य, अधिकार एवं सत्ता, आकार एवं जटिलता, संगठन प्रचना, अनुकूलन एवं परिवर्तन परिसीमा एवं वातावरण तथा तकनीकी। इनके अनुसार ''संगठन विचारधारा को सम्बद्ध अवधारणाओं, सिद्धान्तों एवं परिकल्पनाओं के समूह के रुप में परिभाषित किया जा सकता है, जिनका संगठन के संघटकों एवं वे किस प्रकार व्यवहार करते हैं, की व्याख्या में प्रयोग किया जाता है।'' कार्ल हेयल का मत है कि ''संगठन विचारधारा का अध्ययन एवं शोध के पृथक् क्षेत्र के रुप में उद्गम विभिन्न शैक्षणिक विधाओं के संयुक्तीकरण के रुप में हुआ है। यद्यपि अभी तक इसका पूर्ण रुप से विकास नहीं हो पाया है, फिर भी यह मूलतः व्यवहारवादी विज्ञान से सम्बद्ध है, जो संगठन के मानवीय व्यवहार की व्याख्या तथा अनुमान करने का प्रयास करती है।''[20]

अनेक विद्वानों का मत है कि संगठन विचारधारा, प्रबन्ध विचारधारा, संगठनात्मक व्यवहार आदि के समान ही है क्योंकि इनकी विषयवस्तु भी संगठन विचारधारा की विषयवस्तु से काफी मिलती–जुलती है। वास्तव में ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए, प्रबन्ध विचारधारा तथा संगठन विचारधारा की प्रकृति एवं क्षेत्र में व्यापक अन्तर विद्यमान हैं। यद्यपि प्रबन्ध विचारधारा संगठन विचारधारा पर ही आधारित होती है, फिर भी इसकी विषय–वस्तु मानव व्यवहार की प्रकृति के मूल्यों तथा दार्शनिक मान्यताओं से सम्बद्ध होती है, सम्मिलित नहीं है। स्टोगडिल का मत है कि ''संगठन विचारधारा आवश्यक रुप से प्रबन्ध विचारधारा नहीं है, दोनों में पर्याप्त अन्तर विद्यमान है। प्रबन्ध विचारधारा अभ्यास की विचारधारा है, जिसकी तथ्यों तथा सुदृढ़ सिद्धान्तों में रुचि होती है, लेकिन मानव प्रकृति तथा मानव सम्बन्धों से सम्बद्ध अभ्यास की विचारधाराएँ सदैव से चिन्तन स्कूलों से सम्बद्ध रही हैं, जिनमें दार्शनिक रुप से अन्तर पाया जाता है।''[21] यद्यपि प्रबन्ध व्यवहार के विभिन्न आयामों को वास्तविक रुप से प्रभावित नहीं

करती हैं। ''संगठन विचारधारा सत्यापित ज्ञान को प्राप्त करने का एक उदाहरण है, वैचारिक मतभेद समाप्त करने का नहीं।'' यह विचार प्रबन्ध विचारधारा तथा संगठन विचारधारा में स्पष्ट अन्तर दर्शाता है।

संगठन विचारधारा मूलतः इस बात से सम्बद्ध है कि 'एक संगठन क्या है' तथा विभिन्न संरचनात्मक दशाओं में क्या हो सकता है। यह ''क्या करता है'' के अलावा व्यवहार की स्थिति से सम्बद्ध सूचनाओं की पूर्ति करती है। दूसरी ओर प्रबन्ध विचारधारा अभ्यासों की विचारधारा है, जो इस बात की व्याख्या करती है कि निश्चित परिणामों की उपलब्धि के लिए क्या करना है। संक्षेप में, संगठन विचारधारा इस बात का वर्णन करती है कि ''विभिन्न स्थितियों में क्या होगा'' जबकि प्रबन्ध विचारधारा में विभिन्न स्थितियों में व्यक्तिगत मूल्य व्यवस्था अहम् भूमिका निभाती है।

1.7.2 संगठन की विशेषताएँ

प्रथम, संगठन पहचानने योग्य मनुष्यों का समुदाय है। पहचान इसलिए सम्भव है कि समुदाय केवल देवीय आधार पर एकत्रित मनुष्यों का समूह ही नहीं है, अपितु यह व्यक्तियों का ऐसा समूह है, जो अन्तर–सम्बन्धित होते हैं। पहचानने योग्य समूह से आशय यह नहीं है कि सभी व्यक्ति एक–दूसरे को व्यक्तिगत–रुप से जानते है, अपितु यह विशेषता तो संगठन की सीमा को निर्धारित करती है। यह सीमा संगठन को वातावरण के अन्य संघटकों से पृथक् करती है।

द्वितीय, संगठन एक लक्ष्ययुक्त सृजन है। प्रत्येक संगठन के कुछ निश्चित लक्ष्य या लक्ष्यों के समूह होते हैं, जो सदस्यों या समूह की सहमति के द्वारा निर्धारित किए जाते हैं। सभी सदस्य मिलकर इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करते है। संगठन की सफलता या असफलता भी उसके तथ्यों की उपलब्धि के सन्दर्भ में ही मापी जाती है।

तृतीय, संगठन विचारयुक्त एवं सचेतन सृजित मनुष्य समुदाय है। इसका आशय यह है कि संगठन एवं इसके सदस्यों के मध्य में सम्बन्ध अनुबन्धात्मक होता है। व्यक्ति अनुबन्ध के माध्यम से संगठन में प्रवेश करता है। यदि संगठन उस व्यक्ति से असन्तुष्ट है तो उसकी जगह अन्य व्यक्ति को नियुक्त किया जा सकता है। संगठन पदोन्नति, पदानवयन, स्थानान्तरण आदि के द्वारा अपने सेविवर्ग को पुनर्गठित कर सकता है।

चतुर्थ, संगठन में सदस्यों की क्रियाओं के मध्य समन्वय होता है। क्रियाओं में समन्वय नितान्त आवश्यक है क्योंकि सभी सदस्य सामान्य सहमति द्वारा लक्ष्य प्राप्ति में योगदान करते हैं। यहाँ महत्वपूर्ण तथ्य यह है– क्रियाओं में समन्वय, न कि व्यक्तियों में समन्वय। इसका कारण यह है कि एक व्यक्ति एक ही समय पर अनेक संगठनों में कार्यरत हो सकता है तथा प्रत्येक संगठन में उसकी कुछ ही क्रियाएँ होती है। अतः लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु व्यक्तिगत की अपेक्षा विभिन्न क्रियाओं में समन्वय महत्वपूर्ण होता है।

मानव क्रियाओं में समन्वय के लिए एक संरचना की आवश्यकता होती है, जिसमें विभिन्न व्यक्ति प्रस्तुत होते हैं। संरचना, अधिकार या शक्ति केन्द्र उपलब्ध कराती है, जिसके द्वारा लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में विभिन्न क्रियाओं तथा प्रयासों में समन्वय तथा नियन्त्रण स्थापित किया जाता है।

संगठन की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता क्रियाओं के समन्वय में विवेकशीलता की है। प्रत्येक संगठन के कुछ विशेष प्रतिमान या व्यवहार के प्रभाव होते हैं। ये प्रतिमान सामूहिक रुप से निर्धारित किए जाते हैं तथा संगठन के प्रत्येक सदस्य से इनकी अनुपालना की अपेक्षा की जाती है। सदस्यों का व्यवहार, पुरस्कार तथा दण्ड व्यवस्था द्वारा शासित होता है। यह प्रत्येक सदस्य के लिए एक नियन्त्रक शक्ति का कार्य करता है।

उपर्युक्त विशेषताएँ एक संगठन को अन्य सामाजिक इकाइयों (जैसे परिवार, समुदाय, मित्रता आदि) से पृथक् करती हैं। इतना ही नहीं, आधुनिक संगठन अत्यधिक जटिल तथा विशाल होते हैं। यह विशेषता प्रबन्ध के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है क्योंकि एक बड़े संगठन में सदस्यों को अनेक स्तरों पर व्यवस्थित किया जाता है। यह विशेषता–अनेक विशिष्ट समस्याओं को उत्पन्न करती है, जिनमें निर्णय प्रमुख है। आधुनिक संगठन की यह विशेषता समन्वय को और भी जटिल बनाती है।

1.7.3 संगठन विचारधारा के उपयोग

किसी भी विचारधारा का प्रमुख उद्देश्य 'व्याख्या' तथा 'अनुमान' होता है। संगठन विचारधारा उस विशेष वर्ग की ओर अपना ध्यान केन्द्रित करती है, जो सामाजिक मानव समूह से सम्बद्ध होते हैं, जो कि एक संगठन में प्रचलित किए जाते हैं। वह विचारधारा इस

'सामूहिकता' के आन्तरिक विश्लेषण का प्रयास करती है ताकि उन महत्वपूर्ण चरों का पता लगाया जा सके, जो मानव व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं तथा जिसके द्वारा व आपस में अन्तक्रिया करते है। चूँकि संगठन एक खुली पद्धति हैं, अतः इसमें व्यवहार के व्यापक वातावरणीय पहलू को भी सम्मिलित किया जाता है। इन सब अध्ययनों का प्रमुख लक्ष्य आन्तरिक एवं बाह्रय को वातावरण को ध्यान में रखते हुए सन्दर्भ की रुपरेखा प्रस्तुत करना है ताकि संगठन में व्यवहार शैली को समझा जा सके तथा उसकी व्याख्या की जा सके। साथ ही, मानवीय आचरण से सम्बद्ध क्रियाओं के नियन्त्रण एवं पूर्वानुमान हेतु प्रबन्धकीय कार्यवाही के लिए वैज्ञानिक आधार उपलब्ध हो सके ताकि संगठनात्मक प्रभावशीलता में सुधार किया जा सके।

संक्षेप में, संगठन विचारधारा–

i. प्रबन्ध क्रियाओं के लिए, विशेषतः संगठनात्मक व्यवहार के अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए आधार प्रदान करती है।
ii. आन्तरिक एवं बाह्रय वातावरण का विश्लेषण करती है। इस अध्ययन एवं विश्लेषण के द्वारा संगठन में व्यवहार शैली को बेहतर समझा जा सकता है तथा एक सामान्य फ्रेम बनाया जा सकता है।
iii. संगठनात्मक प्रभावशीलता में वृद्धि करता है। इसके द्वारा मानवीय आचरण का बेहतर पूर्वानुमान एवं नियन्त्रण सम्भव होता है तथा व्यवहार शैली को प्रभावित करने वाले घटकों को ज्ञात किया जा सकता है।
iv. भावी क्रियाओं के लिए आधार प्रस्तुत करती है। संगठनात्मक व्यवहार का अनुमान प्रबन्धकों के लिए नितान्त आवश्यक होता है। संगठन विचारधारा संगठन में व्यक्तियों के व्यवहार को प्रभावित करने के लिए भावी क्रियाओं हेतु मार्गदर्शन उपलब्ध करती है।
v. संगठन में मानवीय व्यवहार को जानने तथा समझने में प्रबन्धकों को सहायता करती है। संगठन की स्थापित विचारधाराएँ प्रबन्धकों को यह मार्गदर्शन देती है कि वे विभिन्न स्थितियों में किस प्रकार बेहतर कार्य कर सकते है। इस प्रकार प्रबन्धक बिना 'आन्तरिक लागत' या 'भूल एवं सुधार पद्धति' के प्रबन्धकीय कुशलता में वृद्धि कर सकते है।

vi. शोधकर्ता को भी सहायता प्रदान करती है। यह विचारधारा उसे संगठन में अपने विचारों का परीक्षण करने तथा विचारधारा में अतिरिक्त सुधार का अवसर प्रदान करती है।

वास्तव में, संगठन विचारधारा का अध्ययन निम्नलिखित दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है–

i. वैचारिक परिप्रेक्ष्य में– मानव मात्र का उचित अध्ययन के बाहर के मानवीय प्राणी का अध्ययन किया जाए। प्रयोगशाला विधि का प्रतिस्थापन सांख्यिकी विधि के द्वारा कर गवेषण किया जा सकता है और स्वतन्त्र चरों का नियन्त्रण किया जा सकता है। इस प्रकार संगठन के भीतर व्यक्ति का अध्ययन उसी प्रकर किया जा सकता है, जिस प्रकार से प्रयोगशाला के भीतर व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है।
ii. व्यावहारिक कारणों से संगठन समाज एवं लक्ष्यों की प्राप्ति के मध्य एक महत्वपूर्ण संयंत्र है। आज के युग में व्यक्तिगत प्रयासों को एक सूत्र में पिरोकर उसे उत्पादकीय लक्ष्यों की दिशा में गति प्रदान करते हुए समाज के कल्याण हेतु प्रयोग करने में संगठनों का योगदान अति–महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से व्यक्ति, कार्य और साधनों के बीच अर्थ पूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर उत्पादकीय लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

वर्तमान समाज की समृद्धि में संगठन का इतना महत्व होते हुए भी इसका वैज्ञानिक अध्ययन काफी विलम्ब से प्रारम्भ हुआ है। वास्तव में, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से व्यवहार विज्ञान ने संगठन को अपने अध्ययन के क्षेत्र में स्वीकार किया है; जिसे 'संगठन विचारधारा' के नाम से जाना जाता है, किन्तु अभी तक इस सम्बन्ध में किसी व्यापक विचारधारा की अभिकल्पना नहीं हो पाई है।

1.7.4 संगठनात्मक व्यवहार

सामान्य शब्दों में संगठनात्मक व्यवहार से तात्पर्य संगठन में कार्यरत व्यक्तियों के व्यवहार के अध्ययन से है। इसमें इस बात का अध्ययन किया जाता हैं कि व्यक्ति संगठन में 'क्या' तथा 'क्यों' करता है तथा उसके व्यवहार का संगठन के कार्यों पर कैसा प्रभाव होता है। स्टीफन पी. रोबिन्स के अनुसार, ''संगठनात्मक व्यवहार अध्ययन का एक क्षेत्र है जो व्यक्ति, समूहों तथा ढ़ाँचे का संगठनों के भीतर व्यवहार पर होने वाले प्रमुख कारणों का अन्वेषण करता

है जिसका उद्देश्य ऐसी जानकारी को संगठन की प्रभावशीलता को बढ़ाने में उपयोग करना है।" एक अन्य स्थान पर रोबिन्स ने लिखा है कि "संगठनात्मक व्यवहार उस अध्ययन से सम्बन्धित है कि व्यक्ति संगठन में क्या करता है तथा उसका व्यवहार किस प्रकार उस संगठन के कार्य निष्पादन को प्रभावित करता है।"[22] इसके अनुसार–

i. संगठनात्मक व्यवहार अध्ययन का एक क्षेत्र है। यह सामान्य ज्ञान के साथ विशेषता का एक विशिष्ट क्षेत्र है।

ii. यह संगठन में व्यवहार के तीन निर्धारको का अध्ययन करता है– व्यक्ति, समूह तथा संरचना।

iii. संगठनात्मक व्यवहार व्यक्ति, समूह तथा संरचना के बारे में प्राप्त ज्ञान का प्रयोग संगठन को और प्रभावी बनाने के लिए करता है।

iv. संगठनात्मक व्यवहार मूलतः सेवायोजन सम्बद्ध स्थितियों से सम्बन्धित है। यह व्यवहार पर जोर देता है जो जॉब, कार्य, अनुपस्थिति, रोजगार आवर्तन, उत्पादकता, मानवीय निष्पादन तथा प्रबंध से सम्बन्धित होता है।

v. संगठनात्मक व्यवहार में मूल रुप में अभिप्रेरणा, नेतृत्व व्यवहार तथा शक्ति, अन्तर्वेयक्तिक सम्प्रेषण, समूह संरचना तथा प्रक्रिया, लर्निंग, मनोवृत्ति विकास तथा अवबोधन, परिवर्तन प्रक्रिया, संघर्ष, कार्य प्ररचना तथा कार्य दबाव को सम्मिलित किया जाता है।

vi. संगठनात्मक व्यवहार में 'अन्तर्ज्ञान' की बजाय व्यवस्थित रुप में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। ऐसा करना निम्न चार कारणों से महत्वपूर्ण हो गया है–

(अ) वैश्विक प्रतिस्पर्धा

(ब) व्यक्तियों के व्यवहार में बढ़ती जटिलता।

(स) ज्ञान में परिवर्तन (सूचना क्रांति, इंटरनेट, मोबाइल आदि)।

(द) व्यक्ति की प्रत्याशाओं में वृद्धि (बेहतर जीवन स्तर, आनंद, न्यूनतम श्रम आदि की माँग)।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी संगठनात्मक व्यवहार की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित है–

जॉय कैली के अनुसार, ''संगठनात्मक व्यवहार संगठन की प्रकृति का व्यवस्थित अध्ययन है– वे कैसे शुरु होते हैं, बढ़ते हैं तथा विकसित होते हैं तथा उनका व्यक्तिगत सदस्यों, संगठित समूहों, अन्य संगठनों तथा वृहत् संस्थाओं पर कैसा प्रभाव होता है।''[23]

एण्ड्रयू जे. डुबरिन का मत है कि संगठनात्मक व्यवहार ज्ञान की एक विशिष्ट शाखा है, जो अन्तर–विषयक दृष्टिकोण पर आधारित है तथा जिसे संगठनात्मक व्यवस्था में व्यवहारवादी विज्ञान के ज्ञान के उपयोग के रुप में परिभाषित किया जा सकता है।[24]

1.8 कला में समकालीनता अथवा आधुनिकता

समकालीनता या आधुनिक शब्द से आशय निर्माण अथवा रचना करना है जो मानव की सहज वृत्ति है। कला के सन्दर्भ में समकालीनता या आधुनिकता कला और कलाकार के नवीन प्रवर्त्तन का सूचक है। आधुनिक कला का आधुनिक होना, कला परम्पराओं और विभिन्न कला रूपों से उसका कट जाना नहीं है। दुर्भाग्य से यह एक भ्रान्ति फैली है कि आधुनिक कला का वास्ता तथाकथित आधुनिक रूपों को छोड़कर अन्य दूसरे कला रूपों से नहीं हैं और न ही शायद होना चाहिए। समकालीन कला की विशेषता है कि वह न तो पुरातन से जुड़ी है न किसी एक धारा वाद, विचार और नियमों से निर्देशित है तथा न ही किसी परम्परा और इतिहास को पूर्णतः नकारती है, उसमें स्वीकार–अस्वीकार का मिश्रण है। यह अन्तर्राष्ट्रीयता, साहस तथा निरन्तर अन्वेषणमुखी और एक सीमा तक अराजक भी हैं।[25]

कला में प्रचलित विभिन्न शैलियों तथा प्रवृत्तियों के संदर्भ में समसामयिक एवं आधुनिकता प्रायः समानार्थी शब्द रहे हैं। आधुनिकता भौगोलिक परिवेश, यान्त्रिकता, फैशन या जड़वाद नहीं हैं तथा न ही सामाजिक पुनर्निमाण की परिकल्पना है। वर्तमान में जिन वस्तुओं का अस्तित्व है, यह तो उन्हें भी पूरी तरह परिमित नहीं करती। कला साहित्य अथवा अन्य सृजनात्मक गतिविधियों में आधुनिकता का आकलन एक ज्वलन्त समस्या या प्रश्न है जो जटिल होने के साथ विविध प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है तथा किसी भी प्रकार के विश्लेषण से दूर है। एक वर्ग के लिए आधुनिकता यान्त्रिकता की समानार्थी है जो अंशतः अश्लील तथा अवनत भी है। दूसरा वर्ग आधुनिकता को पाश्चात्य भौतिक सभ्यता का द्योतक समझता हैं। नयी पीढ़ी आधुनिकता को सामाजिक संगठन का एक 'परिवर्तनकारी सिद्धान्त' मानती है, जिसमें पारम्परिकता को सहज रूप में त्यागने की भावना निहित है। आधुनिकता का प्रमुख तत्व

सचेतना है। मानव के इच्छित प्रयासों द्वारा एकांगिता एवं तनाव से उत्पन्न द्वन्द्व का नवीन प्रस्तुतीकरण ही आधुनिकता है जो समयानुसार मानवीय गतिविधियों को स्थिरता तथा विविध दिशाएं देती है।[26]

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में, राजनीतिक व सामाजिक परिस्थिति में आये बदलाव व वैचारिक क्रान्ति के साथ कदम बढ़ाते हुए योरोपीय कलाकारों ने स्वतन्त्र होकर निजी प्रेरणा से कला सर्जन शुरू किया। प्रभाववादियों ने अमिश्रित रंगों व स्पष्ट तूलिकाघातों का चित्रण में प्रयोग कर भविष्य के कलाकारों का ध्यान विषय की अपेक्षा माध्यम के स्वाभाविक गुणों की रक्षा करने के महत्व की ओर आकर्षित किया। उनकी कला में मानवीय भावनाओं का कोई महत्व नहीं था। अभिव्यक्ति के विचार से आधुनिक कला में सबसे क्रान्तिकारी कदम सर्वप्रथम उत्तर–प्रभाववादी कलाकारों ने उठाये यद्यपि उनकी अंकन पद्धति का आरंभिक आधार प्रभाववाद ही था। ये कलाकार थे सेजान, गोग्वं, वान गो व सोरा। इन्होंने अनुभव किया कि नैसर्गिक रूप से सादृश्य से कलाकृति इतनी प्रभावी नहीं बनती जितनी कि रचना सिद्धान्तों के मौलिक प्रयोग से या कल्पना की सहायता से; इसके अलावा नैसर्गिक रूप की नकल मात्र करने में कलाकार को मौलिक सृजन का आनंद नहीं मिल पाता न अपने करने का सुख। यहीं से आधुनिक कला की अग्रिम यात्रा विभिन्न दिशाओं में आरम्भ हुई।[27]

विभिन्न कलाओं के माध्यम से अपने विचारों व कल्पनाओं का प्रस्तुतीकरण कलाकार द्वारा किया जाता है। परन्तु आज के समकालीन कलाकार का 'प्रोफाइल' बहुत बदल गया है– वह बोहेमियन, फक्कड़ किस्म का आदमी नहीं है। वह न वॉन गॉग की तरह है न पिकासों की तरह। आज के समय में इस बात की बहुत कम सम्भावना है कि किसी कलाकार में बड़ी प्रतिभा है, तो वह दबी–छिपी रहेगी या उसे कड़ी आर्थिक दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। आज का कलाकार दुनिया को अपनी शर्तों पर पाना चाहता हैं।[28]

आधुनिकता का तत्त्व वास्तव में चेतना की एक विशेषता है। यह तनाव या एकाग्रता की विशिष्ट स्थिति है, जो मानवीय इच्छा और प्रयास के रूप में तब प्रकट होती है, जब यह परिवर्तित रूपाकार के साथ उलझती है, जब यह नए को समझने के लिए संघर्ष व प्रयत्न करती है। यह वह स्थिति है, जो किसी युग के मानवीय कार्यकलाप को भावपूर्ण व ओजस्वी दिशा प्रदान करती है। चेतना की इस विशेषता का संचालन ब्रह्मांड की अंतर्भूत शक्ति की तरह

ही है, जो सभ्यता के प्रत्येक नए सृजन के साथ तरंगायित हो उठती है। इसकी कार्यप्रणाली को हम लीला की अवधारणा के संदर्भ से समझ सकते हैं—एक ऐसा रूपाकार जो आंतरिक रूप से संघटित व विघटित होता रहता है:

तदेव बुह भवन प्रणोजने नाद्यप निब्रतम्।।[29]

(इसका आकार व स्वभाव काल व दिक् से निर्धारित होता है।)

कला के आकार अक्सर समय की शक्तियों से निर्धारित होते हैं। उदाहरण के लिए यूरोपीय संस्कृति दो प्रवृत्तियों का मिश्रण है—ग्रीक सभ्यता, जो प्रमुख प्रवृत्ति है और ईसाइयत, जो अपने प्रादुर्भाव के मामले में पूर्व की है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों ने पुनर्जागरण से पहले तक यूरोप के जीवन की दिशा व अभिवृत्ति को निर्धारित किया है। पुनर्जागरण के बाद तो सुधार आंदोलन, फ्रांस की क्रांति, औद्योगिक क्रांति और सामूहिक मनोरंजन के कारण यूरोप के सांस्कृतिक परिवेश में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए थे।

आधुनिक कला न केवल अपने सुस्पष्ट गुणों को प्रतिबिंबित करती है बल्कि गहन स्त्रोतों से भी प्रभाव ग्रहण करती है, मानव जाति में निहित मानवतावादी गुणों तक से। आधुनिक कलाकार ने अंतर्ज्ञान के स्त्रोतों को पुनः आविष्कृत किया है। कई कलाकार आधुनिक जीवन—शैली के कबाड़ (जंक) तथा काम में न आने वाले सामान का भी कला—सामग्री की तरह इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित हुए हैं और यह बात चेतना के सीमाहीन भंडार की पुष्टि करती है। इसे विरोधाभास ही कहा जाएगा कि कुरूपता से सुंदरता का सृजन किया जा रहा है, अर्थहीन लीक पर चलने के बजाय समकालीन अर्थ पर बल दिया जा रहा है। 'हैपनिंग्स' के द्वारा ऐसे प्रत्यक्ष गुणों को अभिव्यक्त किया जा रहा है, जो हमारे रोजमर्रा के जीवन का अंग हैं। पॉप कलाकार ने भी अपने आसपास के दृश्य—जगत की भरमार को आकार दिया है और इस तरह नए बिंबों के निर्माण के लिए उसे बुनियादी कला—सामग्री की तरह इस्तेमाल किया है।[30] वर्तमान में यह व्यक्तिपरकता शोध के लिए प्रेरित कर रही है और उसके केंद्र में है मानव, जो अपने आप में एक पूर्ण विकसित विषय है। यद्यपि कला का अनुभव मुख्यतः उसके दृश्य तत्त्वों के माध्यम से किया जाता है लेकिन यह दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी अभिव्यक्ति करती दिखाई दे रही है।

समकालीन अथवा आधुनिक कला वस्तुतः बीसवीं शताब्दी की कलाओं की हलचल व उत्तेजना भरी गतिविधियों की द्योतक है। कुछ लोगों ने इस कला को वर्तमान शताब्दी की असंगति की प्रवक्ता कहा है। उनका कहना है कि हलचल भरी गतिविधि के पीछे कोई अनुभूति या आस्था नहीं है। आधुनिक कला आंदोलन में अंतर्दृष्टि की समग्रता नहीं है। आधुनिक कलाकारों ने जीवन के यथार्थ को टुकड़ों में ही देखा है। हमें इस कथन पर भी ध्यान देना चाहिए, जो सेज़ां ने अपने मित्र विलॉर्ड से कहा था : "अंतर्दृष्टि का चित्रांकन आसान है लेकिन संवेदन का चित्रांकन बड़ा तकलीफदेह है।"[31] अधिकांश आधुनिक कलाकार इन संवेदनों का अनुभव करने की खोज में संलग्न थे, न कि अंतर्दृष्टि के चित्रांकन में।

समकालीन कलाकारों द्वारा अपनाए गए रूपाकारों के प्रति भी विरोध जताया गया है। इसकी आलोचना यह कहकर की गई–लगता है कि आधुनिक कलाकार की सोच यह है कि चीरफाड़ से पहले मरना जरूरी है। यह अनुभव किया जा रहा है कि समकालीन कला में वैज्ञानिक हठधर्मिता की खातिर मानवता की बलि चढ़ा दी गई है।

कुछ आलोचकों का मानना है कि बीसवीं शताब्दी के चित्रकारों ने कला को एक ऐसे दृष्टिकोण से देखा है, जो पूर्णतया तकनीकी है। रूपाकार संबंधी समस्याओं पर इतना अधिक ध्यान दिया गया है कि कलाकृतियाँ प्रयोगशाला के अनुभवों की तरह लगने लगती हैं। समकालीन कला में बौद्धिक पक्ष इतना अधिक हावी हो जाता है कि आम दर्शक इन अनुभवों के भरोसे कोई सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाता और यह एक निंदनीय बात है। अतियथार्थवादी भी, जिन्हें अपने चित्रों में मनोवैज्ञानिक साहसिकता को लेकर खासी खुशी मिलती है, कलाप्रिय दर्शकों की प्रशंसा पाने में असमर्थ रहे हैं। चित्रों में मानव आत्मा के गहन अनुभवों के अंकन के लिए कोई अनुकूल प्रतिक्रिया कहीं दिखाई नहीं देती। इसी तरह फंतासी–जन्य व अलौकिक दुनिया की चाक्षुष अभिव्यक्ति भी समकालीन कलाकारों की कृतियों में स्पष्टता से प्रकट होती दिखाई नहीं देती।

आधुनिकता ने कलाकारों के लिए रंगों को नए तरीके से देखना संभव किया है। इसने उनके संवेदनों को समृद्ध किया। इसने उनकी तकनीक को, नए उपकरणों के उपयोग से, संपन्न किया। आंतरिक संसार के अन्वेषण के कारण अतियथार्थवादियों ने अंतर्बोध की शरण ली। व्यक्ति द्वारा भावप्रवण अन्वेषण का एक उपकरण है तर्क और तर्क का अनुमान है कि

प्रकृति का हर पदार्थ शंकु, बेलनाकार और गोल ही होना चाहिए। नव–प्रभाववादी कलाकारों के चरम विश्लेषण के बाद यह एक चरम संश्लेषण है। अन्य पद्धतियों की तरह आधुनिक कला ने भी चित्रकारों को एक तरह का अनुशासन दिया था। घनवाद के रचनात्मक प्रयास नई बौद्धिक व्यवस्था के हलचल मचा देने वाले लक्षण थे और इसके बाद फॉववाद, भविष्यवाद और अतियथार्थवाद ने पदार्पण किया था।

आज परम्परागत कला शैलियों व तकनीकों का स्थान नवीन प्रयोगों व यन्त्रों ने ले लिया है। इन्स्टालेशन आर्ट, डिजिटल आर्ट, मिश्रित माध्यम आदि कला की नवीन तकनीकें है। ये नवीन तकनीकें समकालीन कला परिदृश्य को प्रतिबिम्बित कर उसमें प्राणशक्ति का स्पन्दन कर रही हैं।

सन्दर्भ

1. डॉ. देवराज उपाध्याय : साहित्य अनुसंधान के प्रतिमान, पृष्ठ–45
2. ऋग्वेद, 8/47/16
3. भरतमुनि : नाट्यशास्त्र, 1/116
4. भोलानाथ तिवारी : कला सम्मेलन पत्रिका, कला–अंक, पृष्ठ–19
5. वासुदेव शरण अग्रवाल : कला और संस्कृति, पृष्ठ–227–235
6. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, भाग–2, पृष्ठ–484
7. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–4
8. विष्णु धर्मोत्तर पुराण–चित्र सूत्रम, 43/38
9. जयशंकर प्रसाद : काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध, पृष्ठ–15
10. डॉ. के.सी. पाण्डे : स्वतंत्र कला शास्त्र, पृष्ठ–4
11. डॉ. नगेन्द्र : रस सिद्धान्त, पृष्ठ–7
12. स्कॉट जेम्स : दि मेकिंग ऑफ लिटरेचर, पृष्ठ 37–46
13. अनुवादक–डॉ. नगेन्द्रः अरस्तु काव्यशास्त्र, पृष्ठ–6
14. क्रौचे बेनादेत्तो : एस्थैटिक, पृष्ठ–13
15. टॉलस्टॉय : व्हाट इज आर्ट, पृष्ठ–123
16. हरबर्ट रीड : दि मीनिंग ऑफ आर्ट, पृष्ठ–16
17. मेक्स वेबर : दि थ्योरी ऑफ सोशियल एण्ड इकोनॉमी ऑरगानाईजेशन, पृष्ठ 145–146
18. चेस्टर आई. बनार्ड : दि फक्शन्स ऑफ द एक्जिक्यूटिक्स, पृष्ठ–73
19. हेनरी एल. टोसी : थ्योरी ऑफ ऑरगानाईजेशन, पृष्ठ–7
20. कार्ल हेयल (सम्पादक) : द एनसाईक्लोपीडिया ऑफ मेनेजमेन्ट, पृष्ठ–799
21. आर.एम. स्टोगडिल : ''डाइमेन्शंस ऑफ ऑरगानाईजेशन थ्योरी'', जैम्स डी. थॉमसन (सम्पादक) : अप्रोचेज टू ऑरगानाईजेशन डिजाईन, पृष्ठ–51
22. स्टीफन पी. राबिन्स : ऑरगानाईजेशन बिहेवियर, पृष्ठ–9
23. जॉय कैली : ऑरगाईनेशनल बिहेवियर, पृष्ठ–21
24. एण्ड्रयू जे. डुबरिन : द प्रेक्टिक्स मैनेजरियल साईकोलॉजी, पृष्ठ–39
25. ए.एल. दमामी : राजस्थानी की आधुनिक कला एवं कलाविद्, पृष्ठ 115

26. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–2
27. र.वि. साखलकर : कला के अन्तदर्शन, पृष्ठ–125
28. विनोद भारद्वाज : कला का रास्ता, पृष्ठ–23
29. 'छांदोग्य उपनिषद' पर शंकर भाष्य, खण्ड 4/3/2
30. प्राण नाथ मागो :भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–11
31. वही

अध्याय-द्वितीय

भारत का समकालीन कला परिदृश्य

भारत का समकालीन कला परिदृश्य

भारतीय कला में एक युग की समाप्ति के साथ ही दूसरे युग का उदय होता रहा है। अजन्ता, जैन, मुगल, राजस्थानी एवं पहाड़ी परम्परा का एक दूसरे के मध्य अटूट रिश्ता रहा। भारत पर विदेशी आक्रमणों का सिलसिला लम्बे समय तक चलता रहा, जिससे अनेक सांस्कृतिक प्रभाव भी पड़े। डच, पुर्तगाली एवं अंग्रेजों का भारत में व्यापार आरम्भ हुआ एवं कला का आदान प्रदान भी आरम्भ हुआ। विदेशी कलातत्त्वों को स्वीकार करने एवं पारम्परिक कला के साथ जोड़ने से कला में नवीन युग का शुभारंभ हुआ। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही आयातित संस्कृतियों के गुणों को आत्मसात करने की क्षमता रही है। वस्तुतः 17वीं शताब्दी से ही चित्रण पद्धति, परिप्रेक्ष्य, छाया प्रकाश, यथार्थवादी शैली तथा माध्यम आदि की तकनीकों को अपनाने के साथ ही पाश्चात्य शैली का प्रभाव भारतीय कला में परिलक्षित होने लगा था। भारतीय पारम्परिक ज्ञान अथवा शिक्षा की अपेक्षा पाश्चात्य शिक्षा का प्रचलन बढ़ने लगा। कला के क्षेत्र में भी प्राचीन परम्पराओं का स्थान पाश्चात्य शैलियों तथा तकनीकों ने ले लिया था। पाश्चात्य विद्ववानों के नेतृत्व में भारतीय संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन भी प्रारम्भ हुआ। वो भारतीय संस्कृति और कला से चमत्कृत थे लेकिन फिर भी अंग्रेजी शासकों ने भारतीय कला के पोषण के बजाय पाश्चात्य कला को भारत में पोषित करना ही उचित समझा। इस उद्देश्य से भारत के तत्कालीन तीन महानगरों चेन्नई (1850 ई.) कोलकाता (1854 ई.), तथा मुम्बई (1857 ई.) में क्रमशः कला विद्यालयों की स्थापना की गयी।

2.1 भारत में कला का क्रमिक विकास

2.1.1 भारत के प्रमुख कला विद्यालय

आनन्द कुमार स्वामी ने अपनी पुस्तक 'कला और स्वदेशी' के 'कला–विद्यालयों के कार्य' शीर्षक अध्याय में लिखा है,''भारत में कला विद्यालयों का सच्चा कार्य यूरोपीयन तरीकों और आदर्शों का समावेश और प्रचार करना नहीं हैं, बल्कि भारतीय परम्परा के टूटे हुए सम्पर्क सूत्रों को फिर बटोरना और उन्हें शक्तिशाली बनाना है। उन्हें राष्ट्रीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग के रूप में भारतीय कला के विचार को मूर्त करना है और भारतीय शिल्पियों को भारतीय जनता के जीवन और चिन्तन के अनुरूप ढालना है।''

तत्कालीन कला विद्यालयों ने वस्तुतः देश के प्रमुख शहरों में कलाकारों तथा प्रबुद्ध वर्ग को एक धरातल तथा स्थान पर एकत्रित किया तथा एक ऐसा ताना–बाना बुना जिससे कला–शिक्षा का स्वरूप निर्धारित हो गया। भारत में कला विद्यालय पाश्चात्य कला शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रारम्भ किये गये थे। तत्कालीन उच्च वर्ग के कुछ विद्यार्थियों ने इन विद्यालयों में प्रवेश लेकर नवीन अकादमिक तकनीक को पूर्ण जिज्ञासा एवं मनोयोग से सीखने का प्रयास किया, क्योंकि वे भारतीय तथा यूरोपीय दोनों ही कला पद्धतियों से विशेषतः परिचित नहीं थे। इन विद्यालयों में 'ब्रिटिश रॉयल एकेडमी ऑफ लन्दन' की कला शैली का अनुसरण किया गया। जिसमें परिप्रेक्ष्य, छाया–प्रकाश तथा मानव–शरीर संरचना के अध्ययन पर अधिक बल दिया जाता था। यह शिक्षा यूरोपीय शैली व पद्धति की ओर आकर्षित करती थी जिसमें कलाकार एवं विद्यार्थी तत्कालीन श्रेष्ठ आदर्शों एवं चित्रभाषा का अध्ययन करते थे। भारत के प्रमुख कला विद्यालय निम्नलिखित हैं –

2.1.1.1 गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, चेन्नई (1850 ई.)

इसकी स्थापना मद्रास रेजीमेण्ट के शल्य चिकित्सक डॉ. एलेक्जेण्डर हण्टर द्वारा 'मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट' नाम से 1850 ई. में की गयी। 1852 ई. में स्थानीय यूरोपीय शासन ने इसका संचालन नवीन सम्बोधन 'गवर्नमेन्ट स्कूल ऑफ इन्डस्ट्रीयल आर्ट' से कर अपने अधीन कर लिया। ई.वी. हैवल ने सन् 1884 ई. में 'मद्रास कला विद्यालय' के प्राचार्य पद पर रहकर संबल प्रदान किया।[1] हैवेल ने 1892 ई. तक यहाँ रहकर कला–शिक्षा के उत्तरोत्तर विकास में योगदान दिया। तत्पश्चात् 1929 ई. में मूर्तिकार देवीप्रसाद राय चौधरी प्रथम भारतीय प्राचार्य नियुक्त हुए उनकी शर्त यह थी कि वे अपने पद पर रहते हुए अपने मन से मूर्तियाँ बनाने को स्वतंत्र होगे। विद्यालय प्रशासन ने उनकी शर्ते मान ली और यहाँ रहते हुए उन्होंने अपनी बहुमूल्य कृतियों की रचना की जो आज भारतीय कला की अमूल्य निधियाँ हैं।[2]

मछलीपट्टनम में नन्दलाल बोस तथा राजमुंदरी में दमराला रामाराव की उपस्थिति होने के कारण चेन्नई (तत्कालीन मद्रास) कला गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। 1925 ई. में रामाराव की मृत्योपरान्त उनके अनुगामी तथा अन्य महत्त्वपूर्ण कलाकार देवीप्रसाद राय चौधरी के सानिध्य में कला सृजन करने लगे जो एक महत्वपूर्ण चरण था। देवीप्रसाद ने चेन्नई में नवीन सांस्कृतिक विचारधारा को एक निश्चित स्वरूप देने के साथ ही बंगाल शैली को भी प्रोत्साहन दिया तथा यूरोपीय प्रभाववादी कलाकारों के विचारों का भी प्रसार किया तथापि बंगाल स्कूल का चेन्नई की स्थानीय कला परम्परा से कोई साम्य नहीं बन

पाया। 1957 ई. में के.सी. एस. पणिकर यहाँ के प्राचार्य बने। अपने कार्यकाल में पणिकर ने मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स को नई गरिमा दी तथा उसे एक राष्ट्रीय कला संस्थान के रूप में पहचान दिलाई। पणिकर ने सबसे पहले यहाँ के कला वातावरण को ठीक किया, फिर योग्य अध्यापकों की नियुक्ति की तथा कलाकारों को नई तकनीकों का ज्ञान देने की व्यवस्था की गई। देवी प्रसाद राय के अधूरे कामों को पूरा कर पणिकर ने चेन्नई को एक बड़े कला केन्द्र के रूप में विकसित किया।[3] 1961 ई. में इसे 'गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स' नाम दिया गया। 1997 ई. में यहाँ म्यूजियम ऑफ कन्टम्परेरी आर्ट की स्थापना की गई।

2.1.1.2 गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, कोलकाता (1854 ई.)

इण्डस्ट्रियल आर्ट सोसायटी गरनहट्ट, चितपुर स्थान पर 1854 ई. में भारतीय तथा यूरोपीय सदस्यों के संयुक्त प्रयासों से एक गैर सरकारी उद्यम के रूप में प्रारम्भ हुई, जहाँ 'स्कूल ऑफ इण्डस्ट्रीयल आर्ट' कला प्रशिक्षण संस्थान संचालित था। 1864 ई. में इसे 'गवर्नमेन्ट स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स' में परिवर्तित कर दिया गया। लार्ड नॉर्थब्रुक के नेतृत्व में इसका संचालन स्थानीय शासन ने ले लिया। लार्ड नॉर्थब्रुक ने यहाँ एक कला दीर्घा की स्थापना भी करवाई। इसके प्रथम प्राचार्य एच.एच. लॉक नियुक्त किये गये। 1896 ई. में इर्नेस्ट बेनफील्ड हैवेल ने यहाँ अधीक्षक व आचार्य का पद सम्भाला। इसी के साथ यह स्कूल आधुनिक भारतीय कला इतिहास का महत्त्वपूर्ण अंग बन गया। हैवल ने भारतीय लघु चित्रों, प्राचीन मूर्तिशिल्पों तथा अन्य कलाकृतियों की समालोचना करते हुये अपनी मौलिक कल्पना एवं विवेचना शक्ति को काम में लिया और उसे 'नये शब्दों', 'नई भाषा' से समृद्ध किया। कला समीक्षा को भी नये आयाम दिये, जिससे दर्शकों एवं पाठकों के सामने उसका महत्व दर्शा सके।[4] अवनीन्द्रनाथ टैगोर भी यहाँ उपाचार्य पद पर रहे जिन्होंने भारतीय पुनर्जागरण के कला आन्दोलन को आगे बढ़ाया। आपके शिष्यों में सुरेन्द्रनाथ गांगुली, असित कुमार हाल्दार, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, के. वेंकटप्पा, शैलेन्द्रनाथ डे, समरेन्द्रनाथ गुप्त, शारदाचरण उकील, नागहट्ट, नन्दलाल बोस, सुधीर खास्तगीर, मनीष डे, आदि प्रमुख रहे। इस समय यह कला महाविद्यालय भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ चुका था किन्तु पर्सीब्राउन के प्राचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात् यहाँ पुनः रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट, लन्दन के पाठ्यक्रम को समाविष्ट किया गया। 1951 ई. में यह स्कूल पूर्णतः डिग्री कॉलेज में परिवर्तित कर दिया गया। आधुनिक भारतीय कला इतिहास के मूर्धन्य कलाकार नन्दलाल बोस, सुरेद्रनाथ गांगुली, शैलेन्द्रनाथ डे, असित कुमार हाल्दार,

क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार, के. वेंकटप्पा, सुरेन्द्रकर, वीरेश्वर सेन, उकील बंधु, देवी प्रसाद राय चौधरी, मुकुल चन्द्र डे, चिन्तामणिकर आदि ने यहीं कला–शिक्षा प्राप्त की।

2.1.1.3 सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई (1857 ई.)

वर्ष 1853 ई. में सर जमशेदजी जीजीभाई ने मुम्बई में आर्ट स्कूल भवन निर्माण हेतु अनुदान दिया। वर्ष 1856 ई. में इस आर्ट स्कूल का भवन निर्माण पूर्ण हुआ तथा 2 मार्च, 1857 ई. में यहां कला शिक्षा का शुभारम्भ हुआ। मि. जी. विलिकन टेरी एवं मि. क्रोवी ड्राफ्टसमैन तथा एनग्रेवर के रूप में आरम्भिक कला शिक्षक नियुक्त हुये।[5] जार्ज ग्रिफित्थ्स तथा पेस्टोनजी बोमानजी का इसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। प्रारम्भ में यहाँ लन्दन से ही कला शिक्षक व प्राचार्य नियुक्त किये गये। इनमें लॉकवुड़ किपलिंग तथा सीसिल बर्न प्रमुख थे। इस समय यहाँ रॉयल एकेडमी ऑफ लन्दन की शिक्षा पद्धति पर आधारित पाठ्यक्रम प्रचलित था। आर्किटेक्चर कोर्स को 1941 ई. में पृथक मान्यता मिली। 1935 ई. में चार्ल्स जिरार्ड ने व्यावसायिक कला को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जो 1958 ई. से एक स्वतन्त्र संस्था 'जे.जे. इन्स्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड़ आर्ट्स' के रूप में पहचाना जाता है। कैप्टन ग्लैडस्टोन सोलोमन 1919 ई. से 1936 ई. तक सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट के निदेशक रहे। उन्होंने पश्चिमी भारत में समकालीन कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। वह पारंपरिक भारतीय कला के भी बहुत बड़े प्रशंसक थे। उनके निर्देशन में सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट ने 1923 ई. में एक गौरवशाली योजना, जिसे 'दि इंडिया रूम' नाम दिया गया था, पूरी की। इसके द्वारा पहली बार इंग्लैण्ड ने समकालीन भारतीय कला को देखा।[6] 1936 ई. में चार्ल्स जिरार्ड के प्राचार्य बनने पर यह उत्तरोत्तर विकसित होता गया। स्वतन्त्रता पश्चात् वासुदेव अर्दुरकर प्रथम भारतीय अधीक्षक नियुक्त हुए। इस संस्थान में राजस्थान के कई युवा कलाकारों ने भी कला अध्ययन किया। जो आगे चलकर राजस्थान के प्रतिष्ठित चित्रकार बने, इनमें प्रमुख रूप से कुन्दन लाल मिस्त्री, भूरसिंह शेखावत, पी.एन. चोयल, पी. मनसाराम, ओमदत्त उपाध्याय, रमेश गर्ग, चन्द्र सिंह भाटी, मोहन शर्मा, तेजसिंह आदि कलाकार है।

2.1.1.4 राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर (1857 ई.) – (विस्तृत विवेचन अध्याय 4 में)

2.1.1.5 मेयो कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्, लाहौर (1875 ई.)

1875 ई. में स्थापित इस कला विद्यालय के प्रथम प्राचार्य जॉन लॉकवुड किपलिंग थे। यहाँ काष्ठ शिल्प, वास्तु शिल्प, ढ़लाई तथा अभियांत्रिकी आदि पाठ्यक्रम संचालित थे।

पंजाब में तत्कालीन प्रचलित सिख शैली में भी अलंकरणात्मकता थी, किन्तु रवीन्द्रनाथ टैगोर के शिष्य समरेन्द्रनाथ गुप्त यहाँ प्राचार्य नियुक्त हुए तथा बंगाल स्कूल का प्रचार–प्रसार किया। 1929 ई. से 1936 ई. का काल अति महत्त्वपूर्ण था जब यहाँ बी.सी. सान्याल कला शिक्षक रहे। आप भावुक प्रकृति के थे और सामाजिक चेतना को लेकर आपकी कला विकसित हुई और रेखाकंन क्षमता, रंग दक्षता तथा सहज कल्पनाजन्य सामर्थ्य का परिचय निरन्तर बना रहा।[7] सान्याल को लाहौर अपने मनोनुकूल लगा तथा वे यहीं बस गये किन्तु देश विभाजन के समय लाहौर पाकिस्तान में चला गया और आपको भारत आना पड़ा। सान्याल ने लाहौर में ही 'लाहौर स्कूल ऑफ फाइन आर्ट' नामक स्वतन्त्र स्टूडियों स्थापित किया जहाँ कला प्रशिक्षण भी दिया जाता था। कालान्तर में यह 'सान्याल्ज स्टूडियों' नाम से विख्यात हुआ। जहाँ से धनराज भगत, अमरनाथ सहगल, कृष्ण खन्ना आदि ने अपने कला जीवन की शुरूआत की थी। सान्याल के आगमन से सांस्कृतिक दृष्टि से उजाड़ लाहौर दो दशकों तक प्रमुख कला केन्द्र बना रहा। आज इस कला महाविद्यालय को पूर्णतः स्नातकोत्तर ललित कला महाविद्यालय का रूप दे दिया गया है जिसे आज नेशनल कॉलेज ऑफ आर्ट, लाहौर नाम से जाना जाता हैं।

2.1.1.6 गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, थिरूवनन्थपुरम्, केरल (1888 ई.)

यह कॉलेज तत्कालीन त्रावणकोर महाराजा द्वारा 1888 ई. में स्थापित किया गया था। यह पहले महाराजा स्कूल ऑफ आर्टस के नाम से जाना जाता था। तत्पश्चात् यह त्रावणकोर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हुआ। 1957 ई. में डिपार्टमेन्ट ऑफ टेक्नीकल एज्युकेशन, केरल सरकार के अधीन हुआ। 1975 ई. में कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स के रूप में विकसित हुआ जहाँ 1979 ई. से चित्रकला, मूर्तिकला तथा व्यावहारिक कला में बी.एफ.ए. की डिग्री दी जाती है।[8]

2.1.1.7 इन्स्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स, कला भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन, पश्चिम बंगाल (1901 ई.)

1901 ई. में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने पुस्तैनी पश्चिम बंगाल के बोलपुर स्थित शान्ति निकेतन ने एक शिक्षण केन्द्र की स्थापना की जहां देशवासियों के लिये शिक्षा की निस्वार्थ सेवा भाव का उदय हुआ। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के विरोध में 1906 ई. में बंगाल में शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् का गठन हुआ तथा देश में अनेक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं का निर्माण होने लगा, उनमें शान्तिनिकेतन प्रमुख था।[9] प्रारम्भ में यहाँ बाल–शिक्षा प्रदान की जाती थी, किन्तु कुछ समय पश्चात् ही रवीन्द्रनाथ ने कला, संगीत, क्राफ्ट आदि के अध्यापन की आवश्यकता भी महसूस की फलस्वरूप प्रारम्भ से ही एक कला शिक्षक शान्ति निकेतन में आवश्यक रूप से नियुक्त रहा। 1919 ई. में रवीन्द्रनाथ ने यहाँ कला–भवन नाम से पृथक आर्ट स्कूल स्थापित किया तथा नन्दलाल बोस को अधीक्षक नियुक्त किया। किन्तु वे शान्ति निकेतन वापस चले गये। कला भवन में भूत एवं वर्तमान, पूर्व व पश्चिम की कला परम्पराओं को साथ लेकर प्रशिक्षण दिया जाता था। 1921 ई. में यहीं विश्व भारती विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी जहाँ भारतीय विश्वविद्यालय में प्रथम ललित कला संकाय प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में विश्व भारती विश्वविद्यालय के साथ कला भवन दृश्य कलाओं का महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। यहाँ के प्रमुख आचार्यों में नन्दलाल बोस, धीरेन्द्र कृष्ण बर्मन, विश्वरूप बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी, रामकिंकर बैज, दिनकर कौशिक, अजित चक्रवर्ती, सोमनाथ होरे आदि रहे हैं। यहां अध्ययन करने वाले प्रमुख कलाकारों ने असित कुमार हाल्दार, समरेन्द्र नाथ गुप्त, के. वेकेटप्पा, नागाहवत्ता, शैलेन्द्रनाथ डे, क्षितीन्द्रनाथ मजुमदार, शारदा चरण उकिल, मुकुल चन्द डे, प्रमोद कुमार चटर्जी, विश्वेश्वर सेन, अब्दुल रहमान चुगताई, देवीप्रसाद राय चौधरी विशेष उल्लेखनीय रहे है। राजस्थान के प्रमुख कलाकारों में पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत, कलाविद् सुरेश शर्मा, बातिक कलाकार अब्दुल मजिद आदि ने भी यहाँ कला शिक्षा प्राप्त की।

2.1.1.8 कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, लखनऊ (1911 ई.)

इस महाविद्यालय की स्थापना 1911 ई. में 'स्कूल ऑफ डिजाइन' के नाम से की गयी थी। इसमें प्रथम प्राचार्य नैथेनियल हर्ड थे। 1925 ई. में असित कुमार हाल्दार यहाँ प्राचार्य नियुक्त हुए। यहाँ वे 1945 ई. तक इस पद पर रहे।[10] इस विद्यालय के प्राचार्य पद पर पहुंचने वाले वे पहले भारतीय कलाकार थे। असित कुमार, उनके समकालीन एल.एम. सेन तथा बी. सेन तीनों ने अपने अध्यापन काल में अनेक वर्षों तक लखनऊ कला परिदृश्य

तथा कलाकारों को प्रभावित किया। वॉश पद्धति तथा अकादमिक शैली दोनों ही यहाँ लोकप्रिय रही। 1956 ई. में सुधीर रंजन खास्तगीर ने प्राचार्य पद पर रहते हुए पाठ्यक्रम की नवीन रूपरेखा तैयार की और इसमें सेरामिक, होम क्राफ्ट तथा प्रिन्ट मेकिंग तीन विषय सम्मिलित किये गये। इसी समय यह कला विद्यालय स्कूल स्तर से कॉलेज स्तर पर प्रोन्नत किया गया। 1968 ई. में चित्रकार रणबीर सिंह बिष्ट प्राचार्य नियुक्त हुए। आपका कार्यकाल इस कला महाविद्यालय के लिए महत्त्वपूर्ण रहा। इस ऐतिहासिक गवर्नमेंन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स को 1973 ई. में लखनऊ विश्वविद्यालय में विलीन कर दिया गया तथा प्रयोगात्मक शिक्षा के अतिरिक्त कला–इतिहास तथा आलोचना जैसे विषयों को भी डिग्री स्तर पर सम्मिलित किया गया।[11] वस्तुतः लखनऊ का यह महाविद्यालय देश में कला शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। यहाँ के कलाकारों यथा जे.एम. अहिवासी, असित कुमार हाल्दार, एल. एम. सेन, बी. सेन, श्रीराम वैश्य, सुधीर खास्तगीर, श्रीधर महापात्र, एच.एस. मेढ़, विश्वनाथ मुखर्जी तथा रणबीर बिष्ट आदि ने लखनऊ कला परिदृश्य को बहुत प्रभावित किया। लखनऊ विश्वविद्यालय में भी ललित कला संकाय की स्थापना हो चुकी है।

2.1.1.9 शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट, नई दिल्ली (1926 ई.)

1926 ई. में स्थापित शारदा उकील स्कूल, नई दिल्ली के पुराने आर्ट स्कूलों में से एक है। यह अवनीन्द्रनाथ टैगोर के शिष्य तथा आधुनिक कलाकार शारदा चरण उकील द्वारा प्रारम्भ किया गया।[12] 1969 ई. से यहाँ तीन वर्षीय चित्रकला डिप्लोमा तथा एक वर्षीय एप्लाइड आर्ट डिप्लोमा प्रदान किये जाते हैं। आज यह स्कूल कला शिक्षा की आधुनिक अवधारणा के अनुसार बदलने को प्रयत्नशील है।

2.1.1.10 गवर्नमेन्ट (देवलालीकर) कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, इन्दौर (1927 ई.)

1904–05 ई. में मध्यप्रदेश के तत्कालीन इन्दौर राज्य में एक हाई स्कूल में कला शिक्षा प्रारम्भ हुई जिसे 1927 ई. में गवर्नमेन्ट स्कूल ऑफ आर्ट के रूप में स्वतन्त्र महत्त्व मिला। दत्तात्रेय दामोदर देवलालीकर इसके संस्थापक–प्राचार्य थे। यहाँ देवलालीकर ने कोई 23 वर्ष तक कार्य किया और कला शिक्षा के नये आयाम खोले।[13] एन.एस. बेन्द्रे, देवकृष्ण, जटाशंकर जोशी, विष्णु चिचालंकर, सालेगाँवकर, एम.एफ. हुसैन आदि लब्ध प्रतिष्ठित कलाकारों ने इस कला महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। इस कला विद्यालय को आज गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट के नाम से जाना जाता है।

2.1.1.11 चित्रकला विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान (1937 ई.)

(विस्तृत विवेचन अध्याय 4 में)

2.1.1.12 कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली (1942 ई.)

कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली, 1942 ई. में शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रारम्भ किया गया। यह दिल्ली पोलिटेक्नीक के प्रथम कला विभाग के रूप में जाना जाता था। प्रारम्भ में यह सेन्ट स्टीफन के प्राचीन भवन के पुस्तकालय में संचालित था तथा बाद में बिड़ला पेवेलियन तथा प्रोमिला कॉलेज में स्थानान्तरित होते हुए वर्तमान भवन में स्थापित हुआ। ऑल इण्डिया काउन्सिल फॉर टेक्नीकल एजुकेशन का गठन होने के पश्चात् यह कला विभाग प्रथम संस्थान था जहाँ चित्रकला, मूर्तिकला तथा अनुप्रयुक्त कला के नव–निर्मित पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गये तथा 'नेशनल डिप्लोमा इन आर्ट' प्रदान किया जाने लगा। दिल्ली पोलिटेक्नीक के दो भागों में विभक्त होने के पश्चात् कला विभाग को 1964 ई. में स्वतंत्र संस्थान बना दिया गया। 1972 ई. में यह कला विद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हुआ तथा पाठ्यक्रमों का नव–गठन किया गया। चित्रकला, मूर्तिकला तथा व्यावहारिक कला में बी.एफ.ए. की डिग्री दी जाने लगी। 1986 ई. में से उक्त तीनों अनुशासनों में द्विवर्षीय एम.एफ.ए. पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ हो गये।[14]

2.1.1.13 फेकल्टी ऑफ विजुअल आर्ट, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (1950 ई.)

उत्तर प्रदेश में दो स्थान लखनऊ एवं बनारस (वाराणसी) कला शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र हैं। बनारस गत कुछ वर्षों से ही ख्यातनाम हुआ है। बनारस में राय कृष्णदास की सेवाएँ महत्त्वपूर्ण रहीं, जिन्होंने विश्वविद्यालय में कला भवन की स्थापना में भी पूर्ण सहयोग दिया तथा वहाँ जन साधारण में कला के प्रति जागरूकता उत्पन्न की। प्रारम्भिक समय में चित्रकला में जे.एम. अहिवासी तथा मूर्तिकला में कृष्णन अध्यापन करते थे। के.एस. कुलकर्णी ने फैकल्टी में डीन पद पर अपनी सेवाएँ दीं। यहाँ चित्रकला, मूर्तिकला, व्यावहारिक कला, कला इतिहास, म्यूजियोलॉजी तथा संगीत फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स में सम्मिलित हैं।[15]

2.1.1.14 कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, कर्नाटक चित्रकला परिषद्, बेंगलुरू (1960 ई.)

चित्रकला परिषद् की स्थापना दृश्यकलाओं के विकास हेतु 1960 ई. में की गयी। 1964 ई. में परिषद् ने एक कला विद्यालय की स्थापना की, जिससे राज्य में कला शिक्षा का विस्तार हो सके। 1983 ई. में यह कला विद्यालय कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स के रूप में

विकसित किया गया जहाँ फाइन आर्ट की डिग्री को बेंगलुरू विश्वविद्यालय से मान्यता मिली। परिषद् कला प्रदर्शनियों के अतिरिक्त दृश्यकलाओं में शोध कार्य को भी प्रोत्साहित करती है। यहाँ लेदर पपेट्स एवं परम्परागत मैसूर कलाकृतियों का संग्रह भी है। यहाँ कला परिसर में रूसी चित्रकार स्वेतोस्लाव रोरिक के चित्रों, एच.के. केजरीवाल का आधुनिक भारतीय कला का संकलन तथा कृष्णा एन. रेड्डी के प्रिन्ट्स का संग्रह भी है।[16] चित्रकला परिषद् कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स के साथ ही रोरिक इन्स्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स तथा चित्रकला ऑफ एडवांस स्टडीज भी संचालित करती है।[17]

2.1.1.15 गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट, चण्डीगढ़ (1962 ई.)

गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट, चण्डीगढ़ उत्तरी भारत में दिल्ली के बाद एक मात्र कला महाविद्यालय है। इसकी स्थापना स्वतन्त्रता पूर्व 1875 ई. में जॉन लॉकवुड किपलिंग के नेतृत्व में मेयो कॉलेज ऑफ आर्ट, नाम से लाहौर में की गयी थी। देश विभाजन के पश्चात् 1951 ई. में इसे मेयो कॉलेज ऑफ आर्ट, लाहौर की एक शाखा के रूप में 'गवर्नमेन्ट स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स' नाम से पंजाब की तत्कालीन राजधानी शिमला में स्थापित किया गया। लाहौर से कुछ अध्यापक भी यहाँ आये। उस समय इस कला विद्यालय में पाँचवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम चित्रकला, मूर्तिकला तथा कमर्शियल आर्ट अनुशासनों में संचालित थे। एस.एल. पाराशर, प्राचार्य तथा सतीश गुजराल उपाचार्य थे। तदन्तर 1962 ई. में यह कला विद्यालय 'गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट' नाम से पंजाब की नवनिर्मित राजधानी चण्डीगढ़ में स्थानान्तरित हो गया। इसका संचालन चण्डीगढ़ सरकार के हाथों में आ गया तथा महाविद्यालय को पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर दिया गया।[18] वर्तमान में यहाँ बी.एफ.ए. तथा एम.एफ.ए. की डिग्री चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक्स तथा व्यावहारिक कला अनुशासनों में दी जाती है।

2.1.1.16 रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता (1962 ई.)

रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय 1962 ई. में स्थापित हुआ। प्रारम्भ में यहाँ तीन वर्षीय ऑनर्स कोर्स चित्रकला विषय में संचालित हुआ। 1980 के दशक में बी.ए. तथा एम.ए. की डिग्री को बी.वी.ए. (बैचलर ऑफ विजुअल आर्ट्स) तथा एम.वी.ए. (मास्टर ऑफ विजुअल आर्ट्स) में पुनर्गठित किया गया। संस्थापक डीन सोवन सोम, उप कुलपति रामा चौधरी, शानु लाहिरी, तथा धर्मनारायण दास गुप्त ने दृश्य कला संकाय को अनेक वर्षों के अथक प्रयास से एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया। विभाग में कला विषय सम्बन्धी दृश्य सामग्री, पुस्तकालय तथा कम्प्यूटर ग्राफिक्स विभाग भी हैं।[19]

2.1.1.17 चित्रकला विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (1965 ई.)
(विस्तृत विवेचन अध्याय 4 में)

2.1.1.18 फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (1974 ई.)

(विस्तृत विवेचन अध्याय 4 में)

वस्तुतः भारत में स्वतंत्रता पूर्व महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर अन्य विषयों की भांति पाठ्यक्रम के अन्तर्गत दृश्यकला की शिक्षा को स्वतंत्र मान्यता नहीं थी। कला शिक्षा मात्र कला विद्यालयों तक सीमित थी, जहाँ कला में डिप्लोमा प्रदान किये जाते थे। इस पाठ्यक्रम में प्रायोगिक पक्ष महत्त्वपूर्ण था तथा सैद्धान्तिक पक्ष पर कम ध्यान दिया जाता था। 1950 के दशक में कलाकारों व कला अध्यापकों के प्रयासों से देश में उच्च कला शिक्षा हेतु कुछ अग्रिम पंक्ति के केन्द्र स्थापित हुए। भारत में आगरा विश्वविद्यालय ने 1947 ई. में डिग्री स्तर पर यह विषय प्रारम्भ किया। यद्यपि 1942 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संगीत व चित्रकला विषय को नियमित पाठ्यक्रम के रूप में डिप्लोमा स्तर पर सम्मिलित कर फाइन आर्ट विभाग शुरू किया जा चुका था। कालान्तर में कला शिक्षा का पाठ्यक्रम विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर प्रतिष्ठित हुआ। आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध मेरठ महाविद्यालय में 1961 ई. में स्नातकोत्तर स्तर पर चित्रकला विषय को मान्यता प्राप्त हुई। वर्तमान में देश के सभी प्रान्तों में कला शिक्षा को विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर सम्मिलित किया जा चुका है। मध्यप्रदेश में खेरागढ़, इन्दौर, जबलपुर, ग्वालियर; उत्तर प्रदेश में बनारस व अलीगढ़; दिल्ली में जामिया मिलिया इस्लामिया व जे.एन.यू.; विद्यासागर, गुजरात; शिमला; जम्मू; श्रीनगर; पटना; उड़ीसा; आन्ध्र प्रदेश; त्रिवेन्द्रम; कर्नाटक; औरंगाबाद ; पूना; नागपुर; त्रिपुरा; असम; मणिपुर; सिल्चर आदि स्थानों पर ललित कला संकाय तथा चित्रकला विभाग संचालित हैं। वर्तमान में कला शिक्षा का स्वरूप परिवर्तित होने लगा है। कला शिक्षा में व्यावसायिक डिग्री पाठ्यक्रम (बी.एफ.ए./एम.एफ.ए.) पर अधिक बल दिया जाने लगा है। इसमें चित्रकला के अतिरिक्त मूर्तिकला, व्यावसायिक कला, सैद्धान्तिक विषय, म्यूजियोलॉजी आदि विषयों में भी डिग्री प्रदान की जाती है तथापि देश विभाजन के तुरंत पश्चात् तीन महत्त्वपूर्ण कला संस्थानों ने व्यावसायिक कला शिक्षा की बढ़ती मांगों को पूर्ण करने का प्रयास किया तथा तत्कालीन आवश्यकतानुसार शैलीगत तथा माध्यमगत प्रयोगों को भी प्रोत्साहन दिया ये हैं– गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट, चण्डीगढ़; कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली तथा ललित कला संकाय, बड़ोदरा। तीव्र परिवर्तनकारी तथा विकास के युग में इन आर्ट्स कॉलेजों ने नवीन गतिविधियों को निरन्तर पुनर्गठित किया है ताकि परिवर्तनकारी समय की आवश्यकताओं को

पूर्ण किया जा सके। यही कारण है कि आज भारतीय आर्ट कॉलेजों में देश–विदेश के सभी भागों से विद्यार्थी प्रवेश लेते हैं। इन तीनों आर्ट्स कॉलेजों के अतिरिक्त स्वतंत्रता पश्चात् लखनऊ, बनारस, हैदराबाद के कला महाविद्यालयों ने भी कला परिदृश्य में तीव्र परिवर्तन किया हैं। वर्तमान में भी कला प्रोन्नति के नित नवीन संस्थान भारत में प्रारम्भ हो रहे हैं। देश के कुछ प्रमुख कला शिक्षा संस्थानों की सूची के लिए परिशिष्ट–3 का अवलोकन करें।

2.1.2. कला संस्थाएं एवं कला केन्द्र

जब प्रत्येक क्षेत्र में प्राचीन मान्यताएँ समाप्त हो रही हों, नवीन दिशाओं की खोज जारी हो तो कला भी अछूती नहीं रह सकती। परिवर्तन की समूची प्रक्रिया में आधुनिक परिप्रेक्ष्य में सृजन की देशज परम्परा को बनाये रखते हुए नवीन अर्थ देने, जन सामान्य में कलात्मक अभिरूचि व चेतना जागृत करने की दिशा में सरकारी एवं गैर सरकारी कला संस्थाओं की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। परम्परा अतीत की ऐसी जागरूकता है जो नवीन विचारों तथा आकारों के साथ वर्तमान व भविष्य की ओर बढ़ती है। भारतीय आधुनिक कलाकार अपनी जड़ों को छोड़कर यूरोपीय दिशाओं की ओर उन्मुख हो रहे थे। बंगाल शैली की रूढ़ियों को तोड़ने के लिए नवीन पीढ़ी उत्सुक थी। कला–विद्यालयों की भी पूर्वी व पाश्चात्य कला तकनीकों व शैलियों के बीच द्वन्द्वात्मक स्थिति थी। स्वतंत्रता पश्चात् से कुछ कला संस्थाएं एवं केन्द्र अस्तित्व में आने लगे थे जिनका उद्देश्य विविध प्रवृत्तियों को एकसूत्र में पिरोना, कला व कलाकारों को प्रोत्साहन देना, कलात्मक गतिविधियों के लिए एक समान मंच देना तथा कला प्रदर्शनियाँ व कला वार्ताएँ आयोजित कर कला का प्रचार–प्रसार करना था। कुछ प्रमुख कला संस्थाओं का संक्षिप्त अध्ययन यहाँ प्रस्तुत हैं–

2.1.2.1 इन्डस्ट्रियल आर्ट सोसायटी, कोलकाता (1854 ई.)

इस आर्ट सोसायटी की स्थापना कोलकाता में राजेन्द्रलाल मिश्रा, जतीन्द्र मोहन टैगोर तथा न्यायाधीश प्रात्त द्वारा की गयी थी। तदन्तर गुणनेन्द्रनाथ टैगोर तथा ज्योतिन्द्रनाथ टैगोर ने इस सोसायटी द्वारा शिक्षण संस्थान भी संचालित किया। प्रारम्भ में इस सोसायटी का उद्देश्य औद्योगिक कलाओं को प्रोत्साहन देना था। कालान्तर में यह सोसायटी गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, कोलकाता के रूप में सामने आयी।[20]

2.1.2.2 बाम्बे आर्ट सोसायटी, मुम्बई (1888 ई.)

यह सोसायटी 1888 ई. में स्थापित हुई। इसका उद्देश्य कला व कलाकारों को प्रोत्साहन देना तथा जन सामान्य में कला जागृति उत्पन्न करना है। यह सोसायटी वार्षिक कला प्रदर्शनियाँ, कला सम्भाषण, विविध कलाकारों के चित्रों की प्रदर्शनियाँ तथा सेमिनार आयोजित करती है। 1910 ई. में इस सोसायटी ने 'अ ब्रीफ हिस्ट्री स्केच ऑफ द बोम्बे आर्ट सोसायटी, विद स्पेशल रेफ्रेन्स टू द पीरियड़–1906–1910' शीर्षक से प्रथम जनरल प्रकाशित किया। सोसायटी का 'सेलून' 1939 ई. में स्थापित किया गया। बेन्द्रे–हुसैन की प्रतिष्ठित स्कॉलरशिप भी 1989–90 से युवा कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रारम्भ की गयी। वर्तमान में फिल्म शो तथा आर्ट डेमोन्स्ट्रेशन (कला प्रदर्शन) नियमित रूप से आयोजित होते हैं।[21]

2.1.2.3 इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट, कोलकाता (1907 ई.)

यह सोसायटी 1907 ई. से अस्तित्व में आई, जिसका प्रथम कार्यालय गवर्नमेन्ट स्कूल ऑफ आर्ट, कोलकाता में था। सोसायटी का प्रमुख उद्देश्य भारतीय कला को यूरोपीय अकादमिक कला के प्रभाव से मुक्त करना था। इसके सदस्य भारतीय, यूरोपीय, न्यायाधीश, व्यवसायी तथा महाराजा थे। प्रथम अध्यक्ष लार्ड किशनर तथा अवनीन्द्रनाथ टैगोर सचिव थे। सोसायटी ने अनेक कार्यक्रम के आयोजन के साथ ही नन्दलाल बोस तथा असित कुमार हाल्दार को अजन्ता भित्ति चित्रों की अनुकृति करने हेतु भी प्रतिनियुक्त किया।[22] इसके सदस्यों ने परम्परागत भारतीय एवं पूर्वात्य कला के अध्ययन पर बल दिया। कला प्रदर्शनियों, कला–सम्भाषणों तथा वाद–विवाद द्वारा सामान्य जनता में भी यही जागृति लाने का प्रयास किया। अवनीन्द्रनाथ टैगोर तथा स्टैला क्रैमरिश द्वारा सम्पादित आर्ट जनरल तथा पुस्तकों को पुस्तकालय में संग्रहीत किया।

2.1.2.4 आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया, मुम्बई (1918 ई.)

यह सोसायटी सावलराम एस. हल्दान्कर, एम.के. परान्देकर, बी.वी. तालिम, एम.एम. जोशी, वी.पी. कर्माकर, ए.एम. माली, एम.एफ. फीतावाला, जी.के. महात्रे व जी.पी. फर्नान्डिस द्वारा 1918 ई. में स्थापित की गयी। 1918 ई. से ही इसकी वार्षिक कला प्रदर्शनी आयोजित होती रही है।[23] वार्षिक प्रदर्शनी तथा पुस्तकालय के लिए इसे ललित कला अकादमी तथा महाराष्ट्र सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त है। सोसायटी द्वारा कला फिल्म प्रदर्शन, व्याख्यानमालाएँ तथा कला प्रदर्शन निरन्तर आयोजित होते रहते है।

2.1.2.5 आल इण्डिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी (आईफेक्स), नई दिल्ली (1928 ई.)

यह सोसायटी 1928 ई. में स्थापित भारतीय कलाकारों द्वारा इण्डिया हाउस, लन्दन को सुसज्जित करने हेतु गठित की गयी। इसके संस्थापक सदस्यों के.एन. हकसर, सरदार बहादुर मोहन सिंह, नवाब सर मोहम्मद मेहर शाह, सरदार बहादुर शोभासिंह, बी.आर. कागल, यू.एन. सेन, एस.एन. चक्रवर्ती, मेजर सरदार के.एम. पणिकर, शारदा उकील, ए.के. वढ़ाल, इमरे शैवलगर, सेठ एल.एन. बिड़ला, रघुनन्दन शरण, डॉ. एस.के. सेन, हंसराज गुप्ता, एम. हालिम जंग, जे.सी. घोष, सेठ केदारनाथ गोयनका, रनदा उकील, सरदार गुरूचरण सिंह, बारदा उकील आदि ने इसके गठन में अपना सहयोग दिया। सोसायटी की प्रथम प्रदर्शनी कुछ चयनित कृतियों को लेकर वाइसरीगल पेलेस (वर्तमान राष्ट्रपति भवन) में आयोजित की गयी। प्रथम ऑल इण्डिया आर्ट एक्जीबिशन लन्दन तथा यूरोपीयन देशों में भेजी गयी जो 1932 में पुनः भारत आयी। ऑल इण्डिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी ने प्रथम विश्व कला सम्मेलन प्रायोजित किया तथा आज भी नियमित रूप से अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का आयोजन भी करती है।[24] भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में यह सोसायटी वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन करती है तथा 1984 ई. से 60 वर्ष से ऊपर की आयु के अनुभवी कलाकारों को सम्मानित भी कर रही है। कलाकारों को कला रत्न, कला विभूषण तथा कला श्री से पुरस्कृत भी किया जाता है। सोसायटी परिसर में चार कला दीर्घाएँ, एक नाट्यशाला, पुस्तकालय तथा एक कान्फ्रेन्स रूम है। 1994 ई. में आईफैक्स सोसायटी ने पंचकूला, हरियाणा में रीजनल सेन्टर स्थापित किया। सोसायटी नियमित रूप से आर्ट जनरल 'रूप लेखा' प्रकाशित करती है तथा मासिक बुलेटिन 'आर्ट' न्यूज भी प्रकाशित कर रही है।

2.1.2.6 बिड़ला एकेडमी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर, कोलकाता (1967 ई.)

यह एकेडमी 1967 ई. में उद्योगपति श्री बसन्त कुमार बिड़ला व उनकी पत्नी श्रीमती सरला बिड़ला द्वारा कला व संस्कृति के उत्थान के लिए स्थापित की गयी।[25] इसका उद्घाटन कर्ण सिंह के द्वारा किया गया। फ्रेन्च मूर्तिकार रोदिन, हेनरी मूर और पिकासो के कला कर्म की प्रदर्शनी एकेडमी के लिए महत्त्वपूर्ण कला प्रदर्शनियों में से एक रही है।[26] एकेडमी का प्रमुख उद्देश्य संग्रहित वस्तुओं का संकलन, संरक्षण तथा प्रदर्शन करना, भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियाँ आयोजित करना तथा शैक्षिक संगोष्ठियाँ आयोजित करना है।

2.1.2.7 गढ़ी कलाकार परिसर, नई दिल्ली (1976 ई.)

यह स्टूडियो कैलाश कॉलोनी के पास, कालका देवी रोड़ पर स्थित है। यह स्टूडियो एक हैरिटेज साईट भी है।[27] इसकी स्थापना 1976 ई. में हुई तथा इसका प्रारम्भिक नाम कला कुटिर रखा गया था। इसके प्रथम निदेशक प्रो. शंखो चौधरी व प्रथम रीजनल सेक्रेटरी रामकृष्ण वेदाला थे। वर्ष 2000 में इसे पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, उत्तराखण्ड और दिल्ली का क्षेत्रीय केन्द्र बनाया गया।[28] यहाँ जोगेन चौधरी, अर्पणा कौर, राजन फुलारी, सरोजपाल गोगी, दामोदरन, नरीन नाथ, मंजीत बावा, अमिताभ दास, विवान सुन्दरम आदि अनेक कलाकार कार्य कर चुके हैं। इसके परिसर में महत्त्वपूर्ण वार्ताएँ, स्लाइड शो, कला कार्यशालाएँ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाती हैं। इसका संचालन ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा किया जाता है।[29]

2.1.2.8 भारत भवन, भोपाल (1982 ई.)

13 फरवरी 1982 ई. में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भारत भवन, भोपाल का उद्घाटन किया। यह सांस्कृतिक परिसर एक संग्रहालय, पुस्तकालय, नाट्यशाला तथा संगीत केन्द्र को स्वयं में समेटे हैं, जहाँ वर्षभर विशेष आयोजन, कला प्रदर्शनियाँ आदि होते रहते हैं। यह भवन भारतीय वास्तुविद् चार्ल्स कोरीया द्वारा कल्पित किया गया है। इसका संग्रहालय रुपंकर के नाम से जाना जाता हैं, इसमें समकालीन कला के साथ जनजातीय कलाएँ एवं मध्यप्रदेश का क्राफ्ट भी संग्रहीत है। इसमें प्रदर्शनकारी कलाओं के लिए रंग मण्डल, भारतीय काव्य के लिए वगार्थ केन्द्र, शास्त्रीय लोक संगीत के लिए अनहद व शास्त्रीय सिनेमा के लिए छविगृह का निर्माण किया गया है। यहाँ पर निराला सृजनपीठ भी स्थापित की गई है। यहाँ कॉमनवेल्थ देशों की थियेटर वर्कशॉप, मल्टी आर्ट फेस्टीवल, भारतीय समकालीन कला पर बिनाले, अन्तर्राष्ट्रीय प्रिन्ट बिनाले, राष्ट्रीय नाट्य महोत्सव, राष्ट्रीय नृत्य महोत्सव आदि कला व सांस्कृतिक महत्व की गतिविधियों का संचालन होता रहता है।[30] यह बहुविध कार्यक्रमों से चिंतकों, कलाकारों, आलोचकों तथा कवियों को परस्पर विनिमय के लिए एक कोरम प्रदान करता है। इसने कला व सांस्कृतिक गतिविधियों के विकेन्द्रीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2.1.2.9 मोहिले–पारीख सेन्टर फॉर द विजुअल आर्टस्, मुम्बई (1990 ई.)

मोहिले–पारीख सेन्टर फॉर द विजुअल आर्टस् की स्थापना 1990 ई. में मुम्बई में शैला जे. पारीख द्वारा की गई। यह आर्ट सेन्टर सेमिनार, कार्यशालाएँ, नये कार्यों, विचारों तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कला आयोजनों के लिए जाना जाता है। इसका एक समृद्ध पुस्तकालय भी है जिसमें कला से सम्बन्धित पुस्तकें, पारदर्शियाँ, फिल्म, छायाचित्र संग्रहीत हैं।[31]

2.1.2.10 जवाहर कला केन्द्र, जयपुर (1993 ई.) – (विस्तृत विवेचन अध्याय 4 में)

देश की कुछ महत्त्वपूर्ण कला संस्थाओं एवं केन्द्रों की सूची का अवलोकन परिशिष्ट–4 पर करें।

उक्त कला संस्थाएँ या केन्द्र आज कला की उन्नति के लिए प्रयासरत हैं। यह प्रयास भारतीय कला जगत में अपूर्व है। ये संस्थाएं व केन्द्र समय–समय पर कला शिविरों, कला प्रदर्शनियों एवं कलावार्ताओं का आयोजन कर भारतीय कला परिदृश्य में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। ये संस्थाएं युवा कलाकारों का भी उत्साहवर्धन करती है। कुछ संस्थाएं कला प्रदर्शनी भी प्रायोजित करती हैं तथा वार्षिक प्रदर्शनी कर श्रेष्ठ कृतियों को नकद पुरस्कार भी देती हैं। इससे कलाकारों का उत्साहवर्धन होता है। उन कलाकारों को भी इससे कला प्रदर्शन का अवसर मिलता है जो महानगरों की कला दीर्घाओं में कला प्रदर्शनी करने की नहीं सोच पाते। इन संस्थाओं में चित्रकृतियाँ, मूर्तिशिल्प तथा अन्य विधाओं की कलाकृतियाँ क्रय भी की जाती हैं जिनका संग्रह संस्था की स्थायी कला दीर्घा हेतु होता है। इस प्रकार ये सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएं कला की प्रोन्नति में सहायक हैं तथा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय समकालीन कला को स्थापित करने के लिए प्रयासरत हैं।

2.1.3 कला दीर्घाएँ

2.1.3.1 राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, (नगमा) नई दिल्ली (1954 ई.)

29 मार्च, 1954 ई. को राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा की स्थापना नई दिल्ली में जयपुर के महाराजा के आवासीय महल जयपुर हाउस में हुई। जर्मनी के प्रसिद्ध कला इतिहासकार डॉ. हरमन गोएत्स को इसका क्यूरेटर बनाया गया।[32] गोएत्स ने इस भवन में आरम्भिक नियोजन तथा कला वीथी की स्थापना की। उन्होंने इसका कार्यभार 1956 ई. में

मुकुल चन्द्र डे को हस्तान्तरित कर दिया। इसका संचालन तथा प्रशासन भारत सरकार के अधीन हैं। राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा का मुख्य उद्देश्य भारत की आधुनिक तथा समकालीन कला का संरक्षण, प्रोत्साहन एवं विकास करना है। श्रेष्ठ कलाकृतियों की प्रदर्शनियाँ आयोजित करने के साथ ही यह समय–समय पर दूसरे देशों की समकालीन कला की विशिष्ट प्रदर्शनियाँ, आदान–प्रदान के आधार पर आयोजित करती है। यहाँ संदर्भ पुस्तकालय तथा समकालीन कला पत्रिकाओं का संग्रह है। प्रमुख कला दीर्घा वातावरण नियंत्रक है तथा क्षतिग्रस्त कलाकृतियों को अनुभवी विशेषज्ञों द्वारा पुनर्संरक्षित करवाया जाता है। यहाँ थॉमस डेनियल, राजा रवि वर्मा, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, रवीन्द्र नाथ टैगोर, गगेन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बसु, जामिनी रॉय, अमृता शेरगिल तथा अन्य समकालीन कलाकारों की कृतियाँ हैं।[33] राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा की उप शाखायें मुम्बई और बेंगलुरू में भी है। वर्ष 2009 में यहाँ नया ऑडिटोरियम, कैफेटेरिया और म्यूजियम शॉप का निर्माण किया गया है।[34]

भारत की कुछ अन्य निजी एवं सरकारी कला दीर्घाएँ आज भारत के विविध क्षेत्रों में कला व कलाकारों की उन्नति एवं सहयोग के लिए समर्पित हैं। देश की प्रमुख कला दीर्घाओं की सूची हेतु परिशिष्ट–5 का अवलोकन करें।

निजी कला दीर्घाओं के अतिरिक्त समकालीन भारतीय कला के विकास तथा उनका बाजार बनाने में नीलामी घरों का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा है। नीलामी या ऑक्शन क्रय–विक्रय का एक तरीका है जिसमें क्रय–समूह द्वारा बोली लगाई जाती है; नीलाम होने वाली कृति या वस्तु का मूल्य निश्चित नहीं होता या होता भी है तो उस मूल्य पर विक्रय न करके सर्वोच्च बोली लगाई जाती है; ऐसी नीलामी प्रायः नीलामी घरों द्वारा की जाती है। ऑक्शन शब्द लैटिन भाषा के augeo शब्द से आया है, जिसका तात्पर्य 'I increase' और 'I augement' है।[35] जिसका हिन्दी अर्थ बढ़ाना होता है। विश्व का प्राचीनतम नीलाम घर स्टॉकहोम ऑक्शन हाउस, स्वीडन (1674 ई.) है।[36] सोदबी'स विश्व का दूसरा बड़ा नीलाम घर है। इनके अतिरिक्त एस्प्रें'स, क्रिस्टीज, बोनहम'स, बोबरिंग'स, आर्टनेट वर्डवाईड, आदि हैं तथा भारत में सेफ्रॉन, हाट, तथा ओसियन'स, इमामीचिजेल आर्ट प्रा. लि. हैं। इन्टरनेट से भी नीलामी घरों का महत्व बढ़ा है। इस प्रकार समकालीन भारतीय कला आर्थिक परिवर्तनों, खुली आर्थिक नीति तथा निजी क्षेत्रों के विकास के कारण उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही है। कला दीर्घाओं की संख्या में तीव्र वृद्धि से कलाकृतियाँ उच्च मूल्यों पर विक्रय हो रही है। प्रायः युगानुसार सभी कला दीर्घाओं की अपनी वेबसाइट हैं जिन पर कलाकारों की

कृतियाँ मूल्य सहित उपलब्ध हैं। निजी कला दीर्घाएँ भी समकालीन भारतीय कला के विकास व बाजार बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। प्रदर्शनियाँ प्रायोजित करती हैं, कला संग्रह के प्रति सोचती हैं। कलाकृति की फ्रेमिंग, प्रदर्शन का तरीका, रख–रखाव की सजगता बढ़ रही है। केटलॉग की छपाई व डिजाइन का महत्व भी बढ़ता जा रहा है जो कला प्रदर्शनी का महत्वपूर्ण अंग है। इन सबसे कलाकार का स्तर भी ऊँचा उठा है और उसकी जीवन शैली में परिवर्तन आया है। कलाकारों को दीर्घाओं से एक समान मंच मिलता है जिनके माध्यम से वे स्वयं को समाज के बीच उपस्थित कर पाते हैं।

2.1.4 कला अकादमी

2.1.4.1 राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली (1954 ई.)

5 अगस्त 1954 ई. में समकालीन दृश्य कला उन्नयन के लिए भारत सरकार की वित्तीय सहायता प्राप्त ललित कला अकादमी (स्वायत्तशासी संस्था) की स्थापना तत्कालीन शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा नई दिल्ली में की गयी। इसका पंजीकरण एक संस्था के रूप में 1957 ई. में हुआ। प्रारम्भ में इसका कार्यालय राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, जयपुर हाउस, नई दिल्ली के भवन में संचालित हुआ तथा 1961 ई. में वर्तमान भवन, रवीन्द्र भवन में स्थानान्तरित हुई। प्रथम अध्यक्ष प्रतिष्ठित मूर्तिकार देवीप्रसाद रायचौधरी (1954–1960 ई.) तथा सचिव चित्रकार बारदा उकील थे। अकादमी समकालीन राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का वार्षिक आयोजन 1955 ई. से निरन्तर (सन् 1974, 1975, 1976 ई. को छोड़कर) कर रही है। इसमें श्रेष्ठ 15 कृतियों को पुरस्कृत किया जाता है। प्रत्येक तीन वर्ष में एक अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी 'त्रैवार्षिकी–भारत' का आयोजन भी 1968 ई. से प्रारम्भ किया गया।[37] इस कला प्रदर्शनी का उद्देश्य समकालीन कलाकारों तथा भाग लेने वाले देशों की कला के मध्य समझ को उत्तरोत्तर विकसित करना है। इस प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए विभिन्न देश आमंत्रित किये जाते हैं। आमंत्रित देश की राजनीतिक विचारधारा तथा आर्थिक स्तर का इसमें कोई महत्त्व नहीं होता। अकादमी राष्ट्रीय कला मेला, कार्यशालाएँ, कला प्रदर्शनियाँ तथा कला वार्ताएँ भी आयोजित करती है। अनेक कला प्रकाशन भी हैं यथा–कलाकारों पर मोनोग्राफ, चित्रों व मूर्तियों के फोटो पोस्टकार्ड, प्रिन्ट पोर्टफोलियो, फोल्डर्स, जनरल्स आदि। अकादमी 'कला संवाद' नामक जनरल तथा दो सामयिक 'ललित कला' तथा 'ललित कला कन्टेम्परॅरि' भी प्रकाशित करती है।[38] अकादमी का अपना गेस्ट हाउस भी है। ललित कला अकादमी ने अपने क्षेत्रीय केन्द्र चेन्नई, लखनऊ, कोलकाता तथा भुवनेश्वर में स्थापित किये हैं। भारत के विविध राज्यों उत्तर प्रदेश,

चण्डीगढ़, पंजाब, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, गोआ, ओड़िशा, बिहार, असम, त्रिपुरा, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, केरल, तमिलनाडु आदि में भी 1950 ई. के पश्चात् राज्य ललित कला अकादमियाँ स्थापित हुई है। ये अकादमियाँ सरकारी वित्तीय सहायता से संचालित है तथा समकालीन कला के उन्नयन में संलग्न हैं। समकालीन भारतीय कला के संदर्भ में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राज्यीय कला अकादमियों की भूमिका के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता हैं।

भारत की कुछ प्रमुख कला अकादमियों की सूची हेतु परिशिष्ट–6 का अवलोकन करें।

2.2 भारतीय पृष्ठभूमि में समकालीन कला

भारतीय कला प्रागैतिहासिक काल से अनवरत् विभिन्न शैलियों के रूप में दृष्टिगत होती है। जोगीमारा, अजन्ता, बाघ, सित्तनवासल, ऐलोरा आदि कला केन्द्र भारतीय कला इतिहास के स्वर्णिम अध्याय रहे हैं। मध्यकाल की भारतीय कला लघुचित्रों के रूप में प्रसिद्ध है। राजस्थानी, पहाड़ी तथा ईरानी कला शैलियों की विशिष्टताओं के सामंजस्य से इसी समय एक नवीन कला शैली का उद्भव हुआ जो भारतीय कला इतिहास में मुगल कला शैली के नाम से जानी गई। दक्षिण भारत में भी मुगल और राजस्थानी कला इतिहास में दक्खिनी कला शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस प्रकार 19वीं शताब्दी के मध्य तक कला शैलियों के माध्यम से भारतीय कला की परम्परा विभिन्न रूपों में विकसित होती रही तथापि मुगल साम्राज्य के पतन तथा राज्याश्रयों के अभाव में मध्यकालीन कलाकार संरक्षण की खोज में यत्र–तत्र प्रस्थान करने लगे। इस कारण भारतीय कला के सहज विकास क्रम में गतिरोध उत्पन्न हो गया। अंग्रेजों का भारत में आगमन भी इसका महत्त्वपूर्ण कारण था।

समकालीन भारतीय कला के विकास क्रम को समझने के लिए 19वीं शताब्दी के मध्य तथा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में विद्यमान सामाजिक व आर्थिक जीवन में हो रहे परिवर्तनों को समझना अत्यन्त आवश्यक है। भारत में अंग्रेजों के आगमनोपरान्त 1600 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई। यूरोप की शक्ति एवं प्रभुत्व बढ़ता गया। खम्भात की खाड़ी, मुम्बई, अहमदाबाद, भड़ौच, गोलकुण्ड़ा, चेन्नई, ओडिशा, बंगाल, कोलकाता, पटना आदि स्थानों पर व्यापारिक कोठियाँ भी स्थापित की गयीं। अंग्रेजों का आगमन मुगल सम्राट अकबर के समय में प्रारम्भ हो चुका था। अंग्रेज भारत आगमन के साथ कलाकृतियाँ भी लाते थे। इस सम्बन्ध में इंग्लैण्ड के अंग्रेज राजदूत 'सर टॉमस रो' ने अपने वृतान्त में लिखा है कि, ''एक बार मैं जहाँगीर के दरबार में गया, जहाँ मैने जहाँगीर को देने के लिये

पाश्चात्य चित्र दिखाये, जिसमें से एक चित्र जहाँगीर को बहुत पसन्द आया और उन्होंने उसे एक रात के लिये ले लिया। दूसरे दिन सम्राट जहाँगीर ने मेरे सम्मुख चित्र की छः प्रतियाँ प्रस्तुत कर दी और कहा कि आप अपनी चित्राकृति छाँट लीजिये। प्रतिकृतियाँ इतनी समान थी मुझे यह पहचानना कठिन हो गया कि उनमें से कौन सी मेरी मूल तस्वीर हैं।'' इस सब को देखकर सम्राट जहाँगीर ने कहा कि ''हम चित्रकला में इतने कमजोर नहीं है।'' इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय कलाकारों को चित्रण की विदेशी तकनीक का भी पूर्ण ज्ञान था।[39]

सम्राट जहाँगीर के पश्चात् सम्राट औरंगजेब तथा परवर्ती मुगल शासकों की कला के प्रति अरूचि के कारण कलाकार दिल्ली दरबार छोड़ कर जाने लगे। भारतीय राजाओं का परस्पर वैमन्स्य, आक्रमण एवं अंग्रेजों का 'बाँटों और राज्य करो' सिद्धान्त भी महत्वपूर्ण कारण थे जिससे भारतीय कलाकार विस्थापित होने लगे। नादिरशाह तथा अहमदशाह के आक्रमणों से मुगल साम्राज्य का पतन हो गया तथा इंग्लैण्ड, पुर्तगाल और डच देशों के व्यापारिक प्रतिष्ठान भारत से कच्चा माल आयात करने और औद्योगिक वस्तुएँ भारतीय बाजारों में विक्रय करने में प्रतिस्पर्धा करने लगे। इसमें 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' आगे रही। कम्पनी अधिकारियों में असीम धन प्राप्त करने तथा सुरक्षा टुकड़ियों के साथ होने के कारण शासक होने की लालसा प्रबल होने लगी और 1857 ई. में कम्पनी के शासन के स्थान पर इंग्लैण्ड की सीधी शासन व्यवस्था स्थापित कर दी गयी। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में और उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में कोई पचास से अधिक ब्रिटिश पेशेवर चित्रकार भारत आये। वे यहाँ आये और चले गये पर भारतीय कला के क्षेत्र में वे घटिया यूरोपीय कला के प्रति रूचि उत्पन्न कर गये जो बहुत समय तक चलती रही। इन्होंने जल रंगों, तेल रंगों, रेखा–चित्रों तथा मुद्रित चित्रों के माध्यम से भारतीय जन–जीवन की झांकी प्रस्तुत की। टामस डेनियल तथा विलियम डेनियल दृश्य चित्रण और घटना चित्रण में कुशल थे तथा जोफेनी व्यक्ति चित्रण में सिद्धहस्त थे। मिस एमिली ईड़न तथा सेमुअल डेविस के जल रंग चित्र बहुत आकर्षक थे।[40] परिणामस्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी, अंग्रेज सत्ता तथा भारतीय व विदेशी कलाकारों के सहयोग से कला की एक नवीन शैली विकसित हुई जिसे 'कम्पनी–शैली' के नाम से जाना गया। 18वीं से 19वीं शताब्दी तक यह शैली अबाध गति से विकसित होती रही। इस शैली में स्त्रियों के अधिकांश व्यक्ति चित्र, लाइफ मॉडल को देखकर नहीं बनाये गये, वरन् वह काल्पनिक स्त्री आकृतियों के 'टाइप पोर्ट्रेट्स' थे, जो पाश्चात्य चित्रों के 'आइडियल पोजेज' के आधार पर बने थे। व्यक्ति चित्रों में चेहरा तो

जीवित व्यक्ति को देखकर बनाया जाता था और निचला भाग काल्पनिक रूप से। यह बात स्मरणीय है कि कम्पनी शैली की विशेषताएं सर्वत्र समान नहीं थी, अतः इसके चित्रों में न तो भारतीय परम्पराओं का ही निर्वाह हो पाया, न ही विदेशी शैली का पूर्ण रूप से अनुगमन। इस प्रकार पटना शैली के चित्रों में मुगल शैली एवं यूरोपीय कला शैली का सम्मिलित प्रदर्शन है। कम्पनी शैली की मुख्य अध्येता 'मिसेज आर्चर' के मतानुसार, पटना चित्रण शैली तो कम्पनी शैली की एक उपशाखा है, किन्तु कला की दृष्टि से कोई प्रमुख या पृथक शैली नहीं है, क्योंकि कला का यह आन्दोलन पटना तक ही सीमित नहीं था, इसका प्रचार व्यापक रूप में बंगाल से पंजाब तक, उत्तरी भारत, दक्षिण में महाराष्ट्र एंव पश्चिमी घाट तक, पश्चिम में सिन्ध तक तथा नेपाल तक भी विस्तृत था।[41] कला के इस आन्दोलन ने राजस्थान में भी दस्तक दी थी। जहाँ राजस्थानी तथा यूरोपीय कला तत्वों का समायोजन हो गया था। फलस्वरूप 'महाराजा सवाई जगतसिंह' के राजकाल में यूरोपीय लैण्डस्केप, आकृतियों तथा वर्ण–विधान ने राजपूती कला की पुष्ट परम्परात्मकता को तोड़ दिया था। साहिबराम के समकालीन अनेक चित्रकार विदेशी प्रभाव में खो गये थे। 'महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय' तथा 'सवाई रामसिंह' के राजकाल में तो दरबारी चित्रकार पाश्चात्य शैली में ही चित्रण कर रहे थे।[42] राजस्थान के अतिरिक्त गढ़वाल में भी इसका प्रभाव हुआ था। सन् 1816 ई. में गढ़वाल ब्रिटिश सेना के आधिपत्य में आने पर गढ़वाल शैली के प्रमुख चित्रकार 'भोलाराम' के पुत्र 'ज्वालाराम' तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों ने अंग्रेज कमिश्नर की नौकरी कर ली तथा परम्परागत चित्रण छोड़कर यथार्थवादी ढ़ंग पर पक्षियों के चित्र तथा टोपोग्राफिक चित्र तैयार करने लगे। इस प्रकार जहाँ–जहाँ यूरोपीय शैली की लहर पहुँची, वहाँ उसने स्थानीय तत्वों के साथ मिलकर एक नये रूप में विकास किया। ये स्थानीय तत्व आरम्भ में प्रधान रहे किन्तु बाद में ये गौण हो गये। इस शैली के प्रमुख चित्रकारों में सेवकराम, शिवलाल, हुसालाल, जयरामदास, झूमकलाल, फकीरचन्द्र आदि थे।[43] कम्पनी शैली के साथ–साथ ही कोलकाता में एक नए केन्द्र काली मन्दिर पर भक्तों के लिए चित्रों की मांग का सिलसिला शुरू हुआ जो पटुआ चित्रकारों की देन थी। इस शैली में कम्पनी शैली, बंगाल की लोक–कलम तथा मुगल कल़म के शोख व सपाट रंगों का समिश्रण था। चित्रण की यह पद्धति काली घाट या बाजार शैली कहलायी। इस शैली के मुख्य चित्रकारों में दो भाई एन.सी. घोष व के.सी. घोष थे। इस शैली के अन्य प्रमुख कलाकारों में नील मणिदास, बलराम दास, गोपाल दास, पाल तथा बैरागी थे।

भारत में आधुनिकता लाने वाले प्रथम चित्रकार राजा रवि वर्मा थे जिन्होंने यूरोपीय तेल–चित्रण प्रणाली में चित्रण प्रारम्भ किया। साथ ही अपना छापाखाना भी खोला और भारत में कैलेण्डर कला को जन्म दिया।[44] राजा रवि वर्मा का यह प्रयास नवीन युग के सूत्रपात का सूचक था जिससे भारतीय कला की अवरूद्ध धारा को सर्वथा नवीन मार्ग मिला था। इसी समय अंग्रेजों ने भारतीय कलाकारों को यूरोपीय कला तकनीक में प्रशिक्षित करने के लिए चेन्नई, कोलकाता, लाहौर, मुम्बई तथा लखनऊ में कला विद्यालय खोले। यहाँ का वातावरण, शिक्षण–प्रणाली तथा सामग्री आदि यूरोपीय कला विद्यालय प्रणाली पर आधारित थी। विदेशी शासन की चकाचौंध व यूरोपीय चित्रों की नकल ने उच्च वर्ग को आकृष्ट किया, जिससे भारतीय अपनी कला निधि को उपेक्षित करने लगे। फोटोग्राफी तकनीक से परिचित होने के कारण भारतीय कला के अस्तित्व को एक और आघात पहुँचा। इस अस्मिता के संकट के दौर में कुछ कलाकारों तथा कला समीक्षकों ने अपने तरीके से नवीन कला आन्दोलन को एक दिशा देने तथा पारम्परिक मूल्यों के प्रति विश्वास जगाने का प्रयास किया। आचार्य अवनीन्द्र नाथ ठाकुर भारतीय चित्रकला के पुनरूत्थान के अग्रणी रहे। इन्होंने पाश्चात्य प्रभाव से मुक्त होकर भारतीय कला के स्त्रोत अजन्ता, एलोरा, राजपूत शैली का अनुसरण करना प्रारम्भ कर दिया। जापानी चित्रकारी के प्रभाव से नई पद्धति 'वाश' को आपने ही जन्म दिया।[45]

समसामयिक कला आन्दोलन का प्रथम चरण यहीं से प्रारम्भ होता है जो 'बंगाल स्कूल' के नाम से देशव्यापी स्तर पर विख्यात हुआ। 1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम के साथ ही भारतीय संस्कृति के प्रति पुनः लगाव हुआ तथा सामाजिक व्यवस्था में तीव्र परिवर्तन आने लगा। राजा राममोहनराय ने 'ब्रह्म समाज' के माध्यम से उपनिषदों में व्यक्त भारतीय विचारों की स्थापना की तथा रूढ़िग्रस्त समाज को अंधेरे से प्रकाश में लाने का भागीरथ प्रयास किया। देवेन्द्रनाथ ठाकुर, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, मधुदत्त, केशवचन्द्र सेन व बंकिमचन्द्र चटर्जी आदि ने शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भारतीय परम्पराओं की पुर्नस्थापना का प्रयास किया। एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, इंडियन एसोसिएशन (1876), नेशनल कांफ्रेंस (1883), इंडियन नेशनल कांग्रेस (1885), आदि संस्थाओं की स्थापना की गई जिनके द्वारा राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्रों में नवीन चेतना का संचार किया गया। उक्त संस्थाओं में केवल भारतीय ही नहीं थे अपितु कुछ उदारवादी अंग्रेज विद्वान भी थे, जिन्होंने भारतीय दर्शन, इतिहास, संस्कृति तथा पुरा–सम्पदा का अध्ययन किया था तथा जिनकी रूचि भारत की वास्तविक पहचान में थी। मैक्समूलर, विलियम जोन्स, इड़विन आदि विद्वानों ने प्राचीन भारतीय साहित्य के महत्व को समझते हुए

अपनी भाषा में अनुवादित किया। कनिंघम ने भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व के लिए अविस्मरणीय खोज एवं कार्य किये।[46]

इसी समय कला के क्षेत्र में आचार्य अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का अभ्युदय हुआ। उन्होंने पाश्चात्य एवं पूर्वात्य कलारूपों में अन्तर्विरोध के मध्य भारतीय कला का नेतृत्व किया। कला के युगीन धरातल को मापते हुए एक ऐसा मध्यम मार्ग अपनाया जो यूरोपीयन प्रभावों के संस्पर्श से प्राचीन भारतीय कला की गहराई में समा कर उसकी नींव को सुदृढ़ कर सके। टैगोर परिवार भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं का पोषक होकर भी आधुनिक था। इसी कारण अवनीन्द्रनाथ ने यूरोपीयन कला की विभिन्न प्रवृत्तियों का अध्ययन कर कला में एक ऐसी सानुपातिक समग्रता का विकास किया जो प्राचीनता एवं आधुनिकता के मध्य की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थी। इसी बीच 1896 ई. में ई.बी. हैवेल ने मद्रास कला विद्यालय से कलकत्ता कला विद्यालय में प्राचार्य पद ग्रहण किया जिससे अवनीन्द्रनाथ की विचारधाराओं को सम्बल मिला। हैवेल ने भारतीय कला की विशेषताओं की ओर कला प्रेमियों का ध्यान आकृष्ट किया। गुप्त कला, अजन्ता व ऐलोरा के अपूर्व वैभव, मुगल, राजपूत चित्रशैलियों तथा मूर्तिकला की सूक्ष्मताओं को पहचान कर हैवेल ने भारतीय कला के मौलिक तथ्यों को उजागर किया। 1907 ई. में भारतीय संस्कृति के प्रेमी कुछ अंग्रेज और कुछ भारतीय कलाकारों तथा विद्वानों द्वारा 'दि इंडियन सोसायटी ऑफ ओरियंटल आर्ट' की स्थापना की गई। कोलकाता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस सर जॉन बूड्रोफ संस्थान की गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु थे। उनकी रूचि मुख्यतः तांत्रिक सम्प्रदाय के गुह्य साहित्य में थी। थौर्न्टन, जो पैशे से इंजीनियर और एक चित्रकार थे तथा कोलकाता की अंग्रेज बिरादरी के एक प्रभावशाली व्यक्ति ब्लंट उस दल के अन्य सदस्य थे। कला आन्दोलनों में रूचि रखने वाली सिस्टर निवेदिता भी एक सदस्य थी। दो टैगोर अवनीन्द्रनाथ और गगनेन्द्रनाथ सक्रिय सदस्य थे। उनकी कृतियाँ नवप्रवर्तित बंगाल शैली का प्रतिनिधित्व कर रही थी। अर्धेदु कुमार व गांगुली भी इसके एक प्रभावशाली सदस्य हुए। वे बाद में सोसायटी के तत्वावधान में प्रकाशित होने वाली प्रतिष्ठित पत्रिका 'रूपम' के संपादक हुए। प्रदर्शनी तथा प्रकाशन के वार्षिक कार्यक्रम के अतिरिक्त सोसायटी ने भारतीय कला तथा कलाकारों को बढ़ावा देने में काफी रूचि ली।[47] कला समीक्षक 'डॉ. मुल्कराज आनन्द' का मत है कि, हैवल ने ब्रिटिश कला पद्धति को हटाकर जो भारतीय पारम्परिक कथानकों एवं शैली के आधार पर कला शिक्षण आरम्भ करवाये, वे भारतीयों को कला माध्यम से प्रेरित करने में सफल भी हुये। 'पर्सी ब्राउन' और 'डॉ. आनन्द कुमार स्वामी' ने भी भारतीय कला के आदर्श गुणों के प्रचार–प्रसार में पूर्ण सहयोग दिया।[48]

अवनीन्द्रनाथ की कला में स्वतंत्रता का उद्‌घोष या क्रान्ति के बीज तो नहीं थे तथापि पश्चिमी अन्धानुकरण का विरोध अवश्य था। उन्होंने देश की कलात्मक गतिविधियों में नवीन चेतना भर दी थी। उनके शिष्य देश के विभिन्न भागों में कला प्रचार करने लगे। नन्दलाल बोस शान्ति निकेतन में, असितकुमार हलदार व क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार लखनऊ व लाहौर में, के. वेंकटप्पा मैसूर में, शैलेन्द्रनाथ डे जयपुर में, शारदाचरण उकील दिल्ली में, देवी प्रसाद रायचौधरी चेन्नई में तथा नागहट्ट श्रीलंका में नवीन कला धारा के प्रचार में लग गये। 1919 ई. में 'इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट' का पुनर्गठन किया गया।

बंगाल स्कूल की उक्त परम्परा के पश्चात् कला विकास का द्वितीय चरण प्रारम्भ हुआ। 1905 ई. से 1920 ई. तक बंगाल शैली चरमोत्कर्ष पर रही। 1920 ई. के लगभग इस राष्ट्रव्यापी कला आन्दोलन में एक नवीन मोड़ आया। भारतीय कला के प्राचीन रूपों के अनुकूल समसामयिक शैली का सृजन कठिन था। विदेशों से भारत का सम्पर्क होने के कारण तथा भारतीय कलाकारों के विदेश भ्रमण के कारण यूरोपीय कला शैलियों का आदान–प्रदान हुआ। 1925 ई. के लगभग यामिनी रॉय ने बंगाल की लोक कला के आधार पर नयी शैली विकसित की। उन्होंने भारत की चित्र परम्परा पर अपने पूर्ण अधिकार को नई समृद्धि और नये महत्व से और अधिक महत्वशाली बनाया है। बुनियादी तत्वों के ठेठ, अलंकृत और पूरी तरह से न्यूनतम उपयोग के द्वारा वे चित्रकला के मूल तक पहुँच जाते हैं। अनेक वर्षों तक सैद्धान्तिक शैली में चित्रकारी करने के बाद उन्होंने अन्ततः इसकी निरर्थकता को समझा और चित्रकला को उसका उचित स्थान दिलाने के लिये वे नये सिरे से जुट गए।[49] 1933 ई. के लगभग जॉर्ज कीट ने श्रीलंका में नवीन प्रयोग किये। इस कला धारा से अब तक चली आ रही टैगोर शैली असामयिक होने लगी। 1935 ई. में अमृता शेरगिल ने भारत आकर चित्र प्रदर्शनी की जिससे समसामयिक कला को अधिक सम्बल मिला। उनका विचार था कि, ''कलाकार के रूप में भारत ही उनकी कर्मभूमि है और ऐसा लगता है कि मैं भारत में ही काम कर सकूंगी।''[50] इन सब प्रयोगों से भारतीय कला नवीन मार्ग पर चलने लगी। नवीन अनुभूतियों के आधार पर अपनी संस्कृति तथा शास्त्रीय संविधान के अनुसार कलाकार स्वरूचि के अनुरूप सृजन करने लगे।

आधुनिक कला के विकास का तृतीय चरण स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की कला प्रवृत्तियों से प्रारम्भ होता है। यद्यपि स्वतंत्रता पूर्व ही कला के क्षेत्र में स्वतंन्त्र चिन्तन एवं राष्ट्रीय चेतना का उन्मेष हो चुका था तथा अनेक कला संगठन बन चुके थे यथा – कलकत्ता ग्रुप–43, नव–गुजराती स्कूल, शिल्पी चक्र आदि। समसामयिक कला का पूर्ण विकास स्वतंत्रता पश्चात् ही मुखरित हुआ। 1947 ई. में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप मुम्बई की

स्थापना हुई।[51] इस समय कोलकाता, मुम्बई तथा दिल्ली–तीनों केन्द्र सक्रिय थे। यामिनी रॉय, शैवाक्स चावड़ा, के.एस. कुलकर्णी, हैब्बार, शैलोज मुखर्जी, बेन्द्रे, हुसैन, रजा, सूजा, गायतोंडे, प्रदोषदास गुप्ता, गोपाल घोष, नीरोद मजूमदार, रथीन मित्रा, परितोष सेन आदि ने कला सम्भावनाओं को आगे बढ़ाया। 1954 ई. में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी की स्थापना के साथ ही जयपुर हाउस, दिल्ली में राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा की स्थापना भी हुई।[52] 1955 ई. में प्रथम राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी आयोजित की गयी।[53] 1958 ई. में 'ग्रुप–7' तथा 'ग्रुप–9', 1961 ई. में अननोन ग्रुप, 1963 ई. में 'ग्रुप–1890 ई,' 1967 ई. में 'ग्रुप–8' स्थापित हुए। 1964–66 ई. के मध्य गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, चेन्नई मद्रास के 40 कलाकारों द्वारा 'चोला मण्डल' की स्थापना हुई। इसकी मूल प्रेरणा के. सी. एस. पणिकर की थी।[54] 1950 ई. में एम.एस. विश्वविद्यालय, बडोदरा में ललित कला संकाय शुरु किया गया।[55] इस समय कला में विविध शैलियां प्रचलित होने लगीं। प्रभाववादी, घनवादी, अभिव्यंजनावादी, यथार्थवादी, अतियथार्थवादी प्रवृत्तियों के साथ लोक–कला, मिथक चेतना, लघुचित्रण, तान्त्रिक प्रवृत्ति आदि से कलाकार प्रभावित हुए। इसके पश्चात् 1980 के दशक से आधुनिक भारतीय कला परिदृश्य तीव्रता से परिवर्तित होने लगा।

1980 का दशक कला की दृष्टि से क्रान्तिकारी परिवर्तन का दौर था। यहीं से आधुनिक भारतीय कला का चतुर्थ चरण प्रारम्भ होता है। इस उत्तर आधुनिक युग में नई अंतर्दृष्टि, अभिव्यक्ति तथा शैलियाँ विकसित हुईं। अब अभिव्यक्ति में व्यक्तिवादिता, निजी प्रतीक, सामाजिक–राजनीतिक व सांस्कृतिक पक्षों के मिश्रित रूप, 'फंतासी' के प्रयोग पर अधिक बल दिया गया। अमूर्तता की ओर झुकाव बढ़ने लगा। इस समय की आविष्कार–परक दृष्टि, नये रूपाकारों की खोज, तकनीक के विविध प्रयोग तथा माध्यम की विविधता निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होने लगी तथा आज तक भी एक निश्चित स्थान पर रूकी नहीं है। आधुनिक भारतीय कला का यह चरण अत्यन्त प्रभावशाली रहा है जो कला को देशकाल की सीमाओं से निकालकर सार्वदेशिक और सर्वकालीन स्तर पर स्थापित करता है। इस वर्ग के कलाकार आज अन्तर्राष्ट्रीय कलामंच पर प्रतिष्ठित होकर देश का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। चित्रकला, मूर्तिकला, मिश्रित माध्यम, ग्राफिक कला तथा इन्स्टालेशन आदि में प्रयोग जारी हैं। इस चरण के कलाकारों की नामावली असीमित है। फिर भी एम. एफ. हुसैन, एफ. एन. सूज़ा, एस. एच. रजा, एन. एस. बेन्द्रे, सतीश गुजराल, जतिनदास, परितोष सेन, ए. रामचन्द्रन, जोगेन चौधरी, विद्यासागर, उपाध्याय, सुरेश शर्मा, शैल चोयल, जी.आर. संतोष, वीरेन डे, गणेश पाइन, मोहन सामंत, रामकुमार, तैयब मेहता आदि उल्लेखनीय हैं तथा युवा वर्ग भी नित नवीन प्रयोगों में व्यस्त है अतुल डोडिया, शीला गौड़ा,

एन. पुष्पमाला, राजेन्द्र टिक्कू, हेमा उपाध्याय, नरेश, आकाश चोयल, भूपेश कावड़िया, रतिलाल कन्सोडिया, रवीन्द्र जमवाल, विमल कुण्डु आदि।

समसामयिक कला आन्दोलन का महत्व गतिशीलता में ही है। आज कला में भी किसी शैली या विचारधारा का प्रभाव नहीं है। निरूपण, सरलीकरण, पोत, सतह, रंग, रेखा, आकार के प्रति संवेदनशीलता, अन्तर्मुखी दृष्टि, कम्प्यूटर का प्रयोग आदि इसमें अभिप्रेरक हैं। कला के उन्नयन व विकास में कला संस्थाओं और कला संगठनों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान निरन्तर बढ़ रहा है। आज की कला में बौद्धिक पक्ष महत्त्वपूर्ण है। आम दर्शक इन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में कोई सक्रिय भागीदारी नहीं रख पाता है, फिर भी समसामयिक कला की असाधारण विविधता और नवीन दिशाओं में की जा रही गहन खोज के कारण चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला व्यवहारिक स्तर पर सह–अस्तित्व में है। वस्तुतः आज का भारतीय कलाकार एक प्रदर्शनकर्ता है तथा आज कला की अवधारणा भी लचीली बन गई है। आधुनिक कला के विकास का क्रम आकृतिमूलक से अर्द्धआकृतिमूलक तथा अनिश्चित स्थिति से आकृति विहीन की ओर रहा है।

2.3 यूरोपीय प्रवृत्तियों का प्रभाव

जैसा कि सर्वविदित है, सारी दुनिया की आधुनिक कला 19वीं सदी के अन्त तथा 20वीं सदी के आरम्भ में शुरू हुए यूरोपीय कला आंदोलनों तथा प्रवृत्तियों के प्रति ऋणी महसूस करती है। पेरिस ने सारी दुनिया के कलाकारों को आकर्षित किया और प्राच्य देशों–चीन, जापान, कोरिया और भारत के चित्रकार तथा मूर्तिकार बड़ी संख्या में 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पेरिस में जमा हो गये थे ताकि अपनी कलानुभूति को समृद्ध कर सकें। आधुनिकता के प्रभाव को हम 'समकालीन' कलाकारों की, दुनिया को एक वस्तुनिष्ठ दृष्टि से देखने की, खोज के रूप में देख सकते हैं। यह सेंजा ही थे जिन्होंने इस दुनिया को या अपनी सोच के हिस्से की दुनिया को एक वस्तु के रूप में देखना चाहा था और इसमें वह न तो व्यवस्था–प्रिय मस्तिष्क की और न ही अव्यवस्थित मनोभाव की दखलंदाजी चाहते थे।[56] इस फ्रेंच चित्रकार की एकनिष्ठता के कारण ही आधुनिक कला आन्दोलन में बहुविध प्रवृत्तियों की शुरूआत हुई थी जिसमें से एक यह भी कि बुद्धि को रूपाकार देने वाली शक्ति जबकि स्वयं बुद्धि सौन्दर्यशास्त्रीय मनोभाव से संचालित रहती है–ही प्रेरक शक्ति हैं।

प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम (1857 ई.) के समय से परम्परागत भारतीय कला का पतन आरम्भ हो गया था। यूरोपीय कला तकनीक भारतीय कला को प्रभावित कर रही

थी। इस समय दो विचारधाराएँ भारतीय कला परिदृश्य में प्रचलित हो रही थी– प्रथम– ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा थोपी गई यूरोपीय कला शैली एवं तकनीक तथा द्वितीय– इसके विरोध स्वरूप बंगाल स्कूल का प्रादुर्भाव। बंगाल स्कूल ने भारतीय कला को नवीन आयाम दिये है। ऐसे समय में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बोस, रवीन्द्रनाथ टैगोर, गगनेन्द्रनाथ टैगोर, अमृता शेरगिल, यामिनी रॉय, जार्ज कीट, निकोलस रोरिक आदि कलाकारों ने आधुनिक भारतीय कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने भारतीय कला को क्रान्ति की ओर अग्रसर करने में विशेष भूमिका निभाई। पारम्परिक कला के स्थान पर भारतीय कला में व्यक्तिवादी नवीन अवधारणाएं स्थापित होने लगी थी।

भारतीय कला पर यूरोपीय कला प्रवृत्तियों–प्रभाववाद, फाववाद व अभिव्यंजनावाद, घनवाद व अमूर्तकला, अतियथार्थवाद आदि–का प्रभाव दृष्टिगत होने लगा था। भारतीय कलाकार पाश्चात्य कला प्रवृत्तियों तथा आन्दोलनों से प्रभावित हो रहे थे। वैश्वीकरण के चलते स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् तो कलाकारों के लिये पीछे मुड़कर देखना असम्भव–सा था तथा प्रोन्नति हेतु आगे बढ़ना ही अनिवार्य था। परिणामस्वरूप भारतीय कलाकार पाश्चात्य आधुनिक कला की ओर धीरे–धीरे आकर्षित होने लगे।

2.3.1 प्रभाववादी प्रवृत्ति

पश्चिम में प्रभाववादी क्रांति का मूल उद्देश्य था दृश्य के क्षणिक–दृष्टि प्रभाव को चित्रकार की बौद्धिक कल्पना एवं रचना के रूढ़िबद्ध नियमों से मुक्त करके छाया चित्रण के समान यथार्थ चित्रित करना।[57] भारत में 1936 ई. में जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट के निदेशक चार्ल्स जेरार्ड ने विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को चित्रमय डिजाइन, रंग तथा टेक्सचर के प्रभावों से संबंधित आधुनिक तकनीकों से परिचित करवाया।[58] इस समय दृश्य–चित्रण पर प्रभाववादी प्रभाव दृष्टिगत होता है जिनमें अमिश्रित रंगों का प्रयोग, प्रकाश की क्रीड़ा का चित्रण, काले–भूरे रंगों की कमी तथा स्थिर जीवन और घटनास्थल पर जाकर प्रत्यक्ष चित्रण आदि महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ रहीं। यूरोप में यह आन्दोलन आगे चलकर नव–प्रभाववाद में परिणत हुआ जिसमें उन्होंने अमिश्रित रंगों को बिन्दुओं के रूप में एक दूसरे के निकट लगाया। इससे रंग निर्मल भी बने रहते थे और दूर से देखने पर मिश्रित प्रभाव भी उत्पन्न करते थे।[59] भारत में प्रभाववादियों की तरह बिंदु रंगों से रचना एन.एस. बेन्द्रे ने अपने दृश्य चित्रों में की। बेन्द्रे के चित्र 'चैत्र चैतन्य' में रंगों का प्रयोग बिंदु के रुप में हुआ है।[60] अमृता शेरगिल व के.के. हेब्बार की कला में भी उत्तर–प्रभाववादी शैली के लक्षण दिखाई पड़ते है।[61] निकोलस रोरिक, प्रहलाद ए. ढोंढ़, सैयद हैदर रजा, रणवीर सिंह बिष्ट, रामकुमार

आदि के प्रत्यक्ष चित्रण में भी प्रभाववादी प्रभाव रहा। मूर्तिकला में देवी प्रसाद रायचौधरी ने यूरोपीय मूर्तिकार रोदिन से प्रभावित होकर यूरोपीय विचार का संश्लेषण किया।

2.3.2 अभिव्यंजनावादी तथा फाववादी प्रवृत्ति

जर्मन कला समीक्षक वाल्डेन ने प्रभाववाद का विरोध करने वाली सभी आधुनिक कलाओं के लिए 'अभिव्यंजनावाद' नाम का प्रयोग किया था। बाद में इस नाम या धारण का प्रयोग उस कला के लिए होने लगा जिसमें देखे गए यथार्थ की तुलना में यथार्थ के प्रति निजी प्रतिक्रिया को ज्यादा महत्व दिया जाता था। धीरे–धीरे अभिव्यंजनवाद का अर्थ उस कला से जुड़ गया जिसमें कलाकार की भावनाओं, संवेग आदि रंगों–रूपाकारों का एक अलग विरूपित किस्म का यथार्थ बनता है। बीसवीं शताब्दी के पहले दशक में 'अभिव्यंजनावाद' के लिए वॉन गॉग, गोंगा की कला और फाववादियों के आन्दोलन ने एक रास्ता बना दिया।[62]

अभिव्यंजनावाद 1905–06 ई. के लगभग जर्मनी में एडवर्ड मुंक की कला से हुआ तथा यही प्रवृत्ति फ्रांस में फॉववाद के नाम से हेनरी मातिस ने प्रारम्भ की।[63] इसमें विषयवस्तु तथा रूपात्मक तत्त्वों (रंग, रेखा आदि) की अभिव्यंजना को महत्त्व दिया गया। भारत में यह प्रवृत्ति रामकिंकर बैज के समय से (मूर्तिकला व चित्रकला) प्रारम्भ हुई।[64] भारतीय कलाकारों ने रंगों के प्रयोग को अधिक महत्त्व दिया। यह प्रवृत्ति 1940 ई. से 1960 ई. के मध्य चरम पर रही जब पंजाब के अमृतसर जिले में जलियाँवाला बाग की नृशंसता, बंगाल का असहनीय दुर्भिक्ष, देश–विभाजन की पीड़ा तथा साम्प्रदायिक दंगों से आहत भारतीयों की वेदना को भारतीय कलाकारों ने सशक्तता से अभिव्यंजित किया। जैनुअल आबेदीन, रामकिंकर बैज, सोमनाथ होर, के.सी.एस. पणिकर, रामकुमार, सतीश गुजराल, एफ. एन.सूज़ा आदि ने अपने मनोभावों के अनुसार गर्भवती महिलाओं की मार्मिक वेदना, विषाक्त वातावरण तथा जीवन के घृणित व क्रूर क्षणों को गहरे रंगों तथा तनावपूर्ण रेखाओं द्वारा अत्यन्त मार्मिकता से अभिव्यंजित किया।[65] रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रारम्भिक कृतियों में भी यह प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है।[66] अमृता शेरगिल के चित्रों में जो विकृति है वो अभिव्यंजनावाद से प्रभावित है।[67] फॉववादी प्रेरणा लेने वाले भारतीय कलाकार शैलोज मुखर्जी रहे, जिन्होंने सपाट धरातल, लम्बी आकृतियाँ, व्यंजनापूर्ण रेखांकन तथा रंगों की ताजगी बनाये रखते हुए नवीन प्रयोग किये। आज भी अनेक कलाकार इस प्रवृत्ति में कार्य कर रहे हैं।[68]

2.3.3 घनवादी प्रवृत्ति

सेजान को घनवाद का प्रेरणास्त्रोत माना गया है। यदि 'वस्तुजगत का ठोस अर्थपूर्ण तुल्य आकारों में चित्रण' इस तरह घनवाद की परिभाषा की जाती है तो वह सेजान की कला एवं पिकासों व ब्राक की आरंभिक विश्लेषणात्मक कृतियों पर समुचित रूप से लागू होती है। सेजान ने स्वयं अपनी कला के ध्येय के बारे में कहा था, ''निसर्ग को वृत्त चिति, गोल व शंकु द्वारा ठोस तुल्य रूप में अंकित करना।'' ब्राक के लेस्ताक के दृश्यचित्र एवं पिकासो के चित्र 'तीन स्त्रियाँ' (1908) व 'आम्ब्रास वोलार का व्यक्ति चित्र' (1910) इस परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं।[69]

किसी निश्चित बिन्दु खिड़की या छिद्र में से दृष्टिगत दृश्य चित्रण को घनवाद ने समाप्त कर दिया। परस्पर आच्छादित ज्यामितीय तलों, एक साथ कई कोणों से देखे गये विरूपित संयुक्त रूप तथा ज्यामितीय आकारों ने यथार्थ जगत् को एक नये रूप में प्रस्तुत किया। गगनेन्द्रनाथ टैगोर ने भारत में सर्वप्रथम 1920 ई. के आसपास भारतीय विषयों के लिए घनवादी शैली का प्रयोग किया। उनके द्वारा काले तथा श्वेत रंगों में चित्रित आकृतियां रहस्मय लगती है।[70] जार्ज कीट ने पिकासो से प्रभावित होकर 1940 ई. के लगभग घनवादी चित्र बनाये जिनमें रेखांकन प्रमुख था। एन.एस.बेन्द्रे ने भी 1950 ई. के आसपास संश्लेषणात्मक घनवादी प्रयोग किये जिनमें आकृतियों की भारतीय शास्त्रीयता व सौन्दर्य के साथ समन्वित तनाव अद्धितीय है। रामकिंकर बैज के चित्र 'माँ–बेटा' और 'कृष्ण का जन्म' घनवाद पर आधारित है।[71] जहाँगीर साबावाला में भी घनवादी रुपों का प्रयोग किया है।[72] आपने विश्लेषणवादी घनवाद का प्रयोग किया। त्रिलोक कौल ने सरल व प्रारम्भिक घनवादी प्रवृत्ति ग्रहण की।[73] 1950 ई. के आसपास के.जी. सुब्रह्मण्यम ने भी घनवादी प्रवृत्ति को स्वीकारा।[74] धनराज भगत की कृतियां भी मूलतः घनवादी ही है।[75]

2.3.4 अतियथार्थवादी प्रवृत्ति

20वीं शताब्दी में छिड़े अति–यथार्थवादी अभियान के समर्थकों का दावा था कि उनका दर्शन केवल कला तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह जीवन का एक दर्शन है। उनका लक्ष्य तर्कहीन और सुषुप्त एंव अचैतन्य मस्तिष्क की गतिविधियों को अभिव्यक्त करने में निहित था। फ्रायड़ की मीमाँसाओं से प्रभावित अभियान सन् 1922 ई. में प्रारम्भ हुआ। इस अभिप्राय का घोषणा–पत्र दो वर्षों बाद आन्द्रे ब्रेतों द्वारा प्रकाशित किया गया।[76]

भारत में अतियथार्थवाद के प्रयोग 1930 के दशक में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शुरु किये। इनके बाद कलकत्ता ग्रुप के हेमन्त मिश्रा, मद्रास ग्रुप के के.सी.एस. पणिकर और के.

सी. पाइन को भारत में अतियथार्थवाद के पहले प्रणेता कहा जा सकता है।[77] विकास भट्टाचार्य की गुड़िया श्रृंखला भी अतियथार्थवादी है। इनकी कला सुपर या हाइपर रियलिज्म से भी जुड़ी रही है।[78] परमजीत सिंह की कला में भी अतियथार्थवादी रुझान है।[79] रामचन्द्रन के चित्र आधुनिक समाज में मनुष्य की त्रासद स्थिति और दुर्दशा को अतियथार्थवादी अभिव्यक्ति प्रदान करते है।[80] एम.एफ. हुसैन ने भी दौड़ते अश्वों के साथ जमीन पर लुढ़कता सूर्य, नारी की जांघ पर बैठा गिद्ध आदि रूपाकारों में अतियथार्थवादी प्रवृत्ति का प्रयोग किया।[81] मंजीत बावा की कला भी इसी प्रवृत्ति से प्रभावित है।[82] वस्तुतः 1940 ई. से 1950 ई. के मध्य भारतीय कलाकार अन्तर्राष्ट्रीय चित्रभाषा के सदृश आधुनिक चित्रमाला की खोज में प्रयासरत थे।

2.3.5 तांत्रिक प्रवृत्ति

सन् 1985–86 ई. में भारत महोत्सव के अन्तर्गत समकालीन भारतीय कला की प्रदर्शनी 'न्यू तंत्रा' शीर्षक से अमेरिका में आयोजित हुई थी। प्रदर्शनी में उस कला का प्रदर्शन किया गया था, जो अपनी परम्परा से प्रेरित है और यह फ्रेडरिक एस.राइट आर्ट गैलरी, लॉस एंजेल्स में लगाई गई थी। इसमें बीरेन डे, जी.आर. संतोष, ओमप्रकाश, महिरवान ममतानी, प्रफुल्ल मोहंती, के.सी.एस. पणिकर, पी.टी. रेड्डी, और के.वी. हरिदासन की कलाकृतियाँ शामिल की गई थी।[83] समकालीन भारतीय कला के इस पक्ष के प्रति गहरी दिलचस्पी देखने को मिली। प्रारम्भ में लक्ष्मण पै तथा नीरोद मजूमदार ने तान्त्रिक पद्धति के आधार पर अपने चित्रों के शीर्षक रखे जिनका तंत्र–साधना से कोई सम्बन्ध नहीं था, तथापि चित्र संयोजन में तांत्रिक प्रभाव था। लक्ष्मण पै ने पुरूष व नारी मुखाकृतियाँ पंचभुज, त्रिभुज आदि के संश्लेषण से चित्रित की तथा मस्तक पर तांत्रिक त्रिकुटी सदृश त्रिपुष्प का चित्रण किया।[84] निरोद मजूमदार ने कला को अनुष्ठानपरक रूप में लेते हुए प्रतीकात्मक ज्यामितीय आधार पर चित्रण करते हुए दैवी आकृतियों में देवनागरी मंत्रों को चित्र पृष्ठभूमि के रूप में संयोजित किया।[85] जे. स्वामीनाथन ने भी कैनवास पर कुछ खास रुपाकारों को उभारा है। उन्होंने तन्त्र रुप को अपने खास अंदाज में फलक पर प्रस्तुत किये। उनके चित्रों में बिम्ब तथा प्रतीकों की उपस्थिति दर्शकों के मन में एक स्पन्दन, एक झन्कार सी उत्पन्न करती रही।[86] वीरेन डे को भी तान्त्रिक कलाकार के रुप में जाना जाता है। जिन्होंने तन्त्र को साधकर कला में अनेक रहस्यमयी सरणियों की खोज की है।[87] के.सी.एस. पणिकर का भी कुछ कार्य तांत्रिक कला से मिलता जुलता है। उनकी कला में शब्दों, प्रतीकों, आधुनिकता, परम्परा का अद्भूत संगम देखने को मिलता है।[88] ओमप्रकाश ने भी तांत्रिक व नव–तांत्रिक शैली में कार्य किया। उनका मानना था कि तन्त्र का ज्ञान कलाकार की अंतःदृष्टी को इस

प्रकार समृद्ध करता है कि वह उसे अलग तरह से, पूर्णता में तथा ठोस रुप से देख पाने में सक्षम बनाता है।[89] एस.बी. पल्सीकर ने भी सपाट धरातल पर तांत्रिक मंत्रों, अक्षरों, त्रिशूलों, नेत्र आदि चिन्हों के चित्रण से नवतांत्रिक कलाकृतियाँ प्रस्तुत की।[90] गुलाम रसूल संतोष ने तंत्रकला के माध्यम से ब्रह्मांड की अनन्त ऊर्जाओं को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। नीले, बैंगनी, लाल और हल्के पीले रंगों से अपने चित्रों की आभा निखारने वाले संतोष के अधिकांश चित्र गोलाकार व त्रिकोणात्मक ज्यामिती में निबद्ध है। अलग–अलग रंगों में बने सूर्य, चन्द्र, त्रिकोण, चतुर्भुज और षष्टभुज आदि के रहस्यमय प्रतीकों को चित्रों में रखकर वे दर्शकों को अज्ञात अनन्त की ओर ले जाते हैं।[91] हरिदासन की कलाकृतियों में भी ब्रह्मांड तथा तत्वमीमांसा के सिद्धान्तों की खोज दिखाई देती है, जैसाकि सृष्टि के निर्माण तथा उसके विविध स्वरुपों की भारतीय सिद्धान्तों में व्याख्या की गई है।[92] नव तांत्रिक कलाकारों में बालकृष्ण पटेल, दीपक बनर्जी, सतीश गुजराल, होमी पटेल, प्रभाकर बर्वे आदि के नाम भी उल्लेखनीय है।

2.3.6 छापा–चित्रण

उक्त सभी प्रवृत्तियों के पश्चात् ग्राफिक (चिन्हित) अर्थात् प्रिन्ट मेकिंग (छापा चित्रण) की पद्धति का समुचित विकास हुआ। इस पद्धति में कलाकार मूल आकृति के छाप द्वारा अनेक प्रतिबिम्ब निकालते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में प्रागैतिहासिक मानव हाथ के छाप अंकित करता था, तत्पश्चात् मुद्राओं व सिक्कों, द्वारा छाप लिए जाने लगे। यूरोपीय चित्रकार ड्यूरर ने सर्वप्रथम 14वीं शताब्दी में छापा चित्रण को कलात्मक माध्यम के रूप में प्रयुक्त किया। सन् 1440 ई. में मेन्ज, जर्मनी के जोहन गुर्टनबर्ग ने धातु के गतिशील अक्षरों का आविष्कार किया। इन अक्षरों से गुटेनबर्ग ने 42 लाइनों की बाइबिल का मुद्रण किया। सन् 1450 ई. में जर्मनी में ताम्बें की प्लेट को हस्तचालित उपकरणों द्वारा खोदकर मुद्रण किया जाने लगा था। इस पद्धति द्वारा सर्वप्रथम ताश के पत्ते मुद्रित किए गए थे, जिनके ऊपर पक्षियों के चित्र थे।[93] छापा चित्रण कला को चित्रकला की भाँति पृथक विधा का स्तर हालैण्ड में 17वीं शताब्दी में रेम्ब्रां के प्रयासों से प्राप्त हुआ। भारत में सर्वप्रथम ईसाई मिशनरियों द्वारा 1556 ई. में ईसाई धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की गई थी। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पोलिटेक्नीकल और क्राफ्ट संस्थाओं की स्थापना की गई जहाँ स्थानीय दस्तकारों ने औद्योगिक दस्तकारी का प्रशिक्षण प्राप्त किया। यहाँ से शिक्षा प्राप्त छात्रों में से कुछ ने कोलकाता में अपनी लिथोग्राफी प्रेस की स्थापना की और उनमें देवी–देवताओं के चित्रों के बड़े–बड़े प्रिन्ट तैयार किये। 1820 ई. में यूरोपीय शासकों ने लिथोग्राफी का प्रयोग नक्शों व चार्ट की छपाई के लिए किया। ऐशियाटिक

लिथोग्राफी प्रेस कोलकाता में 1825 ई. में लगी व सन् 1880 ई. में रवीन्द्रनाथ टैगोर के चाचा सुरेन्द्र मोहन टैगोर ने लिथोग्राफी द्वारा 'The Ten Principle Avatars of the Hindus and murtis as Tablvouxvivants' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया।[94] सन् 1894 ई. में राजा रवि वर्मा ने तेज गति से चलने वाली लिथोग्राफी प्रेस की स्थापना मुम्बई में की थी,[95] तत्पश्चात् छापा चित्रण को चित्रांकन के लिए 'इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट' के चंचल बनर्जी ने सर्वप्रथम प्रयुक्त किया। आपने वुडकट की तकनीक पेरिस में सीखी। इसी समय गगनेन्द्रनाथ ने छापा चित्रण को पुस्तक इलस्ट्रेशन से मुक्त करवाया।[96] नन्दलाल बोस तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी वुड व लीनोकट की अपनी भाषा विकसित की। ऐचिंग पद्धति कोलकाता में मुकुल चन्द डे तथा नन्दलाल बोस द्वारा स्थापित की गई। 1940 के दशक में शान्तिनिकेतन के कलाकार रमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती, लखनऊ के एल.एम. सेन तथा मुम्बई के चित्तप्रसाद एवं वाई.के. शुक्ला ने बहुत ऐचिंग एक्वाटिन्ट्स, ड्राइ पॉइंट्स किये।[97] इस समय तक बंगाल स्कूल के अनुयायियों द्वारा ही छापा चित्रण किये गये जो संख्या में गिने–चुने थे। भारत में सम्भवतः के.जी. सुब्रह्मण्यम प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने सेरीग्राफ पद्धति को अपनाया। परमजीत सिंह व दत्तात्रेय दिनकर आप्टे भी इस दिशा में आकर्षक कार्य कर रहे हैं।[98] 1946 ई. से बड़ौदा में नारायण बालाजी जोगलेकर के प्रयासों से ग्राफिक कार्यशाला का प्रारम्भ हुआ।[99] जहाँ से जयकृष्ण, लक्ष्मा गौड़, शान्ति दवे, ज्योति भट्ट, जयन्त पारीख आदि अच्छे छापा चित्रकार प्रकाश में आये। कंवल कृष्ण, सोमनाथ होर तथा जगमोहन चौपड़ा भी उल्लेखनीय हैं। ग्राफिक कलाकारों के लिए 'ग्रुप 8' की शुरुआत जगमोहन चौपड़ा ने दिल्ली में की थी। इस ग्रुप ने अनेक वार्षिक प्रदर्शन और अखिल भारतीय ग्राफिक प्रदर्शन आयोजित किये।[100] राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली की गढ़ी कार्यशाला, चोला मण्डल आर्टिस्ट विलेज, चेन्नई तथा हैदराबाद में भी ग्राफिक कार्यशालाएँ बनीं। वर्तमान में छापा चित्रण देश में स्थापित हो चुका है। अतुण बोस, सनतकार, अमिताभ बनर्जी, श्यामल दत्ता रे, अनुपम सूद, पॉल कोली, के.एस. विश्वम्भर, कृ ष्णा रेड्डी, अजीत दुबे, आर.बी. भास्करन, आर.एम. पलानी अप्पन, सिद्धार्थ घोष, सुरेश शर्मा, भवानीशंकर शर्मा, मंजीत बावा, रामेश्वर ब्रूटा, अमिताभ दास आदि इस विधा में कार्यरत हैं। भारत में कई स्थानों पर छापा–चित्रण हेतु कार्यशालाओं का निर्माण किया गया है। जहां छापा चित्रकार अपना कार्य कर रहे हैं। भारत में भी इस विधा में अब नवीन प्रयोग हो रहे हैं।

सन्दर्भ

1. डॉ. रीता प्रतापः भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–315
2. ज्योतिष जोशीः आधुनिक भारतीय कला, पृष्ठ–31
3. वही, पृष्ठ–130
4. वी.आर. नारलाः ''हैवले, जिन्होंने घोर बाधाओं का सामना करके भारतीय कला की सेवा की'', आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर; अगस्त–सितम्बर, 1966 ई., पृष्ठ–16
5. डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठः राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, पृष्ठ–34
6. प्राणनाथ मागोः भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–45
7. पी.आर. रामचन्द्र रावः बी. सी. सान्याल, ललित कला अकादमी, दिल्ली; वर्ष 1967 ई., पृष्ठ–75
8. https://en.m.wikipedia-org>wiki>college of fine Arts Kerala, Trivandrum
9. डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठः राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, पृष्ठ–41
10. ज्योतिष जोशीः आधुनिक भारतीय कला, पृष्ठ–57
11. https://en.m.wikipedia.org>wiki>Lucknow college of Arts
12. www.chitralekha.org>articles>Sarada ukil
13. डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृष्ठ–50
14. delhi.gov.in
15. www.bhu.ac.in
16. www.Saatchigallery.com>art college> college of fine Arts Bangalore
17. www.karnatakachitrakalaparishath.com
18. artcollegechd.nic.in
19. rbu.ac.in
20. www.chitralekha.org>mukul-dey>quinquennial report of the government school of art, 1927-1932
21. www.bombayartsociety.org
22. www.criticalcolletive.in>Artist Ginner
23. www.artsocietyof india.org
24. www.aiface.org.in

25. heymuseums.in>Birla-Academy-of-Art
26. www.birlaart.com
27. www.Sodelhi.com>museums-art-galleries
28. lalitkala.gov.in/grahi.html
29. www.artnewsnviews.com
30. bharatbhawan.org
31. mohileparikhcenter.org
32. https://en.m.wikipedia.org>wiki>National Gallery of Modern Art, New Delhi
33. वही
34. The Hindu, January 19, 2009
35. https://en.m.wikipedia.org>wiki>Auction house
36. https://mikebrandlyauctioneer.wordpress.com
37. lalitkala.gov.org
38. वही
39. सर विलियम फोस्टर : दी एम्बेसी ऑफ सर टॉमस रो टू इण्डिया (1615–1619), लंदन,
    वर्ष 1929 ई., पृष्ठ–199
40. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : कला और कलम, पृष्ठ–236–237
41. दिनेश चन्द्र अग्रवाल : कम्पनी शैली, एक ऐतिहासिक संदर्भ, आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष 1975 ई., पृष्ठ–29
42. कुँवर संग्राम, सिंह : जयपुरस यूनिक कोन्ट्रीब्यूशन टू राजस्थान, वार्षिकी, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 29–30
43. डब्ल्यू.जी.आर्चर : गढ़वाल पेन्टिग, लंदन, वर्ष–1954 ई., पृष्ठ–5
44. मीनाक्षी कासलीवाल : ललित कला के आधारभूत सिद्धान्त, पृष्ठ–38
45. विनोद कुमार आर्य : भारतीय कला की कहानी, पृष्ठ–80
46. डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृष्ठ–2
47. दिनकर कौशिक : नंदलाल बोस–भारतीय कला नायक, पृष्ठ–16
48. मनोहर कौल : ट्रेन्ड्स इन इंडियन पेन्टिंग, पृष्ठ–108
49. अशोक मित्र : चार चित्रकार, पृष्ठ–56

50. नैन भटनागर : बंगाल की चित्रकला शैली का समीक्षात्मक अध्ययन, दिल्ली, वर्ष 1976 ई., पृष्ठ–28
51. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–361
52. lalitkala.gov.org
53. वही
54. विनोद भारद्वाज : बृहद आधुनिक कला कोश, पृष्ठ–284
55. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–84
56. वही, पृष्ठ–79
57. र.वि. साखलकर : आधुनिक चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ–57
58. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–46
59. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : आधुनिक यूरोपीय चित्रकला, पृष्ठ–64
60. विनोद भारद्वाज : बृहद आधुनिक कला कोश, पृष्ठ–477–478
61. वही, 480
62. वही, 28
63. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–71
64. वही
65. वही
66. वही
67. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : आधुनिक यूरोपीय चित्रकला, पृष्ठ–253
68. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–71
69. र.वि. साखलकर : कला के अन्तः दर्शन, पृष्ठ–93
70. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : कला और कलम, पृष्ठ–252
71. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–351
72. डॉ. त्रिलोकीनाथ गौतम : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–119
73. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–72
74. वही
75. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–183
76. डॉ. राजेन्द्र वाजपेयी : सौन्दर्य, पृष्ठ–203
77. प्राण नाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–93

78. विनोद भारद्वाज : बृहद आधुनिक कला कोश, पृष्ठ–168
79. वही, पृष्ठ–303
80. वही, पृष्ठ–134
81. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–72
82. वही
83. न्यू तंत्रा, भारत महोत्सव अमेरिका का केटलॉग, 1985–86, पृष्ठ 1, 2
84. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–74
85. वही–74
86. डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृष्ठ 104
87. ज्योतिष जोशी : आधुनिक भारतीय कला, पृष्ठ–252
88. एम. वसीम : चित्रकला, पृष्ठ–90
89. प्राण नाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–168
90. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–74
91. डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृष्ठ–114
92. प्राण नाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–95
93. नरेन्द्र सिंह यादव : ग्राफिक डिजाइन, पृष्ठ–59
94. वही, पृष्ठ–35
95. नरेन्द्र सिंह यादव : ग्राफिक डिजाइन, पृष्ठ–35
96. लक्ष्मीलाल वर्मा (सम्पादक) : आकृति त्रैमासिक, छापा कला विशेषांक, जनवरी–मार्च, 1996 ई., पृष्ठ–26
97. वही, पृष्ठ–27
98. वहीं, पृष्ठ–31
99. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–75
100. विनोद भारद्वाज : बृहद आधुनिक कला कोश, पृष्ठ–405

अध्याय-तृतीय

भारत के प्रमुख कला संगठन

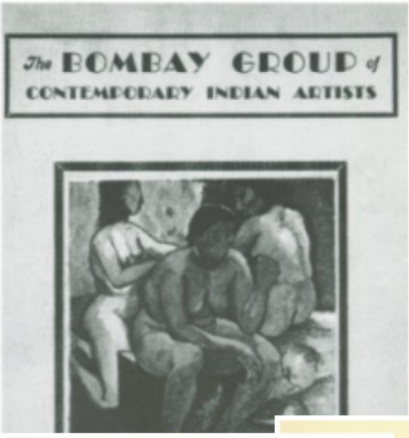

Members of Group 1890, (top row, from left to right) Jyoti Bhatt, Himmat Shah, Jeram Patel, (Middle row, from left to right) Raghav Kaneria (Behind a shell), Rajesh Mehra, J. Swaminathan, (Bottom row, from left to right) S.G. Nekam, G.M. Sheikh, AMbadas, Balkrishna Patel (Eric Bowen and Reddappa Naidu absent), 1063, from the catalogue of Group 1890.
Image courtesy: the book, "Contemporary Art in Baroda", ed. G M Sheikh, Tulika,1997, pp.156.

Mrs Langhammer with Husain in front of his seminal painting *Man*

'There was no problem in those days like religion. The only problems had to do with work and to have something to eat. It was not even a problem that you wanted to become famous. Those ideas were not there at all.'
S.K. Bakre

'We (Husain and Souza) came together through these mysterious chemical reactions. We would be talking all night. We used to go and sit at Backbay and talk and talk. He was older than me. We used to talk about what art should be and how it should be done. Without first seeing any

'I remember we were very different from each other. Souza had his ideas, he was well read, interested in poetry and music. I remember he took me to a Catholic church where for the first time I heard Johann Sebastian Bach... Husain I met a lot later. But the kind of work he was doing seemed interesting to us. Very quickly he was with us and ultimately meeting day after day, talking, discussing, giving answers. We thought, why can't we come together and make a group?'
S.H. Raza

Wayne Hartwell (centre) with Bakre before bust of Hartwell sculpted by Bakre

Top: Mrs. Langhammer with Husain in front of his seminal painting Man

Bottom: Wayne Hartwell (centre) with Bakre before burst of Hartwell sculpture by Bakre

Progressive Artists' Group

ulk Raj Anand, Ara, Husain, Mrs. Langhammer, ing) and Khorshed Gandhi, Bakre, Tyeb Mehta,

der & Manifesto Ara Bakre,
gressive Artist's Group, Bombay, 1949

Photo-Raza, Bal Chabbda, Tyeb, Krishen , Akbar

The founders of the Progressive Artists Group often cite "the partition" as an impetus for their style of modern art. Their intention was to "paint with absolute freedom for content and technique, almost anarchic, save that we are governed by one or two sound elemental and eternal laws, of aesthetic order, plastic co-ordination and colour composition." they wrote. In 1950, Krishen Khanna joined the Group.

भारत के प्रमुख कला संगठन

बंगाल शैली की पारम्पारिक रूढ़िवादिता के विरोधस्वरूप भारतीय कला जगत में नव–विचारों से प्रभावित कलाकारों ने सर्वथा नये माध्यम, नई शैली अपनाकर अपने अर्न्तमनः को अभिव्यक्त करने के उद्देश्य से नये कला संगठनों का गठन किया। 1937 ई. में मुम्बई में यंग तुर्क्स का उदय हुआ और 1943 ई. में कलकत्ता ग्रुप का। 1947 ई. में मुम्बई में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, 1948 ई. में कश्मीर में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स एसोसिएशन व 1949 ई. में दिल्ली शिल्पी चक्र की स्थापना हुई। 1957 ई. में मुम्बई में बोम्बें ग्रुप की स्थापना हुई। 1958 ई. से 1960 ई. के मध्य 'ग्रुप–7' तथा 'ग्रुप–9' का निर्माण हुआ। 1961 ई. में 'अननोन ग्रुप' की स्थापना हुई। 1963 ई. ग्रुप–1890 और फिर 'याल' नामक ग्रुप सामने आया। 1966 ई. में चेन्नई में चोला मण्डल व 1967 ई. में ग्राफिक कलाकारों के 'ग्रुप–8' की स्थापना हुई।[1] इन कला संगठनों ने भारतीय कला में क्रांतिकारी परिवर्तन किये तथा भारतीय कला में आधुनिकीकरण का संचार हुआ। भारत के कुछ प्रमुख कला संगठन निम्नलिखित है–

3.1 यंग तुर्क्स, मुम्बई (1937 ई.)

यंग तुर्क्स अथवा 'द बांबे ग्रुप ऑफ कंटेम्परेरी इंडियन आर्टिस्ट्स' के कलाकारों ने पारम्परिक भारतीय कला के मूल्यों का परवर्ती प्रभाववाद तथा अभिव्यंजनवाद के साथ सफलतापूर्वक संश्लेषण किया था। इस ग्रुप में प्रमुख रूप से सम्मिलित कलाकारों में पी.टी. रेड्डी, एम.टी. भोपले, ए.ए.मजीद, एम.वाई. कुलकर्णी और सी.बी. बपटिस्टा थे, इन सभी ने नव प्रवर्तनकारी तकनीकों में गहरी रूची दिखाई।

यंग तुर्क्स की प्रथम प्रदर्शनी 1941 ई. में मुम्बई में आयोजित हुई इस प्रदर्शनी के केटलॉग के प्राक्कथन में सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट के तत्कालीन निदेशक चार्ल्स जेर्राड ने लिखा थाः– ''इस संघर्ष के युग में युवा भारतीय समकालीन कलाकार का स्वागत है क्योंकि विश्वव्यापी औद्योगिकीकरण ने हस्तशिल्पी, जिसमें चित्रकार हस्तशिल्पी भी शामिल है, के कला कर्म पर विकृत प्रभाव डाला है। जीवन में जो कुछ भी सार्थक है, ये समकालीन कलाकार उसके अगुआ हैं, दुनिया को आज जिस चीज की बेहद जरूरत है, वह है सांस्कृतिक दृष्टिकोण की पुनर्स्थापना की सामूहिक इच्छा के लिए एकाग्र प्रयास करना। यदि सार्वजनिक तथा उच्च सांस्कृतिक दृष्टिकोण के उद्देश्यों को पाना है तो ऐसे अनेक कलाकार हमें चाहिए तथा इस दिशा में रास्ता दिखाने के लिए हमें युवा पीढ़ी पर भरोसा

करना होगा।''[2] इस ग्रुप के कलाकारों ने आधुनिक कला के नए विचारों को अपनी देशज संवेदना के साथ अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। (चित्र–1)

3.2 कलकत्ता ग्रुप, कोलकाता (1943 ई.)

विदेश में रहकर मूर्तिकला पर काम करने वाले प्रदोष दासगुप्ता (चित्र–2) को इंग्लैण्ड में सक्रिय 'लन्दन ग्रुप' को नजदीक से देखने का मौका मिला। भारत लौटकर प्रदोष दासगुप्ता ने लन्दन ग्रुप की तर्ज पर 1943 ई. में 'कलकत्ता ग्रुप' की स्थापना की। प्रगतिशील विचारों से परिपूर्ण यह संस्था किसी राजनैतिक दल से बिना सीधे तौर से जुड़े कम समय में ही एक बेहद सक्रिय संगठन बन गया। इस संस्था को इप्टा का पूरा सहयोग था। जिसके चलते 'कलकत्ता ग्रुप' की एक प्रदर्शनी का 1946 ई. में मुम्बई में आयोजन सम्भव हो सका।[3] ग्रुप की स्थापना में गोपाल घोष, प्राणकृष्ण पाल, सुनील माधव सेन, नीरोद मजूमदार, रथीन मित्रा, परितोष सेन, हेमन्त मिश्र का भी उल्लेखनीय योगदान रहा।

प्रदोष दासगुप्ता ने कलकत्ता ग्रुप के घोषणापत्र में इसकी विचारधारा का खुलासा कुछ इस तरह किया था– ''हमारे ग्रुप का मार्गदर्शक सिद्धांत इस नारे से समझा जा सकता है कि कला का लक्ष्य है अंतर्राष्ट्रीय होना तथा उसे अन्योन्याश्रित होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हमारी कला किसी भी तरह का विकास या प्रगति नहीं कर सकेगी, यदि हम हमेशा अपने अतीत के गौरव को ताकते रहेंगे और हर स्थिति में अपनी परंपरा से जुड़े रहेंगे। कला की व्यापक नई दुनिया, जो विश्व के महान कलाकारों द्वारा समृद्ध तथा विविधधर्मी बनी हुई है, हमें पुकार रही है....हमें इस कला का गहराई से अध्ययन करना होगा, उसका रसास्वादन करना होगा और वह सब अपनाना होगा जिसका हम अपनी जरूरत व परंपरा के तदनुरूप संश्लेषण कर सकते हैं। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि हमारी कला में अठारहवीं सदी से ही ठहराव की स्थिति बनी हुई है। पिछले दो सौ वर्षों में भारत से बाहर की दुनिया ने कला में कई लंबे डग भरे हैं, रूपाकार व तकनीकों के क्षेत्र में युग–प्रवर्तक खोजें की हैं। अतः हमारे लिए यह बहुत जरूरी है कि हम इस रिक्ति को भरें तथा पश्चिमी दुनिया में हुए विकास से लाभ उठाएं।''[4]

कलकत्ता ग्रुप से वामपंथी विचारधारा के कवि व लेखक भी जुड़े हुए थे जिन्होंने इस ग्रुप को अपना पूर्ण सहयोग दिया। वहीं कला आलोचकों प्रो. शाहीद सुहरावर्दी, विष्णु डे व सुधींद्र दत्ता का भी कलकत्ता ग्रुप को अपने आरंभिक काल में बहुत सहयोग मिला।

1914 ई. में आयोजित कलकत्ता ग्रुप की पहली प्रदर्शनी में मुल्कराज आनन्द ने अपने विचार प्रकट करते हुये कहा था कि–''कलकत्ता ग्रुप की प्रदर्शनी से स्पष्ट हो गया कि युवा बंगाली बहुत प्रतिभाशाली और भारतीय चित्रकला के संकट के प्रति सजग थे क्योंकि इनमें से प्रत्येक कलाकार का स्वतंत्र व्यक्तित्व था और इन्होंने परस्पर मिलकर इस ग्रुप की स्थापना कर ली थी, अतः सौभाग्यवश उनका काम अद्वितीय दिशाओं की ओर बढ़ा और घोषणापत्र के लिखित वक्तव्य तक सीमित नहीं रहा। भले ही उन्होंने कम संख्या में महान चित्रों व मूर्तिशिल्पों की रचना की हो लेकिन उन्होंने सृजनात्मक कला की नई दिशाओं को अपनाकर परंपरावादियों से भिड़ने में साहस का परिचय दिया था।''[5] ग्रुप की 1949 ई. की प्रदर्शनी के संदर्भ में प्रदोष दासगुप्ता ने कहा था कि– ''रूपाकार, रंग, सुसंगति, संतुलन आदि के बुनियादी सौंदर्यशास्त्र की समझ के क्षेत्र में ग्रुप के सदस्यों ने कई नव–प्रवर्तनकारी तथा प्रगतिशील कदम उठाए थे। जहां रूपाकार तथा विषय आपस में घुलमिल जाते हैं, वहां सार्थक रचना–दृष्टि का परिचय दिया ताकि इनमें से कोई एक दूसरे पर हावी न हो जाए।''[6] कलकत्ता ग्रुप की मुम्बई में आयोजित 1944 ई. और 1945 ई. की प्रदर्शनियों, जिनमें मुम्बई के कलाकारों ने गहरी दिलचस्पी दिखाई थी, के बारे में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए टाइम्स ऑफ इंडिया के कला आलोचक रूडाल्फ वान लाइडेन ने लिखा था–''बंगाल ने आधुनिक भारतीय कला को बहुत अधिक प्रभावित किया है और ऐसा अवनींद्रनाथ टैगोर तथा उनके अनुयायिओं द्वारा करीब चालीस साल पहले आरंभ किए गए 'भारतीय नवजागरण' आंदोलन से हो रहा है.....हम कलकत्ता ग्रुप की प्रदर्शनी का स्वागत करते हैं क्योंकि इस प्रदर्शनी में, तीन वर्ष पहले आयोजित यामिनी राय की प्रदर्शनी के बाद, फिर से आधुनिक बंगाली कला के नमूने मुम्बई देख पा रहा था।''[7] प्रदोष दासगुप्ता के अनुसार मुम्बई के युवा कलाकार, जो खुद को अस्थिर तथा अशांत अनुभव कर रहे थे, अब नई आशा से भर उठे थे। इस संदर्भ में उन्होंने दो कलाकारों के.एच. आरा तथा फ्रांसिस न्यूटन सूजा का नामोल्लेख किया है–ये दोनों बांबे आर्ट सोसाइटी की प्रदर्शनी में शामिल नहीं थे– जिन्होंने उनकी सहायता से 1947–48 ई. में बांबे प्रोग्रेसिव ग्रुप की स्थापना की थी।[8]

आरंभ में पश्चिम के महान कलाकारों जैसे कि पिकासो, मातीस, वान गॉग, व्लामिन्क, ब्रॉक, मूर, ब्रांकुसी तथा अन्यों का कलकत्ता ग्रुप के सदस्यों की कला पर स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है लेकिन समय बीतने के साथ ये प्रभाव कलाकारों की निजी शैली में घुलमिल गए। कलकत्ता ग्रुप की 'अंतिम तथा घटनापूर्ण' प्रदर्शनी 1953 ई. में दिल्ली में

हुई थी।[9] यह ग्रुप लगभग एक दशक 1943 ई. से 1953 ई. तक अखिल भारतीय स्तर पर अवां गार्द आंदोलन चलाने में सक्रिय रहा।[10] यह ग्रुप बुनियादी तौर पर परंपरा पर निर्भर करता था लेकिन अपने को बेहतर तथा पूरी तरह अभिव्यक्त करने के मामले में विदेशी स्त्रोतों से प्रभाव ग्रहण करने के प्रति इसका दृष्टिकोण उदार था। यह बात इसके कुछ प्रमुख आरंभिक सदस्यों के काम से समझी जा सकती है। गोपाल घोष ने प्रकृति की गीतात्मकता को पकड़ने का प्रयत्न किया है। इनके चित्रों में अद्वितीय ब्रश प्रयोग और जटिल किंतु सौष्ठवपूर्ण टेक्सचर हैं।[11] प्रदोष दासगुप्ता मूर्ति शिल्पों में अमूर्तन लेकर अनेक प्रयोग किये। उनकी कला में हेनरी मूर का भी असर देखा जा सकता है लेकिन धीरे–धीरे उनकी कला की अपनी पहचान बनी। एक भारतीय 'सिंफनी' रचने में वे सफल हुए।[12] परितोष सेन अपनी कृतियों में जहाँ सामाजिक प्रश्नों पर गम्भीर टिप्पणी कर पाते है, वहीं दर्शक को खिलखिलाने पर विवश भी कर देते हैं।[13] नीरोद मजूमदार ने 1916 ई. में विभिन्न यूरोपीय प्रभावों को आत्मसात करते हुए भी श्रेष्ठ निजत्व की स्थापना की।[14] हेमन्त मिश्र की कला में अतियथार्थवादी प्रभाव हैं, वहीं रथीन मित्रा ने अत्यन्त साधारण तथा दैनिक जीवन में दिखाई देने वाली वस्तुओं और घटनाओं का चित्रण किया है, पर वे उन्हें कलात्मक एवं नाटकीय रूप में प्रस्तुत करते हैं।[15] कलकत्ता ग्रुप के कलाकारों ने बंगाल शैली की 'नास्टेल्जिक' भावुकता से मुक्त होने की कोशिश की और एक नई विचारधारा का प्रचार किया जिसमें पूर्व व पश्चिम का संश्लेषण किया गया था–इस काम के लिए इनके पूर्ववर्तियों गगनेंद्रनाथ, रवींद्रनाथ, तथा यामिनी राय ने पहले ही राह बना दी थी, जैसे कि इस ग्रुप की मान्यता थी, साहसिकता तथा व्यक्तिगत खोज की भावना से प्रेरित होकर ही इन अग्रणी कलाकारों ने इस राह पर कदम बढ़ाए थे, न कि सामूहिक रूप से नव पद्धति का संयोजन करके। कलकत्ता ग्रुप ने नई संभावनाओं को जरूर खोजा था जिससे नए आंदोलन को पनपने का बल मिला था। प्रदोष दासगुप्ता ने लिखा है, ''देवी और देवताओं में खुद को व्यस्त रखे रहने का समय बीत चुका। अब कलाकार अपने युग तथा परिवेश, अपने लोगों तथा समाज से आंखें नहीं मूंदे रह सकता।''[16] हालांकि ग्रुप के सदस्य मानव–मूल्यों तथा परिवेश के प्रति पूर्णतया सजग थे लेकिन उन्होंने 'प्रॉपेगैंडा आर्ट' बनाने से खुद को बचाए रखा। जैसाकि प्रदोष दासगुप्ता ने एक बार कहा था, ''हमने समाजवादी यथार्थवाद का अनुसरण करने की कभी कसम नहीं खाई। हम लोग तो जीवन को समझना चाहते हैं और सृजनात्मक कला के संदर्भ में उसका विश्लेषण करना चाहते हैं। वस्तुतः हम तो बिना किसी राजनीतिक बंधन या नियंत्रण के मानवतावाद में विश्वास करते हैं।''[17] निस्संदेह यह कला के प्रति एक प्रगतिशील तथा स्वस्थ दृष्टिकोण था। कुछ समय पश्चात् प्रदोषदास गुप्ता

नेशनल आर्ट गैलरी के क्यूरेटर हो गये। रथीन मित्रा दून स्कूल में अध्यापक हो गये और प्राणकृष्ण पाल नई दिल्ली के वायुसेना स्कूल में कला–शिक्षक हो गये। शनैः शनैः यह दल विघटित हो गया।[18]

3.3 प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, मुम्बई (1947 ई.)

जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में सिखायी जाने वाली और मुम्बई कला परिषद में दिखाई जाने वाली कला की छुट्टी करने के उद्देश्य से 1947 ई. में सूज़ा, आरा और रजा ने एक ग्रुप चलाने की योजना बनाई। जिसका नाम प्रगतिशील कलाकार ग्रुप रखा गया। प्रगति शब्द में आगे जाने का मंतव्य छिपा हुआ है और वहीं ये कलाकार जाना भी चाहते थे–आगे। प्रगतिशील कलाकार ग्रुप की स्थापना और भारत की स्वतंत्रता करीब–करीब एक ही समय में हुई, यह बात सांकेतिक तो जरुर थी, परन्तु बिल्कुल अनायास थी।[19] प्रगतिशील कलाकार ग्रुप में 6 कलाकार थे। आरा, रजा, सूज़ा और इन तीन कलाकारों के द्वारा लाए गये तीन और कलाकारः आरा, रजा और सूज़ा ने क्रमशः बाकरे, गाडे और हुसैन को ग्रुप में शामिल किया। (चित्र–3) शुरु में कई और कलाकारों को ग्रुप में शामिल करने की योजना बनी, लेकिन शैली की भिन्नताओं पर सोचकर इस विचार का त्याग कर दिया गया और ग्रुप की सदस्यता 6 ही रही। गाडे कोषाध्यक्ष और सचिव सूज़ा बनाये गये। जनसम्पर्क का कार्य आरा को सौंपा गया। उन्होंने पत्रकारों और समीक्षकों से मिलकर ग्रुप पर लेख प्रकाशित करवाये। ग्रुप के सदस्यों ने मुम्बई को न केवल लाल बल्कि इन्द्रधनुषी रंगों में चित्रित करने की ठानी थी। बोमान बेहरम, फ्रांसीसी साहित्य संस्थान के चार्ल्स पेत्रास और डॉ. स्किजल जैसे संग्राहकों को रजा ग्रुप के सम्पर्क में ले कर आये। इसके अलावा हार्टवेल, श्लेसिंगर, रुडी लीडेन और हरमन गोएत्स भी ग्रुप के कलाकारों की नियमित कृतियाँ खरीदते रहे। प्रगतिशील कलाकार ग्रुप की पहली प्रदर्शनी 1949 ई. में हुई।[20] (चित्र–4) इसके बाद ही लगभग सभी कलाकारों ने मान लिया कि भारतीय कला की खोज विदेश में रहकर ही संभव थी, सो इन चित्रकारों का व्यापक बहिर्गमन शुरू हो गया। इस दृष्टि से जब हम देखते है कि प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप की अंतिम प्रदर्शनी 1953 ई. में हुई। इसके बाद ग्रुप ने अपनी सामूहिक गतिविधियां बन्द कर दी, क्योंकि प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के जरिये कला बाजार में कलाकारों को स्थापित करने का काम पूरा हो चुका था, फिर भी ग्रुप बंद करने के पहले ग्रुप की मुहर का प्रयोग वी.एस. गायतोंडे, कृष्ण खन्ना, पद्मसी, तैयब मेहता और रामकुमार को सदस्य बना कर किया गया। (चित्र–5) छह दशकों बाद आज भी दुनिया भर के नीलाम घरों में इन कलाकारों के साथ अनिवार्य रूप से प्रोग्रेसिव

आर्टिस्ट ग्रुप का नाम जोड़ा जाता है ताकि उनकी इस अलग पहचान को स्थाई रखा जा सके।[21] ग्रुप के आदर्श–वाक्य, जो सैमुअॅल बटलर (1853 ई.–1912 ई.) के एक वक्तव्य पर आधारित था, की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि मरणासन्न कला से मृत कला कहीं बेहतर है, मृत कला कलाकार के गले में पड़ी रस्सी की तरह थी, जबकि नई कला सामाजिक विषयों से जुड़ी हुई होगी।[22] ग्रुप के दो कलाकार मकबूल फिदा हुसैन और फ्रांसीस न्यूटन सूज़ा। सूज़ा उम्र में हुसैन से छोटे थे पर हुसैन स्वयं सूज़ा को अपने 'मैंटर' का सम्मानित दर्जा देते थे। हुसैन कम बोलने और सूज़ा बड़बोलेपन के लिए मशहूर थे, पर दोनों ही पिकासों की तरह धैर्यवान और जबरदस्त ऊर्जा के साथ काम करने के लिए जाने जाते है। पिकासो की ही तरह सूज़ा और हुसैन के जीवन में स्त्रियों की केन्द्रीय भूमिका रही है लेकिन हुसैन स्त्रियों को लेकर शालीन, नजाकत–नफासत वाला नजरिया रखने वाले कलाकार रहे है। सूज़ा स्त्रियों के बारे में अहम, आक्रामकता और एक जबरदस्त प्रदर्शनकारी सेक्सुअलिटी को दिखाते रहे–जीवन में भी और कला में भी।[23]

इसी ग्रुप के कलाकार रज़ा की कला को कुछ कला समीक्षक वियना के व्यावसायिक चित्रकार 'प्रोफेसर लाऊमन' का नकलची कहा करते थे, लेकिन संबंध विच्छेदन करने के बाद रज़ा की कला में एक क्रांतिकारी मोड़ आया।[24] ग्रुप के एक और कलाकार आरा पेरिस कला के प्रशंसक होने के नाते 'पिकासो', 'मातिस' और 'राउले' की कला से प्रभावित रहे।[25] इस संगठन के पीछे मुम्बई के धनी कला व्यापारियों और प्रभावशाली विदेशियों का हाथ था। कला समीक्षक रूड़ी वान लेडेन, कलाकार वाल्टर लेंगहमर, जर्मन कला प्रेमी स्लेशिंगर और हर्मन गोएट्ज के अलावा मुम्बई के एलीट लोगों का समूह जिसमें मुल्कराज आनंद, सीलू भरूचा, रेणु खन्ना, कला व्यापारी केकू गाँधी के अतिरिक्त कई ऐसे बुद्धिजीवी और पैसे वाले थे जो भारत की आजादी के बाद एक बड़े कला बाजार की संभावनाओं के बारे में आश्वस्त थे। उन्होंने इस संस्था के नामकरण से ही अपनी प्रखर व्यावसायिक दृष्टि का परिचय दिया। आज जब भी विदेश का सन्दर्भ आता है तब हमारा ध्यान सहज ही अमेरिका और यूरोप की ओर जाता है पर 1947 ई. की स्थितियों में विश्व राजनीति में रूस और पूर्वी यूरोप के तमाम कम्युनिस्ट देशों का बोलबाला था और ऐसे में संस्था का नाम प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप रखना उन्हें निश्चय ही जरूरी लगा। संस्था में जुड़े लोग इस बात को शायद स्थापित करना चाहते थे कि प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप ही एक मात्र संस्था है जो भारतीय कला की प्रगतिशील धारा का प्रतिनिधित्व करती थी। इस ऐतिहासिक झूठ को आज भी देश की बड़ी–बड़ी कला दीर्घाओं, अकादमियों और नीलाम घरों द्वारा

प्रचार जारी हैं।[26] प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के माध्यम से भारत में एक नए कला बाजार का सूत्रपात हुआ, पर संयोग से जिस उत्साह और उम्मीदों के साथ इस संस्था को शुद्ध रूप से मुम्बई के कला व्यापारियों ने अपने स्वार्थ के उद्देश्य से बनाया था वह पूरा नहीं हो सका।[27]

3.4 प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स एसोसिएशन, श्रीनगर, कश्मीर (1948 ई.)

देश के अन्य हिस्सों की तरह, कश्मीर के कलाकारों, लेखकों व चिंतकों ने भी, अपने क्षेत्र में कला को ऊंचा दर्जा दिलवाने की कोशिश की थी। नवंबर 1947 ई. में 'नेशनल कल्चरल फ्रंट' नाम से एक संगठन की स्थापना की गई, जो लोकतंत्र के विचारों तथा सिद्धांतों पर आधारित था। एक युवा महत्वकांक्षी कलाकार पी.एन. काचरू (चित्र–6) इस संगठन का संस्थापक–सदस्य था और उसके साथ थे अनेक कवि, लेखक, नाटककार और संगीतकार।[28] यह फ्रंट कश्मीर में आजादी तथा लोकतंत्र के प्रचार में एक प्रभावशाली संगठन साबित हुआ। 'दि ट्रिओ' (त्रयी) नाम से प्रसिद्ध कलाकारों के पहले ग्रुप के उभरने की पृष्ठभूमि यह थी कि 1948 ई. में दो युवा शिक्षित कलाकार एस.एन. बट्ट और त्रिलोकी कौल, जो सामाजिक कार्य के क्षेत्र में भी सक्रिय थे, काचरू तथा नेशनल कल्चरल फ्रंट के सदस्यों के संपर्क में आए। ये तीनों कलाकार, काचरू, बट्ट और कौल, ही 'द ट्रिओ' नाम से जाने गए। ये तीनों प्रतिदिन मिलते हालांकि उनके पास अपना कोई स्थान या ठिकाना न था। ये तीनों साथ–साथ सैर को निकल जाते, विचार–विमर्श करते और स्केचिंग करते। इनकी ये मुलाकातें 'सैर मुलाकातें' के रूप में प्रसिद्ध हुईं।[29] जून 1948 ई. में गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट एंड क्राफ्ट, कोलकाता के भूतपूर्व प्रिंसिपल पर्सी ब्राउन से इन्होंने भेंट की, जो उन दिनों श्रीनगर में ही रह रहे थे। इन तीनों कलाकारों के वह प्रेरणा–स्त्रोत बने। बांबे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के एस.एच.रजा जब अगस्त 1948 ई. में कश्मीर आए तो उनसे भी इन तीनों की मुलाकातें होती रहीं।[30]

1948 ई. में इन कलाकारों ने अपने संगठन का नाम बदलकर प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स एसोसिएशन रख लिया। पर्सी ब्राउन ने घोषणा की कि ''यह आंदोलन सही मायने में प्रगतिशील है क्योंकि इसने पांच सौ सालों की खाई पर पुल बनाया है और इस तरह परंपरा को वर्तमान के साथ जोड़ दिया है।''[31] इस एसोसिएशन ने बांबे प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के अलावा आल इंडिया एसोसिएशन ऑफ फाइन आर्ट्स तथा दिल्ली शिल्पी चक्र से भी अपना संपर्क बनाए रखा था। 1949 ई. में श्रीनगर में प्रथम कलाप्रदर्शनी आयोजित की। राज्य से बाहर प्रथम प्रदर्शनी भी 1949 ई. में ही दिल्ली में आयोजित की गयी। जिसे वर्ष

की सर्वाधिक रंगीन प्रदर्शनी माना गया।[32] त्रिलोक कौल पहाड़ों व हिमशिखरों के दृश्य के चित्रकार थे, एस.एन. बट्ट रंगों के प्रयोग में माहिर थे तथा काचरू स्मारकीय भवनों के चित्रण में कुशल थे।[33] 1950 ई. में जी.आर. संतोष भी इस एसोसिएशन में शामिल हुए जिससे इन कलाकारों को बहुत सहयोग व समर्थन मिला।[34] इनमें से कौल तथा जी.आर. संतोष ने बाद में ललित कला संकाय, एम.एस. यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा में एन.एस. बेंद्रे के निर्देशन में कला प्रशिक्षण भी लिया था और ये दोनों ही समकालीन भारतीय कला के क्षेत्र में प्रमुख कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित हुए परन्तु यह एसोसिएशन दीर्घजीवी साबित नहीं हुई।

3.5 दिल्ली शिल्पी चक्र, नई दिल्ली (1949 ई.)

समकालीन कला के उत्थान में 'दिल्ली शिल्पी चक्र' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 25 मार्च 1949 ई. को धनराज भगत व बी.सी. सान्याल के साथ मिलकर प्रगतिशील प्रवृत्ति के कतिपय कलाकारों के एक समूह ने इस संगठन का निर्माण किया, जो नई अभिजात संस्कृति के संस्कारों और आधुनिक कला–प्रणालियों की प्रतिक्रियास्वरूप मौजूद समय और वातावरण के साथ कदम से कदम मिलाते हुये कुछ नया कर गुजरने के लिये आगे बढ़े।[35] दिल्ली शिल्पी चक्र में शामिल अन्य प्रमुख कलाकार हैं–हरकिशन लाल, के.सी. आर्यन, दमयंती चावला, दिनकर कौशिक, जया अप्पासामी, श्रीनिवास पंडित और बृज मोहन भनोट। बाद में शिल्पी चक्र से अनेक कलाकार जुड़ते चले गए। जिनमें प्रमुख रूप से देवयानी कृष्ण, सतीश गुजराल, रामकुमार, अविनाश चंद्र, केवल सोनी, बिशंभर खन्ना, राजेश मेहरा, रामेश्वर बरूटा, जगमोहन चौपड़ा, परमजीत सिंह, अनुपम सूद प्रमुख है। शिल्पी चक्र की शुरूआत, इस बात का प्रमाण थी कि युवा प्रगतिशील कलाकार बंगाल शैली के चित्रकारों के काम में अभिव्यक्त लोकप्रिय प्रवृत्तियों से हटकर कुछ नया कार्य करना चाहता है।

अपने आदर्श–वाक्य 'कला जीवन को प्रदीप्त करती है', (आर्ट इल्यूमीनेट्स लाइफ) की व्याख्या करते हुए शिल्पी चक्र के घोषणापत्र में कहा गया था– इस ग्रुप का मानना है कि एक गतिविधि के रूप में कला का जीवन से संबंध टूटना नहीं चाहिएः किसी भी राष्ट्र की कला को अपने लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करना चाहिए और उसे प्रगति की प्रक्रिया में सहायक होना चाहिए। ग्रुप का यह भी मानना है कि कला की प्रगति के लिए कलाकारों को परस्पर निकट आकर इसके लिए कठोर परिश्रम करना होगा और कला की मदद से देश में ओजस्वी राष्ट्रीय संस्कृति तथा प्रफुल्ल जीवन का निर्माण करना होगा।[36]

शिल्पी चक्र केवल कार्यशील कलाकारों को ही सदस्यता प्रदान करता था लेकिन शिल्पी चक्र के द्वारा समय–समय पर होने वाले कार्यक्रमों में कला आलोचकों, लेखकों, संगीतज्ञों और नाट्यकर्मियों को भी आमत्रिंत किया जाता था। शिल्पी चक्र से जुड़े हुए अधिकतर कलाकार पाकिस्तान से आये शरणार्थी थे, जो दिल्ली में बस गये थे। इन कलाकारों ने विस्थापना का दर्द और साम्प्रदायिकता का बर्बर मंजर अपनी आंखों से देखा था। इसके कलाकार कला को एक सृजनात्मक जीवन मानते थे अतः कला में जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति और काल तथा परिवेश के साथ ताल–मेल होना अति आवश्यक है। किसी भी कलाकार की कला उसकी अपनी होती है लेकिन इसका उद्देश्य सम्प्रेषण ही होता है। कलाकार के लिए दर्शकों की प्रतिक्रियाएं बहुत महत्व रखती है फिर चाहे वो प्रशंसा में हो या निंदा में। गैर–सदस्य अतिथि कलाकारों को शिल्पी चक्र की वार्षिक प्रदर्शनियों में हमेशा आमंत्रित करने की परम्परा भी रही थी। ऐसे गैर सदस्य कलाकारों में से शैलोज मुखर्जी तथा के.जी. सुब्रमण्यन का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। गैर–कलाकार सदस्यों के रूप में बलदेव सहाय, पी.एस. नारायणन तथा रिचर्ड बार्थोलोम्यु शिल्पी चक्र के साथ संबद्ध थे जिनका पत्रकार तथा सिद्धांतवादी की भूमिका में, शिल्पी चक्र के आदर्शों के प्रसार में, महत्वपूर्ण योगदान रहा।

कला की विविध गतिविधियों में भाग लेते रहने के बावजूद इसके संस्थापक बी.सी. सान्याल ने चित्रण कार्य में कटौती नहीं की। वे निरन्तर सृजनरत रहे। आप भावुक प्रकृति के थे और सामाजिक चेतना को लेकर आपकी कला विकसित हुई और रेखांकन क्षमता, रंग दक्षता तथा सहज कल्पनाजन्य सामर्थ्य का परिचय निरन्तर बना रहा।[37] दिल्ली शिल्पी चक्र के संस्थापक सदस्य धनराज भगत ने चित्रकला एवं मूर्तिकला दोनों में अपनी श्रेष्ठ प्रतिभा का प्रदर्शन किया लेकिन फिर भी उनका कला कौशल मुख्यतः मूर्तिशिल्पों के लिए प्रसिद्ध रहा।[38] इस संगठन से सम्बद्ध रहे रामकुमार ने मानव संवेदना एवं त्रासदी को सामाजिक परिवेश के साथ प्रस्तुत किया। रामकुमार की कृतियों का स्वर धैर्य तथा मानवीय संवेदना में निहित है।[39] वहीं सतीश गुजराल 'मूड्स' अथवा मनःस्थिति के कलाकार है। उनके चित्र तथा म्यूरल्स, भारतीयता के प्रतीक है।[40] मैसर्ज धूमीमल धरम दास के रामबाबू के सहयोग से दिल्ली में एक कला दीर्घा–भारत में अपनी तरह की पहली कला दीर्घा–का 7 अक्टूबर, 1949 ई. को उदघाटन हुआ।[41] दिल्ली शिल्पी चक्र द्वारा कला की प्रोन्नति तथा कलाकारों के हित में उठाया गया यह एक पुरोगामी कदम था। शिल्पी चक्र के कार्यक्रम उसके घोषणा–पत्र के अनुसार ही होते रहे। शिल्पी चक्र का मानना था कि कला तथा संस्कृति

सम्पन्न लोगो के मनोरंजन का साधन नहीं है अपितु यह सभी आम जन के लिए है क्योंकि कला–संस्कृति का संबंध सभी से होता है। एक कलाकार जन–जन में कला बोध विकसित करता है और कला की सृजनात्मक अनुभूति भी जन मानस को करवाता है। कलाकार का समाज में अपना एक विशिष्ट स्थान होता है।

प्रारम्भ में शिल्पी चक्र के सदस्यों की बैठकें क्रमशः जंतर–मंतर, दिल्ली, जंतर–मंतर रोड पर व बाद में 26 गोल मार्किट सान्याल स्टूडियों पर हुई। शिल्पी चक्र की पहली प्रदर्शनी नवंबर 1949 ई. में जनपथ स्थित मेसोनिक लॉज की बैरकों में हुई थी।[42] दिल्ली के कला–परिदृश्य पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा था। अंततः 1957 ई. में इस संगठन को स्थायी कार्यालय शंकर मार्किट में फ्लैट 19–एफ आवंटित हुआ। इस स्थान पर वार्षिक प्रदर्शनियां, कला वार्ताएं व संगोष्ठियां आदि होने लगी। कालान्तर में ग्राफिक स्टूडियों भी स्थापित किया। यहां से चित्र विक्रय किये जाने लगे तथा जो क्रेता एक साथ कीमत नहीं दे पाते थे। उन्हें धीरे–धीरे कीमत चुकाने की व्यवस्था भी की।[43] यहां विश्वविद्यालय के अध्यापकों, डॉक्टरों, वकीलों, लेखकों, अभिनेताओं, संगीतकारों को पेंटिंग्स बेची जाती थीं। जो लोग एक साथ कीमत नहीं चुका पाते थे, उन्हें कलाकृतियां किश्तों पर भी दे दी जाती थीं। इससे संस्था के संरक्षकों का दायरा खूब बढ़ गया। 1960 ई. के दशक तक दिल्ली शिल्पी चक्र सक्रिय रहा तथा इसके पश्चात् शिथिल होता गया।[44] शिल्पी चक्र के कलाकार पाश्चात्य कला की आधुनिक शैलियों से प्रेरित थे तथा पारम्परिक भारतीय कला में भी गहराई से रूचि रखते थे। आधुनिक पाश्चात्य कला आन्दोलनों के परिणामस्वरूप पश्चिमी कला में सामाजिक यथार्थ के जो भाव दृष्टिगत होते है वहीं भाव शिल्पी चक्र के कलाकारों की कला में भी होते है क्योंकि इन्होंने भी भारत–पाकिस्तान विभाजन में व्यापक सामाजिक परिवर्तन देखा था। दिल्ली शिल्पी चक्र से जुड़े कलाकारों का सम्बन्ध लाहौर के कला–परिदृश्य से रहा था अतः जो विचार व प्रवृतियाँ लाहौर के कला–परिदृश्य में निहित थी, वही शिल्पी चक्र की कला में भी। धीरे–धीरे शिल्पी चक्र की इन प्रवृतियों और विचारों का प्रभाव देश के अन्य स्थानों पर भी पडने लगा। शिल्पी चक्र का प्रयास अब यह था कि दिल्ली में होने वाली गतिविधियों से सारे देश के दर्शकों को परिचित करवाया जाए और इसके द्वारा पहले कोलकाता में और फिर नवंबर 1958 ई. में मुम्बई में प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं।[45] इससे इन दोनों शहरों के कलाकारों तथा कला आलोचकों में शिल्पी चक्र की गतिविधियों के प्रति गहरी दिलचस्पी पैदा हुई।

दिल्ली शिल्पी चक्र पर आधारित टाइम्स ऑफ इंडिया, मुम्बई के 12 दिसम्बर, 1958 ई. के अंक में प्रकाशित हुआ एक लेख था : बंबई के आम लोगों तथा विशेषतया नगर के कलाकारों को श्री पी.ए. नारियलवाला, के.के. हेब्बार, डॉ. मुल्कराज आनंद, श्री जे.डी. गोनधालेकर, एस. चावडा और विशेष रूप से के.एच. आरा का आभार मानना चाहिए कि इन्होंने जहांगीर आर्ट गैलरी में दिल्ली शिल्पी चक्र की प्रदर्शनी प्रस्तुत की। कला संरक्षक तथा कला आलोचक आर.वी. लाइडेन द्वारा उद्घाटित इस प्रदर्शनी में दिल्ली के 16 कलाकारों की 46 पेंटिंग्स तथा मूर्तिशिल्प शामिल हैं और कला के प्रति सजग लोगों के लिए ये कृतियां आंख खोलने वाली साबित होगीं।[46](चित्र–7)

दिल्ली शिल्पी चक्र के कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों में अधिकतर सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों को शामिल कर समकालीन भारतीय कला को एक नई दिशा प्रदान की। इसी कारण इस संगठन का महत्व आज के सन्दर्भों में भी प्रासंगिक प्रतीत होता है।

3.6 बांबे ग्रुप, मुम्बई (1957 ई.)

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के बिखरने के बाद 'बांबे ग्रुप' नाम से एक नया ग्रुप उभर कर आया। बांबे ग्रुप कुछ अन्य कलाकारों ने मिलकर बनाया था हालांकि इसमें प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के कुछ पूर्व–सदस्य भी शामिल थे–के.के.हेब्बार के नेतृत्व में कलाकार के. एच.आरा तथा एच.ए.गाडे। इस ग्रुप में शामिल होने वाले अन्य कलाकार थे–एस.डी.चावडा, डी.जी.कुलकर्णी, वी.एस.गायतोंडे, मोहन सामंत (चित्र–8), एस.बी.पल्सीकर, बाबू राव सादवलकर और हरकिशन लाल।[47] यह ग्रुप 1957–62 ई. तक सक्रिय रहा और इसने छह बड़ी प्रदर्शनियों का आयोजन किया जिनका भरपूर स्वागत हुआ।[48] अजंता तथा भारतीय लघुचित्रों से प्रेरित होकर इस ग्रुप के कलाकारों ने, आरंभ में, समकालीन संवेदना को अपनाते हुए भारतीय व पश्चिमी तत्त्वों के संश्लेषण का प्रयास किया लेकिन क्रमशः चित्रमय रीति को अपनाते हुए अमूर्तन तथा सरल रूपाकारों की ओर मुड गए। इनमें से हरेक कलाकार की अपनी विशिष्ट रीति रही। उदाहरण के लिए, हेब्बार ने अपने चित्रण में भारतीय जन–जीवन, रेखा व रंगों को ही विशेष महत्व दिया। चित्रों में चटकीले लाल, नीला, पीला एवं गहरे भूरे रंग का प्रयोग अधिक किया।[49] पल्सीकर ने अजीब तरह की रहस्यमयता लिए एक नई तरह की 'भारतीय' शैली का विकास किया, सामंत ने 'आकारहीत संयोजन में गुह्य विषयवस्तु' को अपना लक्ष्य बनाया, कविता तथा दिक् के क्षेत्र में हुई

वैज्ञानिक उपलब्धियों में अपने विषयों में खोजा, हरकिशन लाल की कला मुख्यतः एक खास लय वाले रंगों की बहती नदी के समान दृश्यचित्रों में अभिव्यक्त हुई है[50] और गायतोण्डे की कला का आदर्श है जिसमें न तो जीवन से असंगति है न विचार से। यह कला अपने विन्यास में समकालीन भारतीय कला को विस्तार देती है और उसके विकास को निर्धारित करती है।[51] हालांकि बांबे ग्रुप के कलाकार रेखांकन तथा तकनीक के क्षेत्र में अत्यंत कुशल थे लेकिन उन्होंने प्रायः अमूर्त अभिव्यंजनावाद तथा अन्य आधुनिक शैलियों को ही अपनाने का प्रयास किया।

3.7 ग्रुप 1890, नई दिल्ली (1963 ई.)

भारत के विभिन्न प्रान्तों में ललित कला अकादमी के क्षेत्रीय केन्द्र स्थापित होने से कला में क्षेत्रवाद का प्रभाव आने लगा और भारत के कुछ कलाकार विदेशों में रहकर अपने आपको श्रेष्ठ मानने लगे। इसी के विरोधस्वरूप 1963 ई. में भारत के कुछ कलाकारों द्वारा दिल्ली में एक कलाकार–समूह की स्थापना की जिसे 'ग्रुप 1890' नाम दिया गया।[52] स्थापना के समय इस कलाकार समूह की कोई विचारधारा नहीं थी, परन्तु इसके सदस्य कलाकार पश्चिमी कला–शैलियों की अनुकृति के समर्थन में नहीं थे और नहीं पाश्चात्य कला की आधुनिक प्रवृतियों के द्वारा परम्परागत भारतीय कला–शैली में सुधार के पक्ष में थे। इस समूह के कलाकार आधुनिक कला और परम्परा दोनों को ही अपने अनूकुल नहीं मानते थे और अपने विचार अपने ढ़ंग से व्यक्त करने में विश्वास रखते थे। इस समूह के कलाकारों की 'शैली' एक दूसरे से पूर्णतः भिन्न थी तथा उनके कार्य करने की कला–पद्धतियाँ भी भिन्न–भिन्न थी।

ग्रुप के संस्थापक जे.स्वामीनाथन ने एक कला वार्त्ता में कला के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा था कि–''कला वह आईना है, जिसमें प्रकृति अपना चेहरा कभी नहीं देख सकती।'' यानी जो कुछ प्रकृति में है, उसे हूबहू बना देना न तो सम्भव है और कोई बना भी दे वह कला नहीं होगी। कला में तो प्रकृति भी रूपान्तरित ही होगी और कला में प्रकृति का यह रूपान्तरण ही तो जीवन–प्रकृति के नए अर्थ और आयाम हमें सौंपता हैं।[53] ग्रुप के संस्थापकों में से एक अम्बादास अपनी निराली तकनीक और प्रभाव के लिए मशहूर रहे हैं। अम्बादास के लिए कला एक साथ घटित होना और प्रदर्शन दोनों था। कला उनके लिए निरन्तर खोज और आश्चर्य का सबब रही।[54] ग्रुप के अन्य सदस्यों में

ऐरिक बोवन, ज्योति भट्ट, राजेश मेहरा, एम.रेड्डपा नायडू, राघव कनेरिया, बालकृष्ण पटेल और एस.जी. निकम थे। (चित्र–9)

ग्रुप 1890 की पहली प्रदर्शनी 20–29 अक्टूबर, 1963 ई. को रवींद्र भवन, नई दिल्ली में हुई थी। अतियथार्थवादी कवि आक्तेवियो पाज ने, जो उन दिनों भारत में मैक्सिको के राजदूत थे, इस प्रदर्शनी के केटलॉग की प्रस्तावना में लिखा था– इस प्रदर्शनी का वास्तविक विषय इन कलाकारों द्वारा पारंपरिक बिंब के प्रति अपनाया गया उनका प्रतिरोधी दृष्टिकोण है। समकालीन भारतीय कला, यदि इस देश को अपने अतीत के समान महान कला का सृजन करना है तो, इसी तरह की 'उग्र मुठभेड़' से जन्म ले सकेगी।[55] इस प्रदर्शनी का उद्घाटन जवाहरलाल नेहरू ने किया था। प्रदर्शनी का समापन इस घोषणा से हुआ था, ''कला अपने आप में एक यथार्थ है, यह अनुभव की एक संपूर्ण नई दुनिया है, स्वतंत्रता के मार्ग पर खुलने वाला प्रवेश–द्वार है।''[56] ग्रुप की, 1963 ई. में आयोजित प्रदर्शनी ही, पहली और आखिरी प्रदर्शनी भी थी।[57] हालांकि यह ग्रुप बाद में छिन्न–भिन्न हो गया लेकिन इससे जुड़े अनेक कलाकारों ने बहुत ख्याति पाई।

3.8 चोला मंडल, चेन्नई (1966 ई.)

50वें दशक में के.सी.एस. पणिकर के लिए मानव रूप और स्थान महत्वपूर्ण काल था। उन्होंने अपना ध्यान मूल रूप से भारतीय परिदृश्य और रंगों को अपने चित्रों में समझने की तरफ केन्द्रित किया। अजंता की कथाओं से उन्हें आदर्श रंग पर अलंकारिक प्रदर्शन को समझने का मौका दिया।[58] पणिकर की प्रेरणा और सक्रिय सहयोग से चेन्नई के लगभग 40 कलाकारों ने 1966 ई. में चोला मण्डल सागर तट पर महाबलिपुरम के सामने कलाकारों के एक ग्राम की स्थापना की थी। शिल्पग्राम के विचार का यह विश्वभार में प्रथम प्रयोग था। यह गांव सारे विश्व में निराला है। यहाँ सामूहिक जीवन नई दृष्टि प्रदान करता है और कलाकार ऐच्छिक ढ़ंग से पूर्ण स्वतंत्र होकर कार्य करता है, साथ ही वह मिलकर इस ग्राम को चलाता भी हैं।[59] यहाँ कलाकारों के लिए स्टूडियों, कला दीर्घा, कार्यशाला, अतिथि गृह तथा आवास की व्यवस्था हैं, चोलामण्डल कलाकारों की आवश्यकता के अनुरूप विकसित हुआ हैं। (चित्र–10) पणिकर ने मृत्युपरयन्त तक यही कार्य किया।

यहाँ ऐतिहासिक तथ्यों को याद करना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि किन्हीं अज्ञात कारणों से आधुनिक भारतीय कला इतिहास से अन्य सभी कलाकारों के सगठनों को भुलाकर केवल एक ही संगठन 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप', मुम्बई को ही कला व्यापारियों, गैर

सरकारी और सरकारी कला अकादमियों और यहाँ तक कि राष्ट्रीय कला संग्रहालय तक ने क्यों आधुनिक भारतीय कला का सबसे महत्वपूर्ण संगठन माना और भारत एवं विदेश में प्रचारित किया।[60] दुर्भाग्य से कला व्यापारियों की सुसंगठित साजिशों के चलते आधुनिक भारतीय चित्रकला में जिन चित्रकारों को 'प्रगतिशील' कहकर एक छद्म संगठन प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप बनाकर विश्व बाजार में चित्रकला के नाम पर 'माल' का विपणन शुरू किया गया। उनके इस प्रयास में राष्ट्रीय कला संस्थाएं समर्थ सहयोगी की भूमिका में कार्यरत रही और इसके परिणामस्वरूप छः दशकों बाद भारतीय चित्रकला में प्रगतिशील कलाकारों के नाम पर कुछ यौन विकृत, कुछ धर्मपरायण, कुछ तंत्रसाधक और कुछ महज नक्काशीकारों का ही बोलबाला रहा हैं। प्रगतिशील कला संगठन और उनके कलाकारों के अलावा अन्य योग्य कला संगठनों और उनके कलाकारों को न केवल उपेक्षित किया गया बल्कि समूची चित्रकला विधा को ही जनता से काट दिया गया है। बावजूद इन सबके जनोन्मुखी कला को पूरी तरह से मिटा पाना गैर–सरकारी कला व्यापारियों और सरकारी कला संस्थाओं के लिए संभव नहीं हो पाया है क्योंकि प्रगतिशील कला केवल जनता के सहारे ही इतिहास में गतिमान रहती है। उसे किसी कला दीर्घा, अकादमी या संग्रहालय की आवश्यकता नहीं होती।[61]

सन्दर्भ

1. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृष्ठ–133.
2. प्रथम प्रदर्शनी विवरणिका, यंग तुर्कस, मुम्बई, 1941 ई.
3. डॉ. अवधेश मिश्र (सम्पादक) : कला दीर्घा, अक्टूबर 2012 ई., वर्षः13, अंक : 25, पृष्ठ 7.
4. घोषणा–पत्र, कलकत्ता ग्रुप, कोलकाता, 1943 ई.
5. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिपेक्ष्य, पृष्ठ 65.
6. वही
7. वही
8. वही
9. वही, पृष्ठ–66
10. वही
11. विनोद भारद्वाज : बृहद आधुनिक कला कोश, पृष्ठ–284.
12. वही, पृष्ठ–302
13. ज्योतिष जोशी : आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृष्ठ–191
14. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ 77
15. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृष्ठ–140–142.
16. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–66.
17. वही, पृष्ठ–67
18. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : कला और कलम, पृष्ठ–256.
19. विनोद भारद्वाज : बृहद आधुनिक कला कोश, पृष्ठ–393
20. वही, पृष्ठ–394
21. डॉ. अवधेश मिश्र (सम्पादक) : कला दीर्घा, अप्रेल 2013 ई., वर्ष : 13, अंक : 26, पृष्ठ–10
22. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ 68.
23. विनोद भारद्वाज : कला का रास्ता, पृष्ठ 65.
24. डब्ल्यू. जार्ज : रजा एण्ड दी ओरियण्ट ऑफ दी स्प्रिट, ललित कला कन्टेम्परेरी–16, सितम्बर, 1973 ई., पृष्ठ–32.
25. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–366.

26. डॉ. अवधेश मिश्र (सम्पादक): कला दीर्घा, अप्रेल 2013 ई., वर्ष:13, अंक : 26, पृष्ठ 10.

27. वही, पृष्ठ–12

28. प्राणनाथ मागोः भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–76.

29. वही, पृष्ठ–78.

30. वही

31. वहीं, पृष्ठ–77

32. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–80

33 वही

34. वही

35. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–367

36. घोषणा–पत्र, दिल्ली शिल्पी चक्र, वर्ष–1949 ई.

37. पी.आर. रामचन्द्र राव : बी.सी. सान्याल, ललित कला अकादमी, दिल्ली पृष्ठ–75

38. शची रानी गुर्टू : कला के प्रणेता, धनराज भगत, दिल्ली, पृष्ठ–408.

39. अविनाश बहादुर वर्मा : भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ–309–310.

40. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : आधुनिक भारतीय कला के आधार स्तम्भ, पृष्ठ–97

41. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–73.

42. वही, पृष्ठ–74

43. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–80

44. वही

45. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–75.

46. 'टाइम्स ऑफ इण्डिया, मुम्बई, 12 दिसम्बर, 1958 ई.

47. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला–एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ–70

48. वही

49. डॉ. त्रिलोकी नाथ गौतम : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ 111.

50. डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, पृष्ठ–110.

51. ज्योतिष जोशी : आधुनिक भारतीय कला, पृष्ठ–219.

52. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृष्ठ–173.

53. प्रयाग शुक्ल : आज की कला, पृष्ठ–158.

54. डॉ. अवधेश मिश्र (सम्पादक) : कला दीर्घा, अक्टूबर 2012 ई., वर्ष : 13, अंक : 25, पृष्ठ – 22.

55. केटेलॉग : ग्रुप—1890, प्रथम प्रदर्शनी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली, 20—29, अक्टूबर 1963 ई.

56. प्राणनाथ मागो : भारत की समकालीन कला — एक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ—78.

57. वही

58. कुमकुम भारद्वाज (सम्पादक) : रंगो का संयोजन, पृष्ठ—176.

59. डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल : आधुनिक भारतीय चित्रकला, पृष्ठ—104.

60. डॉ. अवधेश मिश्र (सम्पादक) : कला दीर्घा, अक्टूबर 2012 ई., वर्ष : 13, अंक : 25, पृष्ठ—7.

61. वही

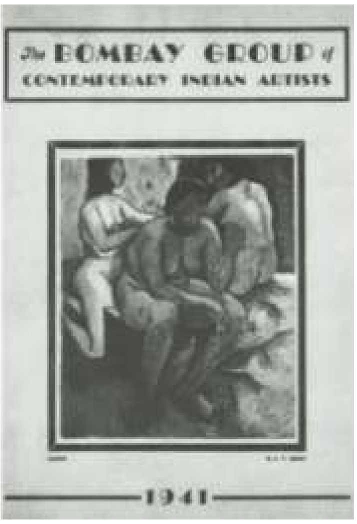

fp=&1 % ^n ckc xi vkQ dVEijjh bfM;u vkfVLV l*
dh iFke in'kuh&1941 b- dh foojf.kdk

fp=&2 % ink"knkl xlrk

fp=&3 % ikxfl o vkfVLV xi] eEcb] 1949 b- d lLFkkid dykdkj
iFke ifä& ¼ck;s l nk;s½ % ,Q-,u- lstk] d-,p- vkjk] ,p-,- xkM
f}rh; ifä&¼ck;s l nk;s½ ,e-,Q- glu] ,l-d- ckdj] ,l-,p- jtk

fp=&4 % ikxfl o vkfVLV xi] eEcb dh iFke in'kuh foojf.kdk
o ?kk"k.kk&i= 1949 b-

fp=&5 % ikxfl o vkfVLV xi] eEcb d dN ie[k dykdkj o lg;kxh
¼ck; l nk;½ eYdjkt vkuUn] vkjk] glu] Jherh yxgej] cky NkcMk
,o vU; ¼cB g,½ [k'khn xk/kh] ckdj] r;c egrk] dd xk/kh ¼[kM g,½

fp=&6 % ih-,u- dkp:] lLFkkid lnL;&ikxfle vkfVLVl ,lkfl,'ku] Jhuxj] d'ehj

Exhibition Of Paintings By Delhi Silpi Chakra

BY OUR ART CRITIC

NEW DELHI, Saturday.—The Delhi Silpi Chakra", which was formed in April this year by a bunch of talented artists and which has, within the past few months of its career, done a lot to bring together artists in Delhi, has opened its second representative exhibition of paintings and sculpture at the Freemason's Hall, Queensway, New Delhi, which will remain open till November 20.

The Silpi group, on the whole, has a spirit of devotion, self-criticism and a very valuable sense of modesty in creating something really significant and related to contemporary aspects of life and culture in the modern world.

THE EXHIBITS

B. Sanyal imparts to everyday scenes a painter's delight and colourful quality. His "Buffaloes" captures the mood of resting animals with characteristic simplicity. No. 107 ... mobility and movement ... and No. 102 is an interesting ...

... exploited the tempera ... excelling results.

Dr. Fabri is seen as a mystic ... realist in his very powerfully conceived dream in No. 28 but the ... mystery of the work takes ... much from its eloquence. The painting is a delight for its pure colour combination. The ... of his Buddha with a ... halo ... a rather unusual attempt to represent with a western hand an oriental theme with originality.

Mago's No. 90 creates a striking atmosphere of unusual appeal.

Kanwal Krishna's new works ... deeper hues, particularly No. ... "Standing Rock" in water colour ... an encouraging experiment in the creation of plastic effects and a certain striking atmosphere. Mrs. Fabri's delight in colour is almost infectious. She can place her colours and plan her space in deeply ... colours but sometimes her feeling ... fear, for the blue, particularly ... No. 35 somewhat takes away or detracts from the rest of the creation ...

An Eye-opener To Art Lovers

DELHI SILPI CHAKRA EXHIBITION

By Our Art Critic

THE Bombay public in general and the City artists in particular ought to be grateful to Mr. P. A. Narielwala, K. K. Hebbar, Dr. Mulk Raj Anand, Mr. G. D. Gondhlekar, S. Chavda and the

fp=&7 % fnYyh f'kYih pØ] ub fnYyh dh fofHkUu in'kfu;k
d ckj e ie[k vxth lekpkj&i=k e idkf'kr lekpkj

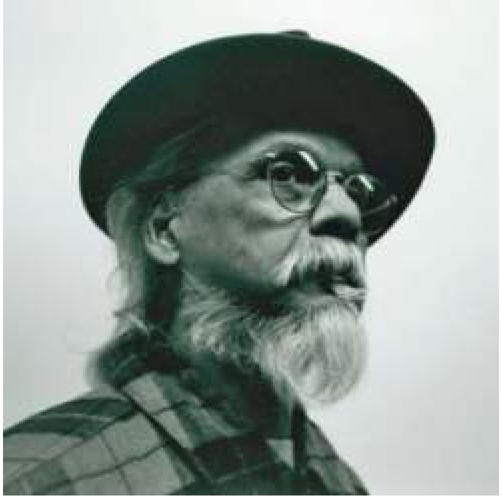

fp=&8 % ekgu lker

fp=&9 % xi&1890 d lnL; dykdkj] ¼Åij dh ifä e ck;s ls nk;s½ T;kfr HkVV] fgEer 'kkg] tjke iVy] ¼e/; ifä e ck;s ls nk;s½ jk?ko dufj;k] jktus'k egjk] t- Lokehukfku] ¼uhp dh ifä e ck;s ls nk;s½ ,l-th- fude] th-,e- 'k[k] vEcknkl] cky—".k iVy

fp=&10 % pkyk e.My] pUub

अध्याय-चतुर्थ

राजस्थान में कला व कला शिक्षा प्रोन्नति के प्रमुख केन्द्र एवं राजस्थान का समकालीन कला परिदृश्य

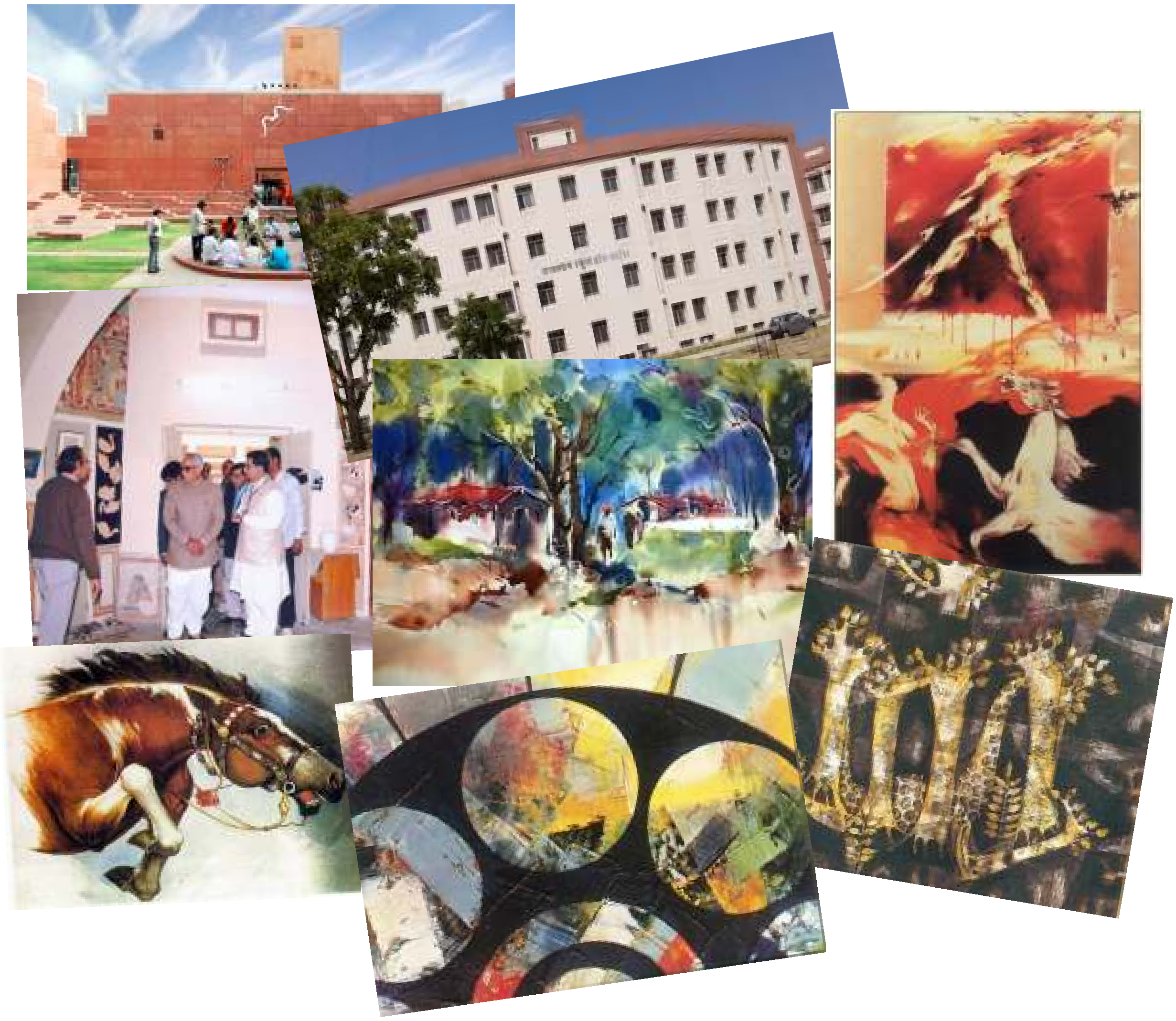

राजस्थान में कला व कला शिक्षा प्रोन्नति के प्रमुख केन्द्र एवं राजस्थान का समकालीन कला परिदृश्य

4.1 राजस्थान में कला प्रोन्नति के प्रमुख केन्द्र

4.1.1 राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर

चाक्षुष कला के क्षेत्र में की गई प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करने और उन्हें एक सूत्र में बांधने के उद्देश्य को लेकर 24 नवम्बर, 1957 ई. को भारत के उपराष्ट्रपति एवं महान् दार्शनिक डॉ. एस. राधाकृष्णन् के कर कमलों द्वारा राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर का उद्घाटन किया गया। इसके प्रथम अध्यक्ष राज्यरत्न प्रताप राय जी मेहता ने राजस्थान की सभी रियासतों के समसामयिक कलाकारों को कला एवं संस्कृति के उत्थान हेतु आमन्त्रित किया। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्राचार्य रामगोपाल विजयवर्गीय, पिलानी के भूरसिंह शेखावत एवं कृपाल सिंह शेखावत जैसे कला मनीषियों ने प्रदेश के समसामयिक चित्रकारों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया जिससे प्रदेश के सभी वरिष्ठ व युवा कलाकार एक मंच पर आ सके।[1] इसका एक संविधान बना और उसमें विस्तार से अकादमी के कार्य एवं अधिकार का उल्लेख किया गया। अकादमी के कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं– चित्र, शिल्प, वास्तु तथा सम्बन्धित कलाओं के क्षेत्र में अध्ययन और खोज को प्रोत्साहित करना, कला संगठनों में एक्य को प्रोत्साहित करना और राज्य में उनके प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देना, कला के विद्वानों में विचारों के आदान–प्रदान के लिए कला–वार्ताओं, संगोष्ठियों व कलाकारों से उनकी भेंट–वार्ताओं का आयोजन करना, कला सम्बन्धी साहित्य, पत्र, पत्रिकाएं, चित्र और चित्र–पुस्तकें आदि प्रकाशित करना, परम्परागत कला–तत्वों के पुनर्जीवन में योगदान देना, प्रदर्शनियों द्वारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को पोषित करना आदि।

कला प्रदर्शनियों का आयोजन, पुरस्कार, सर्वेक्षण, छात्रवृत्ति, पुस्तकालय, प्रकाशन, कलाकारों तथा कला–संगठनों को आर्थिक सहायता, संगोष्ठि आदि कुछ प्रारम्भिक योजनाएं थीं जिनको लागू करके अकादमी ने अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने की कोशिश की। समय और अनुभव के साथ यह महसूस किया जाने लगा कि ये योजनाएं पर्याप्त नहीं हैं और फिर चित्रों की खरीद, लेखकों को मानदेय, शोध छात्रों को छात्रवृत्तियां, पुरस्कार, ग्राफिक वर्कशाप आदि योजनाएं प्रारम्भ की गई। पिछले कुछ वर्षों से कुछ नई योजनाएं चलाई गई

यथा कला–शिविरों का आयोजन, कला मेला, सरकार और सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में चित्रों को लगवाना, अन्तर्राज्यीय कला प्रदर्शनी आदान–प्रदान, समसामयिक कलाकारों के मोनोग्राफ का प्रकाशन, तत्स्थलीय बाल चित्रकला प्रतियोगिता, प्रदर्शनी वाहन, आधुनिक कला दीर्घा, आमेर कला दीर्घा, कला नगर की स्थापना के प्रयास आदि।

प्रारम्भ में अकादमी एक सरकारी विभाग था किन्तु सन् 1959 ई. में इसे स्वायत्त संस्था बना दिया गया, इसका अलग संविधान बना और राज्य सरकार ने इसे अपनी योजनाओं और अन्य खर्चों के लिए शत प्रतिशत अनुदान देना स्वीकार किया।[2] अकादमी द्वारा वरिष्ठ कलाकारों को उनके कला योगदान के लिए राज्य का सर्वोच्च कला सम्मान कलाविद् (फैलोशिप) भी प्रदान किया जाता रहा है। सबसे पहले कलाविद् की उपाधि राज्य के वयोवृद्ध चित्रकार श्री रामगोपाल विजयवर्गीय को दी गई। अकादमी अब तक 21 चित्रकारों व 4 मूर्तिकारों को इस उपाधि से सम्मानित कर चुकी है। सम्मानित किये जाने वाले कलाकार के जीवन एवं कृतित्व पर एक मोनोग्राफ का भी प्रकाशन किया जाता है जिसमें उसकी श्रेष्ठ कृतियों के 20–25 चित्र भी छापे जाते हैं। (राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर से कलाविद् (फैलोशिप) से सम्मानित कलाकारों की सूची हेतु परिशिष्ट–7 का अवलोकन करें)।

अकादमी द्वारा समय–समय पर वार्षिक और अन्य प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जाता है। प्रदर्शनियों के आयोजन से कलाकारों की कृतियों से सीधे जनता का साक्षात्कार होता है। अकादमी द्वारा आयोजित पहली प्रदर्शनी प्राचीन राजस्थानी चित्रों की प्रदर्शनी थी जिसका उद्घाटन प्रख्यात दार्शनिक एवं भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने 24 नवम्बर, 1957 को स्थानीय महाराजा कॉलेज के हॉल में किया। यह प्रदर्शनी 30 नवम्बर तक चली थी।[3] इसके बाद समसामयिक कला के 168 चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन अजमेर में किया गया जिसका उद्घाटन भारत के तत्कालीन वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने किया। इस प्रदर्शनी के दौरान रूपये 105/– की दो कला कृतियां प्रथम बार बिकी थीं।[4] 20 से 28 मार्च, 1958 तक अकादमी की प्रथम वार्षिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें 181 चित्र तथा 42 मूर्तियाँ प्रदर्शित की गई थी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल सरदार गुरमुख निहाल सिंह ने किया था। (चित्र–11) इस प्रदर्शनी में से रू. 4350/– के 18 चित्र बिके थे।[5] इसी वर्ष 16 से 26 सितम्बर तक अकादमी प्रांगण में राजस्थान जन जीवन के प्रख्यात चितेरे स्व. भूरसिंह शेखावत के चित्रों की एकल प्रदर्शनी लगाई गई थी। इस प्रकार वार्षिक एवं

एकल प्रदर्शनियों का सिलसिला शुरू हुआ। प्रथम निर्णायक मण्डल के सदस्यों में कला दिग्गज के. के. हेब्बार और कला–ममर्ज्ञ रायकृष्णदास जैसे व्यक्ति सम्मिलित थे।[6]

इस अकादमी ने ही सम्भवतः देश में सर्वप्रथम अन्तर्राज्यीय कला प्रदर्शनी आदान–प्रदान योजना प्रारंभ की जिसके अन्तर्गत गुजरात, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, ओड़िशा, मणिपुर आदि राज्यों के कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी जयपुर में की जा चुकी है। राजस्थान के कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी भी भारत के अनेक शहरों में इस योजना के तहत लगाई जा चुकी है। अकादमी समय–समय पर दूतावासों के सौजन्य से प्राप्त विदेशी कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी भी आयोजित करती है। पिछले वर्षों में यूगोस्लाविया, पोलैण्ड, ब्रिटेन, रूस, हंगरी, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, अमेरीका आदि देशों के कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई है।

स्कूलों तथा कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों में अनेक प्रतिभाएं छिपी रहती हैं। अकादमी ने इनको सामने लाने और प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अखिल राजस्थान छात्र कला प्रतियोगिता प्रारम्भ की। इस हेतु छात्र कला प्रदर्शनियां आयोजित की जाती हैं। हर वर्ष दस श्रेष्ठ कृतियों पर नकद पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। राज्य के प्रमुख नगरों में चयनित और पुरस्कृत कृतियों की प्रदर्शनी की जाती है। इसके साथ ही कलाकारों को एकल अथवा सामूहिक रूप से अपनी कृतियों की प्रदर्शनी राज्य में अथवा राज्य से बाहर करने को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अकादमी उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है। अकादमी ने आमजन को कला से लाभान्वित करने के लिए प्रदर्शनी वाहन का निर्माण भी करवाया है। इसमें लगभग 33 चित्र प्रदर्शित किए जाते हैं। चित्रों को समय–समय पर बदल दिया जाता है। अब जिस शहर में प्रदर्शनी लगाई जाती है, उसके आस–पास के इलाकों, विशेषकर पर्यटन स्थलों पर प्रदर्शनी वाहन को भेजा जाता है। राज्य के अलावा अब देश के कोने कोने में अकादमी प्रदर्शनियों का आयोजन करने लगी है क्योंकि प्रदर्शनी वाहन के माध्यम से यातायात पर होने वाले बड़े खर्च और परेशानियों से राहत मिली हैं। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी सहित अनेक अति विशिष्ठ व्यक्तियों ने वाहन और उसमें लगे चित्रों का अवलोकन किया है। प्रदर्शनी वाहन के निर्माण के फलस्वरूप ही अकादमी अहमदाबाद, मुम्बई, हैदराबाद, बेगंलुरू, चेन्नई, गोवा, ग्वालियर, भोपाल, कोलकाता, भुवनेश्वर, लखनऊ, चण्डीगढ़, दिल्ली, शिमला आदि दूर–दूर के शहरों में राजस्थान के कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी करने में सफल हुई हैं।

अकादमी हर वर्ष नियमित रूप से संगोष्ठियों, भेंट वार्ताओं, कला–वार्ताओं और विचार–गोष्ठियों के लिए राज्य और देश के प्रख्यात कलाकारों, कला–मर्मज्ञों, कला इतिहासकारों और कला–समीक्षकों को भी आमन्त्रित करती है। इन आयोजनों में कलाकारों, कला–छात्रों और कला–प्रेमियों को आमन्त्रित किया जाता है। 21 मार्च, 1958ई. को पहली विचार गोष्ठि आयोजित की गई थी जिसकी अध्यक्षता मूर्धन्य कलामर्मज्ञ रायकृष्णदास ने की थी। अब तक कंवल कृष्ण, डॉ. मुल्कराज आनन्द, कार्ल खण्डालावाला, डॉ. सत्यप्रकाश, लक्ष्मण पई, के. के. हेब्बार, रिचर्ड बार्थोलोमियो, कु. संग्राम सिंह, जी.आर. संतोष, प्रमोद चन्द्र, एस.ए. कृष्णन, प्रो. आर.एस.बिष्ट, ओ.पी. शर्मा, आनन्द देव, एस.एस. वोरा, एस.वी. वासुदेव, अब्बास (ईराक), मेडम नाडा नामनौनेविक (बेलग्राड), मेडम एबेलदीवा (मास्को), प्रो. डोनरांग वांग (थाईलैण्ड), जेलीमिर मिलाडिन (युगोस्लाविया) आदि अनेक कलाकारों व विद्वानों के विचारों, सुझावों व अनुभवों से कलाकार लाभान्वित हुए हैं।[7]

कला शिविरों का आयोजन भी पिछले कुछ वर्षों से अकादमी की एक महत्वपूर्ण गतिविधि बन गई है। इसमें राज्य के कुछ श्रेष्ठ कलाकारों के अलावा देश के कुछ प्रसिद्ध चित्रकारों को भी आमन्त्रित किया जाता है। अकादमी उन्हें कैनवास उपलब्ध कराने के अलावा, यात्रा भत्ता, आवास और खाने–पीने की सुविधा भी प्रदान करती है। शिविर में बनाये गए चित्र अकादमी अपने संग्रह में रख लेती है। कुछ शिविर राजस्थान पर्यटन विभाग की सहायता से भी आयोजित किए गए और इनमें निर्मित कृतियां भी उस विभाग ने खरीद ली। चूंकि ये शिविर महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर लगाये जाते है अतः अनेक देशी–विदेशी पर्यटक चित्र बनाते हुए कलाकारों को देखते है और पंसद आने पर कृतियां खरीद लेते हैं। इस प्रकार कलाकारों को सीधा आर्थिक लाभ भी पहुंचता है। अब तक जोधपुर, जैसलमेर, पुष्कर (अजमेर), माउण्ट आबू आदि स्थनों पर शिविरों के सफल आयोजन किए जा चुके हैं।

कलाकारों और कला के विद्यार्थियों के हित के लिए अकादमी ने ग्राफिक मशीन खरीद कर उसे स्थानीय राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के परिसर में लगाया गया। वहाँ विद्यार्थी नित्य इसका उपयोग करते है। समय–समय पर अकादमी के सहयोग से कला–संस्थाएं ग्राफिक कार्य शिविरों का आयोजन करती है। इन आयोजनों में प्रसिद्ध छापा चित्रकारों को आमन्त्रित किया जाता है जो वार्ताओं व डेमोन्सट्रेशन के द्वारा कलाकारों को छापा चित्रों को बनाने की विधि व अन्य तकनीकी जानकारी देते हैं।

अकादमी, केन्द्रीय ललित कला अकादमी व अन्य स्त्रोतों से प्रसिद्ध चित्रकारों व मूर्तिकारों की कृतियों की रंगीन पारदर्शियां भी प्राप्त करती है। अकादमी के संग्रह में उपलब्ध कलाकृतियों की भी रंगीन पारदर्शियां तैयार करवाई गई हैं। दूतावासों के सौजन्य से प्राप्त कला फिल्में भी समय–समय पर कलाकारों को दिखाई जाती हैं। विंशी, रेम्ब्रां, पिकासो, वॉन गाग, अमृता शेरगिल, रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि कलाकारों के जीवन व कृतित्व पर फिल्मों का प्रदर्शन किया गया है।

अकादमी प्रारम्भ से ही कला संगठनों के गठन एवं उनको कलात्मक गतिविधियां करने के लिए प्रोत्साहन देती रही है। राज्य में जहां पहले एक दो ही कला संगठन थे वहाँ अब राज्य के करीब–करीब हर प्रमुख शहर में संगठन स्थापित हुए। कुछ प्रमुख संगठन है : तूलिका कलाकार परिषद् (उदयपुर), टखमण 28 (उदयपुर), आज (उदयपुर), जोधपुर कलाकार परिषद् (जोधपुर), धोरा (जोधपुर), कैनवास (अजमेर), कलावृत्त (जयपुर), प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप (जयपुर), रंगबोध (कोटा), राजस्थान कला केन्द्र (जयपुर), कलम (बूंदी), मयूर–6 (वनस्थली), फाइन आर्टस एक्सप्रेशन सोसाईटी (जयपुर), आदर्श लोक (बीकानेर) आदि। ये संस्थाएं अपने–अपने क्षेत्रों के अलावा राज्य से बाहर भी अकादमी की सहायता से कलात्मक गतिविधियों का आयोजन करती है। कुछ संगठन इतना अच्छा कार्य कर रहे है कि उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छवि बनाई है और केन्द्रीय ललित कला अकादमी भी उन्हें मान्यता और आर्थिक सहायता प्रदान कर रहा है।

अकादमी का अपना एक पुस्तकालय है जिसमें कला विषयक लगभग 8000 पुस्तकें संग्रहीत हैं। इनमें से अनेक पुस्तकें दुर्लभ हैं। अकादमी द्वारा आधुनिक कला दीर्घा का भी निर्माण किया गया है। इस आधुनिक कला दीर्घा में राज्य के ही नहीं देश के प्रख्यात चित्रकारों व मूर्तिकारों की कृतियां संग्रहीत हैं।

अकादमी अब तक अनेक प्रकाशन भी निकाल चुकी है। कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन इस प्रकार हैं : (1) राजस्थानी माण्डना, (2) जयपुर : कला और कलाकार, (3) अकादमी द्वारा फैलोशिप की उपाधि से सम्मानित प्रत्येक वरिष्ठ कलाकार पर अलग–अलग मोनोग्राफ, (4) ढूंढाड़ कैटलॉग, (5) राजस्थान की लघु चित्र शैलियां, (6) राजस्थान के तीन मन्दिर, (7) बूँदी चित्रकला पोर्टफोलियो, (8) राज्य के कलाकारों की कृतियों के श्वेत–श्याम तथा रंगीन पोस्टकार्ड सैट, (9) वार्षिकी 63, (10) आकृति 80, (11) सवारी (फोल्डर), (12) दस समसामयिक कलाकार, (13) राजस्थान के रंग, (14) आभार–राजस्थान के वरिष्ठ कलाकारों का प्रलेखन, (15) कलावाक् आदि।

अकादमी ने अगस्त 1961 ई. से 'सृजन' नाम से एक मासिक बुलेटिन का प्रकाशन आरम्भ किया था जिसे कतिपय तकनीकी कारणों से बन्द करना पड़ा। किन्तु 'आकृति' नाम से इसका प्रकाशन पुनः 1965 में शुरू किया गया। बाद में यह 'आकृति समाचार बुलेटिन' के नाम से मासिक रूप में प्रकाशित होती रही। इसमें देश–विदेश में होने वाली कला गतिविधियों, सूचनाओं, अकादमी की गतिविधियों आदि के विवरण के साथ कला सम्बन्धी लेख और राज्य के कलाकारों के जीवन एवं कृतित्व पर चित्रों सहित आर्ट पेपर पर महत्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जाती थी। वर्तमान में यह भी प्रकाशित नहीं हो पा रही है।

इनके अतिरिक्त अकादमी के पास अनेक ऐसी योजनाएं है जो निश्चय ही अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं और जिनका पूरा होना बहुत आवश्यक भी है किन्तु वित्तीय कठिनाई के कारण इन्हें शुरू कर पाना सम्भव नहीं है। फिर भी सीमित साधनों के बावजूद अकादमी ने अनेक उल्लेखनीय कार्य किए है जिनका विस्तृत विवरण ऊपर किया गया है।

अकादमी की वार्षिक प्रदर्शनियों के जरिए कलाकारों में उत्तम कार्य करने की स्पर्धा बढ़ी है जिससे विगत कुछ वर्षों में कला के क्षेत्र में बड़ा अच्छा कार्य हुआ है। केन्द्रीय अकादमी की वार्षिक प्रदर्शनियों में जहां पहले मुश्किल से राज्य के कलाकारों की कृतियां चयनित होती थीं वहां अब उन्हें राष्ट्रीय कला पुरस्कार प्राप्त होने लगे हैं। कलाकारों की कृतियां अब त्रिनाले जैसे अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की प्रदर्शनियों में चयनित होने लगी हैं जिससे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी छवि बनी हैं। अकादमी द्वारा कुछ कलाकारों को विदेशों में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिली हैं, तो कुछ प्रदर्शनी करने के लिए आमन्त्रित किए गए हैं। कुछ विदेशों में विशेष अनुरोध पर शिक्षक का कार्य कर रहे हैं तो कुछ को कलावार्ता देने के लिए आमन्त्रित किया गया है। यह हमारे राज्य के लिए बड़े गर्व की बात है। अकादमी के कार्य–संचालन हेतु विधान के अनुसार आम सभा व कार्यकारिणी का गठन होता है। इनके द्वारा लिए गए निर्णयों व बनाए गए कार्यक्रमों के अनुसार अकादमी कार्य करती है। अकादमी नई–नई योजनाएं बनाकर कला और कलाकारों के उत्थान के लिए निरन्तर सतत् प्रयत्नशील है।

4.1.2 जवाहर कला केन्द्र, जयपुर

एक ही छत के नीचे प्रदर्शनकारी व दृश्य कलाओं के प्रदर्शन व विभिन्न कलात्मक आयोजनों के उद्देश्यों को साकार करने हेतु वर्ष 1993 ई. में जवाहर कला केन्द्र, जयपुर की स्थापना की गई।[8] इसके शिल्पकार चार्ल्स कोरिया थे, उन्होंने इसका निर्माण नव ग्रहों को आधार मानकर किया था। इसका प्रवेश द्वारा मंगल ब्लॉक है जो राजकीय कार्य को बढ़ाता है, वहाँ प्रशासनिक भवन बनाया गया है। इसी तरह शुक्र मनोरंजन का कारक है, इस कारण से शुक्र ब्लॉक में थियेटर बनाये गये हें। चन्द्रमा सरसता का प्रतीक है, इसलिए चन्द्र ब्लॉक में कैफेटेरिया बना है। बुद्ध कलात्मकता का प्रतीक है, इसलिए बुद्ध ब्लॉक में कला दीर्घाएं–सुकृति, सुरेख, सुदर्शन, चतुर्दिक बनाई गई हैं। इसी तरह गुरू ज्ञान का प्रतीक है, इसलिए गुरू ब्लॉक में पुस्तकालय बनाया गया है, केतु सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है, इसलिए केतु ब्लॉक में अलंकार संग्रहालय हैं। सूर्य को शक्ति व तेज का केन्द्र माना गया है इस कारण सूर्य ब्लॉक जवाहर कला केन्द्र का मध्य भाग है। वहीं शनि से संजीदगी दिखती है इसलिए शनि ब्लॉक में परिजात और ग्राफिक स्टूडियों है। राहू को शाइनिंग के लिए जाना है। इसलिए राहू ब्लॉक में स्फटिक कला दीर्घा बनी है। यहां नवग्रह के अनुसार जो निर्माण हुआ है वो दर्शनीय है। जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के परिसर में ही शिल्प ग्राम भी बनाया गया है। जहाँ वर्षभर विभिन्न कलात्मक गतिविधियों का आयोजन होता रहता है।[9](चित्र–12)

4.2 राजस्थान में कला शिक्षा की शैक्षणिक संस्थाऐं

4.2.1 राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर (1857 ई.)

आधुनिक कला शिक्षा में स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जयपुर महाराजा रामसिंह ने जयपुर में 1857 ई. में कला शिक्षा की व्यवस्था के ध्येय से 'हुनरी मदरसा' के रूप में डॉ. सी.एस. वेलंटाइन के आचार्यत्व में स्थापित किया।[10] सन् 1866 ई. में इस संस्थान को महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट के नाम से जाना गया।[11] चिकित्सा सेवा के अंग्रेज अधिकारी रहे डॉ. सी.एस. वेलेंटाइन ने मद्रास आर्ट स्कूल से कुछ अध्यापकों को जयपुर लाकर कला शिक्षा को व्यवस्थित रूप दिया।[12] स्कूल ऑफ आर्ट के प्रारम्भिक दौर में पाश्चात्य कला प्राचार्यों व उपाचार्यों डॉ. सी.एस. वेलेंटाइन, डी. फेब्रिक, चार्ल्स ट्रेवल्यान, मि. सिकमोर आदि के निर्देशन में कला महाविद्यालय गौरवान्वित होता रहा।[13] तत्कालीन मुख्य वास्तुकार रामबगसजी के निर्देशन में 1864–1896 ई. के मध्य संस्थान के आचार्य फेब्रिक ने वास्तु एवं स्थापत्य कला विभाग में उल्लेखनीय कार्य करवाये।

इस कला महाविद्यालय को असित कुमार हाल्दार, शैलेन्द्रनाथ डे, हिरण्यमय चौधरी तथा कुशलकुमार मुखर्जी ने प्राचार्य व उपाचार्य पद पर रहते हुए गौरवान्वित किया।[14] लाहौर के तत्कालीन प्राचार्य समरेन्द्र नाथ गुप्त की सहमति से स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर के प्राचार्य के. के. मुखर्जी सन् 1935 ई. में टी.पी. मित्रा को लाहौर से जयपुर लाये। उन्होंने सेवानिवृत्ति तक इस संस्थान में शिक्षण कार्य किया।[15] जयपुर रियासत के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल ने रामगोपाल विजयवर्गीय को सन् 1943 ई. में महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट में शिक्षक पद पर नियुक्ति दी।[16] इन्होंने आचार्य अवनीन्द्र नाथ ठाकुर द्वारा उद्घोषित कला के नवोत्थान का राजस्थान में सफल नेतृत्व किया तथा अपने गुरू शैलेन्द्र नाथ डे के साथ मिलकर राजस्थान में पुनर्जागरण कला के उत्थान में योगदान दिया।[17] इनकी संवेदनशील भावुकता चित्रांकन तक ही सीमित नहीं रही बल्कि अर्थपूर्ण शब्दों को भावपूर्ण शब्दावलियों को भी रंग व रेखाओं के साथ अभिव्यक्ति माध्यम के लिए बन्दी बनाया।[18] विजयवर्गीय ने इस संस्थान में सन् 1958 ई. से सन् 1966 ई. तक प्राचार्य पद पर कार्य करते हुए अपनी सादगी, अप्रतिम कला प्रेम व अनुशासित अध्यापन से यहाँ पहले से संचालित कलामय वातावरण को चार चाँद लगा दिये।[19] इसी परम्परा में सन् 1968 ई. में यहाँ पर मोहन शर्मा चित्रकला व्याख्याता पद पर नियुक्त हुए। यहाँ पर इन्होंने शिक्षण कार्य में विशेष रूचि ली और विद्यार्थियों को पोट्रेट, दृश्य चित्रण व चित्र संयोजन की बारीकियों से अवगत कराया।[20] सन् 1972 ई. से महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' मूर्तिकला विभाग में अध्यापन कार्य करने लगे। इन्होंने चित्रकला व मूर्तिकला दोनों माध्यमों के अध्यापन से विद्यार्थियों को लघु चित्रण शैली, तेल रंग, धातु व प्रस्तर शिल्प का ज्ञान दिया।[21] सन् 1978 ई. में डॉ. विद्यासागर उपाध्याय यहाँ अध्यापन कार्य करने लगे। इनकी कला में राजस्थानी जन–जीवन, वास्तुशिल्प व रंगो को कभी अपनी कला में प्रत्यक्ष रूप से नहीं उभारा, लेकिन परोक्ष रूप से उनकी कला में राजस्थानी परिवेश कई तरह से है।[22] सन् 1979 ई. में राजेन्द्र कुमार शर्मा की नियुक्ति हुई व 1980 ई. में इस कला विद्यालय को कॉलेज शिक्षा से जोड़ने के लिए युवा छात्र नेता समदर सिंह खंगारोत की विशेष भूमिका रही।[23] 1983 ई. में अंकित पटेल इस संस्थान से जुड़कर कला सृजन कार्य करने लगे। संस्थान के नरेन्द्र दवे ने विविध माध्यमों में कला सृजन किया। वहीं अंकित पटेल ने मूर्त–अमूर्त रूपाकारों के साथ–साथ कायनेटिक शिल्प श्रृंखला को रचा। इन्होंने लकड़ी, पीतल, एल्यूमिनियम आदि धातुओं में छोटी–बडी रचनाएँ सृजित कर समसामयिक कला जगत में खासा नाम अर्जित किया है।[24] सुनित घिल्ड़ियाल पेन्टिंग तथा प्रिंन्ट मेकिंग दोनों विधाओं में कला की बारीकियों और अमूर्तन की ओर बढ़ते हुए सृजन कर रहे हैं। 1984 ई. में व्यावसायिक कला के शिक्षक एकेश्वर हटवाल इस संस्थान से जुड़े। 1986 ई. से नरेन्द्र

सिंह व्यावसायिक कला में और चित्रकला में हरशिव शर्मा कला सृजन कर रहे है। इसी प्रकार 1988 ई. से अध्यापनरत विनोद कुमार शिल्पकार के रूप में और देवीलाल वर्मा व्यावसायिक कला में सिल्क स्क्रीन प्रिन्टिंग, कम्प्यूटर विद्या की दक्षता से पहचाने जाते है। सन् 1991 ई. से डॉ. जगमोहन माथोड़िया विद्यार्थियों को मूर्त–अमूर्त कला का ज्ञान देकर उन्हें इस दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे है।[25] सन् 1993 ई. से अध्यापनरत डॉ. ममता चतुर्वेदी सैद्धान्तिक पक्ष में विशेष पहचान रखती है।[26] अन्ततः यह कहा जा सकता है कि स्कूल ऑफ आर्ट वटवृक्ष की भांति अपनी रचनाशील प्रवृत्तियों का प्रभाव देश–विदेश तक फैला चुकी है।

4.2.2 वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक

1937 ई. में वनस्थली विद्यापीठ में प्रो. देवकीनन्दन शर्मा ने चित्रकला विभाग की स्थापना की। सन् 1953 ई. से प्रत्येक ग्रीष्मावकाश में भित्ति चित्रण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होता रहा है। वनस्थली विद्यापीठ की भित्तियों पर जयपुर फ्रेस्को विधि आलागीला, आराइश, इटालियन व टेम्परा विधि में सुन्दर चित्राकृतियाँ बन रही है।[27] भित्ति चित्रण की इस परम्परा में विनोद बिहारी मुखर्जी, शैलेन्द्रनाथ डे, एन.एस. बेन्द्रे, शान्ति दवे, ज्योति भट्ट, के.वी. हरिदासन, आर.बी. भास्करन, के.एम. आदिमूलम, विकास भट्टाचार्य आदि ने अपना योगदान दिया जिसके प्रमाण कला विभाग तथा वनस्थली के अन्य विभागों की भित्तियों पर आज भी देखे जा सकते है। वनस्थली विद्यापीठ के कला विभाग में स्नातक व स्नातकोत्तर की उपाधि दी जाती है। विश्वविद्यालय में कला विषयक शोध कार्य भी हो रहें हैं। इस विद्यापीठ को डीम्ड विश्वविद्यालय का स्तर प्राप्त है। वनस्थली विद्यापीठ के चित्रकला विभाग में प्रो. देवकीनन्दन शर्मा, प्रो.वाई.के. शुक्ला, प्रो. भवानी शंकर शर्मा कार्यरत रह चुके है। वर्तमान में यहाँ डॉ. किरन सरना, डॉ. इन्दु सिंह, डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला, डॉ. इला यादव आदि कार्यरत हैं।

4.2.3 राजकीय महाविद्यालय, बूंदी

राजकीय महाविद्यालय, बूंदी की स्थापना वर्ष 1944 ई. में हुई थी। इसे पहले हाडेन्द्र कॉलेज के नाम से भी जाना जाता था। वर्तमान में यह कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं। इस महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर चित्रकला विषय का प्रारम्भ इसके स्थापना वर्ष से ही हो गया था तथा स्नातकोत्तर स्तर पर चित्रकला विषय का प्रारम्भ 1979–80 ई. में हुआ।[28]

यहाँ कार्यरत रहे प्रमुख चित्रकला प्राध्यापकों में सूरजमल शर्मा, ओ.डी. उपाध्याय, सुरेश शर्मा, डॉ. रमेश सत्यार्थी, डॉ. राजीव गर्ग, लोकेश जैन, रूचि शर्मा, गगन बिहारी

दाधीच, सविता वर्मा, माधवी सिंह, मोनिका सिंह आदि हैं। वर्तमान में यहाँ डॉ. हेमलता कुमावत, मणि भारतीय, बेला माथुर, अरविन्द मेण्डोला, दिनेश कुमार वर्मा आदि चित्रकला प्राध्यापक कार्यरत हैं।

4.2.4 राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक–बधिर संस्थान, जयपुर

राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक–बधिर संस्थान, जयपुर उत्तर भारत का मूक–बधिर बालकों की शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र हैं। इसके स्थापना वर्ष 1945 ई. से ही यहाँ चित्रकला विषय में अध्ययन करवाया जा रहा हैं। 7 अप्रैल, 1979 ई. में संस्थान परिसर में ही राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भैरों सिंह शेखावत द्वारा मूक–बधिर बालकों के व्यावसायिक कौशल विकास हेतु व्यावसायिक केन्द्र का उद्‌घाटन किया गया।[29] इस व्यावसायिक केन्द्र में चित्रकला, काष्ठकला, सिलाई, कम्प्यूटर व बागवानी का व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। संस्थान परिसर में ही अन्तर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय भी है, जहाँ देश–विदेश की विभिन्न गुड़ियाओं को एक साथ देखा जा सकता है। इस संस्थान के चित्रकला विभाग के वर्तमान विभागाध्यक्ष योगेन्द्र सिंह नरूका 'फूलेता' है। प्रदेश की चिर–परिचित मूक–बधिर महिला चित्रकार प्रभा–शाह ने इसी संस्थान में अध्ययन किया था। यहाँ के मूक–बधिर बालकों के लिए वर्ष भर कलात्मक आयोजन होते रहते हैं। इस संस्थान में अब तक विभिन्न दिग्गज हस्तियों का आगमन हुआ है इनमें प्रमुख रूप से भारत रत्न मदर टेरेसा, भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति बी.डी. जत्ती, राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत, सिने अभिनेता अभिषेक बच्चन, सिने अभिनेत्री ऋचा चढ्ढ़ा आदि है। इनके अलावा देश–विदेश के पर्यटक, कलाकार, समाजसेवी, शिक्षाविद् आदि भी समय–समय पर यहां आते रहते हैं।

4.2.5 राजकीय महाविद्यालय, कोटा

राजकीय महाविद्यालय, कोटा को पूर्व में 'हर्बट कॉलेज' के नाम से भी जाना जाता था। यहां पर पहले इंटरमीडियेट कक्षाओं में चित्रकला विषय पढ़ाया जाता था। 1957 ई. के लगभग यहाँ स्नातक स्तरीय कक्षाओं का शुभारम्भ हुआ।[30]

यहाँ पर चित्रकला प्राध्यापक पी. एन. चोयल, सूरजमल शर्मा, मिठालाल माथुर, श्याम सुन्दर शर्मा, अर्चना कुलश्रेष्ठ, बंशीलाल शर्मा, हनुमान अस्थाना, रघुनाथ शर्मा, शरद इन्दिरा, ममता चतुर्वेदी, गगन बिहारी दाधीच, युगल शर्मा, वीनू कुमार आदि कार्यरत रहे।

वर्तमान में शालिनी सक्सेना, सुरेश जोशी, हरिओम वर्मा, सीमा चतुर्वेदी आदि चित्रकला प्राध्यापक कार्यरत हैं।

4.2.6 दयानंद महाविद्यालय, अजमेर

दयानंद महाविद्यालय, अजमेर में चित्रकला विषय का स्नातक स्तर पर अध्ययन अध्यापन वर्ष 1959 ई. में प्रारम्भ हुआ था। यहां के चित्रकला विभाग के प्रथम प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष रत्नाकर विनायक साखलकर थे।[31] यहाँ चित्रकला प्राध्यापक राम जैसवाल, ओ. पी. अग्रवाल, सविन्दर सिंह चुघ, महेन्द्र सिंह, प्रमोद कुमार सिंह आदि कार्यरत रहे हैं। वर्ष 1963–64 ई. में यहाँ चित्रकला विषय का स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन–अध्यापन प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में यहाँ डॉ. ऋतु शिल्पी कार्यरत हैं।

4.2.7 मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

उदयपुर में चित्रकला विषय महाराणा भूपाल कॉलेज में प्रारम्भ किया गया, तब यह कॉलेज राजस्थान विश्वविद्यालय का अंग था और परीक्षा भी इसी के तत्त्वावधान में करवायी जाती थी। 1964 ई. में उदयपुर विश्वविद्यालय की विधिवत् स्थापना होने के पश्चात् 1965 ई. में यहाँ चित्रकला में एम.ए. पाठ्यक्रम प्रारम्भ हुआ। 1995 ई. में चित्रकला विभाग को स्वतंत्र रूप से स्थापित किया गया। यहाँ कार्यरत रहे प्रमुख कला शिक्षकों में प्रो. पी.एन. चोयल, प्रो. सुरेश शर्मा, प्रो. शैल चोयल आदि हैं। वर्तमान में यहाँ प्रो. मदन सिंह राठौड़ (डीन), प्रो. हेमन्त द्विवेदी आदि कार्यरत हैं।[32]

4.2.8 राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहे राजकीय महाविद्यालय, बूंदी में सर्वप्रथम 1944 ई. में चित्रकला विषय स्नातक स्तर पर प्रारम्भ किया गया। राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महारानी महाविद्यालय, जयपुर में 1961 ई. में यह विषय प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् स्नातकोत्तर चित्रकला राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर में 1974 ई. से प्रारम्भ हुआ था। ललित कला संकाय की स्थापना 1986 ई. में राजस्थान विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से बी.वी.ए. तथा एम.एफ.ए. पाठ्यक्रम चित्रकला, मूर्तिकला तथा व्यावहारिक कला अनुशासनों में संचालित है।[33] वर्तमान में समयानुसार आवश्यकताओं को समझते हुए विश्वविद्यालय का ललित कला संकाय उत्तरोत्तर समृद्ध होता जा रहा है। राजस्थान विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग के अन्तर्गत चित्रकला विषय के शिक्षकों में वीरेन्द्र नारायण सक्सैना, मोनी सान्याल, डॉ. वीरबाला भावसार, प्रो. चिन्मय शेष मेहता, डॉ. शब्बीर हसन काजी, डॉ. नाथू

लाल वर्मा, डॉ. आर.के. वशिष्ठ, डॉ. कमला, डॉ. रीता प्रताप, डॉ. नीलिमा वशिष्ठ आदि कार्यरत रहे हैं। वर्तमान में इस विभाग में डॉ. तनूजा सिंह (विभागाध्यक्ष), डॉ. इशरत उल्ला खान, बीना जैन, ऋतिका गर्ग, जगदीश प्रसाद मीणा, राजेन्द्र प्रसाद, लोकेश जैन, कृष्णा महावर कार्यरत हैं। वहीं ललित कला संकाय के अन्तर्गत रजत पण्डेल (विभागाध्यक्ष), सुब्रतों मण्डल (चित्रकला), सुमित जैन (चित्रकला), कमलेश व्यास (व्यावहारिक कला), वैभव जैन (मूर्तिकला), थॉमस (मूर्तिकला) कार्यरत हैं।

4.2.9 राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा

राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा की स्थापना, वर्ष 1964 ई. में हुई। यहाँ चित्रकला 1981–82 ई. में स्नातकोत्तर स्तर पर चित्रकला विषय का आरम्भ हुआ।[34] यहाँ कार्यरत रह चुके प्रमुख चित्रकला प्राध्यापकों में ओ.डी. उपाध्याय, नरेन्द्र अमीन, रमेश सत्यार्थी, बी.एल. शर्मा, देवीलाल सूत्रधार, बंशीलाल शर्मा, उषा गखरेजा, बसन्त कश्यप, पुष्पा भारद्वाज, मीना बया, दीपक भारद्वाज आदि रहे हैं। वर्तमान में यहाँ रघुनाथ शर्मा, विष्णु माली, गगन बिहारी दाधीच, रेखा पंचोली, युगल शर्मा, मनोहर श्रीमाली, कहानी भानावत आदि चित्रकला प्राध्यापक कार्यरत हैं।

4.2.10 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक

वर्ष 1991–92 ई. में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, टोंक में स्नातक स्तर पर चित्रकला विषय का अध्ययन–अध्यापन आरम्भ हुआ। इस महाविद्यालय के चित्रकला विभाग के प्रथम विभागाध्यक्ष भी डॉ. राजीव गर्ग नियुक्त किये गये। डॉ. राजीव गर्ग के प्रयासों से ही वर्ष 2002 ई. में चित्रकला विषय की स्नातकोत्तर शिक्षा का शुभारम्भ हुआ, जिसको स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत आज भी संचालित किया जा रहा है। इस महाविद्यालय के चित्रकला विषय में प्रथम शोधार्थी के रूप में योगेन्द्र सिंह नरूका 'फूलेता' ने अपना शोध पंजीयन डॉ. राजीव गर्ग के निर्देशन में करवाया।[35]

यहाँ के चित्रकला विभाग में डॉ. राजीव गर्ग, कक्कू माथुर, रूचि शर्मा, डॉ. ममता रोकणा, डॉ. अर्चना आदि प्राध्यापक कार्यरत रह चुके है। वर्तमान में यहाँ चित्रकला प्राध्यापकों में डॉ. गीता शर्मा (विभागाध्यक्ष), डॉ. रामअवतार मीणा व अतिथि व्याख्याता के रूप में हनुमान सिंह राजावत कार्यरत हैं। वर्तमान में यह महाविद्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से सम्बद्ध है।

4.2.11 जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में चित्रकला विषय की स्नातक शिक्षा का आरम्भ वर्ष 1991 ई. में हुआ तथा स्नातकोत्तर स्तर पर चित्रकला शिक्षा का आरम्भ वर्ष 2010 ई. में हुआ।[36] वर्तमान में यहाँ ललित कला व चित्रकला विभाग की विभागाध्यक्ष के रूप में डॉ. नम्रता स्वर्णकार कार्यरत हैं।

4.3 राजस्थान की समकालीन कला

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् 1960 ई. से राजस्थान के कला जगत में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया। इस समय तक कई कलाकार भारत के विभिन्न कला संस्थानों से शिक्षा प्राप्त करके राजस्थान आने लगे थे। यह वह समय था जब एक ओर तो परम्परावादी चितेरे अपने कला आग्रहों या व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये परम्परा की लीक को मिटने से बचाने के लिए काम कर रहे थे, तो दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के परिणामस्वरूप कला में नई संवेदना प्रवेश कर रही थी।[37] बंगाल घराने की कला ने भी राजस्थान के अपेक्षाकृत वरिष्ठ चित्रकारों पर गहरा असर डाला, पर यह प्रभाव प्रकारांतर से परम्परागत मूल्यों का ही पोषक रहा। सन् साठ से कहीं पहले यहां रामगोपाल विजयवर्गीय (1905–2003), भवानी चरण गुई (1910–1998), लक्ष्मण राव पेंढ़ारकर (1910–1996), मोनी सान्याल (1912–1988), भूरसिंह शेखावत (1914–1966), गोवर्धन लाल जोशी (1914–1988), देवकीनंदन शर्मा (1917–2005), कृपालसिंह शेखावत (1922–2008), द्वारका प्रसाद शर्मा (1922–2009) और परमानन्द चोयल (1924–2012) जैसे चित्रकार थे, जो परंपरा की राह से ही दाखिल हुए थे, किन्तु इन सब में आर.वी.साखलकर अपवाद रहे। बीसवीं शताब्दी के मध्य तक उनके चित्र कभी भी विषय–मुक्त नहीं रहे, परन्तु फिर भी आर.वी. साखलकर की कला आधुनिकता की दिशा में एक अच्छा उदाहरण मानी जा सकती है। साखलकर ने कला संबंधी आलोचनात्मक लेखन और आधुनिक चित्रकला दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया। 'आधुनिक चित्रकला का इतिहास' और 'कला कोष' उनकी लोकप्रिय पुस्तके है।[38] मोनी सान्याल वरिष्ठ पीढ़ी के ऐसे ही असाधारण चित्रकार रहे, जिनकी रचनाओं में धरती, वृक्षावलियां, ऋतुओं के मिजाज और कार्यरत स्त्रियों का कमनीय, किन्तु अत्यन्त मनोहर चित्रण मिलता है।[39] पी.मनसाराम भी राजस्थान में जन्में और पले ऐसे प्रतिभावान और जाने–माने चित्रकारों में रहें, जिन पर समकालीन कला–जगत में बहुत कुछ कहा गया। कोलाज, ज्यामिति, मूर्तिशिल्प, छायांकन और रचनात्मक लेखन कई क्षेत्रों में पी. मनसाराम ने

विशिष्ट काम कर अपनी जगह निर्मित की है।[40] द्वारका प्रसाद शर्मा की कलाकृतियों में लोकजीवन की अनुगूंज है। इनके चित्रों में गड़रिये, किसान, रेगिस्तान के टीलों पर ऊँट पर सवार ग्रामीण, केश विन्यास करती ग्राम महिलाएं, बैलगाड़ी पर बरसाती मौसम में छाता लिये सवार ग्रामवासी, घोड़े यथार्थरूप में प्रकट होते है।[41]

1956 ई. से 1960 ई. के बीच पी.एन. चोयल ने भैंसों का गहरा अध्ययन किया था और भैंसों को लेकर बनाए गए चित्रों और रेखांकनों ने इन्हें पर्याप्त ख्याति दी। पी.एन. चोयल की 1970 ई. और बाद की रचनाओं में आकारों को रंगमय तरलता के सहारे धूमिल करने का उपक्रम है। पी.एन. चोयल के तैलचित्र हमें ले जाते हैं पसीजी हुई दीवारों, धुन्धमय भवन आकृतियों में जो पिघलते रंगों के टैक्सचर में जैसे भीग रही हैं।[42] 'परसैप्शन ऑफ उदयपुर' नामक चित्र शृंखला व योद्धा आदि चोयल की प्रमुख कृतियां है।

इस दौर के दूसरे चित्रकारों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं—ज्योतिस्वरूप इन्होंने साठोत्तरी कला के प्रचलित स्वरूपों में अमूर्तन की सोच और उसकी अभिव्यक्ति की सार्थक पहल की। पारम्परिक, वास्तववादी, प्रतिरूपात्मक तथा बंगाल शैली की डग पर चलने वाले कलाकारों के बीच ज्योतिस्वरूप ऐसे अकेले कलाकार थे जिनकी राह सबसे भिन्न थी।[43] ज्योतिस्वरूप आधुनिक अमूर्त शैली के चित्रकारों में अग्रणी है। लम्बे समय तक उन्होंने आकृतिमूलक कला को अमूर्त कला की तुलना में कम महत्व दिया और उन्होंने अमूर्त शैली के भी बेहतरीन चित्र बनाये, किन्तु पुनः आकृतिमूलक कला को अपनी गतिशील चेतना का विशेष स्पर्श देकर ज्योतिस्वरूप ने मानव आकृतियों के ही विशेष रूपाकारों का अंकन किया।[44]

आधुनिक चित्रकला के विकास में राजस्थान ललित कला अकादमी का योगदान भी उल्लेखनीय रहा। 1957 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी की स्थापना हुई। जिसकी वार्षिक प्रदर्शनियों के जरिए बहुत से चित्रकारों को चित्रकृतियां प्रदर्शित करने का अवसर मिला। इसी समय रणजीत सिंह और नारायण आचार्य जैसे कलाकारों के साथ—साथ रमेश गर्ग, तिलकराज, राजेन्द्र मेहता आदि कलाकार भी अपना कलात्मक कार्य लेकर सामने आये। इन्हीं वर्षों के आसपास कलाकारों ने कुछ 'नया' करने का मानस बनाया, राजस्थान की रूढ़ नजर आने वाली कला में नये प्रयोगों की शुरूआत होना आरम्भ हुआ। उदयपुर के ओमदत्त उपाध्याय, आबू के पी. मनसाराम, अजमेर के आर.वी. साखलकर, बीकानेर के द्वारकाप्रसाद शर्मा, नारायण आचार्य, प्रेमचंद्र गोस्वामी, आर.बी. गौतम और रंजन गौतम ने नई संवेदना का काम रचने में पहल की।

सन् 1960 ई. से 1980 ई. के दो दशक राजस्थान की आधुनिक कला के लिए महत्वपूर्ण कहे जा सकते है। इस अन्तराल में बहुत से उल्लेखनीय चित्रकारों का काम सामने आया और यहां के कुछ चित्रकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के लिए अपनी मौलिक कला में ही कार्य करना आरम्भ किया। इन्हीं वर्षो के दौरान विश्वविद्यालय स्तर पर कला के अध्ययन–अध्यापन की भी शुरूआत हुई।

इसी समय मोहन शर्मा मुम्बई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट से प्रशिक्षित होकर राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट के चित्रकला प्राध्यापक के रूप में राजस्थान आये। मोहन शर्मा के चित्रों में स्पेस में उभरते सरलीकृत ज्यामितीय रूपाकारों की बनावट का सामंजस्य दृष्टिगत होता है। इनके चित्रों में तकनीकी दक्षता व शिल्प कौशल के साथ–साथ एक साध्य अनुशासन भी देखा जा सकता है। इनके चित्रों में स्थापत्य कला के रूपाकार इस हद तक सरलीकृत हो जाते हैं कि वो जमीन व रूढ़ियों से टूटते हुए अमूर्त दृश्य चित्र दिखाई देने लगते हैं। चित्रों का धरातल अमूर्त ज्यामितीय संयोजन है तथा रंगों एवं रंग तहों की सौम्यता को फ्यूजन व टेक्श्चर की सहायता से प्रयोग में लिया गया है। इनकी कृतियाँ एक अमूर्त स्वप्न लोक की संरचना करती है।[45]

परम्परा का नये संदर्भों और मायनो में रूपान्तरण, यहां कि वर्तमान कला प्रवृतियों की एक असाधारण विशेषता है। इसी विशेषता को शैल चोयल के चित्रों में भी देखा जा सकता है। शैल चोयल की कृतियों में हमें मेवाड़ शैली के सृजनात्मक रूपान्तरण देखने को मिल जाते हैं। वह परम्परागत कलम के भवन–शिल्पों, वनस्पतियों और उनकी आन्तरिकता को और पात्रों को अपने कैनवास पर उतारते हैं। उन्होंने आरंभ से ही लघुचित्रों की प्रचलित और दृश्यावली के प्रति एक स्थाई अनुराग विकसित करते हुए आंखों को अच्छा लग सकने वाला ऐसा काम किया है,जिसे हम परम्परा के 'प्रयोग' के रूप में और भी चित्रकारों (जैसे सुमहेन्द्र, प्रभा शाह, किरण मुर्डिया आदि) के कार्य में देख सकते है।

लगभग इसी विषयवस्तु के आसपास प्रभा शाह के तैलचित्र प्रेक्षक के लिए लाते हैं–गरिमामय गुम्बजों, छतरियों और सुन्दर राजमहलों के बिम्ब! ज्यामिति का कल्पनापूर्ण उपयोग प्रभा शाह में खूब है। एक या दो रंगों की रंगतों का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए वह रचतीं है– राजस्थान, जो अपने शिल्प, ठेठपन और स्थापत्य की दृष्टि से अप्रतिम है। उदयपुर उनके चित्रों में कहीं न कहीं जरूर छिपा रहता है। प्रभा शाह के रंगतों में खोए प्रासाद और भवन प्रशांत और स्तब्ध हैं।[46] किरण मुर्डिया भी एक ऐसी ही कलाकार है जिन्होंने न केवल प्रकृति के विविध रूपों में विद्यमान आन्तरिक सौन्दर्य का चित्रण किया है

अपितु अमूर्तन रूप में प्रकृति के विराट एवं स्थूल रूप को भी चित्रित किया है।[47] नाथद्वारा में जन्में चरण शर्मा की कला में नए आयाम देखे जा सकते हैं।[48]

यहां समकालीन कला–प्रवृत्तियों को रेखांकित करते हुए ऐसे चित्रकारों की चर्चा भी शायद अप्रासंगिक न हो जो प्रभाववादी अथवा चाक्षुष रूप से बहुत सहज और स्वतःस्फूर्त चित्रों के सृजक है। राम जैसवाल, ओ.पी. अग्रवाल, सुरेश राजोरिया, दीपिका हाजरा, राजीव गर्ग, प्रदीप वर्मा आदि ऐसे ही कुछ चित्रकार हैं, जिनके यहां दृश्यात्मक बिम्बों की उपलब्धता है। राम जैसवाल ने बंगाल वाश पद्धति व जलरंग में अनेक उल्लेखनीय रचनाओं का सृजन किया है।[49] सुरेश राजोरिया रेखांकनों और जलरंगों में वृक्षों, बादलों, चट्टानों, घास और बरसात के सरलीकृत बिम्ब पैदा करते हैं। उनकी कृतियों में कहीं भूरे पहाड़ हैं तो कहीं हरे–भरे खेत, बहते हुए झरने, गहरे जंगल और धूप के पीले धब्बे! झोंपड़ियों, कार्यशील ग्राम्याओं, कस्बे की कम चहल–पहल वाली गलियों और मार्च में पत्ते झरा कर उदास खड़े पेड़ों को राजोरिया ने अपनी ग्राम्य–गंध के सहारे कागज पर उतारने की कोशिश की है, वहीं जल रंग की पारदर्शी तकनीक में डॉ. राजीव गर्ग प्रकृति के अलग–अलग मूड्स और उसकी संवेदनशीलता को प्रभाववादी ढंग से पकड़ते हैं।

दुष्यन्त सिंह के ग्राफिक छापे और चित्र बहुधा 'फोटो यथार्थ' की मौजूदगी के जरिए सघन दृश्यात्मकता उकेरते हैं। चीजों और आकृतियों का एक अनोखा मेल इनके यहां है। इनकी कृतियों की अन्तर्वस्तु और उसके लिए 'रूप' की खोज प्रेक्षक के लिए बड़े रोचक अनुभव खोलती है। अपने छापों में वह किसी स्वतःस्फूर्त अमूर्तन के नहीं, बल्कि विचारपूर्वक गढ़ी गई एक पूरी 'दृश्यमाला' के पक्षकार नजर आते हैं। स्याही और पेंसिल रेखांकनों में भी इनकी यही मानसिकता बरकरार रहती है। लगभग इसी चेतना के दूसरे चित्रकार है– सुभाष मेहता, सुरजीत चोयल और चन्द्रमोहन मिश्रा। अगर वर्गीकरण की भाषा में कहना हो तो हम कहेंगे कि दुष्यंत सिंह, सुरजीत चोयल और सुभाष मेहता तीनों ही 'अतियथार्थवाद' की संचेतना जगाने वाले चित्रकार हैं। दुष्यन्त में यह आग्रह जहाँ बहुत सांकेतिक और तरल है, वहीं सुरजीत चोयल में बहुत कुछ प्रकट और मुखर।[50] सुरजीत के कैनवास में कभी औरत के चेहरों पर व्यक्तित्व की घुटी चीख होती है तो कभी कलाकार की अन्तर्मुखी दुनिया। उनके जीवन्त आद्यातों में उभरे लकड़ी की छिपटी, अनगढ़ टैक्श्चर, दीवार का चटका पलस्तर या रस्सी में पड़ी गांठे, उनके बीच रखते है जहां ये प्रतीक शब्दों से कहीं आगे जाकर हृदय को अवसन्न कर देते है।[51]

सुभाष मेहता के रेखांकनों व तैलचित्रों में हैं–जैब्रा धारियों से मंडित सुडौल, सजीव निर्वसनाएं, जिनके चेहरों की जगह उगे हुए है– समुद्री पौधे! फर्श के किनारे पर लेटे, खड़े

या इन निर्वसनाओं के उड़ते हुए शरीर कैनवास पर अलौकिक मंजर उत्पन्न करते है। वह अतीन्द्रिय फैन्टेसी के कलाकार हैं। नाटकीयता का तत्व सुभाष की कला में अधिक प्रखर है। स्याह सफेद में सुभाष मेहता ने इस स्वनिल कथा–लोक को एक बेहतरीन बनगट के साथ उपजाया है।[52]

सुमहेन्द्र ने स्वामिनाथन के बिंबों के साथ किशनगढ़ शैली की मानवकृतियों एवं जयपुर शैली के भवन एवं वातावरण का सहयोग लेकर अपनी निजी शैली बनाने का प्रयत्न किया। सुमहेन्द्र की प्रायः चित्रकृतियाँ क्षितिजीय रेखाओं में प्रवाहित रही है। जिनमें अवकाश की अल्पता और गहरे रंगों के प्रयोग ने इनके विषय संयोजन में क्लिष्टता उत्पन्न की है।[53]

आर.बी.गौतम के चित्रों में हलचलों से भरे रंगों और सिर विहीन मानवाकृतियों की आवृत्तियां देखने को मिलती है। इनकी रचनाओं की कबन्ध (टोर्सो) और अस्तित्व के प्रति मानववादी कलाकार की चिन्ताओं की अभिव्यक्ति है। गौतम रंगों की रंगतों के माध्यम से परिप्रेक्ष्य और दूरियों की संवेदना जगाने की कोशिश करते है।[54]

वीरबाला भावसार श्वेत केनवास पर मात्र रेत से ही मन के विभिन्न भावों को उकेरती है। रेत को माध्यम के रूप में प्रयुक्त करना माटी से प्रेम का बहु अर्थ देता है। भावसार की चित्राकृतियों में रेत से ही गहराई, उभार, छाया–प्रकाश और प्राकृतिक मौलिक रंगों के प्रभाव से उत्पन्न होता त्रिआयामी पक्ष अलौकिक छवि उत्पन्न करता है। इनकी चित्राकृतियों में विशेष रूप से प्रकृति का रहस्यवाद परिलक्षित होता है।[55]

सुरेश शर्मा के चित्रों में विशुद्ध रंगों और स्प्रे के सहारे उत्पन्न की गई रंगतों में बहुत तरल ज्यामितिक आग्रह का अपना एक अलग ही व्यक्तित्व है। वे सदैव नवीन प्रयोगों को सृजन कार्य के साथ जोड़कर स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं वैयक्तिक अभिव्यक्ति को महत्व देते है। आपने कला को मात्र आकस्मिक अध्ययन का विषय न मानकर अभिव्यक्ति पूर्णता व प्रयोगवादी स्वरूप के रूप में स्वीकारा है।[56]

ज्यामिति का रचनात्मक उपयोग समकालीन कला की एक और विशेषता कही जा सकती है जिसके प्रतिनिधि चित्रकार के रूप में लक्ष्मीलाल वर्मा का नाम प्रमुख है। वर्मा ने ग्राफिक माध्यम में चित्र रचना की है। तेलचित्रों में देवीलाल पुरोहित एवं विष्णुदत्त सोनी भी ज्यामिति में ही काम करने वाले कलाकार हैं। लक्ष्मीलाल वर्मा के ज्यामितीय अमूर्त आकार, ड्राइंग्स, ऐचिंग, लिथोग्राफ्स में एक अभूतपूर्व प्रभाव एवं गणितीय ढ़ांचा है। केवल ज्यॉमितीय ढ़ांचा वास्तविक आकार और ऐन्द्रिक प्रभाव वाले आकार अवास्तविकता से गुंथे हुए है।[57] विष्णु दत्त सोनी के कैनवासों में प्रयुक्त रूप से वृत्ताकार रूपों का सतरंगा उपयोग है। मूल

और गर्म रंगों के साहसी प्रयोग से वह फलक की स्पेस को भरते हैं।[58] अब्दुल करीम अपने चित्रों में 'तनाव' की अमूर्त भावाभिव्यक्ति ज्यामितीय रूपों को लेकर करते है। करीम के तेल–चित्र ज्यामितीय होते हैं, ये ज्यामितीय स्वरूप किसी सिलेण्डर या पाइप का आभास देते हैं। अपने चित्रों में इन पाइपों को मोड़कर एक दूसरे में फंसा कर एक तनाव पैदा करते हैं। इनके चित्रों में रंगतों एवं तानों की प्रधानता देखने को मिलती है।[59]

प्रेमचन्द्र गोस्वामी आधुनिक कला के उन चित्रकारों में से है जो कलाकृति के सौन्दर्य पक्ष को महत्व देते है। उसके संदेशात्मक रूप को नहीं। गोस्वामी रूपाकारों का निर्माण केवल इसीलिए करते हैं कि दर्शक को सम्मोहित कर सके। वह स्वयं भी कहते आये है कि – ''मेरे अमूर्त चित्रों में कोई दर्शन या सन्देश नहीं है, वहां केवल सौन्दर्यानुभूति है।''[60]

भवानी शंकर शर्मा के चित्रों में प्रयोग का छल–छद्म नहीं है, इसलिए इनके चित्रों में संवाद ढूंढ़ने के लिए ज्यादा श्रम करने की जरूरत नहीं होती इन्होंने अपने चित्रों में दैनिक जीवन के सहज प्रतीकों का प्रयोग किया है। गुब्बारों के संकेत से वह यह स्पष्ट कर देते है कि यह दृश्य मेले का है और इसे मेला ही समझा जाना चाहिए।[61]

शब्बीर काजी के ज्यामितिक प्रयोग भिन्न प्रकार के है। उनके चित्रों में छोटी–छोटी तीखी चटकीले रंगों वाली अमूर्त आकृतियाँ होती है और उनके इर्द–गिर्द काफी विरलता दिखाई देती है। उनकी पृष्ठभूमि अक्सर गहरे वर्ण की होती है जिसके कारण उज्जवल रंगों वाली आकृतियाँ छोटी होने के बावजूद सीधे उभर कर आती हैं।[62]

विद्यासागर उपाध्याय रंगों के माध्यम से अपनी कला के होने पन को बार–बार अभिव्यक्त करते हैं। ऐसे में कभी हल्के तो कभी प्रवाह लिए तरलता में रंग लुभाते हैं और अर्थ को विस्तार देते हैं कभी कुछ विशेष दृश्य में कुछ अंतराल की ही पूर्ति कर मानों अपनी किरणों को बिखराते है। पेड़ों के झुरमुट को चीरते हुए खाली अंतराल में सूरज की रश्मियां जो लोक पैदा करती हैं, वैसा ही लोक उपाध्याय की कलाकृतियों में भी सृजित होता हैं।[63]

जया व्हीटन में आकृतियों के प्रति एक नैसर्गिक सम्मोहन है। वह प्रेमचन्द्र गोस्वामी की तरह पूरी तरह अमूर्त चित्र नहीं बनातीं अपितु 'आकृतियों' का अंकन करतीं हैं। चाहे वे आकृतियां स्त्रियों की हों या गणेश की, जया व्हीटन अत्यधिक सुन्दरता के साथ (और पर्याप्त मौलिकता से) रंगों के रचाव से उपजाती हैं–देखे जाने योग्य अलंकरण, जो बहुधा उनकी चित्र शृंखला 'स्त्री' में देखने को मिलता हैं।[64]

समदर सिंह खंगारोत 'सागर' के चित्रों में अतियथार्थवादी श्रृंखला एवं कालीदास की कृतियों पर आधारित श्रृंखला उल्लेखनीय है। जिनमें क्रमशः शेखावटी म्यूरल एवं मालवा शैली का प्रभाव देखा जा सकता है।[65] तेज सिंह की कला में राजस्थान की पुरा चित्रशैलियों की रंग योजना तथा रेखाओं की प्रधानता देखी जा सकती है।[66] रामेश्वर सिंह ने राजस्थान की फड़ों अथवा इनकी कला–शैलियों को ज्यों–का–त्यों आधुनिक संयोजन और प्रयोगों के साथ अपनाया है।[67] बसंत कश्यप के शिल्पाग्रह और लोककला चेतना ने अपनी रचना कृतियों का पारम्परिक लोक शिल्प खण्ड़ों परिधानों और शिल्पकृतियों द्वारा त्रिआयामी प्रभाव के साथ निर्मित किया है।[68]

मीनाक्षी भारती के श्वेत–श्याम रंगों के अमूर्त संयोजनों में प्रारम्भ में कोलाज माध्यम में बनाई गई 'क्रियेशन' सीरीज तत्पश्चात् ऐक्रेलिक रंगों से इम्प्रैशन व एक्सप्रेशन श्रृंखलाओं में शनैः–शनैः धूमिल रंगों की छटाओं में प्रकृति का वातावरण टैक्सचर के साथ उभरता हुआ दिखाई देता है।[69]

दिलीप सिंह चौहान की रचनाओं में ज्यामिति और 'जीवन' का संयोग दर्शनीय है। एक या दो मानव आकृतियों के माध्यम से संयोजन फलक को एक्रलिक, पैन एण्ड इंक आदि मिश्रित माध्यमों का समन्वय करना दिलीप सिंह की निजी विशेषता है। कभी फलक पर मानव शरीर हावी हो जाता है तो कभी स्याह रंगतों का प्रभाव बढ़ जाता है किन्तु इनके मध्य उभरी बारीक रेखाएं चित्र विभाजन में गहराई का आभास कराकर प्रेक्षक का मार्ग दर्शक बनने की क्षमता रखती हैं।[70]

दीपिका हाजरा, आभा मुर्डिया, मंजू शर्मा, इला यादव, नील कमल, रीता प्रताप, उषा डी.सिंह, पुष्पा भारद्वाज, मीनाक्षी भारती, हेमलता कुमावत, मीना बया, मीनू श्रीवास्तव, वीनू कुमार, किरण सरना, पुष्पा दुल्लर, बेला माथुर, अर्चना कुलश्रेष्ठ, ऋतु जौहरी, इन्दू सिंह, मणी भारतीय, रेखा भटनागर, रेखा पंचौली, सुरभि बिरमीवाल, अर्चना जोशी, ममता चतुर्वेदी, ममता रोकणा, माधवी सिंह, अन्नपूर्णा शुक्ला आदि सक्रिय चित्रकार हैं। मंजू मिश्रा की पेपरमेशी कृतियों में प्राकृतिक, सौम्य संस्कृति और वातावरण का चित्रण हुआ है।[71]

रीता प्रताप की कला शैली आधुनिक और पारम्परिक कला का सेतु है, जिनमें पारम्परिक कला के तत्व और प्रतीकों का आधुनिक मानवीय सोच और संवेदना के साथ व्यवहार हुआ है। इनकी अधिकांश तेल चित्र कृतियों में लोक जीवन के मान्य देवी–देवताओं ने विविध प्रतीकों और स्वरूपों के साथ अवतरण लिया है।[72] देखने की बात है कि 'माध्यम' को लेकर कुछ अन्य महिला चित्रकारों ने भी नया कार्य किया हैं। जैसे अपनी कला में मंजू

मिश्रा ने पेपरमेशी, वीरबाला भावसार ने रेत, जया व्हीटन ने थर्माकोल और मणि भारतीय ने कोलॉज चित्रण में पेपर की कतरन का रचनाशील उपयोग किया है।

इनके अतिरिक्त भी राजस्थान में कलाकारों की एक लम्बी श्रृंखला है जो विभिन्न माध्यमों तकनीकों में कार्य करते हुए अपनी–अपनी शैलीगत पहचान के लिए जाने जाते हैं– रमेश सत्यार्थी, राजेन्द्र पाल सिंह राठौड़, कृष्ण चन्द्र जोशी, सचिन साखलकर, सुरेन्द्र जोशी, अब्बास अली बाटलीवाला, लालचन्द मारोठिया, सुनीत घिल्डियाल, एकेश्वर हटवाल, जगमोहन माथोड़िया, सुभाष केकरे, मेहर अली अब्बासी, वीरेन्द्र शर्मा, अनुपम भटनागर, रघुनाथ शर्मा, विष्णु प्रकाश माली, गोपाल शर्मा, सुरेश जोशी, लोकेश जैन, हरशिव शर्मा, विनय शर्मा, हेमन्त द्विवेदी, प्रमोद कुमार सिंह, बंशीलाल शर्मा, हर्ष छाजेड़, लक्ष्यपाल सिंह राठौड़, मदन सिंह राठौड़, राजाराम व्यास, त्रिलोक श्रीमाली, हरीदत्त कल्ला, राजेश यादव, सुशील निंबार्क, जगदीश कुमावत, ओम सुथार, दीपक भारद्वाज, शाहिद परवेज, गौरीशंकर सोनी, दीपक भट्ट, पवन कुमावत, रवीन्द्र दाहिमा, घनश्याम गोस्वामी, कमल जोशी, योगेन्द्र सिंह नरूका, नरेन्द्र चिन्टू, अशोक, चिंतन उपाध्याय, आकाश चोयल, वागाराम, भूपतराम डूडी आदि सृजनरत हैं।

पिछले दस वर्षों की राजस्थान की समकालीन कला पर नजर डाले तो हमें ज्ञात होता है कि यहां कि कला पहले से अधिक प्रयोगवादी हो गई है और वैश्विक कला परिदृश्य के अनुरूप ढ़लती प्रतीत होती है। आज कलाकार का माध्यम मात्र कैनवास ही नहीं रहा है अपितु उसने नये–नये माध्यमों में नये–नये प्रयोग भी किये है। यथा इंस्टालेशन आर्ट, डिजीटल आर्ट आदि। इन माध्यमों में राजस्थान के नई पीढ़ी के युवा कलाकार विशेष रूप से सक्रिय दिखाई पड़ते हैं। राजस्थान के समसामयिक कला परिदृश्य को बनाने में राजस्थान के कला समीक्षकों का भी विशेष योगदान रहा है। इन कला समीक्षकों ने ही कला को कला दीर्घाओं से जनसामान्य तक पहुंचाया है। ऐसे कला समीक्षकों में डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, डॉ. आर.के. वशिष्ठ, सुरेन्द्र मंजुल, डॉ. आर.बी. गौतम, डॉ. सुमहेन्द्र, रामकुमार, हेमन्त शेष, डॉ. राजेश कुमार व्यास, राधेश्याम तिवाड़ी, अम्बालाल दमामी, विद्यासागर उपाध्याय, दिलीप सिंह चौहान, रीता प्रताप, गगन बिहारी दाधीच आदि प्रमुख है। राजस्थान के समकालीन कला परिदृश्य के निर्माण में राजस्थान के कला संगठनों 'तूलिका कलाकार परिषद्', 'टखमण–28,' 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप', 'आज', 'कलावृत' आदि का योगदान भी अतुलनीय रहा है।

सन्दर्भ

1. वार्षिक प्रतिवेदन, नवम्बर, 1957 ई. से अक्टूबर 1958 ई. तक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 8–10
2. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ 56
3. वही
4. वही
5. वही
6. वही
7. वही, पृष्ठ 57
8. सिटी भास्कर, दैनिक भास्कर, जयपुर, 18 जून, 2015, पृष्ठ 1
9. वही
10. आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की समसामयिक कला, 1989 ई., पृष्ठ 17
11. विवरणिका : राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर, 2008–09 ई, पृष्ठ 2
12. अखिलेश निगम (सम्पादक) : समकालीन कला, नवम्बर, 1987 ई.–मई 1988 ई., अंक 9–10, पृष्ठ 10
13. डॉ. ममता चतुर्वेदी : चित्रा, त्रैमासिक, जुलाई–सितम्बर, 2005 ई., अंक–1, पृष्ठ 1
14. वही
15. डॉ. जय सिंह नीरज, डॉ. भगवती लाल शर्मा : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, 2006 ई., पृष्ठ 78
16. डॉ. ममता चतुर्वेदी : रामगोपाल विजयवर्गीय एक शताब्दी की कलायात्रा, 2006 ई, पृष्ठ 9
17. अवधेश मिश्र (सम्पादक) : क्षेत्रीय समकालीन कला, अंक–2, पृष्ठ 51–53
18. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आभार राजस्थान के वरिष्ठ कलाकारों का प्रलेखन, 1998 ई., पृष्ठ 3
19. अवधेश मिश्र (सम्पादक) : कला दीर्घा, अप्रेल, 2003 ई., वर्ष : 3, अंक : 6, पृष्ठ 25
20. भवानीशंकर शर्मा : मोहन शर्मा (मोनोग्राफ), 1990 ई., पृष्ठ 4
21. डॉ. सुमहेन्द्र से शोधार्थी द्वारा लिए गए साक्षात्कार पर आधारित।
22. दिलीप सिंह चौहान (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, 1990 ई., पृष्ठ 1,2
23. डॉ. आर.के. वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, पृष्ठ 52

24. डॉ. जय सिंह नीरज डॉ. भगवती लाल शर्मा : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृष्ठ 81
25. डॉ. जगमोहन माथोड़िया से शोधार्थी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित।
26. डॉ. ममता चतुर्वेदी से शोधार्थी द्वारा लिए गये साक्षात्कार पर आधारित।
27. छोटेलाल शर्मा : राजस्थान के कलाकार– 5, आकृति, वर्ष : 9, अंक : 2, फरवरी 1986 ई., पृष्ठ 6
28. निशी गोयल : राजस्थान के कलात्मक वैभव में प्रदेश की कला शिक्षण संस्थाओं का महत्व एवं योगदान (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), वर्ष 2000 ई., पृष्ठ 98
29. ओमप्रकाश सारस्वत (सम्पादक) : शिविरा पत्रिका (मासिक), वर्ष : 54, अंक : 6, दिसम्बर, 2013 ई., पृष्ठ 37
30. रघुनाथ : राजस्थान की समकालीन कला में दृश्यकला विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के योगदान का प्रदेश के अन्य समकक्ष विभागों से तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), 2012 ई., पृष्ठ 42
31. निशी गोयल : राजस्थान के कलात्मक वैभव में प्रदेश की कला शिक्षण संस्थाओं का महत्व एवं योगदान (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध), 2000 ई., पृष्ठ 84
32. रघुनाथ : राजस्थान की समकालीन कला में दृश्यकला विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के योगदान का प्रदेश के अन्य समकक्ष विभागों से तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध), 2012 ई., पृष्ठ 43
33. डॉ. नाथू लाल वर्मा से शोधार्थी द्वारा लिये गये साक्षात्कार पर आधारित।
34. निशी गोयल : राजस्थान के कलात्मक वैभव में प्रदेश की कला शिक्षण संस्थाओं का महत्व एवं योगदान (अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध), 2000 ई., पृष्ठ 100
35. डॉ. राजीव गर्ग से शोधार्थी द्वारा लिये गये साक्षात्कार पर आधारित।
36. डॉ. नम्रता स्वर्णकार से शोधार्थी द्वारा लिये गये साक्षात्कार पर आधारित।
37. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति, रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ–43
38. सुमहेन्द्र : प्रो. आर. वी. साखलकर, आकृति समाचार बुलेटिन, वर्ष : 10, अंक : 9, सितम्बर, 1987 ई., पृष्ठ 2–6
39. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति, रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ–46
40. वही
41. सुरेश शर्मा (सम्पादक) : आकृति राजस्थान की कला धाराएं विशेषांक, जनवरी–मार्च, 1997 ई., पृष्ठ–5

42. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, 1987 ई, पृष्ठ–45
43. ए.एल. दमामी : राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाकार, 2004 ई., पृष्ठ–84
44. प्रकाश परिमल : 'आधुनिक चित्रकला : विकास और स्वरूप ', डॉ. जयसिंह नीरज, डॉ. भगवती लाल शर्मा (सम्पादक) : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, 2010 ई., पृष्ठ–109
45. शब्बीर काजी : 'राजस्थान की समसामयिक अमूर्त कला', आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की समसामयिक कला, 1989 ई., पृष्ठ–56
46. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति, रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ–45
47. डॉ. देवदत्त शर्मा : प्रकृति के विराट रूप का अमूर्त चित्रण, राजस्थान सुजस (मासिक), अक्टूबर, 2000 ई., पृष्ठ–76
48. विनोद भारद्वाज : बृहद आधुनिक कला कोश, 2009 ई., पृष्ठ–287
49. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ–46
50. वही
51. डॉ. मृदुला भसीन : 'राजस्थान की कुछ महिला कलाकार', एकेश्वर हटवाल (सम्पादक) : आकृति वार्षिकी, 1991–92 ई., पृष्ठ–18
52. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ–46–47
53. आर.बी. गौतम : 'राजस्थान की नवपरम्परावादी कला और कलाकार', आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की समसामयिक कला, 1989 ई., पृष्ठ–64
54. हेमन्त शेष : 'आर.बी. गौतम : कुछ कहती है कबन्ध आकृतियाँ', दिलीप सिंह चौहान (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, 1990 ई., पृष्ठ–20
55. डा. एल.आर. भल्ला : सामयिक राजस्थान, 2008 ई., पृष्ठ–446
56. रामकृष्ण शर्मा : 'सुरेश शर्मा', आकृति समाचार बुलेटिन, वर्ष : 9, अंक : 9, सितम्बर, 1984 ई., पृष्ठ–2–5
57. सुरेश शर्मा : 'लक्ष्मीलाल वर्मा : प्रयोगधर्मिता में तकनीकी परिस्थिति', दिलीप सिंह चौहान (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, 1990 ई., पृष्ठ–71–72
58. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ–48
59. राम अवतार सोनी : 'राजस्थान के अमूर्त चित्रकार : एक परिचय', विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति–अमूर्त कला विशेषांक, जुलाई–सितम्बर, 1995 ई., पृष्ठ–25

60. योगेन्द्र सिंह नरूका : कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी : व्यक्तित्व व कृतित्व (लघुशोध प्रबन्ध, अप्रकाशित), 2008 ई., पृष्ठ–48
61. 'परम्परा और आधुनिकता को जोड़ती कृतियाँ', राजस्थान–पत्रिका, 20 नवम्बर, 1994 ई., पृष्ठ–2
62. परमानन्द चोयल : 'राजस्थान में पुनर्जागरण', आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की समसामयिक कला, 1989 ई., पृष्ठ–28
63. डॉ. राजेश कुमार व्यास : कलावाक्, 2010 ई., पृष्ठ–76
64. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, 1987 ई., पृष्ठ–47
65. विद्यासागर उपाध्याय : भारतीय कला की कहानी, 1999 ई., पृष्ठ–52
66. विजय शंकर (सम्पादक) : क–कला सम्पदा एवं वैचारिकी (द्विमासिक कला पत्रिका), दिल्ली, जून–जुलाई, 2005 ई., पृष्ठ–13
67. वही
68. वही
69. मीनाक्षी भारती : 'पुरातन से नूतनता की ओर', सुरेन्द्र मंजुल (सम्पादक) : आकृति समाचार बुलेटिन, वर्ष : 15, अंक : 5, मई 1992 ई., पृष्ठ–11
70. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय : 'नवीन आकारों का संसार', मई 2001 ई., पृष्ठ–55
71. शैलेन्द्र भटनागर, आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की महिला चित्रकार, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, राजस्थान, 1990–91 ई., पृष्ठ–38
72. वही, पृष्ठ–17

fp=&11 % 24 uoEcj 1957 b- dk jktLFkku yfyr dyk vdkneh] t;ij
d LFkkiuk fnol ij iFke in'kuh d mn?kkVu
d i'pkr voykdu djr g, rRdkyhu mijk"Vifr Mk- loiYyh jk/kk—".ku ¼ck;½A
rRdkyhu jkT;iky egkefge x#e[k fugkyflg dk ,d vU;
in'kuh dk voykdu djkr g, vdkneh d lLFkkid v/;{k ih-th- egrk ¼nk;½

fp=&12 % tokgj dyk dUn] t;ij

अध्याय-पंचम्

समकालीन कला के विकास में प्रमुख कला संगठनों की भूमिका :
(राजस्थान के सन्दर्भ में)

समकालीन कला के विकास में प्रमुख कला संगठनों की भूमिका : (राजस्थान के सन्दर्भ में)

समकालीन कला परिप्रेक्ष्य में कला सृजन को नवीन आयाम देने में राजस्थान के कला संगठनों की अत्यन्त महत्वपूर्ण और सहयोगी भूमिका रही है। राजस्थान ललित कला अकादमी की स्थापना के पश्चात् विभिन्न कला संगठनों व कलाकार समूहों के उदय ने, न केवल राज्य की पूर्व पारम्परिक कला शैलियों में विद्यमान कला मूल्यों की निरन्तरता बनाये रखते हुए कला सृजन को अन्वेषण और प्रयोगों के माध्यम से नई दिशाएं प्रदान की, वरन् सामान्य जन मानस में कलात्मक अभिरूचि और चेतना जागृत करने की दिशा में किए गये प्रयासों को भी सार्थकता प्रदान की है।

5.1 राजस्थान के प्रमुख कला संगठन

5.1.1 तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर

तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर की कल्पना कुछ दूरदर्शी कलाकारों व शिक्षा शास्त्रियों द्वारा ऐसे समय में की गई जब राजस्थान सरकार द्वारा गठित राजस्थान ललित कला अकादमी की स्थापना को मात्र एक वर्ष हुआ था और तब यह अकादमी स्वतन्त्र रूप से कार्य न करके सरकारी संरक्षण में ही चल रही थी। ऐसे दूरदर्शी कल्पनाशील व्यक्तियों में थे प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री प्रो. वी.वी. जॉन, सुविख्यात कलाकार त्रय गोवर्धन लाल जोशी, पी.एन. चोयल एवं मोनी सान्याल। वर्ष 1958 ई. में उक्त विचारशील व कला के प्रति समर्पित व्यक्तियों ने संगठन को मूर्त रूप देना प्रारम्भ किया।[1] इन चारों संस्थापक सदस्यों ने अथक परिश्रम करके तूलिका कलाकार परिषद के माध्यम से कला की अलख जगाई। चारों संस्थापक सदस्यों का जहाँ तक परिचय देने का प्रश्न है तो प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री प्रो. वी.वी. जॉन महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर के तत्कालीन आचार्य थे जो बाद में जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर के उपकुलपति व राजस्थान शिक्षा विभाग के निदेशक भी बने। इसके अतिरिक्त कलाकार–त्रय गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा', परमानन्द चोयल व मोनी सान्याल अपनी कला साधना एवं उपलब्धियों के फलस्वरूप न केवल राजस्थान और भारत अपितु विदेशों में भी जाने जाते रहे है। संगठन के यह तीनों कलाकार त्रय राजस्थान ललित कला अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'कलाविद' से सम्मानित हुए।[2]

वर्ष 1958 ई. में पी.एन. चोयल के निवास पर प्रो. वी.वी. जॉन की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में चित्रकारों के जिस समूह का गठन किया गया,

उसका चित्रकार पी.एन. चोयल द्वारा 'तरूण कलाकार परिषद' नाम रखा गया।[3] इस नामांकरण के पीछे पी.एन. चोयल का दृष्टिकोण था कि कलाकार सदैव तरूण (युवा) रहता है। तरूण शब्द से कार्य करने में जोश आता है।[4] इसके सर्वप्रथम अध्यक्ष गोवर्धन लाल जोशी (1958–1970 ई. तक) व सचिव भंवर लाल शर्मा ने उपर्युक्त संगठन के कार्यक्रमों की भावी रूपरेखा तैयार की। इस बैठक में गोवर्धन लाल जोशी, मोनी सान्याल, अरूण चन्द्रायण, आर.के. भानगावकर, दयानन्द शर्मा, आर.के. वशिष्ठ, औंकार लाल शर्मा, भंवरलाल शर्मा आदि उपस्थित थे।[5] बाद में इस संगठन में उदयपुर के तत्कालीन वयोवृद्ध चित्रकार चतुर्भुज शर्मा एवं देवीलाल शर्मा का मनोनयन नारायण शाकद्वीपी, के.सी. जोशी, तेजसिंह, कन्हैयालाल कलार्थी एवं वीरेश्वर भटनागर ने कर लिया था। अतः यह प्रस्ताव रखा गया कि हमारे संगठन में क्योंकि अब वयोवृद्ध चित्रकार भी सम्मिलित है, ऐसे में संगठन का नाम तरूण कलाकार परिषद् रखना उपयुक्त नहीं होगा और एक बंगाली शिक्षक बी.के. रॉय के सुझाव पर इसका नाम 'तरूण कलाकार परिषद' से बदलकर 'तूलिका कलाकार परिषद' कर दिया गया। जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया।[6] इस बैठक में प्रो. वी.वी. जॉन, पी.एन.चोयल, गोवर्धन लाल जोशी, के.सी. जोशी, मोनी सान्याल, भंवर लाल शर्मा, सुरेश शर्मा, बी.के. रॉय, दीपाली रॉय, अरूण चन्द्रायण, नारायण शाकद्वीपी, तेजसिंह, कन्हैयालाल कलार्थी, वीरेश्वर भटनागर, दयानन्द शर्मा, औंकार लाल शर्मा, आर.के. वशिष्ठ, बशीर अहमद परवेज आदि उपस्थित थे।[7](चित्र–13)

वर्ष 1965 ई. में नारायण शाकद्वीपी को परिषद का सचिव चुना गया। इस वर्ष परिषद की ओर से प्रथम राज्य कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया व तीन वरिष्ठ चित्रकारों देवीलाल शर्मा, चतुर्भुज शर्मा, छगनलाल शर्मा को सम्मानित किया गया। इस वर्ष के जून माह में चित्रकार रामगोपाल विजयवर्गीय की कलावार्ता का आयोजन भी किया गया।[8]

वर्ष 1967 ई. में चित्रकार तेज सिंह को तूलिका कलाकार परिषद् का सचिव चुना गया। इस वर्ष इस संगठन के संविधान का निर्माण हुआ। बिना उद्देश्य के कोई भी संगठन नहीं चल सकता। उसके उद्देश्य ही बाद में उसकी कार्य योजना का रूप लेते है और उसके कार्य ही संगठन की पहचान बनते है। अतः इसी वर्ष तूलिका कलाकार परिषद के निम्नलिखित उद्देश्य भी निर्धारित किये गये –

I. इस संगठन का उद्देश्य राजस्थान के समस्त कलाकारों (चित्रकार, शिल्पी, छायाकार आदि) को संगठित करना एवम् केन्द्रीय, प्रादेशिक तथा अन्य अकादमियों से उनके सम्बन्धों को सुनिश्चित करना।

II. अकादमियों एवं कलाकारों के बीच जो विवादास्पद मामलें हों, उन्हें शान्तिपूर्ण एवं अन्य साधनों से सुलझाने का प्रयत्न करना।

III. बीमारी, बेकारी, अपंगावस्था व मृत्यु की अवस्था में उनके परिवारों का समुचित प्रबन्ध करवाने एवं हर सुलभ सहायता दिलवाने का प्रयत्न करना।

IV. भारत तथा विदेश के कला संगठनों एवं संघों से परस्पर व्यवहार बढ़ाना तथा एक–दूसरे की जानकारी प्राप्त करना।

V. भारत तथा विदेशों में इन्हीं समान उद्देश्यों को लेकर चलने वाले संगठनों से सहयोग प्राप्त करना और उनसे समन्वित होना।

VI. सदस्यों के सामाजिक, आर्थिक, नागरिक एवं कलात्मक स्थिति के सुधारात्मक आवश्यक कदम उठाना।

VII. अकादमियों से संघ के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए समय–समय पर वैधानिक एवं लोकतान्त्रिक उपायों को क्रियान्वित करना।

VIII. कलाकारों को प्रदर्शनी, व्याख्यान, सेमिनार, सभा, वैचारिक आदान–प्रदान तथा अन्य प्रकार की सुविधाओं द्वारा एक–दूसरे के निकटतम लाना।

IX. कला के विषय में होने वाले सामयिक परिवर्तन तथा विश्व की समसामयिक कलाधाराओं का परिचय कलाकारों और जनता को देने का प्रयत्न करना।

X. जनता के कलात्मक स्तर को उच्च बनाने के लिए कला, कलाकार और दर्शकों में तादात्म्य स्थापित करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रकाशन तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

इसी वर्ष संगठन की द्वितीय वार्षिक कला प्रदर्शनी राजस्थान महिला विद्यालय, उदयपुर में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में राजस्थान ललित कला अकादमी तथा अन्य अकादमियों द्वारा पुरस्कृत कलाकारों के साथ नवीन प्रतिभाशाली चित्रकारों ने भी भाग लिया।[9] वर्ष 1968 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर एवं केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली ने इसको मान्यता प्रदान की। राजस्थान की सर्वप्रथम पंजीकृत एवं मान्यता प्राप्त होने का श्रेय भी इसी संस्था को जाता है। प्रारम्भ में अनेक स्थानों पर बैठके होती रही किन्तु अधिकतर सभायें अरूण चन्द्रायण के स्टूडियों में सम्पन्न हुई।[10]

6 जून 1968 ई. को तूलिका कलाकार परिषद की ओर से प्रथम चित्रकार शिविर का अयोजन कैलाशपुरी में किया गया। इसी वर्ष के जुलाई माह में परिषद के सदस्य चित्रकार देवीलाल शर्मा का निधन हो जाने से संगठन को गहरा आघात लगा। इनकी स्मृति में प्रतिवर्ष श्रेष्ठ पारम्परिक कलाकृति के लिए स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक देने की घोषणा परिषद द्वारा की गई। इस वर्ष के अगस्त माह में सूचना केन्द्र, उदयपुर में तूलिका कलाकार परिषद् के चम्पालाल लखवाल, तेज सिंह, नारायण शाकद्वीपी, बलवीर रूओ की समूह कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस अवसर पर 'आधुनिक कलाकार और दर्शक' विषय पर विचार गोष्ठि भी हुई। इसी वर्ष की 15 सितम्बर को मिलिट्री पण्डाल, उदयपुर में नारायण शाकद्वीपी एवं वीरेश्वर भटनागर के लगभग 30 चित्रों को प्रदर्शन हुआ। इसी दिन राधाकृष्ण शर्मा द्वारा 'राजस्थान प्राचीन चित्रावशेषों का केन्द्र' विषय पर पत्रावाचन किया गया। इस वर्ष की 14 नवम्बर (बाल दिवस) को तूलिका के तत्वावधान में सात दिवसीय 'नेहरू प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी नगरपालिका, उदयपुर के पुस्तकालय में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में नारायण शाकद्वीपी द्वारा संकलित लगभग 250 छाया चित्रों, समाचार कटिंग्स आदि को प्रदर्शित किया गया था।

इसी वर्ष के दिसम्बर माह में फतह हाई स्कूल, उदयपुर के प्रांगण में परिषद के सदस्य कलाकार अरूण चन्द्रायण, तेज सिंह, बलवीर रूओ, नारायण शाकद्वीपी, चम्पालाल लखवाल, वीरेश्वर भटनागर, राधाकृष्ण शर्मा की समूह कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वर्ष 1968 ई. में बी.के. रॉय को तूलिका का उपाध्यक्ष चुना गया। इस वर्ष संगठन ने अपनी कार्य योजना पर एक वार्षिकी का प्रकाशन भी किया। वार्षिकी–1968 के अनुसार–इस वर्ष तक परिषद में कुल 31 सदस्य थे। ये सदस्य कलाकार–गोवर्धन लाल जोशी, बी.के. रॉय, दीपाली रॉय, ओम दत्त उपाध्याय, देवीलाल शर्मा, नारायण शाकद्वीपी, चिरंजीव लाल शर्मा, चम्पालाल लखवाल, र. कृ. भानगाँवकर, अरूण चन्द्रायण, वीरेश्वर भटनागर, कन्हैयालाल कलार्थी, बलवीर रूओ, राधाकृष्ण शर्मा, गोविन्द सिंह, ब्रज मोहन शर्मा, एस.एन. भारद्वाज, नटवर भटनागर, कैलाश भटनागर, चतुर्भुज शर्मा, मोहनलाल शर्मा, सुभाष भारद्वाज, तख्त सिंह, तेजकिरण शाकद्वीपी, ए.डी.नायक, कृष्ण सिंह, योगेन्द्र मोहन भट्ट, रमेश, रामदुलारी, तेज सिंह, नटवर त्रिपाठी थे।[11]

14 जनवरी 1969 ई. को तूलिका की तीसरी वार्षिक कला प्रदर्शनी का उद्घाटन तत्कालीन राज्य जनसम्पर्क मंत्री हीरालाल देवपुरा ने उदयपुर के टाउनहाल में किया। इस प्रदर्शनी में चित्रकार वीरेश्वर भटनागर को उनकी कृति 'अण्डर द अर्थ' (तेल रंग) के लिए

तूलिका स्वर्ण पदक, बी.के. रॉय को उनकी कृति 'सिटी स्केप' (तेल रंग) के लिए तूलिका रजत पदक, राजकुमारी को उनकी कृति 'डीप फोरेस्ट' (बातिक) के लिए तूलिका ताम्र पदक व अरूण चन्द्रायण को उनकी कृति 'रत' (टेम्परा) के लिए स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इन पुरस्कारों के निर्णायक मण्डल में स्थानीय चयनकर्ताओं के अलावा कैलिफोर्निया, अमेरीका के चित्रकार पी. ल्यूकास भी प्रमुख थे। इसी वर्ष अरूण चन्द्रायण को तूलिका का उपाध्यक्ष बनाया गया।

वर्ष 1970 ई. में कन्हैया लाल कलार्थी को तूलिका का उपाध्यक्ष बनाया गया। इस वर्ष के मई माह में तूलिका के द्वारा भारत के वरिष्ठ चित्रकार के.के. हेब्बार, बी.सी. सान्याल, इन्द्र दुग्गल की कला वार्ता का आयोजन किया गया व जून माह में राज्य स्तरीय कला सेमिनार का आयोजन किया गया। इस वर्ष तूलिका कलाकार परिषद की चौथी वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस प्रदर्शनी में श्रेष्ठ कृतियों के लिए नारायण शाकद्वीपी को 'आर्चेज' (टेम्परा) कृति के लिए तूलिका स्वर्ण पदक, अब्दुल मजीद को 'जान बचाओ' (बातिक) कृति के लिए तूलिका रजत पदक, एस.एन. भारद्वाज को 'दृश्य चित्र उदयपुर' (जलरंग) कृति के लिए तूलिका ताम्र पदक व घनश्याम शर्मा को 'गो दोहन' (टेम्परा) कृति के लिए स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण प्रदान किया गया।

वर्ष 1971 ई. में अरूण चन्द्रायण को तूलिका का अध्यक्ष व बशीर अहमद परवेज को सचिव चुना गया। इस वर्ष तूलिका कलाकार परिषद की पंचम वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन राजस्थान विद्यापीठ द्वारा संचालित माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, उदयपुर के भवन में किया गया। इस अवसर पर किरण मूर्डिया को 'दृश्य चित्र' (आधुनिक, तेल रंग) के लिए तूलिका स्वर्ण पदक, अब्दुल मजीद को 'समागम न. 1' (आधुनिक, बातिक) के लिए तूलिका रजत पदक, राम जैसवाल को 'साँझ' (प्रभाववादी, जलरंग) के लिए तूलिका ताम्र पदक व कान्तिचन्द्र भारद्वाज को 'अमर सेनाणी' (परम्परावादी, टेम्परा) के लिए स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। तूलिका द्वारा इस वर्ष वरिष्ठ कलाकार नरोत्तम नारायण शर्मा को भी तूलिका प्रशस्ति स्वर्ण पदक व मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।[12]

वर्ष 1972 ई. में 20 से 25 जून तक परिषद की षष्ठम् वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के समापन अवसर पर परिषद की परम्परानुसार श्रेष्ठ कृतियों का चयन कर कलाकारों को पुरस्कृत किया गया किन्तु इस वर्ष तूलिका स्वर्ण पदक हेतु उपयुक्त कृति नहीं होने के कारण यह पदक किसी को भी प्रदान नहीं किया गया। तूलिका

रजत पदक 'कम्पोजिशन न. 1' (आधुनिक, तेल रंग) के लिए प्रभा शाह को दिया गया व तूलिका ताम्र पदक 'क्रूसीफिकेशन' (बातिक) के लिए अब्दुल मजीद को दिया गया। इस वर्ष का स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक 'शह सवार' (राजस्थानी परम्परागत) के लिए ललित प्रकाश शर्मा को प्रदान किया गया।[13] वर्ष 1973 ई. में कन्हैया लाल कलार्थी परिषद के दूसरी बार उपाध्यक्ष चुने गये।

वर्ष 1974 ई. में गोवर्धन लाल जोशी व तेज सिंह दोनों को क्रमशः तूलिका कलाकार परिषद् के अध्यक्ष, सचिव पद पर दूसरी बार चुना गया। इस वर्ष परिषद ने केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से ग्राम्य एवं लोक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में 20 कलाकारों की लगभग 200 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी की एक स्मारिका भी प्रकाशित की गई।(चित्र–14) स्मारिका में इस प्रदर्शनी के बारे में तूलिका के तत्कालीन सचिव तेज सिंह लिखते है कि – ''अत्यल्प समयावधि एवं वित्त समस्या के होते हुये भी सदस्यों ने जिस लगन व परिश्रम से इसे साकार रूप दिया है उसकी सार्थकता तो असंदिग्ध है ही, साथ ही इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित कृतियों में उनकी सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का भी आभास मिलता है। उनकी पैनी दृष्टि ग्राम्य जीवन में प्रयुक्त छोटी से छोटी कला वस्तु पर पड़ी है। राजस्थानी लोककला के विशद् भण्डार से जिन कृतियों का चयन किया गया है वे भी अपने आप में प्रतिनिधि रत्न है। निश्चय ही यह प्रदर्शनी राजस्थानी जन–मानस की अभिव्यक्ति एवं गौरवपूर्ण संस्कृति की पूर्ण झलक प्रस्तुत करती है।''[14]

इस स्मारिका में ग्राम्य व लोककला विषय पर कुल 07 आलेख प्रकाशित किये गये है। इनमें से कुछ आलेख अति महत्वपूर्ण है – इसी स्मारिका के एक आलेख 'ग्राम्य कला के आधुनिकतम उदाहरण' में प्रो. सुरेश शर्मा ने भैरू सिंह राठौड़ नामक कलाकार के बारे में लिखा है। इस आलेख के अनुसार – महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर के साईकिल स्टेण्ड पर साईकिलों की रखवाली करने वाले भैरू सिंह राठौड़ अपने खाली समय में साईकिल स्टेण्ड के एक कोने में लोहे के तार, जाली, सीमेन्ट, फटे–पुराने चिथड़े, चूड़ियाँ, रबड़ की नलियाँ, काँच के टुकड़े, बटन आदि जो कचरा पात्र के उपयुक्त होते थे उनको बटोर कर वो सुन्दर कलाकृतियों का निर्माण कर दिया करते थे। राठौड़ इन उपेक्षित वस्तुओं से गौरी नृत्य, गणेश, शिव ताण्ड़व नृत्य, भिखमंगों का आनन्द, युगल नृत्य, पशु–पक्षी एवं ग्रामीण देवी–देवताओं के स्वरूप आदि को बनाया करते थे। वस्तुतः इनकी कलाकृति में काँच का टूटा फ्लास्क शिव के हाथ में अपने मौलिक स्वरूप में लटका हुआ है। इनकी एक अन्य

कृति में नीम के वृक्ष के नीचे देवी–देवताओं का परिवार सुशोभित है तो दूसरी और कुछ प्रतिमायें पेड़ पर लटकी हुई है।[15] प्रो. सुरेश शर्मा ने भैरू सिंह राठौड़ की इस कला के बारे में आगे लिखा है कि,''ग्राम्य कला का यह वातवरणीय प्रदर्शन अमेरिका के आधुनिकतम आर्ट ऑब्जेक्ट प्रदर्शन से किसी भाँति कम नहीं है। इनका बाह्य स्वरूप अमेरिका के आधुनिकतम आर्ट ऑब्जेक्ट प्रदर्शन के समकक्ष रखा जा सकता है।[16] इसी स्मारिका में मोलेला के मूर्तिकार उदयलाल कुम्हार का आलेख 'मोलेला की मूर्तियाँ' है। इस आलेख में उदयलाल कुम्हार बताते है कि,''इन मूर्तियों के निर्माण की कथा एक अन्धे कुम्हार के साथ जुड़ी हुई है। यह कार्य केवल मोलेला ग्राम में ही होता है तथा इस कला के प्रमुख कारीगरों में उक्त अन्धे कुम्हार के वंशजों का विशिष्ट स्थान है। ये मूर्तियाँ पूजा के लिए बनाई जाती है। जिन्हें आदिवासी भील, रेबारी, गाडरी, गमेती, डाँगी आदि राजस्थान की जातियाँ पूजती है। अपनी अनन्य विशेषताओं के कारण ये मूर्तियाँ आज देश तथा विदेश के अनेक बडे–बडे संग्रहालयों में देखी जा सकती है''।[17] इस स्मारिका के अन्य आलेखों में तूलिका के तत्कालीन अध्यक्ष गोवर्धन लाल जोशी कृत 'लोक कलाः एक परिचय', तूलिका के तत्कालीन सचिव तेज सिंह कृत 'तूलिका : संक्षिप्त परिचय', ओमदत्त उपाध्याय कृत 'लोक कला की समसामयिकता', राधा कृष्ण वशिष्ठ कृत 'लोक कला : एक प्रागैतिहासिक मानव–प्रक्रिया', बशीर अहमद परवेज कृत 'पड़' (पट–चित्र) है।[18]

वर्ष 1975 ई. में परिषद द्वारा सातवीं राज्य स्तरीय वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस वर्ष श्रेष्ठ कृति के लिए तेजकिरण शाकद्वीप को 'प्रेमवार्ता' कृति के लिए स्वर्ण पदक, किरण मुर्डिया को 'उदयपुर–दो' कृति के लिए रजत पदक, रामचन्द्र शर्मा को 'गुप्त पलायन' कृति के लिए ताम्र पदक व बी.पी. शर्मा को 'परामर्श' कृति के लिए स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इस वर्ष के मार्च माह में फ्रान्स के ख्याति प्राप्त चित्रकार मि. हगबीस के साथ कलावार्त्ता का आयोजन किया गया व अप्रेल माह में एस.डी. अमलोक की एकल चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

16 से 19 जून, 1976 ई. में तूलिका की आठवीं वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया परन्तु इस वर्ष श्रेष्ठ कृतियों के लिए पदक प्रदान नहीं किये गये। इसी वर्ष नारायण शाकद्वीपी को तूलिका का सचिव चुना गया। वर्ष 1977 ई. में तूलिका कलाकार परिषद की नौवीं राज्य स्तरीय वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस वर्ष श्रेष्ठ कृति का स्वर्ण पदक किसी को भी प्रदान नहीं किया गया। रामेश्वर सिंह राजपूत व एस.डी. अमोलक को क्रमशः 'उमंग' कृति के लिए रजत पदक व 'जोड़ा' कृति के लिए ताम्र

पदक प्रदान किये गये। स्व. देवी लाल स्मृति स्वर्ण पदक 'आदर सत्कार' कृति के लिए चिरन्जीलाल शर्मा को प्रदान किया गया। इसी वर्ष के मार्च माह में द्वितीय अखिल राजस्थान चित्रकार शिविर का आयोजन ऋषभदेव (चित्र–15) में किया गया। इस वर्ष वीरेश्वर सिंह भटनागर को तूलिका का सचिव चुना गया व अगस्त माह में चित्रकार सुमहेन्द्र व शैल चोयल ने अपनी विदेश यात्रा के अनुभव तूलिका के कलाकारों के साथ बाँटे।

वर्ष 1978 ई. में परिषद द्वारा दसवीं राज्य स्तरीय वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में श्रेष्ठ कृति 'गुड बॉय' के लिए अब्दुल मजीद को स्वर्ण पदक, सुशीला अवस्थी को 'ग्राफिक' कृति के लिए रजत पदक व हरीश सोनी को 'दृश्य चित्र' कृति के लिए ताम्र पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी वर्ष कला क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए वरिष्ठ चित्रकार प्रेम नरेन्द्र शर्मा व मोनी सान्याल को परिषद की ओर से सम्मानित किया गया।

वर्ष 1979 ई. में मोनी सान्याल को तूलिका का अध्यक्ष चुना गया व वर्ष 1979 ई. में ही तूलिका के सक्रिय सदस्य तेज सिंह की कार्य दक्षता को देखते हुए उन्हें तूलिका का सचिव चुना गया। इस वर्ष के फरवरी माह में तृतीय अखिल राजस्थान चित्रकार शिविर चित्तौडगढ़ में आयोजित किया गया। इस वर्ष तूलिका की ग्यारहवीं कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में श्रेष्ठ कृतियों के लिए कृष्णचन्द्र जोशी को स्वर्ण पदक, डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ को रजत पदक व नारायण शाकद्वीपी को ताम्र पदक से सम्मानित किया गया। इस वर्ष के अक्टूबर माह में सरोज भू व अजय जोशी की एकल चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसी तरह दिसम्बर माह में शीला श्रीमाली व कृष्णचन्द्र जोशी की एकल चित्र प्रदर्शनी आयोजित की गई।

वर्ष 1980 ई. के फरवरी माह में परिषद की ओर से नाथद्वारा की लोक कला की सर्वे रिपोर्ट का प्रकाशन किया गया व मार्च माह में चतुर्थ अखिल राजस्थान चित्रकार शिविर का आयोजन नाथद्वारा में किया गया। इस वर्ष परिषद द्वारा बारहवीं राज्य स्तरीय कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में श्रेष्ठ कृतियों के लिए स्वर्ण पदक, रजत पदक, ताम्र पदक क्रमशः कलाकार हरीश सोनी, रामेश्वर सिंह राजपूत, हर्ष छाजेड़ को प्रदान किये गये व एम.के. शर्मा को स्व. देवी लाल स्मृति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। 18 सितम्बर से 25 सितम्बर 1980 ई. को उदयपुर के आज संगठन व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर में

आयोजित अखिल भारतीय चित्रकला शिविर में तूलिका कलाकार परिषद के कलाकारों ने भाग लिया।

वर्ष 1981 ई. में गोवर्धन लाल जोशी को तूलिका का चेयरमेन, कन्हैयालाल कलार्थी को अध्यक्ष, के.सी. जोशी को उपाध्यक्ष व तेज सिंह को सचिव चुना गया। इस वर्ष परिषद की तेरहवीं राज्य स्तरीय कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस वार्षिक कला प्रदर्शनी में श्रेष्ठ कृति के लिए सुरेश चन्द्र राजौरिया को स्वर्ण पदक, राधाकृष्ण वशिष्ठ को रजत पदक, नारायण शाकद्वीपी को ताम्र पदक व स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक अनिरूद्ध शर्मा को प्रदान किया गया। इस वर्ष के दिसम्बर माह में जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई के प्रो. रानाडे की कलावार्त्ता संगठन द्वारा आयोजित की गई।

कलाकार का मन रंगों में रमता है, रंगों के बिना कला और कलाकार का अस्तित्व नहीं है। रंगों का उल्लासित पर्व होली प्रत्येक कला प्रेमी का अपना पर्व होता है। दिनांक 10 मार्च, 1982 ई. की शाम स्काउट हैड क्वार्टर, उदयपुर में होली स्नेह मिलन सभा का आयोजन किया गया जिसमें तूलिका के रंगों में सराबोर सदस्यों ने हंसी–मजाक, ठहाकों से सभा में खुशनुमा माहौल बना दिया था। इस अवसर पर मजाकिया तौर पर सकुशल सदस्य की घोषणा व अकुशल सदस्य की उपाधियाँ भी वितरित की गई। इस अवसर पर तूलिका के चेयरमेन गोवर्धन लाल जोशी ने आशीर्वचन प्रदान किये।

तूलिका कलाकार परिषद की चौंदहवीं वार्षिक प्रदर्शनी उदयपुर के सूचना केन्द्र में 16 अक्टूबर से 22 अक्टूबर 1982 ई. तक आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में अपने–अपने विचारों और भावों के प्रकटीकरण हेतु विभिन्न माध्यम, प्रविधियाँ और रूपांकनों पर आधारित 43 कलाकारों की 98 चयनित कृतियाँ प्रदर्शित की गई। प्रदर्शनी में जलरंग, तेलरंग, रेखांकन, कोलाज, एचिंग्स, पोट्रेट, बातिक, मिनिएचर, पारम्परिक फड़, काष्ठ शिल्प में निर्मित कृतियाँ–अनुकृतियाँ, मिक्स–मीडिया आदि माध्यमों में रूपायित वृहद चित्र संसार था। पुरस्कृत कृतियों में सैय्यद मेहर अली अब्बासी की कृति 'सैक्सुअल डिजायर' को स्वर्ण पदक, कल्पना शोपुरकर की कृति 'रचना–2' को रजत पदक, पूनम सिंह की कृति 'प्रकृति–1' को ताम्र पदक व अनिरूद्ध शर्मा की कृति 'सिंग–एण्ड–सॉन्ग' को स्व. देवी लाल स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इस वर्ष दो प्रशंसित कृतियों 'फड पारम्परिक आकार' व 'कोलाज' के लिए क्रमशः सुबोध कुमार जोशी व शशि सेठिया को भी सम्मानित किया गया। इस प्रदर्शनी के पुरस्कारों के निर्णायक बी.जी. शर्मा व डॉ. शैल चोयल रहे।(चित्र–16)

वृहद और विविधताएँ लिए यह प्रदर्शनी कई सवाल भी उठाती है। एक विहंगम परिदृश्य में कलाकारों की कलात्मक भावना और आत्म–चेतना का अभाव लगता ही है। साथ ही चित्रों के चाक्षुष रूपों के महत्व में चित्रगत सौन्दर्य हेतु दर्शित वस्तु का अधिक उपयोग कर शिल्प और विवरण का परिचय दिया है। अनुकरण और बाह्य प्रभावों से आच्छन्न मनः स्थिति कई कला कृतियों में परिलक्षित हुई है। चौदहवीं कला प्रदर्शनी में कतिपय कलाकार राज्य के वरिष्ठ एवं जाने माने हस्ताक्षर थे। गोवर्धन लाल जोशी, नारायण एस. महर्षि, तेजसिंह, वीरेश्वर भटनागर, सत्यनारायण भारद्वाज, अब्दुल मजीद, रामकृष्ण शर्मा, रामेश्वर सिंह, बसन्त कश्यप, नीलकमल आदि इनमें से अधिकांश ने अपनी पुरानी कृतियाँ दोहराकर प्रदर्शनी का संतोष प्राप्त किया।[19]

तूलिका कलाकार परिषद अब अपनी शैशवावस्था से निकल कर युवावस्था में प्रवेश कर चुकी थी। वर्ष 1983 ई. तूलिका का रजत जयन्ती वर्ष था। इस वर्ष के फरवरी माह में मनोहर श्रीमाली के लघु–चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। तूलिका कलाकार परिषद् के सौजन्य से राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर की कला दीर्घा में 20 मई 1983 ई. की संध्या को परिषद् के सदस्य चित्रकार रामेश्वर सिंह राजपूत की एकल चित्र प्रदर्शनी शुरू हुई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान के वरिष्ठ चित्रकार रामगोपाल विजयवर्गीय ने कोरे केनवास पर दृश्यचित्र अंकित कर किया। लगभग दस दिनों तक चली इस प्रदर्शनी में रामेश्वर सिंह ने अपनी ताजा पन्द्रह कोलाज चित्र कृतियों को प्रदर्शित किया था। सभी चित्र कृतियों में पाबूजी और देवनारायण जी की कथा से सम्बन्धित फड़ों की कतरनों को समसामयिक प्रचलित पद्धति के अनुसार सुन्दर ढ़ंग से संयोजित किया गया था। इस प्रदर्शनी की प्रमुख विशेषता यह रही कि इसमें आधुनिक और पारम्परिक कला तत्वों का सुन्दर समन्वय देखा गया तथा दोनों विचारधाराओं के दर्शकों को काफी सीमा तक सन्तोष प्राप्त हुआ।[20] इस वर्ष रजत जयन्ती के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस वर्ष 2 जून से 6 जून तक अखिल राजस्थान चित्रकार शिविर का आयोजन गांव आजंना, देवगढ़ में आयोजित किया गया। इस शिविर में तूलिका के सदस्यों के साथ–साथ राजस्थान के प्रायः सभी प्रमुख कला संगठनों के एक–एक प्रतिनिधि को भी आमंत्रित किया गया था।[21]

वर्ष 1983 ई. में ही तूलिका की पन्द्रहवीं राज्य स्तरीय वार्षिक कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। यह प्रदर्शनी सूचना केन्द्र, उदयपुर में 2 से 6 जुलाई तक आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में राज्य के तैतीस कलाकारों की 88 कृतियों को प्रदर्शित किया गया।

इस प्रदर्शनी में हरिशंकर गुप्ता की 'शीर्षकहीन' कृति को स्वर्ण पदक, रामनारायण शर्मा की कृति 'स्वप्न' को रजत पदक, बसन्त कश्यप की कृति 'रफ्तार' को कांस्य पदक व कन्हैयालाल सोनी की कृति 'मुगल भवन' को स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इस प्रदर्शनी के निर्णायक सी.डी. मिस्त्री व बालकृष्ण पटेल रहे।[22]

वर्ष 1984 ई. में परिषद की सौलहवीं वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अब्बास अली बाटलीवाला को स्वर्ण पदक, नसीम अहमद को रजत पदक, देवेन्द्र दाहिमा को ताम्र पदक व चिरंजीलाल शर्मा को स्व. देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक उनकी श्रेष्ठ कृतियों के लिए प्रदान किया गया। इस वर्ष के जून माह में अखिल राजस्थान चित्रकार शिविर, रणकपुर में आयोजित किया गया। रामेश्वर सिंह को इस वर्ष तूलिका कलाकार परिषद की ओर से सम्मानित किया गया। 9 मई से 18 मई 1984 ई. को आज जयपुर व सी.टी.ए.ई. कॉलेज, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में उदयपुर में आयोजित म्यूरल शिविर में तूलिका कलाकार परिषद् के दो सदस्य कलाकार रामेश्वर सिंह राजपूत व तेजसिंह को आमंत्रित किया गया।[23] 1 जून 1984 ई. को तूलिका कलाकार परिषद् के तत्कालीन सचिव तेज सिंह ने राजस्थान ललित कला अकादमी के सचिव को 1983–84 ई. के चित्रकार शिविर हेतु आर्थिक अनुदान कम प्राप्त होने पर एक पत्र लिखा। यह पत्र वर्ष 1983–84 के चित्रकार शिविर हेतु 2000 रू. की जो अनुदान राशि राज्य अकादमी से प्राप्त हुई थी, वह वर्ष 1982–83 की राशि से कम होने के संदर्भ में लिखा गया था।

वर्ष 1985 ई. की 12 मई को तूलिका कलाकार परिषद ने उदयपुर के कला संगठन 'आज' व 'कन्टेम्पॅररि आर्ट गैलरी' के संयुक्त सहयोग से आयोजित दो दिवसीय कला प्रदर्शनी में सत्रह कलाकारों की कुल 35 कला कृतियाँ प्रदर्शित की गई। जिनमें तेल चित्रण, कोलाज, जलरंगीय चित्र व म्यूरल आदि प्रमुख है। प्रदर्शनी में तूलिका कलाकार परिषद् के रामेश्वर सिंह व देवेन्द्र दाहिमा आदि की कृतियों को सराहा गया।[24] इसी वर्ष सत्रहवीं वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस वर्ष डी.बी. बेले को देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक (अखिल भारतीय स्तर पर), बसन्त कश्यप को 500 रू. सहित तूलिका रजत पदक, सुरजीत कौर को 500 रू. सहित तूलिका रजत पदक, ए.एम. बावलकर को 500 रू. सहित तूलिका रजत पदक, छोटूलाल को 500 रू. सहित तूलिका रजत पदक प्रदान किया गया तथा तूलिका प्रशस्ति पत्र गीता दास को देकर सम्मानित किया गया। इस वर्ष की 26 से 30 जून को चित्रकार शिविर का आयोजन कैलाशपुरी में किया गया। इस शिविर में

देवेन्द्र दाहिमा, देवीलाल पुरोहित, जगदीश नन्दवाना, मुरली लोहाटी, ममता सिंह, मनोहर श्रीमाली, सुबोध रंजन शर्मा, सुखदेव सिंह, तेज सिंह, त्रिलोक श्रीमाली आदि ने भाग लिया।

वर्ष 1987 ई. में तूलिका की अठारहवीं वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस वार्षिक कला प्रदर्शनी में मीना बया को 'रिद्म' कृति के लिए तूलिका स्वर्ण पदक, मधुकान्त मून्दडा को 'लेण्ड स्केप' कृति के लिए तूलिका रजत पदक व रवीन्द्र दाहिमा को 'ड्राई लेक' कृति के लिए तूलिका ताम्र पदक से सम्मानित किया गया।

वर्ष 1988 ई. में तूलिका कलाकार परिषद् की उन्नीसवीं वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में तूलिका स्वर्ण पदक नील कमल को उनकी कृति 'राजस्थान' के लिए प्रदान किया गया। सुबोध रजंन को 'आलाप' कृति व मालाराम शर्मा को 'लैण्ड स्केप' कृति के लिए क्रमश : तूलिका रजत पदक व तूलिका ताम्र पदक प्रदान किये गये। देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक चिरंजीव लाल शर्मा को 'नृत्य गणेश' कृति के लिए प्रदान किया गया।

वर्ष 1989 ई. में तूलिका की बीसवीं वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस वर्ष तूलिका स्वर्ण पदक 500 रू. सहित अश्विनी शर्मा को, तूलिका रजत पदक 250 रू. सहित युगल किशोर शर्मा को तथा तूलिका ताम्र पदक 200 रू. सहित अरूण पंकज को देकर सम्मानित किया गया।

वर्ष 1991 ई. में तूलिका की इक्कीसवीं वार्षिक कला प्रदर्शनी आयोजित की गई व इस वर्ष तूलिका स्वर्ण पदक 1000 रू. सहित किशोर काला, देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक 250 रू. सहित शान्तिलाल शर्मा, तूलिका रजत पदक 500 रू. सहित चेतना पाटीदार तथा तूलिका ताम्र पदक 250 रू. सहित राजेन्द्र प्रसाद को देकर सम्मानित किया गया। इस वर्ष तूलिका द्वारा दृश्य चित्रण पर तीन दिवसीय शिविर का आयोजन 6 अप्रेल से 8 अप्रेल तक आर.टी.डी.सी. टूरिस्ट गेस्ट हाउस, जयसमन्द में किया गया।[25] इसी प्रकार क्रमशः वर्ष 1992 ई., 1993 ई. में तूलिका कलाकार परिषद् की बाईसवीं, तेईसवीं कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

वर्ष 1995 ई. के बाद से राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा सभी कला संगठनों को अनुदान बंद करने के कारण तूलिका कलाकार परिषद को भी अकादमी से अनुदान मिलना बन्द हो गया। आर्थिक अनुदान बन्द होने के फलस्वरूप वार्षिक कला प्रदर्शनियों व कलाकार शिविरों का नियमित आयोजन बन्द हो गया।

संगठन के संस्थापक सदस्य गोवर्धन लाल जोशी, मोनी सान्याल व सचिव तेज सिंह के निधन हो जाने से संगठन के मजबूत स्तम्भ ढ़ह गये और संगठन की नियमित गतिविधियों का संचालन एकदम रूक गया। संगठन के कुछ वरिष्ठ सदस्य पदाधिकारियों द्वारा पूर्व में नये संगठन बना लेने व अन्य संगठनों की सदस्यता लेकर तूलिका को छोड़ जाने से इसका संगठनात्मक ढ़ाँचा लडखडा गया। शेष बचे सदस्यों ने संगठन से त्याग पत्र तो नहीं दिया लेकिन उन्होंने नियमित गतिविधियों के संचालन पर भी ध्यान नहीं दिया। अब वो अपने व्यक्तिगत कलाकर्म में पहले से अधिक व्यस्त हो गये।

वर्ष 2002 ई. में तूलिका के सदस्यों ने नई कार्यकारिणी गठित कर नारायण महर्षि को अध्यक्ष, मनोहर श्रीमाली, कन्हैया लाल कलार्थी को उपाध्यक्ष, देवेन्द्र दाहिमा को सचिव तथा मुरली लाहोटी, पुणे; वीरेश्वर भटनागर, उदयपुर; अवतार सिंह, अमृतसर; सुखदेव सिंह सिसोदिया, उदयपुर; शीला श्रीमाली, उदयपुर; रामनारायण शर्मा, उदयपुर को सदस्य के रूप में चुना। इस वर्ष गठित कार्यकारिणी ने निर्णय लिया कि तूलिका कलाकार परिषद की वार्षिक कला प्रदर्शनियों का दौर फिर से शुरू किया जाएगा। इसके लिए रवीन्द्र दायमा को प्रदर्शनी का संयोजक नियुक्त किया गया।

नौ वर्ष पश्चात् तूलिका कलाकार परिषद की वार्षिक कला प्रदर्शनी का शुभारम्भ 26 दिसम्बर 2002 ई. को हुआ। इस प्रदर्शनी को अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित किया गया। परिषद की यह चौबीसवीं कला प्रदर्शनी थी। यह प्रदर्शनी परिषद के संस्थापक सदस्य व भूतपूर्व चेयरमेन कलाविद् गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा' की स्मृति में आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन तत्कालीन राजस्थान ललित कला अकादमी के अध्यक्ष प्रो. सी.एस. मेहता व तूलिका कलाकार परिषद के संस्थापक सदस्य प्रो. पी.एन. चोयल के कर–कमलों से हुआ।[26] इस प्रदर्शनी की रंगीन स्मारिका प्रकाशित की गई जिसमें कलाकारों के परिचय सहित उनकी कलाकृतियाँ प्रकाशित की गई।(चित्र–17) इस प्रदर्शनी में 30,000 रू. के पुरस्कार प्रदान किए गये। जिनमें तीन–तीन हजार रूपये के सात पुरस्कार–चन्दन यादव (उज्जैन), दीपक भारद्वाज (उदयपुर), जी.एस. गोस्वामी (जैसलमेर), जगदीश कुमावत (उदयपुर), किशोर बाबा (राजकोट), प्रेम नारायण (उदयपुर), विवेक पाल (गुवाहाटी) को प्रदान किये गये तथा एक हजार रूपये के नौ पुरस्कार–चन्दन कुमार चौधरी (पटना), चतरसिंह कुमावत (उदयपुर), जयप्रकाश जगताप (पुणे), कार्तिक कुमार प्रसाद (धनबाद), कैलाश थेलेकर (मैसूर), मदन मीणा (कोटा), शुभाशीष दत्ता (खैरागढ़), विलास चौरमले (पुणे), वी.एल. मेवाडा (बडौदा) को प्रदान किये गये।

इस अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी का समापन 31 दिसम्बर 2002 ई. को वरिष्ठ चित्रकार रामचन्द्र शर्मा द्वारा पुणे के चित्रकार विलास चौरमले की कृति 'मेघना' को उतारकर किया। इस प्रदर्शनी में भारत के विभिन्न प्रान्तों जिसमें कर्नाटक, पंजाब, असम, कश्मीर, गुजरात, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, बिहार, मध्यप्रदेश, ओड़िशा, दिल्ली, महाराष्ट्र एवं राजस्थान के 154 कलाकारों के 156 चित्रों को प्रदर्शित किया गया था[27] लेकिन वर्ष 2002 ई. की इस प्रदर्शनी के बाद परिषद इसे नियमित नहीं रख सकी।

इस संगठन के सभी मुख्य कलाकारों का देहवसान हो जाने के कारण इसकी सक्रियता में कमी आई। वर्तमान में इस संगठन की बागड़ोर ऐसे कलाकारों के पास है जिनके पास इसके पुराने वैभव को फिर से लौटाने का कोई व्यापक दृष्टिकोण नहीं है। तूलिका कलाकार परिषद द्वारा नियमित वार्षिक कला प्रदर्शनियों का आयोजन, श्रेष्ठ कृतियों पर पदक प्रदान करना, समय–समय पर विशेष शिविरों का आयोजन अपने आप में अनूठा रहा है जो आने वाले कलाकारों को सदैव प्रेरित करता रहेगा। तूलिका कलाकार परिषद राजस्थान का प्रथम समकालीन कला संगठन होने व यहाँ के कलाकारों को कला में नयेपन के लिए जागरूक करने के लिए सदैव स्मरणीय रहेगा।

5.1.2. टखमण–28, उदयपुर

राजस्थान के कुछ क्रियाशील व उत्साही कलाकारों द्वारा दिल्ली से उदयपुर रेल यात्रा के दौरान एक ऐसा निर्णय लिया गया जिसका प्रभाव राज्य के साथ–साथ अन्य प्रदेशों की कला पर भी पड़ा वह था एक सर्वथा नवीन कला संगठन की स्थापना का जो 28 फरवरी, 1968 ई. को लिया गया। इस यात्रा में उदयपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक ओ. डी. उपाध्याय, सुरेश शर्मा व उनके शिष्य शैल चोयल, विद्यासागर उपाध्याय, कय्यूम अली, विमला, रेखा भटनागर, सुरजीत कौर चोयल, रणजीतपुरी, रामचन्द्र सोनी, शब्बीर हसन काजी आदि थे। (चित्र–18) यह सभी प्रथम त्रैवार्षिक प्रदर्शनी–1968 ई. का अवलोकन कर लौट रहे थे। ये कलाकार उत्साह से भरे थे तथा इनमे कुछ नया कर गुजरने का साहस था। इन्हीं सृजनशील कलाकारों ने पारम्परिक रूपाकारों से विद्रोह कर विषय, आकार, माध्यम एवं तकनीक में नवीन प्रयोगों को स्वीकारते हुए टखमण–28 कलाकार संहति की स्थापना की। इसकी स्थापना में कवि व साहित्यकार मंगल सक्सेना का भी विशेष योगदान रहा।[28]

टखमण–28 कोई शब्दकोष का शब्द नहीं है बल्कि विशिष्ट तरीके से खोजा हुआ एक अनोखा शब्द है जिसका कोई अर्थ भी नहीं है। टखमण का नामकरण दादावाद के नामकरण की याद दिलाता है। टखमण का नामकरण राजस्थान के इन युवा प्रयोगधर्मी कलाकारों में से प्रत्येक ने हिन्दी वर्णमाला के किसी एक अक्षर का उच्चारण कर किया और इस प्रकार उच्चारित अक्षरों को एक साथ रख कर लॉटरी की पद्धति से एक–एक अक्षर उठवाया गया। इस प्रक्रिया में प्रथम चार अक्षर क्रमशः 'ट, ख, म, ण ' निकले। इस अवसर पर 28 कलाकार थे तथा फरवरी की 28 तारीख भी थी, अतः टखमण–28 नामकरण का उच्चारण शिक्षक ओमदत्त उपाध्याय ने किया और यह महसूस किया गया कि इस शब्द में राजस्थानी भाषा की उच्चारण ध्वनि निहित है। इस प्रकार प्रदेश की पारम्परिक और लोक कलाओं के मध्य यह एक नया नामकरण राजस्थान की आधुनिक चित्रकला को प्रतिस्थापित करता प्रतीत हो रहा था।[29]

टखमण–28 के संस्थापक सदस्य एवं अध्यक्ष लक्ष्मीलाल वर्मा ने टखमण–28 का परिचय देते हुए लिखा है – ''यह नाम टखमण–28 अपरिचित सा प्रतीत होता है क्योंकि यह शब्द टखमण–28 न तो किसी शब्द का संक्षिप्त रूप है और नहीं 'Acronym' वास्तव में इसका कोई अर्थ भी नहीं है। यह शब्द एक प्रयोग है उन कलाकारों के समूह की ही भाँति जिन्होंने इसका निर्माण किया और इस प्रकार इस संस्था का शुभारम्भ हुआ''[30]

टखमण–28 के उद्देश्यों में प्रमुख लक्ष्य यह है कि राजस्थान की कला परम्पराओं को साथ रखते हुए कला के क्षेत्र में नित नये प्रयोग किए जाए और कला की अवरूद्ध होती हुई गति को फिर से एक नई दिशा और एक नई सोच प्रदान की जावे। इसके साथ ही कलाकारों की निजी समस्याओं को संगठन के द्वारा सामूहिक रूप से सुलझाया जाए और एकल तथा समूह प्रदर्शनियों पर होने वाले व्यय को समान रूप से वहन करके आर्थिक भार को कम किया जाए। इस संस्था का आग्रह आधुनिक कला शैली को अपनाकर नए प्रयोग करना है। पुरानी परिपाटी से जुड़े रहकर जो कलाकार मिनिएचर चित्रों का ही सृजन करते रहना चाहते हैं उनके लिए इस संगठन मे कोई स्थान नहीं है। जब तक कि वे अपनी शैली में नई सम्भावनाओं की खोज न कर ले। टखमण–28 ने कलात्मक प्रयोगों के द्वारा विभिन्न स्तरों पर प्रगति की है तथा आज राजस्थान के ही नहीं अपितु भारत वर्ष के कला जगत में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान हैं। जिन कलाकारों ने इसकी परिकल्पना की थी वो आज भी अपनी लगन और प्रतिबद्धता के साथ टखमण–28 की प्रत्येक गतिविधि और उसके विकास में सक्रिय हैं। लगभग चार दशकों की अपनी यात्रा में टखमण–28 ने कई सोपान तय किए

हैं। जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर टखमण–28 ने अनवरत विकास कर कला जगत में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है वही संगठन के सदस्य कलाकारों ने राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान को गौरवान्वित भी किया, टखमण के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है। पिछले चार दशकों से लगातार यह संगठन राज्य व देश के विभिन्न भागों में प्रदर्शनियाँ आयोजित कर रहा हैं। टखमण ने 1968, 69 व 70 ई. में उदयपुर में अपने प्रारम्भिक दौर की सफल प्रदर्शनियाँ आयोजित की जिनमें सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, विद्यासागर उपाध्याय, ओ. डी. उपाध्याय, शब्बीर हसन काजी के साथ राजस्थान से बाहर के ख्याति प्राप्त कलाकारों (पी.मंसाराम, पन्ना जैन आदि) ने भी सक्रिय रहकर उत्साह से भाग लिया।[31]

1968 ई. में उदयपुर के नगरपालिका कार्यालय के प्रांगण में टखमण की प्रथम कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस कला प्रदर्शनी के केटलॉग में जो कुछ लिखा गया वही इस संगठन का 'घोषणा–पत्र' कहलाया। 29 मार्च 1968 ई. में इस घोषणा पत्र को प्रदर्शनी के दौरान प्रसारित किया गया। इसमें लिखा था–''परम्परा में रूढ़ अकारद कला की आत्मा का आकर्षण रखते हुए इसकी भाषा के बदलते हुए रूपों, माध्यमों व आयामों को स्वीकारते हुए हम जीवनाभिव्यक्ति के लिए नव प्रयोगों में अनवरत रहेंगें तथा जन–जीवन की अकारद कला को व्याप्त करेंगें क्योंकि हमारी जीवन–निष्ठा है कि चित्रकला, मूर्तिकला व अभिनय आदि कलाओं के आकार व स्वरूप निर्माण व आनन्द के प्रति जनसामान्य के निरन्तर जागरूक होने में ही सार्वजनिक कल्याण निहित है।''[32] (चित्र–19) 1968 ई. की इस प्रदर्शनी में चित्रकार मनसाराम, पन्ना जैन, मंगल सक्सैना, बी. डी. गुप्ता, सुरेश शर्मा, गिरिराज गुप्ता, ओम उपाध्याय, लक्ष्मीलाल वर्मा, रेखा माथुर, राधाकृष्ण शर्मा, ओम प्रकाश जोशी, विद्यासागर उपाध्याय, मंजुला सिंघल, रमेश गर्ग, शैल चोयल, शब्बीर काजी, जगदीश सोनी, महेश ओझा, सुरजीत कौर चोयल, जवान सिंह, रामचन्द्र सोनी, स्वप्ना चौधरी, विमला कुलहरी, कय्यूम अली बोहरा, जगदीश सिंह साल्वी, अमृत यादव, शीला श्रीमाली, लतिका नागर, ताप्ती मुखर्जी, अरूणा माथुर, बाकर अली, रणजीत पुरी, मजीद खान, रघुनाथ चित्रेश तथा सी. एम. सक्सेना ने अपनी–अपनी कृतियाँ प्रदर्शित की।[33] इसी क्रम में आयोजित दूसरी प्रदर्शनी उदयपुर के भण्डारी दर्शक मण्डप में आयोजित की गयी जो पत्र–पत्रिकाओं में बहुत चर्चित हुई। इसमें यहाँ के युवा चित्रकारों ने अपना कला–क्षेत्र बढ़ाया और क्रमशः तीसरी व चौथी प्रदर्शनी जयपुर और दिल्ली में आयोजित की, जिससे राष्ट्रीय स्तर के अनेक चित्रकारों ने इसके कार्यों को सराहा और निरन्तर यह कला संगठन प्रगति की ओर

अग्रसर होने लगा। इस वार्षिक प्रदर्शनी में अब्दुल मजीद खाँ, अरूणा माथुर, अमृत लाल यादव, ओमदत्त उपाध्याय, सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, विद्यासागर उपाध्याय, कय्यूम अली बोहरा, शैल चोयल, सी. एल. पोरिन्चुकुट्टी, सुरजीत कौर, जगदीश चन्द्र सोनी, जवान सिंह सिसोदिया, ताप्ती मुखर्जी, देवीलाल पुरोहित, महेश ओझा 'पुरूषार्थी', रघुनाथ चित्रेश, रणजीत पुरी, राधाकृष्ण वशिष्ठ, रामचन्द्र सोनी, रेखा भटनागर, विमला उपाध्याय तथा हर्ष छाजेड की कृतियाँ प्रदर्शित की गई।

यह प्रदर्शनी 1971 ई. में 22 से 28 मई के मध्य आईफैक्स कला दीर्घा नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में टखमण–28 के प्रमुख प्रयोगधर्मी कलाकारों ने अपने चित्र प्रदर्शित किये। यह टखमण–28 द्वारा राजस्थान के बाहर अपने चित्रो को प्रदर्शित करने का प्रथम प्रयास था। इससे पूर्व यही प्रदर्शनी 28 मार्च से 1 अप्रेल तक जयपुर के सूचना केन्द्र की कला दीर्घा में तथा 17 अप्रेल से 25 अप्रेल तक टॉउन हॉल, उदयपुर में भी आयोजित की गई।[34] वर्ष 1972 ई. में एशिया ट्रेड फेयर–72 में पेवेलियन मे बनाए गए म्यूरल में सदस्य कलाकारों ने कार्य किया व अपनी सफल भागीदारी निभाई। वर्ष 1973 ई. में 26 फरवरी से 2 मार्च तक सदस्य कलाकारों की प्रदर्शनी उदयपुर के सूचना केन्द्र में आयोजित की गई। हर वर्ष होने वाली प्रदर्शनियों से अलग हटकर इस वर्ष (1973 ई.) रवीन्द्र मंच, जयपुर में 28 फरवरी से 01 मार्च की दो दिवसीय कला संगोष्ठी आयोजित की जिसमें राजस्थान के कलाकारों, कला समीक्षकों व कलाप्रेमियों ने भाग लिया। समसामयिक कला पर बेबाक विचारों का आदान–प्रदान हुआ तथा उसके उपरान्त उदयपुर के टॉउन हॉल में 17 अप्रेल से 26 अप्रेल 1973 ई. तक सफल प्रदर्शनी आयोजित की गई।

सन् 1974 ई. में टखमण–28 ने एक नई शुरूआत की जिसके के अन्तर्गत इस संगठन ने अपने सदस्यों की एकल प्रदर्शनियाँ आयोजित करना प्रारम्भ किया जिसके तहत सर्वप्रथम अफसर हुसैन की एकल प्रदर्शनी फरवरी माह में उदयपुर के सूचना केन्द्र में आयोजित की गई। मार्च के माह में पी. के. सूरी व हिम्मत श्रीमाली की एकल प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस कड़ी में अगली प्रदर्शनी जुलाई माह में चरण शर्मा की कृतियों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। यह सभी प्रदर्शनियाँ उदयपुर के सूचना केन्द्र की कला दीर्घा में आयोजित की गई। चरण शर्मा की प्रदर्शनी के समय पर ही टखमण–28 ने एक कला गोष्ठि भी आयोजित की जिसमे संगठन के सदस्य कलाकारों व स्थानीय कला प्रेमियों व कलाकारों ने भाग लिया। इसी श्रृंखला में जयपुर के सूचना केन्द्र में विद्यासागर उपाध्याय, रमेश गर्ग व अमृतलाल यादव की एक प्रदर्शनी भी टखमण–28 ने आयोजित की। वर्ष 1975

ई. में 29 जनवरी से 2 फरवरी के मध्य प्रत्येक वर्ष होने वाली सदस्य कलाकारों की समूह प्रदर्शनी सूचना केन्द्र, उदयपुर में आयोजित की गई। इसी वर्ष 25 अप्रेल को फ्रांस के कलाकार हगवेल्स (इन्हें इसी वर्ष आयोजित त्रैवार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में पुरस्कृत किया गया था) का सम्मान सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। वर्ष 1975 ई. में ही सूचना केन्द्र, उदयपुर में 18 अक्टूबर से 21 अक्टूबर के मध्य जवान सिंह सिसोदिया की एकल प्रदर्शनी टखमण–28 द्वारा आयोजित की गई।

वर्ष 1976 ई. में टखमण–28 के 14 सदस्य चित्रकारों की 62 चित्र कृतियाँ, ग्राफिक्स एवं रेखांकन दिल्ली की एक महत्वपूर्ण कला दीर्घा रवीन्द्र भवन में प्रदर्शित किये गये। प्रदर्शनी 22 जनवरी से 31 जनवरी तक चली। प्रदर्शनी का अवलोकन तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने किया एवं युवा चित्रकारों के प्रयासों की सराहना की। इसी प्रकार 10 मई से 17 मई 1976 ई. तक जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई में समूह प्रदर्शनी आयोजित की गई। मुम्बई के कलाजगत में इस समूह का प्रथम परिचय था और इसी प्रदर्शनी ने मुम्बई के कला पारखियों पर ऐसी अमिट छाप छोड़ी कि अब तक मुम्बई में टखमण–28 अपनी विशेष पहचान बनाए हुए हैं। दिल्ली के कलाकार व कला समीक्षक जीवनलाल 'प्रेम' की एकल प्रदर्शनी 19 से 21 मार्च 1976 ई. के मध्य उदयपुर के सूचना केन्द्र में आयोजित की गई। टखमण–28 ने अपने नए व एकदम युवा चित्रकारों की प्रदर्शनी टखमण–28 जूनियर समूह प्रदर्शनी के नाम से 16 से 31 जून तक उदयपुर के सूचना केन्द्र में आयोजित की।

वर्ष 1977 ई. में देश के एक और महानगर कोलकाता में समूह के 12 सदस्य कलाकारों की 57 कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई। यह प्रदर्शनी 22 से 27 फरवरी तक अकादमी ऑफ आर्ट्स, कोलकाता में आयोजित हुई। इसी वर्ष टखमण–28 के जूनियर सदस्यों की समूह प्रदर्शनी 18 से 21 अप्रेल तक उदयपुर के सूचना केन्द्र में आयोजित हुई तथा हेमन्त चित्रकार की एकल प्रदर्शनी उदयपुर के सूचना केन्द्र में लगाई गई।

वर्ष 1978 ई. में केन्द्रीय ललित कला अकादमी द्वारा बहावलपुर, नई दिल्ली में फरवरी माह में आयोजित राष्ट्रीय कला मेला में सदस्य कलाकारों की कलाकृतियों का सफल प्रदर्शन किया गया। इसी वर्ष उदयपुर में टखमण–28 ने मई से जुलाई तक दो माह का हॉबी वर्कशॉप चलाया तथा इसमें निर्मित कलाकृतियों की प्रदर्शनी अक्टूबर माह में लगाई गई।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस में टखमण–28 के द्वारा 25 फरवरी से 4 मार्च 1979 ई. तक सात दिवसीय ग्राफिक शिविर का आयोजन किया गया। यह आयोजन प्रदेश के कला जगत में एक उल्लेखनीय प्रयास था क्योंकि इससे बहुत से कलाकारों को विशेष रूप में अपेक्षाकृत युवा चित्रकारों को आपसी विचार–विमर्श और रचनात्मक आदान–प्रदान का अवसर मिला। राजस्थान में अब तक ग्राफिक जैसे अप्रचलित माध्यम में जयपुर में इतनी बडी संख्या में एक साथ कभी कोई काम शिविर के रूप में अब तक आयोजित नहीं किया गया था। इसमें संगठन ने अपने सदस्यों के अतिरिक्त कुछ अन्य कलाकारों को भी आमंत्रित किया।

टखमण–28 ने 10 जून से 25 जून 1981 ई. के मध्य राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट के प्रांगण में अखिल भारतीय छापा चित्रण शिविर (प्रिन्ट मेकिंग केम्प) का आयोजन किया। (चित्र–20) शिविर में संगठन सदस्यों के अतिरिक्त आमंत्रित कलाकारों ने भी कार्य किया। जिसमें दिल्ली के प्रसि़द्ध छापाकार जय जरोठिया ने सूक्ष्म रेखाकंन से मानव उत्पीड़न, मोहन शर्मा ने स्टील लाईफ व सी. एस. मेहता अपनी अमूर्तन कला की विशेषतायें लिए हुए सामने आये। कलाविद् देवकीनन्दन शर्मा ने भी शिविर मे पहुँच कर युवा कलाकारों का साथ दिया व पक्षियों का रेखांकन किया। अपनी गतिविधियों के अन्तर्गत और विकास की मंजिलों को तय करते हुए 7 जून से 20 जून 1982 ई. के मध्य एक अखिल भारतीय मृण शिल्प शिविर आयोजित किया। यह शिविर मोलेला के ग्रामीण अंचल में स्थानीय मृणशिल्प कलाकारों के साथ मिल कर लगाया गया। यहाँ आमंत्रित कलाकारों में बड़ौदा से ज्योति भट्ट, दिल्ली से रमेश बिष्ट, श्रीमती सीमा बिष्ट तथा मुम्बई से निमिशा शर्मा आदि थे। इस शिविर के तत्पश्चात टखमण–28 ने गोवर्धन विलास में स्थित फ्रेस्को भित्ति चित्रों की अनुकृतियाँ बनाने का कार्य हाथ में लिया। अनुभवी व इस शैली में परम्परागत संगठन के सदस्य कलाकार घनश्याम शर्मा, ललित शर्मा, सुरेश जोशी, आर.के. शर्मा तथा गगन बिहारी दाधीच को यह कार्यभार सौंपा गया। इन सदस्य कलाकारों ने अथक परिश्रम व लगन से इस कार्य को पूर्ण किया। इस वर्ष दिल्ली में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय कला मेला में टखमण–28 की समूह प्रदर्शनी लगाई गई। राजस्थान की अग्रणी एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले संगठन टखमण–28 ने देश के कला जगत में सतत क्रियाशील रहते हुए अपने 15 वर्षो की यात्रा वर्ष 1983 ई. मे पूर्ण की। संगठन की प्रत्येक गतिविधि राजस्थान के कला जगत के लिए महत्वपूर्ण आयोजन माना जाता रहा। इसी क्रम में 16 सें 22 जनवरी 1983 ई. तक टखमण–28 के 23 सदस्य कलाकारों की 85

कला कृतियों की प्रदर्शनी दिल्ली की रवीन्द्र भवन कला दीर्घा में आयोजित की गई।[35] इसी वर्ष 25 मई से 6 जून 1983 ई. तक अखिल भारतीय चित्रकार शिविर, उदयनिवास, उदयपुर में आयोजित किया गया। इस शिविर में अहमदाबाद से बालकृष्ण पटेल व सी.डी. मिस्त्री को अतिथि कलाकार के रुप में आमंत्रित किया गया। शिविर के दौरान आज के कला जगत की स्थिति के बारे में अनौपचारिक विचार विमर्श हुआ।इस शिविर के उपरान्त संगठन ने 21 से 27 सितम्बर 1983 ई. तक मुम्बई की जहाँगीर आर्ट गैलेरी में अपने सदस्य कलाकारों की प्रदर्शनी (चित्र–21) आयोजित की। इसी बीच गोवर्धन विलास में जो अनुकृतियाँ करने का प्रोजेक्ट चल रहा था, उसको पूर्ण कर अब द्वारकाधीश मंदिर के भित्ति चित्रों की फ्रेस्को अनुकृतियों का कार्य प्रारम्भ किया गया । वर्ष 1984 ई. में टखमण–28 ने प्रथम "अखिल भारतीय छापा चित्र प्रदर्शनी" का आयोजन किया। प्रदर्शनी में देश के अनेक महत्वपूर्ण कला केन्द्रों से छापा चित्र प्राप्त हुए। जिसे एक प्रतियोगिता का रुप प्रदान कर निर्णायक मण्डल के सदस्य ए.पी.गज्जर तथा एम.वी.कृष्णन ने पिच्चासी कृतियों में से आठ सर्वश्रेष्ठ कृतियों को पुरस्कार के लिए चुना।[36]

राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा प्रस्तावित प्रोजेक्ट के तहत द्वारकाधीश मन्दिर व गोवर्धन विलास के भित्ति चित्रों की फ्रेस्कों अनुकृतियाँ बनाने का कार्य 25 दिसम्बर 1984 ई. से 6 जनवरी 1985 ई. तक पूर्ण किया गया। यह प्रोजेक्ट ख्यातिनाम परम्परागत कलाकार घनश्याम शर्मा के संरक्षण में पूर्ण किया गया जिसमें ललित शर्मा, देवीलाल पुरोहित व आर.के.शर्मा ने कार्य किया।

राजस्थान लिथोग्राफ छापाचित्र कार्यशाला टखमण–28 ने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्राध्यापक व छात्रों के सहयोग से राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर के प्राँगण में 12 जनवरी से 16 जनवरी 1985 ई. के मध्य आयोजन किया। जिसमें प्राध्यापकों व छात्रों ने मिलजुल कर छापा चित्रण किया।

टखमण–28 ने 16 मई से 26 मई 1985 ई. के मध्य एक अखिल भारतीय छापा कला शिविर आयोजित किया। इस शिविर में लगभग तीस कलाकारों ने भाग लिया तथा छापा कला की वर्तमान स्थिति पर विचार–विमर्श किया। टखमण–28 के पाँच सदस्य कलाकारों की एक समूह प्रदर्शनी श्रीधरानी कला दीर्घा, नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। यह प्रदर्शनी 12 नवम्बर से 18 नवम्बर 1985 ई. तक आयोजित की गई थी। 28 फरवरी से 1 मार्च 1986 ई. तक कन्टेम्पॅररि आर्ट गैलरी अहमदाबाद में समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

1987 ई. का वर्ष टखमण–28 के लिए महत्वपूर्ण वर्ष माना जा सकता है। इस वर्ष टखमण–28 की भूमि पर ग्राफिक कार्यशाला का निर्माण पूर्ण हुआ तथा इस कार्यशाला की स्थापना के पश्चात् यहाँ ऐंचिग व लिथोग्राफी की सुविधायें उपलब्ध रहने लगी तथा समस्त कलाकारों के लिए सुबह 10 बजे से सांय 5 बजे तक कार्य करने की सुविधा प्रदान की गई। आज तक यह कार्यशाला विकास की ओर अग्रसर है तथा यहाँ व्यवस्थित व सुचारु रुप से कार्य किया जा रहा है। इसी वर्ष द्वितीय अखिल भारतीय छापा प्रदर्शनी (चित्र–22) भी टखमण–28 द्वारा आयोजित की गई।

14 मार्च से 21 मार्च 1988 ई. के मध्य टखमण–28 प्रयोगरत कला संहिति ने जहाँगीर कला दीर्घा में समूह प्रदर्शनी आयोजित की। अपनी गतिविधियों की श्रृंखला में टखमण–28 प्रयोगरत कला संहिति ने 20 मई से 5 जून 1989 ई. तक उदयपुर के रमणीय स्थल शिल्पग्राम में अखिल भारतीय कलाकार शिविर आयोजित किया जिसमें ख्यातनाम कलाकारों ने एक साथ रहकर कार्य किया। वर्ष 1989 ई. में टखमण–28 कलाकार संहिति के द्वारा तृतीय अखिल भारतीय छापा कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में पाँच श्रेष्ठ छापा चित्रकारों को 500–500 रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया।

1 जून से 15 जून 1991 ई. तक टखमण–28 संहिति ने एक अखिल भारतीय मृण शिल्प शिविर मोलेला में आयोजित किया जिसमें परम्परागत मृण शिल्प में कार्य करने वाले लोक कलाकारों को भी आमंत्रित किया गया। इसी वर्ष के अंत में 24 दिसम्बर 1991 ई. से 3 जनवरी 1992 ई. तक केन्द्रीय ललित कला अकादमी ने मुम्बई में राष्ट्रीय कला मेला आयोजित किया। जहाँ टखमण–28 ने सदस्यों की समूह प्रदर्शनी आयोजित की। अपनी गतिविधियों की आगामी कड़ी के रुप में टखमण–28 संहिति ने 20 मार्च 1992 ई. से 29 मार्च 1992 ई. के मध्य एक अखिल भारतीय चित्रकार शिविर आयोजित किया जिसमें लगभग बीस चित्रकारों ने भाग लिया तथा प्रत्येक चित्रकार ने एक कृति टखमण–28 प्रयोगरत कला संहिति के संग्रह के लिए सृजित की। वर्ष 1992 ई. में टखमण कला संहिति ने अपने संग्रह से एक वृहद अखिल भारतीय मूर्तिकार शिविर आयोजित किया। 15 जून से 30 जून 1992 ई. के मध्य आयोजित इस शिविर में देश के विभिन्न क्षेत्रों से पन्द्रह मूर्तिकारों ने भाग लिया।

टखमण–28 संहिति ने उदयपुर समारोह के अवसर पर महाराणा भोपाल स्टेडियम में 25 अप्रेल से 1 मई 1993 ई. के मध्य अपने सदस्य कलाकारों की कृतियों को प्रदर्शित किया जिसका जनसाधारण व कला प्रेमियों ने रसास्वादन किया।

20 अप्रेल 1994 ई. से 26 अप्रेल 1994 ई. के मध्य जहाँगीर आर्ट गैलेरी में टखमण–28 कला संहिति ने समूह प्रदर्शनी आयोजित की। इसमें सदस्य कलाकारों सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, वी.एस.उपाध्याय, दिलीप सिंह, एस.एच.काजी, अब्दुल करीम, चरण शर्मा आदि ने भाग लिया। टखमण–28 ने अपनी गतिविधियों का विस्तार करतें हुए एक अखिल भारतीय छापा चित्रण शिविर 20 मई से 31 मई 1994 ई. तक आयोजित किया। इसमें भारत के ख्यातिलब्ध छापा चित्रकारों को आंमत्रित किया गया जिनमें प्रो.ज्योति भट्ट(बड़ौदा), प्रो.जय झरोठिया तथा कंचन चन्द्रा(दिल्ली) प्रमुख रहे।

10 जनवरी से 25 जनवरी 1995 ई. तक केन्द्रीय ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कला मेला में टखमण–28 संहिति ने भाग लिया। यह कला मेला बेंगलुरू में आयोजित किया गया था। सभी संगठन के सदस्य कलाकारों की कलाकृतियों को यहाँ प्रदर्शित किया गया तथा राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित कला मेला में भी भाग लिया। इसी वर्ष टखमण–28 ने केन्द्रीय ललित कला अकादमी के सहयोग से सेरीग्राफी कार्यशाला की स्थापना अपने कैम्पस में की तथा सेरीग्राफी के विशेष उपकरण क्रय किये गयें। अब टखमण–28 की गतिविधियाँ इतनी चर्चित और विकसित हो गई थी कि टखमण–28 संहिति की भूमि पर अन्य संगठन अपने कार्यक्रम आयोजित करने लगे थे। जैसे दिल्ली के मूर्तिकारों के संगठन तथा राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अपने–अपने शिविर टखमण–28 संहिति उदयपुर स्थित प्रांगण में आयोजित किए गए।

टखमण–28 ने 01 जून 1995 ई. से 11 जून 1995 ई. के मध्य एक मल्टीमीड़िया अखिल भारतीय कलाकार शिविर टखमण–28 संहिति के परिसर में आयोजित किया। इस शिविर में देश के विभिन्न कला–क्षेत्रों से भिन्न–भिन्न माध्यमों में काम करने वाले 20 कलाकारों ने भाग लिया । जिसमें कलाकारों ने छापा चित्रण, मृण शिल्प, संगमरमर के मूर्ति शिल्प व कलाकृतियों आदि का निर्माण किया। 10 जनवरी से 20 जनवरी 1996 ई. तक आयोजित हुए राष्ट्रीय कला मेला में टखमण–28 संहिति ने भाग लिया। इसी प्रकार राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा जयपुर में 20 फरवरी से 28 फरवरी 1996 ई. तक आयोजित कला मेला में भी टखमण–28 कला संहिति ने भाग लिया जहाँ संगठन ने दो स्टाल्स में सदस्य कलाकारों की कृतियों को प्रदर्शित किया। इसी वर्ष 1996 ई. में दिल्ली की अवंतिका कला संस्था ने टखमण 28 संहिति के परिसर में अखिल भारतीय कलाकार शिविर आयोजित किया।

राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 15 से 20 मार्च 1997 ई. के मध्य जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में आयोजित कला मेला में टखमण–28 ने दो स्टाल में अपने सदस्य कलाकारों की कृतियों का प्रदर्शन किया। इसी वर्ष 28 जून से 7 जुलाई 1997 ई. तक टखमण–28 ने अखिल भारतीय मल्टीमीड़िया कलाकार शिविर का आयोजन किया। जहाँ कलाकारों ने चित्र–मूर्तिशिल्प के साथ–साथ छापा चित्रों का भी सृजन किया ।

टखमण–28 ने 20 फरवरी से 16 मार्च 1998 ई. तक शिल्पग्राम, उदयपुर में इन्टरनेशनल स्टोन स्कल्पर्ट्स सिम्पोजियम का आयोजन किया। इस शिविर का उद्घाटन श्रीजी अरविन्द सिंह मेवाड़ ने किया। (चित्र–23) शिविर में यू.एस.ए. से रोजर बिस्कॉक, जापान से माबूची हिरोशी, केजूए सातो; दिल्ली से रवीन्द्र भारद्वाज, विवेक कारमोरकर, एस. एम. शाहिद जावेद, वाराणसी से दिलीप कुमार सिंह; इंग्लैण्ड से चार्ललोती एमा जोन्स, पी. मदन गुप्ता, इटली से कान्सेन्टों; ग्वालियर से कीर्ति घोष; वेस्ट बंगाल से आलोक कुमार; जर्मनी से मार्टिन लूथर; उदयपुर से सी.पी. चौधरी, छगन पटेल, संदीप पालीवाल आदि ने भाग लिया।[37] इसी वर्ष 17 अगस्त से 23 अगस्त तक जहांगीर आर्ट गैलेरी, मुम्बई में संगठन ने अपने चौदह कलाकारों की समूह कला प्रदर्शनी आयोजित की। इस प्रदर्शनी में चित्रकार सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, सी.पी. चौधरी, संदीप पालीवाल, हेमन्त द्विवेदी, कमल शर्मा, ललित शर्मा, विद्यासागर उपाध्याय, शब्बीर हसन काजी, दिनेश उपाध्याय, छगन पटेल, दिलीप सिंह चौहान, हेमन्त जोशी व आर. के. शर्मा की कलाकृतियां प्रदर्शित की गई।

17 मार्च से 22 मार्च, 1999 ई. तक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा जवाहर कला केन्द्र शिल्पग्राम में आयोजित कला मेला में संगठन के कलाकारों ने भाग लिया। इस वर्ष संगठन आर्थिक तंगी से झूझ रहा था तथा उसे कहीं से भी कोई अनुदान नहीं मिला था फिर भी संगठन ने जून माह में जल रंग प्राकृतिक चित्रण शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक किया। इसी वर्ष टखमण–28 के मुख्यालय पर कला संगोष्ठि का सफल आयोजन किया गया।

21 सितम्बर से 27 सितम्बर, 2000 ई. तक संगठन के कलाकारों की समूह प्रदर्शनी रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली की दो कला दीर्घाओं में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में चित्रकार सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, विद्यासागर उपाध्याय, शब्बीर हसन काजी, दिलीप सिंह चौहान, हेमन्त द्विवेदी, हेमन्त जोशी, दिनेश उपाध्याय, राजाराम व्यास, भूपेश कावड़िया, संदीप पालीवाल, छगन पटेल, अब्दुल करीम, विनय शर्मा, मुकेश शर्मा, दीपक खण्डेलवाल, योगेन्द्र नेवातिया, मीनू श्रीवास्तव, गगन दाधीच व ललित शर्मा ने भागीदारी निभाई। इस वर्ष

संगठन के कलाकारों के मूर्तिशिल्प व ग्राफिक्स राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा स्वीकार किये गये। इस वर्ष टखमण–28 के मुख्यालय में स्थित अतिथि गृह का निर्माण कार्य संगठन के कलाकारों के सहयोग से किया गया। इसी वर्ष 24 नवम्बर से 31 नवम्बर 2000 ई. में ललित कला अकादमी, लखनऊ व टखमण–28 के संयुक्त तत्वावधान में सात दिवसीय ग्राफिक्स शिविर टखमण–28 के मुख्यालय पर आयोजित किया गया। इस शिविर में रवीन्द्र दाहिमा, कमल जोशी, मुकेश शर्मा, दीपक खण्डेलवाल, दानी कावड़िया, हिनल दवे, शैली गुप्ता, संगीता, स्वाती अग्रवाल व राधीर वासर्धेव ने भाग लिया। (चित्र–24)

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी टखमण–28 के कलाकारों ने ललित कला अकादमी द्वारा जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के शिल्पग्राम में आयोजित कला मेला में भाग लिया। 27 अगस्त से 2 सितम्बर, 2001 ई. तक टखमण–28 ने अपने सदस्य कलाकारों की समूह प्रदर्शनी जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई में आयोजित की। इस प्रदर्शनी में सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, विद्यासागर उपाध्याय, शब्बीर हसन काजी, राजाराम व्यास, दिनेश उपाध्याय, भूपेश कावड़िया, हेमन्त जोशी, कमल जोशी, हेमन्त द्विवेदी, छगन पटेल, गगन बिहारी दाधीच, ललित शर्मा व सी.पी. चौधरी ने अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया।

इस वर्ष राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली ने टखमण–28 के स्टूडियों को प्रिन्ट मेकिंग व मूर्तिशिल्प कार्य के लिए अधिकृत किया। अध्येताओं को प्रिन्ट मेकिंग व मूर्तिशिल्प प्रशिक्षण देने हेतु यहां मूर्तिकार के रूप में भूपेश कावड़िया व प्रिन्ट मेकर के रूप में छगन पटेल को नियुक्ति किया गया।

31 मार्च से 9 अप्रेल 2002 ई. तक राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ व टखमण–28 के संयुक्त तत्वावधान में मूर्तिशिल्प शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में भूपेश कावड़िया, दिनेश उपाध्याय, हेमन्त जोशी, रवि मिश्रा, शिव बल्लभ, शिशिर कानोड़िया, विपुल कुमार, विजय भारद्वाज, हितेश त्रिवेदी व राज किशोर मेवाड़ा आदि मूर्तिशिल्पियों ने भाग लिया। इस शिविर का उद्घाटन पद्मभूषण जगत मेहता व कलाविद् पी.एन. चोयल के कर कमलों द्वारा किया गया व समापन उदयपुर की तत्कालीन सांसद गिरिजा व्यास के द्वारा किया गया।

20 जून से 29 जून 2005 ई. तक टखमण–28 द्वारा मल्टी मीड़िया आर्ट कैम्प का आयोजन किया। इस कैम्प में लक्ष्मीलाल वर्मा, डी.एल. पुरोहित, डी.एस. चौहान, दिनेश अरोड़ा, रघुनाथ शर्मा, ललित शर्मा, हेमन्त जोशी, कमल जोशी, संदीप पालीवाल, शंकर

शर्मा, राकेश कुमार सिंह, सी.पी. चौधरी, डॉ. वी.पी. माली, दिनेश उपाध्याय आदि ने भाग लिया। इसी तरह 5 अक्टूबर 2005 ई. को उत्तर–आधुनिकतावाद पर सेमिनार आयोजित किया गया।

15 जनवरी, 2006 ई. को इन्स्टॉलेशन आर्ट पर टखमण–28 द्वारा एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। 20 जून से 29 जून 2006 ई. तक टखमण–28 मुख्यालय पर मल्टीमीड़िया आर्ट कैम्प का आयोजन किया गया। इस कैम्प में चित्रकार एल.एल. वर्मा, डी. एल. पुरोहित, राजाराम व्यास, रघुनाथ शर्मा, नरेन्द्र शर्मा, हेमंत चित्रकार, शंकर शर्मा व शंकर कुमावत ने भाग लिया वहीं मूर्तिकार के रूप में दिनेश उपाध्याय, सी.पी. चौधरी, हेमन्त जोशी, राकेश कुमार सिंह, बिन्दु जोशी व प्रिन्ट मेकर के रूप में कमल जोशी व नसरीन अहमद ने भाग लिया। कैम्प के दौरान किये गये कला कार्य की प्रदर्शनी का आयोजन 5 जुलाई 2006 ई. को किया गया।

15 दिसम्बर 2006 ई. को 'आर्ट बाजार' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता ए.एल. दमामी ने आर्ट बाजार की वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की। 19 जून से 25 जून 2007 ई. तक टखमण–28 ने ललित कला अकादमी, नई दिल्ली व पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में मल्टीमिड़िया आर्ट कैम्प का आयोजन किया। टखमण परिसर में होने वाले इस कैम्प में प्रो. सुरेश शर्मा (उदयपुर), एल.एल. वर्मा (उदयपुर), डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (जयपुर), देवीलाल पुरोहित (उदयपुर), शब्बीर एच.काजी (जयपुर), दिलीप सिंह चौहान (जयपुर), गोवर्धन सिंह पंवार (भीलवाड़ा), सी.पी. चौधरी (उदयपुर), विनय शर्मा (जयपुर), आर. के. शर्मा (उदयपुर), राजाराम व्यास, रघुनाथ शर्मा (नाथद्वारा), डॉ. विष्णु प्रकाश माली (उदयपुर), दिनेश उपाध्याय (उदयपुर), हेमन्त जोशी (उदयपुर), संदीप पालीवाल (उदयपुर), कमल जोशी (उदयपुर), छगन पटेल (उदयपुर), सुनिल भट्ट (उदयपुर), हेमन्त चित्रकार (नाथद्वारा), शंकर कुमावत (उदयपुर), शंकर शर्मा (उदयपुर), दीपक सन्याल (उदयपुर), जयंत नायक (अहमदाबाद), एम. के. बंजारी (मुंबई), जय झारोठिया (दिल्ली), शीतल चौधरी (चंडीगढ़), वानाराम (मुम्बई), राजेन्द्र टिक्कु (जम्मू) सत्यवीर सिंह (भोपाल), मुकुल पंवार (दिल्ली), ज्योति भट्ट (बड़ौदा) तथा जयकृष्ण अग्रवाल (लखनऊ) ने भागीदारी निभाई।[38]

17 जुलाई से 25 जुलाई 2009 ई. तक टखमण–28 व पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में आल इण्डिया मल्टीमीड़िया आर्ट कैम्प का आयोजन

शिल्पग्राम, उदयपुर में किया गया। इस कैम्प में 35 कलाकारों ने अलग–अलग विधाओं में कलाकृतियों का सृजन किया।

12 से 18 जनवरी 2012 ई. तक मल्टी मिडिया कैम्प का आयोजन शिल्पग्राम, उदयपुर में किया गया। इस कैम्प में 43 कलाकारों ने भाग लिया। इसी वर्ष अहमदाबाद की चित्रकार नेहा भदेकर की चित्र प्रदर्शनी का आयोजन 19 से 23 मार्च तक टखमण–28 कला दीर्घा में किया गया। इसी वर्ष 25 से 31 मार्च तक पर्यटन विभाग, राजस्थान व दृश्यकला विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में कला प्रदर्शनी का आयोजन व 16 से 19 जून, 2012 ई. तक मयंक शर्मा के चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन भी टखमण–28 कला दीर्घा में किया गया।

12 से 16 मार्च 2015 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के शिल्प ग्राम में आयोजित 18 वें कला मेला में टखमण–28 के कलाकारों ने भाग लिया।

टखमण–28 के कला शिविरों व कार्यशालाओं में अखिल भारतीय चित्रकार शिविर, अखिल भारतीय मूर्तिकार कार्यशाला, अखिल भारतीय छापा चित्रण शिविर व अखिल भारतीय मृण्यशिल्प कार्यशालाओं का आयोजन राजस्थान के प्रमुख नगरों के साथ–साथ राज्य के बाहर भी हुआ। जिनमें राज्य के बाहर से आमंत्रित कलाकारों में प्रो. शंखु चौधरी, प्रो. ज्योति भट्ट, प्रो. जय झारोठिया, अनुपम सूद, रीना धूमाल, कृष्ण आहुजा, परमजीत सिंह, ए. रामचन्द्रन, कविता नैय्यर, कंचन चन्द्रा, ब्रह्म प्रकाश, एन.एल. अमीन, गीता दास, आर.एस.बिष्ट, बलवीर सिंह कट्ट, लतिका कट्ट, मोहन राव, घनश्याम गुप्ता आदि ने राजस्थान के कलाकारों व टखमण–28 के सदस्य कलाकारों के साथ पूर्ण उत्साह से कार्य किया। (चित्र–25)

इसके सदस्य कलाकार कर्म एवं प्रयोगधर्मिता में विश्वास रखते है। विगत चार दशकों से टखमण–28 ने राजस्थान से बाहर प्रमुख कला केन्द्रों जैसे–मुम्बई, दिल्ली, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरू आदि नगरों की प्रसिद्ध कला दीर्घाओं में अपने सदस्य कलाकारों की श्रृंखलाबद्ध एवं समूह प्रदर्शनियाँ आयोजित कर समस्त देश में राजस्थान के कला परिदृश्य को स्थापित किया और राजस्थान के कला जगत की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। परिणामस्वरुप सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, विद्यासागर उपाध्याय, एस.एच.काजी, दिलीप सिंह चौहान, ललित शर्मा, सी.पी.चौधरी, अब्दुल करीम, विष्णु माली, गगन बिहारी दाधीच, हेमन्त

चित्रकार, राजाराम व्यास, रामकृष्ण शर्मा, सुरेश जोशी, नसीम अहमद, भूपेश कावडिया, रधुनाथ शर्मा आदि कलाकारों को टखमण–28 की ही उपलब्धि माना जा सकता है।

राजस्थान के समसामायिक कला इतिहास में राज्य के बाहर आयोजित इन प्रदर्शनियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। इन प्रदर्शनियों में राजस्थान के वे महत्वपूर्ण कलाकार सम्मिलित है जिनके चित्र देश व देश के बाहर के प्रमुख संग्रहालयों में संग्रहित है। यह सभी चित्रकार मूल रुप से रुढ़िबद्ध होने अथवा किसी शैली विशेष को चिरकाल तक ढ़ोनें में विश्वास नहीं रखते तथा विश्व की विभिन्न कला धाराओं से परिचित है अतः वे अपने चित्रों मे नवीन लावण्यमय चित्रोंपम रुपाकारों के लिए विभिन्न प्रयोग करते हैं तथा इन्हीं प्रयोगों से वे भावाभिव्यक्ति को सशक्त माध्यमों से अपने चित्रों में अभिव्यक्त करते हैं और इसी कारण ये प्रदर्शनियाँ समस्त देशों में आकर्षण का केन्द्र बनी एक ताजे पुष्प की तरह ताजगी लिए हुए दिखाई देती है। इन प्रदर्शनियों में प्रदर्शित चित्र कलाकारों की व्यक्तिगत तकनीक, रूप, लावण्य, रंग–योजना आदि दर्शाते है चित्रों को देखने से यह आभास होता है कि सभी चित्रकारों का सोचने एवं निर्माण का अपना एक ढ़ंग है। कहीं पर भी कोई चित्रकार दूसरे चित्रकार से प्रभावित नहीं लगता। यह अपने आप में इस संगठन के लिए भी एवं कलाकारों के लिए भी महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं।

इन समस्त प्रदर्शनियों ने राजस्थान का नाम ऊँचा किया है तथा इनकी कला समीक्षकों व जनसाधारण ने मुक्तकंठ से सराहना की है। इन प्रदर्शनियों में मुख्य रूप से अवलोकन करने वालों में तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी, कृष्ण चन्द पंत, संजय गाँधी, प्रो. अम्बेडकर, प्रो. सुब्रहमण्यम्, प्रो. शंखू चौधरी, प्रो. गुलाम शेख, जे. स्वामीनाथन, जेराम पटेल, शान्ति दवे, एल.पी. सिहारे, कृष्ण चैतन्य, बार्थोलोमियों, प्रो. ए. रामचन्द्रन, प्रो. परमजीत सिंह, प्रो. जगमोहन चौपड़ा, रामकुमार, जी.आर. संतोष, अकबर पद्‌मसी, प्रयाग शुक्ल, हनुमंथैया, डी. नादकर्णी, के.के. हैब्बार, लक्ष्मण पै, पी.टी. रेड्डी, शान्तु दत्ता, जोसेफ जैम्स, गीता कपूर, भूपेन खक्खर आदि अनेक कलाकारों व कला समीक्षकों ने इन प्रदर्शनियों की सराहना की तथा टखमण–28 के कलाकारों को प्रोत्साहित किया। इस प्रकार टखमण–28 ने इन प्रदर्शनियों के द्वारा राजस्थान के प्रयोगरत समसामयिक कलाकारों को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित कर राजस्थान को गौरवान्वित किया।

5.1.3. प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप (पैग), जयपुर

सृजनधर्मी कलाकारों, कला प्रेमियों और कला समीक्षकों के संगठन प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर का गठन 15 अगस्त 1970 ई. में जयपुर में हुआ। राजस्थान में इस समूह के चित्रकार मोहन शर्मा ने 1961 ई. से 1966 ई. के मध्य जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई की नियमित कला शिक्षा ग्रहण करते समय ही 'पैग', मुम्बई के प्रवासी भारतीय सदस्य चित्रकार फ्रांसिस न्यूटन सूज़ा के साथ कार्य कर एक नवीन दिशा प्राप्त की।[39] हालांकि प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर की स्थापना 1970 ई. में हुई लेकिन यह राजस्थान में स्थापित होने वाले अन्य समकालीन कला संगठनों की भाँति नया संगठन नहीं है। यह प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, मुम्बई जिसकी स्थापना 1947 ई. में एस.एच. रज़ा, एम.एफ. हुसैन, (चित्र–26) एफ.एन. सूज़ा, के.एच. आरा, के.के. हैब्बार ने मिलकर मुम्बई में की थी, का ही विस्तारित रूप है।[40]

वर्ष 1970 ई. के आस–पास राजस्थान में कला दीर्घा के नितान्त अभाव को पैग ग्रुप द्वारा महसूस किया गया अतएव जयपुर में पाँच बत्ती के समीप न्यू कॉलोनी में हिन्दुस्तान समाचार एजेंसी की ऊपरी मंजिल में स्थित 'यूथ हॉस्टल' के एक कमरे को कला दीर्घा के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया गया परन्तु कुछ समय बाद यूथ हॉस्टल द्वारा कमरा रिक्त करवा लेने के कारण पुनः यह अभाव महसूस किया जाने लगा। इसी समय सवाई मानसिंह अस्पताल के सामने सूचना केन्द्र का भवन तैयार हो जाने तथा वहाँ के अधिकारियों के सहयोग के फलस्वरूप भवन के वाचनालय की दोनों गैलरियों को कला दीर्घा के रूप में प्रख्यात करने में ग्रुप ने अपना भरसक प्रयास किया था। यह कला दीर्घा काफी ख्याति सिद्ध हुई तथा लगभग बीस विभिन्न कलाकारों ने अपनी रचनाकृतियों का एकल प्रदर्शन इसी कला दीर्घा में किया।[41] 1970 ई. में ही हर्षवर्धन, राधाबल्लभ गौतम, पारस भंसाली ने प्रारम्भिक संस्थापना प्रथम समूह प्रदर्शनी आबू में आयोजित की जिसमें जयपुर के प्रायः सभी युवा समसामयिक चित्रकारों ने अपनी कृतियाँ प्रस्तुत की।[42] वर्ष 1971 ई. के भारत–पाक युद्ध के दौरान पैग के कलाकारों ने पोस्टरों, समाचार पत्रों हेतु चित्रांकन एवं व्यंग्य चित्रों का सहयोग निःशुल्क प्रदान करने के साथ–साथ पोस्टकार्ड चित्रों का प्रकाशन कर अल्प मूल्यों पर विक्रय किया और संग्रहित राशि सुरक्षा कोष में जमा करवाई।[43]

19 अप्रैल 1978 ई. को राजस्थान सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1958 ई. के अन्तर्गत पैग ग्रुप पंजीकृत हुआ। इसके पंजीकृत क्रमांक 24/78–79 है।[44] प्रोग्रेसिव

आर्टिस्ट्स ग्रुप के संस्थापकों ने इस ग्रुप के लिए विधान का निर्माण भी किया जिसमें ग्रुप के उद्देश्यों, उसकी सदस्यता, चुनाव व पदाधिकारियों की कार्यशक्तियों व चुनाव के बारे में उल्लेख किया गया हैं। (चित्र–27) प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप का विधान निम्नलिखित है –

राजस्थान के सृजनधर्मी कला प्रेमियों, कलाकारों एवं कला समीक्षकों की इस संस्था का नाम प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप रहेगा तथा इसका मुख्यालय जयपुर रहेगा। इसके क्षेत्रीय कार्यालय अन्य स्थानों पर भी खोले जा सकते है। प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के निम्नांकित प्रमुख उद्देश्य रहेंगे–

I. कला एवं कलाकारों की श्रीवृद्धि के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना।

II. कला को जन सामान्य में प्रचारित करने तथा प्रकाशित करने में यथासाध्य पहल करना।

III. कला गोष्ठियों–सेमीनारों तथा प्रकाशनों के माध्यम से सृजनरत कलाकारों के मध्य संबन्ध–सूत्र कायम रखने के लिए प्रयत्नशील रहना।

IV. स्थानीय एवं बाहरी कला संस्थाओं, अकादमियों एवं शिक्षालयों से समन्वय स्थापित करके कलाकारों एवं उक्त संस्थाओं के मध्य परस्पर सहयोग के आयाम, योजना आदि बनाना।

V. कला संबंधी प्रतियोगिताओं का आयोजन करके नवोदित कलाकारों को प्रोत्साहित करना।

VI. कला संबंधी प्राचीन सामग्री के शोध कार्य को प्रोत्साहित करना।

VII. राज्य एवं केन्द्र की विभिन्न अकादमियों से सम्बद्ध रहकर कला जगत में समन्वय के मार्ग खोजना।

VIII. कला संबंधी श्रेष्ठ पुस्तकों का पुस्तकालय खोलना तथा उसके लिए सामग्री जुटाने के लिए प्रयत्नशील रहना।

IX. कलाकारों के हित के लिए संघर्ष करना तथा उनसे जीवन को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रयत्नशीन रहना, और

X. विपत्ति के अवसर पर नये पुराने कलाकारों के साथ सक्रिय सहयोग करने में पहल करना।

राजस्थान या उससे बाहर के सभी कलाकार, कला प्रेमी एवं कला समीक्षक इस संस्था की सक्रिय सदस्यता ग्रहण कर सकेंगे। सदस्यता, कार्यकारिणी के किसी भी सदस्य की सिफारिश पर किसी भी व्यक्ति को दी जा सकती है तथापि उसको संस्था के सभी

नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा किन्तु उस सदस्य का निलम्बन या निष्कासन कार्यकारिणी ही कर सकेगी।

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप की कार्यकारिणी के निम्नांकित पदाधिकारी होंगे –

(I) अध्यक्ष	(II) उपाध्यक्ष	(III) महामंत्री
(IV) संयुक्त मंत्री	(V) प्रचार मंत्री	(VI) प्रकाशन मंत्री
(VII) संगठन मंत्री	(VIII) आयोजन मंत्री	(IX) कोष मंत्री

इनके अतिरिक्त एक कार्यालय सचिव सदस्यों की सहायतार्थ रखा जायेगा। किन्तु वह कार्यकारिणी का सदस्य नहीं बन सकेगा।

दिसम्बर, 1978 ई. की प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के चित्रकारों की प्रदर्शनी में मोहन शर्मा, प्रेमचन्द्र गोस्वामी, भवानी शंकर शर्मा, आर.बी. गौतम, पारस भंसाली, राजेन्द्र मिश्रा, हेमन्त शेष, आनन्दीलाल वर्मा, नाथूलाल वर्मा, कन्हैयालाल वर्मा, इला यादव, कृष्णा बैराठी, मीनाक्षी गुप्ता, सी.एल. चौहान, लालचन्द मारोठिया, एस.एन. कुमावत, मुकुट बिहारी नाहटा, आर.के. वशिष्ठ, गोपाल बर्मन, विनोद भारद्वाज, शैलेन्द्र भटनागर, मंजू शर्मा, सुरभी, रणजीत सिंह, मनोज शर्मा, महावीर स्वामी एवं गणेश वशिष्ठ की कृतियाँ सराही गई ।

वर्ष 1979 ई. में बच्चों में चित्रकला के विकास की दिशा में भी पैग ग्रुप द्वारा प्रयास किये गये। इस सन्दर्भ में इस वर्ष बाल चित्रकला प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।[45]

दिसम्बर, 1979 ई. में आयोजित प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स समूह की प्रदर्शनी में पुरस्कारों की भी योजना बनी। जिसमें निर्णायकों ने आठ कलाकारों को पुरस्कृत किया–भवानी शंकर शर्मा, मोहन शर्मा, इला यादव, प्रेमचन्द्र गोस्वामी, लालचन्द, राजेन्द्र मिश्रा, आर.बी. गौतम एवं मीनाक्षी शर्मा। मुख्य अतिथि 'राजस्थान–पत्रिका' के सम्पादक कर्पूरचन्द्र कुलिश ने पुरस्कार देकर कलाकारों को सम्मानित किया। इस वर्ष ही जयपुर में चित्रकला शिविर का आयोजन किया गया। दिसम्बर, 1980 ई. की प्रदर्शनी में समूह के आठ सदस्यों की श्रेष्ठ कृतियों का चयन कर प्रसिद्ध चित्रकार जे. स्वामीनाथन तथा कृष्णा खन्ना की अध्यक्षता में भूतपूर्व मुख्य सचिव मोहन मुखर्जी द्वारा गोपाल बर्मन, शैलेन्द्र भटनागर, अर्जुन लाल वर्मा, मुकुट बिहारी नाहटा, चम्पालाल लखवाल, आर.के. वशिष्ठ, रणजीत सिंह तथा कन्हैयालाल वर्मा को सम्मानित किया गया।

वर्ष 1981 ई. में पैग समूह द्वारा नई दिल्ली व जयपुर में समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा पैग ग्रुप को 28 नवम्बर 1981 ई. को मान्यता प्रदान की गई तथा बाद में इसे केन्द्रीय ललित कला अकादमी से भी मान्यता मिल गई। ग्रुप को समय–समय पर अकादमी द्वारा आर्थिक सहयोग भी मिलने लगा जिससे ग्रुप के कार्यकलापों में प्रगति आयी तथा ग्रुप ने अकादमी के सहयोग से कई कार्यक्रम आयोजित किये। वर्ष 1982 ई. में तत्स्थलीय बाल चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया व मर्धून्य चित्रकारों की कला का प्रभावी अतीत प्रस्तुत करने के उद्देश्य से स्वर्गीय श्री भूर सिंह शेखावत के दुर्लभ चित्रों की प्रदर्शनी (चित्र–28) का आयोजन किया गया। वर्ष 1983 ई. में कोलोग्राफ छापाचित्र शिविर का आयोजन ग्रुप द्वारा जयपुर में किया गया।

वर्ष 1984 ई. में ग्रुप द्वारा लिथोग्राफी शिविर का आयोजन किया गया। 12 सितम्बर से 16 सितम्बर 1984 ई. तक केन्द्रीय ललित कला अकादमी के क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नई में पैग द्वारा समूह कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में शैलेन्द्र भटनागर, विनोद भारद्वाज, चन्दू लाल चौहान, रणजीत सिंह चूडावाला, राधाबल्लभ गौतम, मीनाक्षी गुप्ता, सुभाष केकरे, मन्जू मिश्रा, लाल चन्द मारोठिया, राजेन्द्र मिश्रा, मोहन शर्मा, भवानी शंकर शर्मा, गोपाल वर्मन, आनन्दी लाल वर्मा, कन्हैया लाल वर्मा, नाथू लाल वर्मा, ईला यादव व एस.सी. चावरे की कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई।

वर्ष 1985 ई. में डूंडलोद में चित्रकला शिविर का आयोजन किया गया। समूह द्वारा इस वर्ष ही 'AVANT GARDE ARTISTS OF RAJASTHAN' नामक पुस्तक आंग्ल भाषा में प्रकाशित की गई। इस पुस्तक का सम्पादन आर.बी. गौतम, शैलेन्द्र भटनागर, भवानी शंकर शर्मा ने किया। इस पुस्तक में पैग ग्रुप के सभी प्रमुख कलाकारों का जीवनवृत्त उनकी चित्रकृतियों सहित प्रकाशित किया गया है। यह पुस्तक ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित की गई।[46] 9 मार्च 1986 ई. को पैग, जयपुर द्वारा आयोजित सेमीनार में ख्यातनाम चित्रकार फ्रांसिस न्यूटन सूज़ा (चित्र–29), रामगोपाल विजयवर्गीय (चित्र–30) मुख्य अतिथि के रूप में पधारे।

24 मार्च से 29 मार्च 1987 ई. तक पैग द्वारा राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर में कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में समूह के शैलेन्द्र भटनागर, चन्दू लाल चौहान, रणजीत सिंह चूडावाला, राधाबल्लभ गौतम, मीनाक्षी गुप्ता, सुभाष केकरे, एस. एन. कुमावत, लाल चन्द मारोठिया, मोहन शर्मा, भवानी शंकर शर्मा, कन्हैया लाल वर्मा, गोपाल वर्मन, अर्जुन लाल वर्मा, नाथू लाल वर्मा, राजेन्द्र मिश्रा व आनन्दी लाल वर्मा ने भाग

लिया। इसी वर्ष राजस्थान दिवस के अवसर पर पैग के कलाकारों द्वारा जयपुर में एक समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका अवलोकन सिने जगत की मशहूर अदाकारा शबाना आजमी ने किया तथा पैग कलाकारों के कलाकर्म की सराहना की।

इसी वर्ष हुए समूह के चुनावों में मोहन शर्मा (अध्यक्ष), कन्हैया लाल वर्मा (उपाध्यक्ष), आर.बी. गौतम (सचिव), शैलेन्द्र भटनागर (संयुक्त सचिव), आनन्दी लाल (आयोजक सचिव), नाथू लाल वर्मा (प्रचार–प्रसार सचिव), राजेन्द्र मिश्रा (कार्यक्रम सचिव), गोपाल वर्मन (प्रकाशन सचिव), चन्दू लाल चौहान (कोषाध्यक्ष) व कार्यकारिणी सदस्यों में आर.के. वशिष्ठ, लाल चन्द मारोठिया, रणजीत सिंह, भवानी शंकर शर्मा, मीनाक्षी गुप्ता को चुना गया। इसी वर्ष प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप द्वारा राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के सौजन्य से राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट में महिला चित्रकार कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन राजस्थान की तत्कालीन कला एवं संस्कृति मन्त्री श्रीमती कमला ने फूल का चित्र बनाकर 25 दिसम्बर को किया। इस कार्यशाला में वीरबाला भावसार, मीनाक्षी काजी (अब मीनाक्षी भारती), रेखा भटनागर, रीता प्रताप, किरण मुर्डिया, हेमलता कुमावत, चित्रा जौहरी, दीपिका हाजरा व इन्दु सिंह ने भाग लिया। कार्यशाला 27 दिसम्बर तक चली।[47] इस वर्ष समूह की प्रदर्शनियाँ मुम्बई, लखनऊ व चण्डीगढ़ में भी आयोजित की गई।

वर्ष 1987 ई. में मुम्बई में आयोजित पैग की समूह प्रदर्शनी को देश के प्रमुख समाचार–पत्रों द्वारा प्रशंसित किया गया तथा पैग के बारे में प्रमुखता से प्रकाशित किया गया –

"Progressive Artists Group has made a strong effort to reconcile tradition with contemporary Painting."

The Times of India, Bombay

14th Sep., 1987

''राजस्थान के 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप' ने पारम्परिक कला धरोहर का सम्बल जोड़ते हुए आधुनिक कला सोपानों पर चढ़ने की एक ईमानदार कोशिश की है। ''

नवभारत टाइम्स, बम्बई

13 सितम्बर, 1987

''राजस्थानातील प्रोग्रेसिव्ह चित्रकार समूह ने देशातील प्रमुख शहरातून प्रदर्शने भर विण्याच्या उद्देशाने हा समूह स्थापन झाला, आहे राजस्थानातील लघु चित्र शैलीतीत अनेक चित्रै या प्रदर्शनात आहेत व्याच बरोबर आधुनिक नवशैली मध्ये काम करणार्‍या कला कारांची चित्रे व शिल्पे आहेत।''

लोक सत्ता, बम्बई

12 सितम्बर, 1987

वर्ष 1988 ई. में पैग के द्वारा बेंगलुरू में समूह चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 27 जनवरी से 2 फरवरी 1989 ई. तक ललित कला अकादमी, कोलकाता में पैग ग्रुप की कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में ग्रुप के 16 कलाकारों– शैलेन्द्र भटनागर, चन्दू लाल चौहान, रणजीत सिंह, आर.बी. गौतम, राजीव गर्ग, मीनाक्षी गुप्ता, सुभाष केकरे, एस.एन. कुमावत, लाल चन्द मारोठिया, भवानी शंकर शर्मा, डॉ. आर.के. वशिष्ठ, कन्हैया लाल वर्मा, मन्जू मिश्रा, राजेन्द्र मिश्रा, मुकुट नाहटा, आनन्दी लाल वर्मा ने भाग लिया।

वर्ष 1990 ई. में पैग द्वारा ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से 'राजस्थान की महिला चित्रकार' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया। इस पुस्तक का सम्पादन आर.बी. गौतम व शैलेन्द्र भटनागर ने किया। इस पुस्तक में राजस्थान की बारह महिला चित्रकार – दीपिका हाजरा, रेखा भटनागर, किरण मूर्डिया, वीरबाला भावसार, रीता प्रताप, मीनाक्षी काजी, इला यादव, मीनाक्षी गुप्ता, चित्रा भटनागर, इन्दु सिंह, हेमलता कुमावत व मंजू मिश्रा के कृतित्व पर प्रकाश डाला गया।[48]

मार्च 1991 ई. में पैग द्वारा राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर की रवीन्द्र मंच स्थित कला विथिका में समूह कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में 'विस्तार' कृति के लिए वीरेन्द्र बन्नू, 'लैण्डस्केप' कृति के लिए गोपाल शर्मा, 'बोनाफायर–2' कृति के लिए विनय शर्मा, 'अन्टाइटल्ड' कृति के लिए गीता सौंकिया व 'टेक्सचर' कृति के लिए शरणजीत कौर को सम्मानित किया गया। इस प्रदर्शनी के निर्णायक चित्रकार कृपाल सिंह शेखावत, ईशी ओडेरी कोईची, सी.वी. धर्मरत्नम रहे। इस प्रदर्शनी में 36 कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई।

वर्ष 1992 ई. की कार्यकारिणी ने अध्यक्ष पद पर आर.के. वशिष्ठ को मनोनीत किया। सभी चित्रकारों की एकल प्रदर्शनियों का क्रम निर्धारित किया गया। केन्द्रीय ललित

कला अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से मध्यप्रदेश कला परिषद्, भोपाल की विथिका में पैग द्वारा 23 जून से 26 जून 1992 ई. तक समूह कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में राजस्थान के कलाकारों के 40 परम्परागत, समसामयिक, प्रयोगधर्मी कृतियाँ तथा मूर्तिशिल्प प्रदर्शित किये गये थे। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन मध्यप्रदेश सरकार के तत्कालीन वाणिज्य एवं कर मंत्री माननीय बाबूलाल जैन के कर कमलों द्वारा किया गया। (चित्र–31) इस प्रदर्शनी में चित्रकार डॉ. नाथू लाल वर्मा, कन्हैया लाल वर्मा, आर.बी. गौतम, भवानी शंकर शर्मा, लाल चन्द मारोठिया, रणजीत सिंह, डॉ. आर.के. वशिष्ठ, सुभाष केकरे, डॉ. राजीव गर्ग, शैलेन्द्र भटनागर, चन्दू लाल चौहान, रमेश सत्यार्थी, एस.एन. कुमावत, मंजू मिश्रा, अर्जुन लाल वर्मा, मुकुट बिहारी नाहटा, राजेन्द्र मिश्रा व आनन्दी लाल वर्मा ने भाग लिया।

पैग द्वारा मार्च, 1992 ई. में अपने ग्रुप के आधार स्तम्भ स्व. मोहन शर्मा के कृतित्व पर अंग्रेजी भाषा में 'Mohan' नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया। जिसके सम्पादक आर. बी. गौतम रहे व सम्पादक मण्डल के अन्य सदस्यों में डॉ. बी.एस. शर्मा, डॉ. आर.के. वशिष्ठ, पारस भंसाली, शैलेन्द्र भटनागर थे। यह पुस्तक ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से प्रकाशित की गई थी। इस पुस्तक में मोहन शर्मा का हाथ में ब्रश लिये हुये आकर्षक श्वेत–श्याम पोट्रेट चित्र है। उनके द्वारा बनाई गयी स्टिल लाईफ पेन्टिंग्स के पच्चीस श्वेत–श्याम चित्र व छः रंगीन चित्रों के साथ उनकी कला–यात्रा का वर्णन है। पुस्तक के अन्त में उनके कलाकर्म से जुडे विभिन्न समाचार–पत्रों में प्रकाशित समाचारों को भी संजोया गया है।[49](चित्र–32) ग्रुप द्वारा 27 जून 1992 ई. में आधुनिक चित्रकला के जाने–माने चित्रकार व पैग ग्रुप के संस्थापक मोहन शर्मा की पुण्यतिथि पर उनके चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर की कला दीर्घा में किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान की तत्कालीन कला एवं संस्कृति मंत्री श्रीमती नरेन्द्र कँवर ने किया था।[50]

वर्ष 1993 ई. में पैग द्वारा जलरंग चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध चित्रकार एवं कला समीक्षक प्रो. ज्योति भट्ट द्वारा किया गया।[51] पैग पदाधिकारियों ने राजस्थान के कलाविद् चित्रकारों पर प्रकाशन की कमी महसूस कर 'राजस्थान के कलाविद्' नाम से रंगीन चित्रों के साथ वर्ष 1993–94 ई. में पुस्तक रूप में प्रकाशित किया। इस पुस्तक के संपादक आर.बी. गौतम रहे।[52] वर्ष 1994 ई. में पैग द्वारा ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से

राजस्थान के समकालीन चित्रकारों पर पोर्टफोलियों का प्रकाशन (चित्र–33) किया गया। इसी वर्ष पैग द्वारा कोलकाता व लखनऊ में समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वर्ष 1995 ई. की कार्यकारिणी ने पुनः डॉ. आर.के.वशिष्ठ को ही अध्यक्ष पद हेतु मनोनीत किया। वर्ष 1997 ई. में ग्रुप के द्वारा उज्जैन में समूह चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

8 जनवरी से 13 जनवरी 2010 ई. तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के सहयोग से आयोजित पैग की समूह प्रदर्शनी में डॉ. भवानी शंकर शर्मा, डॉ. जगमोहन माथोडिया, हरिदत्त कल्ला, कन्हैया लाल वर्मा, लाल चन्द मारोठिया, डॉ. ममता चतुर्वेदी, डॉ. नाथू लाल वर्मा, आर.बी. गौतम, डॉ. राजीव गर्ग, रणजीत सिंह, पारस भंसाली, सुभाष केकरे, शैलेन्द्र भटनागर, डॉ. सुरभी बिरमीवाल, विनोद भारद्वाज, मन्जू शर्मा ने भाग लिया। 15 सितम्बर से 20 सितम्बर 2011 ई. तक कलानेरी कला दीर्घा में कला शिविर का आयोजन किया गया व 21 से 25 सितम्बर 2011 ई. तक शिविर में तैयार की गई कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी का आयोजन भी कलानेरी कला दीर्घा, जयपुर (चित्र–34) में किया गया।

28 जुलाई से 31 जुलाई 2012 ई. में पैग के वरिष्ठ कलाकार डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी की स्मृति में 'Romancing with Colours' नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का आयोजन पैग ने राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर व जवाहर कला केन्द्र, जयपुर के सहयोग से किया। जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में आयोजित इस प्रदर्शनी में डॉ. गोस्वामी के सौ से भी अधिक चित्र प्रदर्शित किये गये थे। (चित्र–35) प्रदर्शनी का उद्‌घाटन ख्यातनाम वीणावादक ग्रेमी अवार्ड विजेता पद्मश्री पण्ड़ित विश्वमोहन भट्‌ट ने किया था। इसी वर्ष पैग की समूह प्रदर्शनी अहमदाबाद, गुजरात के रविशंकर रावल कला भवन में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में पैग के सदस्य कलाकारों डॉ. आर.बी. गौतम, डॉ. नाथू लाल वर्मा, रणजीत सिंह चूडावाला, डॉ. भवानी शंकर शर्मा, डॉ. जगमोहन माथोड़िया, हरिदत्त कल्ला, डॉ. राजीव गर्ग, कन्हैया लाल वर्मा, लाल चन्द मारोठिया, डॉ. ममता चतुर्वेदी, पारस भंसाली, शैलेन्द्र भटनागर, सुभाष केकरे, डॉ. सुरभी बिरमिवाल, विनोद भारद्वाज, गोविन्द श्रीवास्तव, अर्जुन रत्तावा, अर्जुन लाल वर्मा, हंसराज कुमावत, हरिराम कुम्भावत, लक्ष्मीनारायण नागा, पवन कुमार शर्मा व श्रीकान्त रंगा ने भाग लिया। (चित्र–36)

वर्ष 2013 ई. में पैग, जयपुर द्वारा जयपुर आर्ट समिट की शुरूआत की गई। इस आर्ट समिट का आयोजन होटल क्लार्क, आमेर व जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में दिनांक 07 नवम्बर से 11 नवम्बर तक किया गया (चित्र–37)। इस आर्ट समिट में ख्यातनाम कलाकारों

ने शिरकत की जिनमें प्रमुख रूप से शांति दवे, जतिन दास, अंजली ईला मेनन, दीपक शिन्दे, गोपी गजवानी, जय झरोठिया आदि रहे। इस आर्ट समिट में सेमीनार का दौर भी चला जिसमें कला समीक्षक प्रयाग शुक्ल, मंगलेश डबराल, विनोद भारद्वाज, जय किशन अग्रवाल, डॉ. अशरफी भगत, डॉ. अल्का पाण्डे, उमा नय्यर व अभय सरदेसाई ने अपने विचार व्यक्त किये।[53] वर्ष 2014 ई. में भी पैग, जयपुर द्वारा जयपुर आर्ट समिट का आयोजन किया गया।

23 मई से 26 मई 2015 ई. तक प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर द्वारा भारत और नेपाल के भूकंप पीड़ितों की सहयातार्थ दिल्ली की डीसी आर्ट गैलरी में एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में राजस्थान के पन्द्रह वरिष्ठ चित्रकारों की 30 चित्रकृतियाँ और तीन मूर्तिकारों के 6 मूर्तिशिल्प प्रदर्शित किए गये। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन फिल्म अभिनेत्री व सांसद जयाप्रदा (चित्र–38) ने किया।[54] पूर्व वर्षो की भांति वर्ष 2015 ई. में भी जयपुर आर्ट समिट का आयोजन किया गया। (चित्र–39) अब यह आयोजन पहले से और अधिक भव्य था।

पैग द्वारा प्रकाशित EXPOSITION-2012 के आमुख में पैग ग्रुप के बारे में लिखा है– "Progressive Artists Group is an art institution, which is committed to expand modern sensibility in painting and sculpturers, believing that art of all ages would progress only, if it has the inherent capacity to transform the traditions into growing need of the society. With this objective, it does all corollary activites, which would promote art consciousness among the people of the state and contemporary art enthusiasts, as well."[55]

इसी आमुख में आगे पैग कलाकारों द्वारा समकालीन कला के विकास के लिए किये जा रहे प्रयासों के बारे में लिखा है – "The PAG artist's search for expressions of contemporary experience has not blinded them to the centuries old Pictorial tradition of Rajasthan. In fact, the group is keenly aware of the hiden links between tradition and the contemporary developments in the art of Painting & Sculpture."[56]

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर ने राजस्थान के अन्य कला–संगठनों से भी सामंजस्य स्थापित किया व राजस्थान की समकालीन कला को एक नया आयाम प्रदान किया। इस संगठन ने टखमण–28 व कलावृत जैसे संगठनों के साथ मिलकर कार्य किया तथा परस्पर मैत्री भाव को बढ़ाने के साथ–साथ एक कलात्मक वातावरण तैयार किया। युवा व प्रतिभाशाली कलाकारों को एक मंच प्रदान किया। पैग ग्रुप के उद्देश्यों व कार्यों को लेकर

पैग ग्रुप के प्रमुख संस्थापक कलाकार सदस्य डॉ. आर.बी. गौतम ने शोधार्थी को दिये एक साक्षात्कार में कहा था कि – ''प्रारम्भ में ऐसे कलाकार संगठनों के नितान्त अभाव के कारण यहाँ के कलाकारों तथा उनके सृजन को प्रोत्साहन प्राप्त नहीं हो रहा था। ललित कला अकादमी द्वारा भी ऐसे कोई प्रयास नहीं किये जा रहे थे। अतः प्रायः समस्त रचनाशील कलाकारों ने इस ग्रुप के महत्व को समझा व इसकी सदस्यता ग्रहण की और तब से अब तक ग्रुप द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विविध कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं के द्वारा राजस्थान ही नहीं अपितु अन्य प्रान्तों में भी अपनी पहचान बनाई है तथा यहाँ की कला और कलाकारों को सृजनशील बनाये रखने के साथ–साथ कलात्मक वातावरण बनाने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।''[57] पैग ग्रुप द्वारा सदैव यह प्रयास किया जाता रहा है कि कलाकारों, कलाप्रेमियों एवं कला समीक्षकों के मध्य समन्वय, सौहार्द्र एवं भाईचारा बना रहे तथा कलाकारों में रचनाशीलता निरन्तर बनी रहे। कलाकारों के मध्य स्वस्थ प्रतियोगी स्पर्धा का संचार हो। अन्य कलाकार संगठनों, अकादमियों एवं शैक्षणिक संस्थानों के मध्य परस्पर सहयोग एवं समन्वय के आयाम खोजकर उनमें राष्ट्रीय एकता एवं मैत्री की भावना उत्पन्न हो सके। ग्रुप का प्रमुख उद्देश्य एक ऐसे कलात्मक वातावरण का निर्माण करना है जिसका भविष्य में भी सांस्कृतिक–ऐतिहासिक महत्व हो और राजस्थान की कला–संस्कृति की महत्ता का विश्व में प्रचार–प्रसार हो।

यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि इस ग्रुप की विविध गतिविधियों के कारण तथा इसके परिणामस्वरूप बने कलात्मक वातावरण, कलाकारों में रचनात्मकता को अधिक बल दिये जाने तथा आपसी समन्वयात्मक वातावरण जागृत होने से कलाकार संगठनों के महत्व को राजस्थान के कलाकारों, कलाप्रेमियों ने समझा तथा विभिन्न कला संगठनों ने अपने अस्तित्व को उजागर किया। प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के सीमित साधनों तथा आर्थिक विपन्नता के कारण साथी कलाकारों का विभिन्न ग्रुपों की ओर आकर्षित होने के परिणामस्वरूप 'पैग' की गतिविधियों में व्यवधान अवश्य उत्पन्न हुआ लेकिन यह ग्रुप निष्क्रिय कभी नहीं रहा। ग्रुप के कलाकारों ने कभी एक मुहावरें में बंधकर काम करना पसन्द नहीं किया। उनके प्रत्येक के कार्यों में भिन्नता है, यह भिन्नता विषयगत व शैलीगत दोनों ही रूपों में देखी जा सकती है। ग्रुप के कलाकारों ने जहाँ समकालीन कला में नवीन प्रयोग किये है, वहीं परम्परागत कला में भी नवीन प्रयोग कर उसे समकालीनता का दर्जा दिलाया है। उनकी परम्परागत कला में भी आधुनिकता का बोध होता है।

इसके संस्थापक सदस्यों में मोहन शर्मा, आर.बी. गौतम डॉ. नाथू लाल वर्मा, कन्हैया लाल वर्मा, प्रमुख थे। कालान्तर में इस ग्रुप के साथ शैलेन्द्र भटनागर, विनोद भारद्वाज, चन्दू लाल चौहान, रणजीत सिंह चूडावाला, सुभाष केकरे, मन्जू मिश्रा, लाल चन्द मारोठिया, राजेन्द्र मिश्रा, डॉ. भवानी शंकर शर्मा, गोपाल वर्मन, आनन्दी लाल वर्मा, डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, डॉ. राजीव गर्ग, डॉ. जगमोहन माथोडिया, डॉ. ममता चतुर्वेदी, हरीदत्त कल्ला, पारस भंसाली, डॉ. सुरभी बिरमीवाल, विनोद भारद्वाज, गोविन्द श्रीवास्तव, अर्जुन लाल वर्मा आदि कलाकारों का जुडाव हुआ, जिससे पैग का सशक्तिकरण हुआ है।

पिछले 45 वर्षों से समकालीन कला के विकास के लिए संगठन द्वारा विविध कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है। जिसमें संगठन के सभी कलाकारों की नियमित वार्षिक प्रदर्शनी, संगठन के कलाकारों की एकल प्रदर्शनी, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर कलाकार शिविर, कोलोग्राफी शिविर, राज्य स्तरीय कला प्रतियोगितायें, कला वार्ताएं, संगोष्ठियाँ, स्लाइड़ शो आदि का आयोजन समय–समय पर किया जाता रहा है।

5.1.4 कलावृत्त–सृजनात्मक मंच, जयपुर

वर्ष 1970 ई. में महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' के बाबा हरिशचन्द्र मार्ग, चान्दपोल बाजार स्थित स्टूडियो में 'कलावृत्त–सृजनात्मक मंच' नामक संगठन का गठन हुआ। इसकी प्रथम कार्यकारिणी में महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' को अध्यक्ष, वीरेन्द्र पाटनी को उपाध्यक्ष, वीरेन्द्र शर्मा को सचिव बनाया गया था तथा सत्यनारायण शर्मा, रमेश ग्रामीण, कमल प्रसाद मिश्रा, पुरूषोत्तम शर्मा व रमेश अरोड़ा इसके सदस्य कलाकार थे।[58]

1973 ई. तक संगठन की गतिविधियाँ एकल व समूह प्रदर्शनियों के आयोजन तक ही सीमित थी किन्तु वर्ष 1975 ई. में संगठन ने कला पत्रिका के प्रकाशन को कला के प्रचार–प्रसार का माध्यम चुना और 'कलावृत्त' नाम से एक कला पत्रिका की शुरूआत की।[59] (चित्र–40) आरम्भ में यह पत्रिका मासिक रूप से प्रकाशित होती रही लेकिन बाद में धनाभाव के कारण इसे त्रैमासिक कर दिया गया। कला पत्रिका को बिना किसी आर्थिक मदद के त्रैमासिक रूप में भी नियमित नहीं रखा जा सका फिर जैसे कोई आर्थिक मदद मिलती पत्रिका का प्रकाशन होता। इस पत्रिका के सम्पादक महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' व प्रबन्ध सम्पादक वीरेन्द्र पाटनी रहे। कलावृत्त संगठन ने इस पत्रिका के लिए राज्यवार अपने सहायक सम्पादक भी नियुक्त किये। आन्ध्रप्रदेश से श्रीधर भोलेकर, बेंगलुरू से के.एस. राव, दिल्ली से डी.बी.सेठ 'दीवान', गोवा से ए.एस. विशम्भरा, गुजरात से ज्योति भट्ट, हरियाणा से एस.के. जागलेकर, हिमाचल प्रदेश से विश्वराज मेहता, जम्मू–कश्मीर से वी.आर.खजूरिया,

केरल से कुन्हीरमन, मध्यप्रदेश से सच्चिदानन्द नागदेव, मणीपुर से ईबो तेनडरेबन, महाराष्ट्र से हरीश राऊत, नागालैण्ड से रवीन्द्र नाथ भट्टाचर्जी, ओड़िसा से दुर्गा प्रसाद दास, पंजाब से प्रेमसिंह, पांड़िचेरी से पी.के. पत्ता, तमिलनाडु से एस.जी. वासुदेव, उत्तरप्रदेश से अखिलेख निगम व पश्चिम बंगाल से सुनिल दास को 'कलावृत्त पत्रिका' का सहायक सम्पादक मनोनीत किया गया। यह सम्पादकगण अपने–अपने राज्यों की कलात्मक गतिविधियों की नवीनतम जानकारियाँ कलावृत्त पत्रिका के लिए उपलब्ध करवाते थे। इस पत्रिका के सम्पादकीय सलाहकार आर.एन. मिर्धा, कार्ल जे. खण्ड़ालावाला, प्रो. वी.आर. अम्बेडकर, डॉ. सत्यप्रकाश, रिचर्ड बार्थलोम्यू व रामगोपाल विजयवर्गीय रहे। इसके वितरण का कार्य एन.के. अरूण देखते थे।[60] यह पत्रिका भारत के विभिन्न राज्यों सहित यू.एस.ए., यू.के., फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, स्विटजरलैण्ड, कनाड़ा, इटली और जापान तक के कला पाठकों तक सुलभ रूप से पहुँचाई जाती रही। कलावृत्त पत्रिका के कार्यालय का पता 2 ट 8, जवाहर नगर, जयपुर रहा जो कि इस संगठन के कार्यालय का पता एवं इसके संस्थापक अध्यक्ष सुमहेन्द्र के निवास का पता भी था। इस पत्रिका की प्रकाशक सुमहेन्द्र की धर्मपत्नी सुमन शर्मा रही तथा यह पत्रिका वर्षों तक जयपुर के मनिहारों के रास्ते स्थित सर्वेश्वर प्रिन्टर से मुद्रित होती रही।[61]

1975 ई. में ही कलावृत्त संगठन की समूह प्रदर्शनी का आयोजन जयपुर में किया गया। इस प्रदर्शनी में सुमहेन्द्र, अखिलेश निगम, अन्जली डागा आदि ने भाग लिया। इसी वर्ष चित्रकार समदर सिंह खंगारोत 'सागर' को संगठन के द्वारा सम्मानित किया गया।[62] वर्ष 1976 ई. में कलावृत्त द्वारा वार्षिक समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में संगठन के सदस्य कलाकारों ने भाग लिया।

वर्ष 1978 ई. में इस संगठन का राजस्थान सोसायटी अधिनियम–1958 के अन्तर्गत 'कलावृत्त–युवा सृजक मंच' के रूप में पंजीयन करवाया गया। इस संगठन के पंजीकरण क्रमांक 124/78 है।[63] संगठन के पंजीयन के समय इसके अध्यक्ष रामगोपाल विजयवर्गीय, संस्थापक अध्यक्ष सुमहेन्द्र, उपाध्यक्ष वीरेन्द्र पाटनी, सचिव सुरेशचन्द्र राजोरिया, उप सचिव वीरेन्द्र शर्मा, कोषाध्यक्ष मनमोहन शर्मा रहे व सदस्य के रूप में सत्यनारायण वर्मा, कमल प्रसाद मिश्र, पुरूषोत्तम शर्मा, जी.एस. श्रीवास्तव, राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, अन्जली डागा, आशा शर्मा, रजनी सक्सेना को मनोनीत किया गया।[64](चित्र–41) इस वर्ष आयोजित कलावृत्त वार्षिक कला प्रदर्शनी में अखिलेश निगम, राजेन्द्र कुमार अग्रवाल व आशा शर्मा को 'कलावृत्त पुरस्कार' प्रदान किया गया।

किसी भी कला संगठन का मुख्य उद्देश्य है, उस संगठन के अन्तर्गत कार्यरत सभी कलाकारों को सदैव सृजनात्मकता हेतु प्रेरित करते रहना, उनमें आपसी समभाव बनाये रखना व उनकी कला चेतना को जागृत रखना। कलावृत्त समूह ने भी उक्त तथ्य का सदैव अनुसरण किया और अपनी अनेक सामूहिक कला गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन किया। कलावृत्त की शुरूआत भी एक समूह प्रदर्शनी के आयोजन से हुई थी। दूसरी प्रदर्शनी भी समूह प्रदर्शनी के रूप में आयोजित की गई। तीसरी और चौथी प्रदर्शनियों को वार्षिक प्रदर्शनी का रूप देकर उसमें खुली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें सम्पूर्ण राजस्थान के युवा कलाकारों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। यही उत्साह चतुर्थ प्रदर्शनी में राष्ट्रीय स्तर पर विस्तृत हुआ। कलावृत्त द्वारा आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी का आयोजन 21 से 26 अक्टूबर, 1979 ई. तक राजस्थान ललित कला अकादमी कला दीर्घा में किया गया।(चित्र–42) वार्षिक प्रदर्शनी एवं श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत करने के क्रम में इस प्रदर्शनी को और विस्तृत रूप दिया गया। कुल 39 कलाकारों की 71 रचनाएं प्रदर्शित हुई। इनमें अखिलेश निगम (लखनऊ), आशा शर्मा (जयपुर), मातूराम वर्मा (पिलानी), मुहम्मद कलीम काजी (अजमेर), राजेन्द्र कुमार अग्रवाल (जयपुर) एवं सुबाचन यादव (बनारस) को 200 रूपये के साथ प्रशस्ति पत्र से पुरस्कृत किया गया। स्थानीय रवीन्द्र मंच के पूर्वाभ्यास कक्ष में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता राजस्थान के तत्कालीन विशिष्ट सचिव के. के. भटनागर ने की एवं पुरस्कार वितरित किये।[65] आशा शर्मा (पुरस्कृत) की रचनाएं जलरंगों से टैम्परा पद्धति में निर्मित थी। इन पर ऊपर से स्प्रे कर रंगों के आपसी अन्तर्विरोध को सहज 'हॉरमनी' में परिवर्तित करने का सफल प्रयास था। एम. मोहन के ग्राफिक प्रयोगात्मक मोनोप्रिन्ट थे। आकारों की बुनावट में पोत की बारिकी एवं रंगों की पारदर्शिता से अच्छा प्रभाव उत्पन्न किया गया था। ओमप्रकाश झा के संयोजनों में संगीत के स्वरों का आरोह–अवरोह एवं ताल की गति सफल रूप में अभिव्यक्त थी। अंजली डागा के तेल चित्रों में आकारों का 'बैलेन्स' अलंकारिकता का पुट लिये हुए था। कमल प्रसाद मिश्र के मूर्ति शिल्प में अमूर्त्त रूपों को यथार्थ दृष्टि से संयोजित किया लगता था और कुक्कु माथुर के 'श्रृंगार' में परम्परा और अमूर्त्त का मिश्रण देखा जा सकता था। घनश्याम रंजन के मिश्रित माध्यम में लाख, नोवा बोर्ड एवं तेलरंग आदि थे। अभिव्यक्ति में व्यंग्य साफ था जो चित्रों को अर्थपूर्ण बना देता है। जी.एस. श्रीवास्तव के 'घरौंदे' घनवाद से प्रभावित पर देशी रंगों के प्रयोग के कारण सहज और देशज लगते थे। दिलीप दवे के कोलाज संयोजन की दृष्टि के प्रति आश्वस्त करते थे। द्रोपदी रूंगटा की तेल रचनाओं में यथार्थ 'पोयटिक मूड' को उजागर करता था। नरेन्द्र कुमार जैन का कोलाज 'नाईटमेयर'

दिवास्वप्न की अमूर्त अभिव्यक्ति के सुन्दर उदाहरण के रूप में देखा जा सकता था। पुरूषोत्तम की मूर्ति रचना में तकनीकी कौशल और दृष्टि की परिपक्वता के कारण उनकी प्रतिभा झलकती है। ममता राय ने 'इम्पैटो' को गतिपूर्ण आघातों में प्रयुक्त कर चित्र में लयात्मकता उत्पन्न करने का प्रयास किया था। बाल कलाकार मणि महेश के चित्रों में बाल सुलभ कल्पना अत्यन्त मौलिक रूप में देखने को मिली। मातूराम वर्मा (पुरस्कृत) के चित्रों में ग्रामीण लोक जीवन अपने यथार्थ रूप में चित्रित था। मुनि सिंह के वॉश में बने चित्रों में लघुचित्र परम्परा के रंगों की तेजी थी जिससे एक बारगी तो वे सुन्दर मिनियेचर ही लगते थे। रंगों का संगीत और रेखाओं का सधाव इन चित्रों में देखा जा सकता था। मुहम्मद कलीम काजी (पुरस्कृत) के कोलाजों में अमूर्त आकारों को अमूर्त संयोजनों के रूप में ही संयोजित किया गया था। कुमारी रजनी सक्सेना की 'छाया' में तान का अध्ययन एवं कल्पना की नवीनता कलाकार की प्रतिभा के प्रति आश्वस्त करती थी। राजेन्द्र कुमार अग्रवाल (पुरस्कृत) के 'सैन्ड्यून्स' तेल माध्यम में चित्र अमूर्त भी थे और यथार्थ भी। पीले रंग का सफल प्रयोग और आकारों में 'न्यूड' देखने की प्रवृत्ति साफ झलकती थी। रामावतार सोनी के चित्र छोटे–छोटे चौकोर आकारों सें संयोजित भवन के आन्तरिक भाग से लगते थे। वीरेन्द्र शर्मा का 'मेरा शहर' लघुचित्र शैली में आधुनिक युग की वितृष्णा को उजागर करता था। वीना गोयल के 'सन सैट' में तूलिका प्रवाह की गति दर्शनीय थी। कुमारी शक्ति भटनागर के दृश्य चित्र में यथार्थ परम्परा और आधुनिकता तीनों का एक साथ एक ही कैनवास पर दर्शन होता था। शौकत अली के चित्र में मिनियेचर तकनीक में 'आज' चित्रित था। सविन्दर सिंह के तेल चित्रों में कल्पना और यथार्थ का अनोखा पुट था। सुमहेन्द्र के चित्र इतना तीखा व्यंग्य लिये थे कि दर्शक देखते ही यथार्थ से विचलित होने लगे। सुमन दुबे के दृश्य चित्रों में बिन्दुवादी प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास था। सुवाचन यादव (पुरस्कृत) की ड्राइंगों में छोटे–छोटे बिन्दुरूप आकारों से बड़े कैनवास पर सफल मॉडलिंग की प्रस्तुति थी। सुरेशचन्द्र राजोरिया के दृश्य चित्रों में तरल जलरंगों का प्रवाह यथार्थ की सीमा में सुन्दर बन पड़ा था। सतीश द्विवेदी के 'झरोखे' सुन्दर रूप से संयोजित थे। संतोष वर्मा के डिजाइनों में व्यावसायिक कला का कौशल साफ देखा जा सकता था। शशि शाह के दृश्य चित्रों में खण्डहरों का प्रभाव तरल तेल रंगों में चित्रित था। छगनलाल शर्मा, अनूप कुमार और महेन्द्र कुमार शर्मा की मूर्ति रचनाओं में यथार्थ और सतह के विभिन्न पोत सफल रूप में उकेरे हुए थे। प्रदर्शनी में ओमप्रकाश झा, पुरूषोत्तम शर्मा, वीरेन्द्र शर्मा, सुमहेन्द्र एवं सुरेशचन्द्र राजोरिया ने प्रतियोगिता में भाग नहीं लिया था। पुरस्कारों का निर्णय एवं प्रदर्शनी हेतु कलाकृतियों का चयन रामगोपाल विजयवर्गीय, वीरेन्द्र नारायण सक्सेना एवं

रणजीत सिंह ने किया था। उत्तर प्रदेश से आई रचनाओं का चयन वहाँ के सुपरिचित कला समीक्षक कान्तिचन्द्र सोनरेक्सा ने किया।[66]

03 सितम्बर से 15 सितम्बर 1979 ई. तक रवीन्द्र मंच, जयपुर की कला दीर्घा में कलावृत्त की समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में संगठन के दस कलाकारों की 25 कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया। अंजली डागा के तेल चित्रों में कागज के मुड़े हुए से आकार स्पेस में सुव्यवस्थित एवं अलंकारिक रूप से सज्जित थे। इनके चित्रों में 'ऑकर' और 'ब्लेक' की रंगतों का प्रयोग नीले और काले रंग में बने चित्र से ज्यादा रूचिकर था। जी.एस. श्रीवास्तव की रचनाओं में आकारों का संयोजन और रंगत पर अधिकार स्पष्ट रूप से चमत्कृत करने की सीमा तक सुखद लगता है। हल्के रंगों का सुमधुर प्रयोग और चांदनी रात की स्निग्ध सरल रोशनी इन चित्रों की खूबसूरती है। हरिदत्त कल्ला के दृश्य चित्रण में पेड़, जमीन, आसमान और आकृतियां सभी शैलीकृत रूप में है। शैलीकरण कलाकार ने इस सीमा तक और अपनी पहचान बना कर किया है कि रचना देखते ही पहचानने में आ जाती है। आत्म–दीक्षित कलाकार एम. मोहन के मोनोप्रिन्ट टैक्सचर की बारीकी और रंगत की तरलता के साथ अमूर्त छिपे पर जाने पहचाने आकार लिये मिलते है जिन्हें देखकर दर्शक अपनी तरफ से कोई न कोई आकार ढूंढ़ ही लेता है। राजेन्द्र अग्रवाल के 'सैन्ड्यून्स' अब तक काफी प्रसिद्ध हो चुके थे। रेखाओं में प्रवाह और पीले रंग की खूबसूरत रंगतें इन चित्रों में निवर्सनाओं के आकार छिपाए मिलेगी। सुरेश चन्द राजोरिया जो अपने दृश्य चित्रों में प्रवाह, दूरी और काव्यात्मकता के साथ तकनीकी स्तर पर प्रयोगात्मकता के लिए भी प्रसिद्ध है। इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित राजोरिया के दृश्यचित्रों में वही खूबियां नई ताजगी के साथ दिखाई देती है। टैम्परा और तरल जलरंग दोनों माध्यमों में साधिकार काम करने वाले राजोरिया के इन दृश्य चित्रों में भी वातावरण और रोशनी, चिर परिचित सुन्दरता के साथ अभिव्यक्त हो पाई है। वीरेन्द्र शर्मा मूलतः मिनियेचर शैली के लिए प्रसिद्ध है। यूं मूर्तिकला के क्षेत्र में भी खास नाम अर्जित किया है। इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्र में भवनों का आलंकारिक तरह से संयोजन पृष्ठभूमि में बूंदी के दृश्य चित्र का प्रभाव और संयोजित भवनों के किसी एक दरवाजे में अकेली निर्वसना प्रतीक्षारत कामिनी 'प्रतीक्षा' की सफल प्रस्तुति कर पाती है। वीरेन्द्र पाटनी के ग्राफिक जो सीधे ट्रेडल मशीन पर बनाये गये है देखने पर चमत्कृत कर देते है। स्पेस को संभालना पाटनी ने बहुत समझदारी से सीखा है।[67] कलावृत्त के दस कलाकारों की उपरोक्त समूह प्रदर्शनी के समापन समारोह के अवसर पर 'कला शिक्षा रूप और प्रारूप' विषय पर विचार गोष्ठी का

आयोजन किया गया था। (चित्र–43) इस अवसर पर प्रमुख वक्तागण शैल चोयल, कौशल भार्गव, डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, श्रीकृष्ण शर्मा, विद्यासागर उपाध्याय, राधाबल्लभ गौतम, ओ.पी. श्रीवास्तव, ज्योतिस्वरूप, रामगोपाल विजयवर्गीय, सी.एस. मेहता, कृष्ण चन्द जोशी, हरि महर्षि, जगत सिंह, समदर सिंह, दिलीप दवे, महेश शर्मा आदि थे। कलावृत्त की जयपुर में इस समूह प्रदर्शनी के बाद एक और समूह प्रदर्शनी दिल्ली में आयोजित की गई। कुछ को छोड़कर शेष सभी कलाकार वही थे जिन्होंने जयपुर में आयोजित समूह प्रदर्शनी में भाग लिया था।[68]

कलावृत्त ने नई प्रतिभाओं को खोजने एवं छिपी प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने में सदा पहल की है। इस क्रम में वीरेन्द्र पाटनी के 20 ग्राफिक्स की एकल प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी 24 से 29 सितम्बर 1979 ई. में जयपुर की रवीन्द्र मंच कला दीर्घा में आयोजित की गई। प्रदर्शित रचनाओं में सभी सीधे प्रिन्टिंग मशीन के रोलरों में कागज देकर बनाये गये चित्र थे। आकारों को कागज के विभिन्न प्रकार से बने मोड़–तोड़ो ने नया अर्थ और नया रूप दे दिया था। अनायास उभरे इन आकारों में अर्थ खोजने का प्रयास करना उचित नहीं पर फिर भी कुछ में परिचित आकार उभरते है, जिनसे चित्र में और दिलचस्पी उत्पन्न हो जाती है। अपने वांछित रूपों को उभार देने के लिए शेष भाग को टेम्परा रंगों से ढ़क दिया है। ये रंग देशज प्रभाव लिए होने के कारण चित्र का दर्शक से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में भी सफल हो जाते है। प्रदर्शनी को कलाकारों, कला समीक्षकों एवं समाचार पत्रों सभी ने मुक्तकंठ से सराहा। इनके चित्रों पर एक चित्र समीक्षा प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थी।[69] वर्ष 1980 ई. में कलावृत्त संगठन द्वारा राजस्थान के प्रमुख कलाकारों पर कलावृत्त पत्रिका का जनवरी माह में एक विशेष अंक हिन्दी में प्रकाशित किया गया। इस अंक में रत्नाकार विनायक साखलकर, गोपी चन्द मिश्रा, द्वारका प्रसाद शर्मा, परमानन्द चोयल, भवानी चरण गुई, मोनी सान्याल व राम निवास वर्मा की कला पर विशेष आलेख प्रकाशित किये गये।[70]

कलावृत्त संगठन में 1981 ई. से ही अखिल भारतीय स्तर पर मूर्तिकार शिविर आयोजित करने प्रारम्भ किये। इसमें वरिष्ठ विद्यार्थियों को ही आमन्त्रित किया जाता था। इससे भावी पीढ़ी आधुनिकता के बोध से परिचित हुई और अन्य राज्यों के कलाकार साथियों से जुड़ने के कारण उनका परिचय क्षेत्र भी बढ़ा।

वर्ष 1987 ई. में कलावृत्त द्वारा षष्ठम अखिल भारतीय मूर्तिकार शिविर का आयोजन किया गया। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के मूर्तिकला विभाग में आयोजित इस शिविर में

चेन्नई से आर. श्री निवासन, लखनऊ से कुंवर यशजीत सिंह तथा पटना से राजकिशोर राय ने भाग लिया। राजस्थान के कलाकारों में राजेन्द्र शर्मा, नरेश भारद्वाज तथा देवेन्द्र शर्मा ने भाग लिया। शिविर में सभी ने श्वेत संगमरमर में सृजन किया।[71]

वर्ष 1989 ई. में पारम्परिक मूर्तिकार लल्लू नारायण शर्मा को संगठन की ओर से सम्मानित किया गया।[72] वर्ष 1990 ई. में कलावृत्त पत्रिका का जनवरी–मार्च अंक आधुनिक भारतीय मूर्तिकला के विशेष संदर्भ में प्रकाशित किया गया। इस अंक में भारत में आधुनिक मूर्तिकला की शुरूआत से 1989 ई. तक की मूर्तिकला का परिदृश्य सम्मुख रखने का प्रयास किया गया है।[73] 19 अक्टूबर 1990 ई. में कलावृत्त द्वारा आठवां अखिल भारतीय मूर्तिकला शिविर का आयोजन राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर में किया गया। इस शिविर में ओड़िसा से अजय कुमार सामंत, कविता, आर्ट बन्धुरोत, उत्तर प्रदेश से सुशील कुमार गुप्ता व कोलकाता से आशिष कुमार दास ने भाग लिया। इसी वर्ष पारम्परिक लघु चित्रण शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमें चित्रकार कृपाल सिंह शेखावत, सुमहेन्द्र, समदर सिंह खंगारोत, चन्दू लाल चौहान आदि ने भाग लिया।

वर्ष 1991 ई. में कलावृत्त पत्रिका का जनवरी–मार्च त्रैमासिक अंक 'Symbolism in contemporary Art' विषय पर अंग्रेजी भाषा में विशेष रूप से प्रकाशित किया गया। इस अंक के लेखक व कला मर्मज्ञ प्रो. र. वि. साखलकर रहे। श्वेत–श्याम चित्रों से सुसज्जित इस अंक में प्रो. स. वि. साखलकर ने समकालीन कला में प्रतिकात्मकता के बारे में विस्तार से कला पाठकों को बताया है।[74] प्रो. सांखलकर की रूचिपूर्ण भाषा लेखनी से यह अंक आज भी ताजगी भरा लगता है। कलावृत्त के द्वारा 17 फरवरी से 26 फरवरी 1991 ई. तक नवम् अखिल भारतीय युवा मूतिशिल्प शिविर आयोजित किया गया। (चित्र–44) इस शिविर में आठ युवा मूर्ति शिल्पियों ने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर के मूर्तिकला विभाग में सफेद व काले मार्बल पर सुन्दर कलाकृतियों को उकेरा। इस शिविर में भूनेश्वर से जगन्नाथ पण्डा, फैजाबाद (उ.प्र.) से कामता प्रसाद, गुलबर्ग से प्रताप सिंह भारती, चेन्नई से वैकन्ट राजन व जयपुर से राजेन्द्र सोनी, धर्मेन्द्र राठौड़, अभय गायकवाड़, रामकिशन अड़िग ने भाग लिया।

1992 ई. के कलावृत्त पत्रिका के जनवरी–मार्च अंक को सिरोही कला विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया। आकर्षक रंगीन, श्वेत–श्याम चित्रों में सुसज्जित इस अंक का सम्पादन व आलेख कार्य सुमहेन्द्र ने किया। कलावृत्त संगठन ने मूर्ति शिल्प को प्रोत्साहित करने के क्रम में अपने 9 विभिन्न मूर्तिशिल्प शिविरों के मूर्तिशिल्पों की प्रदर्शनी का आयोजन

31 मार्च से 15 अप्रैल 1992 ई. तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन वयोवृद्ध मूर्तिकार लल्लू नारायण शर्मा 'गौतम' ने किया था।[75]

9 से 13 मार्च 2006 ई. तक कलावृत्त जयपुर के द्वारा 24वाँ अखिल भारतीय मूर्तिकार शिविर जयपुर के जवाहर कला केन्द्र में आयोजित किया गया। (चित्र–45) इस शिविर में भारत के प्रमुख मूर्तिकारों सहित मूर्तिकला के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

वर्ष 2010 ई. के मार्च माह में जवाहर कला केन्द्र, जयपुर और कलावृत्त संगठन के संयुक्त तत्वावधान में छह दिवसीय चित्रकार और मूर्तिकार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में मूर्तिकला के लिए कोटपूतली के पास स्थित भैंसलाना क्षेत्र में मिलने वाले काले पत्थर का उपयोग किया गया। इस शिविर में भाग लेने वाले प्रमुख कलाकारों में विकास प्रताप सिंह, प्रसाद पंवार, लोकेश कुमावत, गौरी शंकर जांगिड़ आदि थे। इस शिविर के संयोजक सुमहेन्द्र रहे।

वर्ष 2011 ई. के मार्च माह में कलावृत्त ने जवाहर कला केन्द्र, जयपुर व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में जवाहर कला केन्द्र में मूर्तिकला शिविर का आयोजन किया। बाद में जवाहर कला केन्द्र की सुदर्शन दीर्घा में मूर्तिशिल्पों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में युवा कलाकार अविनाश शर्मा, सुमित पाण्डे, विवेक सैनी, मनीष पाण्डे, रेखा वाजपेयी आदि ने भाग लिया।

कलावृत्त के पुरोधा सुमहेन्द्र का स्वास्थ्य अब खराब रहने लगा था। गिरते स्वास्थ्य की स्थिति में भी आपने वर्ष 2012 ई. में कलावृत्त के 50वें अंक का प्रकाशन किया था जिसको लेकर वे काफी खुश थे। उनकी इस खुशी के दो कारण स्पष्ट थे। पहला यह कि उन्होंने अपनी पत्रिका का 50वां अंक 'Brilliant Bromides' के रूप में निकाला था दूसरा यह कि उसमें राजस्थान के इतिहास से जुड़े इतने दुर्लभ छाया चित्र संग्रहित किए गए थे कि उन्होंने उस अंक को ऐतिहासिक बना दिया था। खासकर 1863 ई. के छायांकित जयपुर शहर के चित्रों का संकलन दुलर्भ था। इसके अतिरिक्त उन्होंने राजा–महाराजाओं के पुराने चित्र शामिल करके राजस्थान की भव्यता और इतिहास को जीने की कोशिश की थी।[76] (चित्र–46) 19 जुलाई 2012 ई. को कालावृत्त के संस्थापक अध्यक्ष महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' का स्वर्गवास हो जाने से संगठन को गहरा आघात लगा।[77] अगले वर्ष इनकी पुण्यतिथि पर जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में इनकी कलाकृतियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन तत्कालीन कला एवं संस्कृति विभाग की मुख्य

सचिव किरण सोनी गुप्ता ने किया।[78] संस्थान के संस्थापक डॉ. एम. के. शर्मा 'सुमहेन्द्र' की स्मृति में कलावृत्त और राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के दृश्य कला विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 11 फरवरी से 20 फरवरी 2015 ई. तक मूर्तिशिल्प कार्यशाला का आयोजन राजस्थान विश्वविद्यालय के दृश्य कला विभाग में किया गया। (चित्र–47) इस शिविर का उद्घाटन प्रो. सी.एस. मेहता ने किया। शिविर में नई दिल्ली से भोला कुमार, लखनऊ से शान्तनु शास्त्री, चण्ड़ीगढ़ से हृदय कुमार, हैदराबाद से डॉ. स्नेहलता, जयपुर से पद्मश्री अर्जुन प्रजापति, अशोक गौड़, पृथ्वीराज कुमावत, सोमेश, नरेश भारद्वाज, धर्मेन्द्र शर्मा, राजेन्द्र, नीरज शर्मा, अंकित शर्मा, सुनील शर्मा, गौरव अन्नी, श्रृति बैंगानी, शुभिका सुकलेचा, हृदेश कुमार शर्मा, निखिल वाजपेयी, मनीष पाण्डे, हिमांशु अग्निहोत्री, शैलेश शर्मा, अनिरूद्ध शर्मा, योगेश पाण्ड़े, राहुल गौड़, गौरव शर्मा, गजेन्द्र शर्मा, शुभम मिश्रा, नयना शर्मा तथा विशाल वाजपेयी ने भाग लिया।[79] इसी तरह 5 से 10 अक्टूबर 2015 तक लघु चित्रण शिविर का (चित्र–48) आयोजन किया गया।

कलावृत्त द्वारा स्मारकीय मूर्तिशिल्प के क्षेत्र में जो कार्य किया गया है वो सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। इस संगठन के सुमहेन्द्र द्वारा रवीन्द्र नाथ टैगोर की 9 फीट ऊँची आदमकद मूर्ति की स्थापना रवीन्द्र मंच, जयपुर के प्रांगण में स्थापित की (चित्र–49) व न्याय देवी की मूर्मि का निर्माण कर सैशन कोर्ट, जयपुर प्रांगण में स्थापित किया गया। संगठन के सुमहेन्द्र ने अपने पैतृक गांव नायन, जयपुर में 6 फीट ऊँची स्वामी विवेकानन्द की मूर्ति का निर्माण कर स्थापित की व 6 फीट ऊँची पण्ड़ित जवाहर लाल नेहरू की मूर्ति का निर्माण कर अमरसर, जयपुर में स्थापित की। सुमहेन्द्र ने ही 6 फीट ऊँची दुर्गादास की आवक्षमूर्ति का निर्माण किया, जिसे बीकानेर में स्थापित किया गया। यह सभी मूर्ति शिल्प पत्थर माध्यम में बनाये गये थे। सुमहेन्द्र द्वारा प्लास्टर ऑफ पेरिस माध्यम में 6 फीट ऊँची रवीन्द्र नाथ टैगोर की मूर्तिशिल्प का निर्माण भी किया गया जिसे दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर में स्थापित किया गया।[80] कलावृत्त द्वारा प्रतिवर्ष एक चित्रकार या चित्र समीक्षक को सम्मानित करते रहने की परम्परा भी बनाई जिसमें कला समीक्षक प्रकाश परिमल, चित्रकार ज्योतिस्वरूप, श्यामसुन्दर, नरोत्तम नारायण शर्मा, लल्लू नारायण शर्मा, रणजीत सिंह जे. चूड़ावाला, वेदपाल शर्मा (बन्नू), समदर सिंह खंगारोत आदि को सम्मानित किया गया। अखिल भारतीय स्तर पर मूर्तिकला शिविरों व प्रदर्शनियों के आयोजनों, मूर्ति स्थापना, पत्रिका प्रकाशन आदि के अलावा कलावृत्त संगठन ने समय–समय पर कलागोष्ठियों,

भाषणमालाओं के माध्यम से राजस्थान के समकालीन कला जगत में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

5.1.5 आज–दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कला संस्था, उदयपुर

प्राचीन अर्वाचीन कला धरोहर को जीवन्त बनाये रखने, इसे नये परिवेश प्रदान करने और सृजन कार्य को जीवन का अभिप्राय बनाकर समाज में सांस्कृतिक एवं सौन्दर्य बोध जागृत करने के उद्देश्य से दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं को प्रोत्साहन देने के लिए, सोसाइटी नियम 1958 के अन्तर्गत 'आज–दृश्य एवं प्रदर्शन कला संस्था' की स्थापना 1979ई. में हुई। इसके पंजीयन क्रमांक 339/79–80 है।[81] इसकी प्रथम कार्यकारिणी में डॉ. के. एन. नाग व प्रो. पी. एन. चोयल को संरक्षक; शीला शर्मा को अध्यक्ष; शैल चोयल, अम्बालाल दमामी, ओम चौहान व किरण मुर्डिया को संस्थापक सदस्य; राजेन्द्र शर्मा को उपाध्यक्ष; भामिनी तलसेरा को सचिव; आशोक हाजरा को संयुक्त सचिव; किरण मुर्डिया को वित्त सचिव; पूर्णिमा कोल को जन–सम्पर्क सचिव बनाया गया तथा इसका मुख्यालय 321 सी–1 रोड़ भूपालपुरा, उदयपुर, राजस्थान को बनाया गया। यह राजस्थान का ऐसा कला संगठन है जो कि दृश्य कला के साथ–साथ प्रदर्शनकारी कलाओं को भी प्रोत्साहन देता है।[82](चित्र–50)

दृश्य कलाओं के विकास के लिए अपने स्थापना वर्ष 1979ई. से ही इस संगठन ने कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। 24 अप्रैल से 29 अप्रैल तक ग्राफिक वर्कशॉप, बड़ौदा के संयुक्त तत्त्वावधान में उदयपुर के सूचना केन्द्र में प्रथम अखिल भारतीय ग्राफिक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसका शुभारम्भ राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल श्री रघुकुल तिलक ने किया।[83](चित्र–51) इस प्रदर्शनी में पॉल कॉर्ल (मुम्बई), एम. करीम (हैदराबाद), शैल चोयल (उदयपुर), परमजीत सिंह (दिल्ली), विकास भट्टाचार्य (कोलकाता), गुलाम मोहम्मद शेख (वड़ोदरा) आदि कलाकारों ने भाग लिया था। प्रदर्शनी के समापन अवसर पर ग्राफिक आर्ट पर एक सेमिनार का आयोजन भी किया गया।[84] इस वर्ष 01 जून से 03 जून तक 'आज' कलाकारों की एक कला प्रदर्शनी का आयोजन उदयपुर के सूचना केन्द्र में किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन कनाड़ा के कलाकार दम्पत्ति ज्याँ पियरे थेरियो ने संगीत लहरी के साथ चित्र बनाकर किया था। प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण तेल रंग, जल रंग, रेखांकनों, मिनियेचर तथा मिश्रित माध्यम में शैलीगत विशेषता और अभिनव प्रयोगों को लेकर बने 38 कलाचित्र थे। इस कला प्रदर्शनी में पी.एन. चोयल के चित्रों में रंगों को रसायनों से फाड़कर तथा वहाँ पर विशेष टेक्सचर और प्रभाव पैदा किया गया था। इनके

चित्र 'माँ बेटा' पर बिजली का गिरना में एक अजीब सा आकर्षण है। शैल चोयल के चित्र राजस्थानी धरती से जुड़े हैं। किरण मुर्डिया राजस्थानी परिवेश रूपाकारों को लेकर स्पेस में आड़ा तिरछा करके कुछ ऐसा रूप देती हैं कि वह भिन्न–भिन्न आयामों में एरियल दृश्य लगते हैं। ओम चौहान की ड्रॅाईंग जोधपुर के स्टोनक्राफ्ट को लेकर श्वेत श्याम में नूतन प्रयोग है। आयतों, चापों, वृत और रेखाओं के द्वारा दृश्य चित्र बनाना इनकी अपनी ईजाद है। चन्द्र मोहन मिश्रा के चित्र बॉयलॉजिकल प्रतीकों की सक्रिय कल्पनाओं के आधार पर बने थे जो उनके गतिमान, संवेदनशील कलाकार होने का सबूत है। अम्बालाल दमामी, विशेष रचना प्रक्रिया द्वारा अजीब प्रभाव पैदा करने में सफल रहे हैं। साइक्लोस्टाइल इंक द्वारा धब्बे, छापे और टेक्सचर को रेखाओं से सहारे गूंथ कर सृजन करना अपना अलग महत्व रखता है। बसन्त कश्यप ने स्याह सफेद तेल रंग में रजवाड़ों की भव्यता को सुन्दर ढ़ंग से अंकित किया है। रामचन्द्र शर्मा नाथद्वारा के कलाकार है। मिनियेचर शैली में बने इनके बारहमासा के दो चित्र विशेष है। भामिनी तलसेरा ने पत्तियों की शिराओं से चित्रों को अभिव्यक्ति दी है, एक रिद्म पैदा की है।[85]

राजस्थान के अन्य कला संगठनों के साथ मिलकर भी 'आज' संगठन के कलाकारों ने कार्य किया। इस क्रम में 2 जुलाई से 6 जुलाई 1979 ई. को प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर के साथ मिलकर अखिल भारतीय ग्राफिक प्रदर्शनी का आयोजन राजस्थान ललित कला आकदमी, जयपुर में किया।[86] इसी वर्ष 01 अगस्त से 15 अगस्त तक पंद्रह दिवसीय टेराकोटा शिविर उदयपुर से 50 मील दूर मौलेला गाँव में आयोजित किया गया। (चित्र–52) इस शिविर में 'आज' के सदस्य कलाकारों ने मौलेला गाँव के टेराकोटा कला के लोक कलाकारों के साथ मिलकर कार्य किया। इस शिविर में एक ओर 'आज' संगठन के सदस्य कलाकार कला में डिग्री–डिप्लोमाधारी थे तो दूसरी ओर मौलेला के लोक कलाकार बिना किसी डिग्री डिप्लोमा के ही पीढ़ियों से संस्कार में मिलती आ रही टेराकोटा कला में निष्णांत थे। 'आज' के कलाकार अपने सामाजिक सरोकारों के प्रति भी सचेत थे। वो उनके प्रति उतने ही निष्ठावान थे जितने कि अपने कलाकर्म के प्रति। विशेष बच्चों के प्रति उनके मन में आदर की भावना थी, वो उनके लिए कुछ नया करना चाहते थे जिससे कि उनकी मानसिक व बौद्धिक क्रियाशीलता को प्रोत्साहन मिल सके। इसी कड़ी में 27 सितम्बर 1979ई. को अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के अवसर पर सूचना केन्द्र, उदयपुर के विशाल मुक्ताकाश प्रांगण में 24 फीट चौड़े व 50 मीटर लम्बे कागज के स्क्रोल पर सैकड़ों स्कूली बच्चों को चित्रण के लिए आमन्त्रित किया गया था। चौदह वर्ष से कम उम्र के इन बाल

कलाकारों ने उक्त कागज पर एक निराली ही रंग बिरंगी दुनिया बनाई थी। इन बच्चों ने बड़ी तन्मयता से परी कथाओं, खेल जगत व दृश्य–जगत की कल्पना को रंग व रेखाओं के माध्यम से लम्बे बिछे कागज को सजा दिया। 'आज' संगठन का यह प्रयास इसलिए भी सराहनीय था कि इसमें 'अन्ध विद्यालय' के जन्मांध बच्चों ने कागज को छू–छू कर क्रेयॉन व पेस्टल रंगों से मनुष्य के शरीर की कल्पना की व चित्रण किया। जिन बच्चों ने मनुष्य को कभी देखा न हो, केवल सुना व ह्रदय से अनुभव किया हो, उनके द्वारा चित्रित मानवाकार काफी प्रशंसनीय है। संगठन ने सभी बालकों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया।[87] इसी वर्ष 16 नवम्बर से 18 नवम्बर तक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर में 'आज' संगठन के कलाकारों ने अपनी समूह कला प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में अपनी चित्रित चित्रकृतियों के साथ अपनी टेराकोटा कला को भी प्रदर्शित किया।

वर्ष 1980 ई. में 01 जनवरी से 07 जनवरी तक आज संगठन की समूह कला प्रदर्शनी का आयोजन मुम्बई की जहाँगीर आर्ट गैलरी में हुआ। इसे वरिष्ठ कलाकारों हैब्बार, आरा, रावल आदि ने काफी सराहा था।[88] इस वर्ष की 18 मार्च को भारतीय पारम्परिक कला विषय पर प्रो. पी. एन. चोयल की वार्ता (चित्र–53) व स्लाइड शो का आयोजन सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। इस वार्ता व स्लाइड शो में प्रो. पी. एन. चोयल ने भारतीय पारम्परिक कला के आरम्भिक परिचय से लेकर उसके सभी प्रमुख पड़ावों की रोचक व ज्ञानवर्धक जानकारियाँ शोधार्थियों को प्रदान की। इसी वर्ष की 25 मार्च को उदयपुर के सूचना केन्द्र में आज संगठन द्वारा डेविड होकनी की दो फिल्मों व टॉम फिलिप्स की एक–एक फिल्म का प्रदर्शन किया। 26 मार्च को आस्ट्रेलिया के चित्रकार जॉन मार्कक्यूज का स्लाइड शो का आयोजन आज के कार्यालय पर किया गया। 30 मार्च से 02 अप्रैल 1980ई. तक 'आज' संगठन की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन ख्याति प्राप्त चित्रकार प्रफूल मोहन्ती ने किया। इस अवसर पर 'आज' संगठन के उन कलाकारों को भी 'आज' की ओर से सम्मानित किया गया जिन्होंने अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी व राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनियों में पुरस्कार प्राप्त किये थे। सम्मानित होने वाले प्रमुख कलाकारों में शैल चोयल, बसन्त कश्यप, दीपिका हाजरा, किरण मुर्डिया, करूणा चौहान आदि थे।

18 सितम्बर से 25 सितम्बर 1980 ई. को 'आज' संगठन ने उदयपुर में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में 8 दिवसीय अखिल भारतीय चित्रकला शिविर का आयोजन महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर में किया गया । इस कला शिविर में 'आज' संगठन के कलाकारों के साथ–साथ तूलिका कलाकार परिषद व

टखमण–28 के कलाकारों को भी आंमत्रित किया गया था । शिविर का उद्घाटन करते हुए उदयपुर विश्वविधालय के तत्कालीन कुलपति डॉ. राजनाथ सिंह ने कहा था कि ''इस तरह के शिविरों में कलाकारों के विचारों का आदान–प्रदान होता है तथा चित्रकला जैसे विषय को सामान्य नागरिक तक पहुंचाना आसान हो जाता है।''[89] इस शिविर में निर्मित चित्राकृतियों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन 30 सितम्बर 1980 ई. को सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया तथा यह प्रदर्शनी 2 अक्टूबर, 1980 ई. तक कला रसिकों के लिए खुली रही। 8 अक्टूबर, 1980 ई. को कोलकाता के चित्रकार निखिल चट्टोपाध्याय के स्लाईड शो का आयोजन 'आज' के कार्यालय पर किया गया । इस स्लाईड शो में चट्टोपाध्याय ने अपनी कृतियों को प्रदर्शित कर उनके निर्माण की तकनीक से कलाकारों को अवगत कराया। 21 अक्टूबर से 29 अक्टूबर 1980 ई. तक 'आज' संगठन के सत्रह चित्रकारों की कला प्रदर्शनी केन्द्रीय ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली की कला दीर्घा में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में भाग लेने वाले राजेन्द्र शर्मा, प्रभा शाह, भामिनी तलसेरा, नीलकमल, किरण मुर्डिया, सुरजीत चोयल, ओम चौहान, ए.एल.दमामी, सी.एम.मिश्रा, शैल चोयल, शीला शर्मा, आभा मुर्डिया, अशोक हाजरा, करूणा चौहान, पूर्णिमा कौल, दीपिका हाजरा और अतिथि कलाकार पी.एन. चोयल थे।[90] अब 'आज' के कलाकार राजस्थान से बाहर भी चर्चित होने लगे थे। इस संगठन के कलाकार शैल चोयल, प्रभाशाह, किरण मुर्डिया, दीपिका हाजरा आदि नियमित दिल्ली, मुम्बई में अपनी प्रदर्शनियों का आयोजन कर रहे थे। 'आज' के इन कलाकारों की अब राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनने लगी थी। 'आज' संगठन ने भगवान ब्रह्मा के पावन धाम पुष्कर, अजमेर में 18 नवम्बर से 22 नवम्बर 1980 ई. में पुष्कर मेले के अवसर पर समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया। यहाँ रहकर संगठन के कलाकारों ने पुष्कर के नैसर्गिक वातावरण को निहारा व अपने कैनवास पर उतारा। विकलांग बच्चों के प्रति भी 'आज' संगठन की सह्रदृयता रही। 'विकलांगता वर्ष' के अवसर पर 07 दिसम्बर 1980 ई. को उदयपुर के सूचना केन्द्र में विकलांग बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया (चित्र–54) व 08 अप्रैल 1981 ई. को इन्हीं बच्चों द्वारा बनाई गयी कलाकृतियों की प्रदर्शनी का आयोजन उदयपुर के सूचना केन्द्र में किया गया।

03 मई से 06 मई 1981 ई. तक 'आज' संगठन के सदस्य कलाकारों की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। 'आज' संगठन केवल राजस्थान में ही अपनी गतिविधियों का संचालन नहीं कर रहा था, उसका दायरा राजस्थान से बाहर फैल चुका था। उसके कलाकार राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुके थे। आज संगठन के पदाधिकारियों, सदस्यों की एक बैठक में निर्णय लिया गया कि अब

संगठन को केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली से भी मान्यता दिलवानी चाहिए। इस हेतु संगठन के पदाधिकारियों ने 7 अगस्त 1981 ई. को एक पत्र (क्रमांक एएजे/195/81) केन्द्रीय ललित कला अकादमी को प्रेषित किया। 18 अक्टूबर से 28 अक्टूबर 1981 ई. को खान व भू सर्वेक्षण विभाग, राजस्थान के सहयोग से उदयपुर में सेरेमिक कैम्प का आयोजन किया गया। 13 नवम्बर 1981 ई. को 'आज' कार्यालय में डॉ. रतन परिमू की 'आज' के सदस्य कलाकारों से भेंट वार्ता हुई। इस अवसर पर उन्होंने अपनी कृतियों पर स्लाइड शो भी प्रस्तुत किया और 'आज' के सदस्य कलाकरों के साथ उदयपुर भ्रमण भी किया। 28 नवम्बर 1981 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा आज संगठन को मान्यता प्रदान की गई। (चित्र–55) 16 दिसम्बर से 20 दिसम्बर 1981 ई. को 'आज' कला संगठन के चित्रकारों की पाँच दिवसीय चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के सहयोग से पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ की संग्रहालय दीर्घा में हुआ यह प्रदर्शनी काफी सराही गयी।[91]

23 जनवरी 1982 ई. को 'आज' के सदस्य कलाकारों ने 'आज' के उदयपुर कार्यालय में गोवा आर्ट स्कूल के प्राध्यापकों व विद्यार्थियों के लिए अपने कलाकर्म पर आधारित एक स्लाइड शो का आयोजन किया । इस में गोवा आर्ट स्कूल के प्राध्यापकों व विद्यार्थियों ने राजस्थान के कलाकारों द्वारा समकालीन कला में किये जा रहे नवीन प्रयोगों को जाना। 19 मार्च से 3 अप्रेल 1982 ई. को नई दिल्ली में आयोजित दूसरे राष्ट्रीय कला मेला में 'आज' संगठन के नौ सदस्य कलाकारों ने भाग लिया। 08 अप्रेल 1982 ई. में 'आज' संगठन द्वारा उदयपुर के सूचना केन्द्र में गोवा के चित्रकार लक्ष्मण पै के स्लाइड़ शो का आयोजन किया गया । इस के माध्यम से लक्ष्मण पै(चित्र–56) ने अपनी कलाकृतियों के बारे में दर्शकों को बताया। 10 मई से 12 मई 1982 ई. को यही पर 'आज' संगठन की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । सूचना केन्द्र, उदयपुर में ही 03 सितम्बर 1982 ई. को शैल चोयल ने भारतीय समकालीन ग्राफिक कला पर वार्ता (चित्र–57) व स्लाइड शो प्रस्तुत किया। 'आज' संगठन को केन्द्रीय ललित कला अकादमी से मान्यता दिलवाने के लिए पूर्व में किए प्रयास 30 नवम्बर 1982 ई. को ललित कला अकादमी, नई दिल्ली से मान्यता पत्र Lk/142 1-19/G+S प्राप्त होने के साथ सफल हो गये । इस पत्र में अकादमी से मान्यता प्राप्त होने की तिथि 06.10.1982 अंकित है।[92] अब संगठन राजस्थान ललित कला अकादमी,जयपुर व केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त कर चुका था। 'आज' संगठन को कलात्मक गतिविधियों के लिए दोनों अकादमियों से

आर्थिक अनुदान मिलने से अब उसके कार्यक्रम पहले से अधिक भव्य होने लगे थे। 20 दिसम्बर से 25 दिसम्बर 1982 ई. में केन्द्रीय ललित कला अकादमी के क्षेत्रीय केन्द्र, चेन्नई में 'आज' संगठन के सदस्य चित्रकारों ने समूह चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया तथा चोला मण्डल कलाकार गाँव व महाबलीपुरम का भ्रमण भी किया ।

06 फरवरी 1983 में बड़ौदा के सुप्रसिद्ध चित्रकार भूपेन खक्खर के उदयपुर आगमन पर 'आज' द्वारा एक कला गोष्ठि आयोजित की गई। गोष्ठि में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय एवं पाश्चात्य कला आन्दोलनों एवं कला समीक्षा पर विचार प्रस्तुत किए गये । इस कला गोष्ठि में पी. एन. चोयल, ए. एल. दमामी, तेज सिंह, शैल चोयल, किरण मुर्डिया, नीलकमल आदि ने भाग लिया था ।[93] 07 फरवरी 1983 ई. को सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई के प्रो. लॉवेट ने आज के कार्यालय में स्लाईड शो के द्वारा अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया ।[94] 31 मई 1983 ई. को ग्राफिक शिविर व प्रदर्शनी का आयोजन 'आज' संगठन द्वारा राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस, जयपुर में किया गया । कलाकारों व कला प्रेमियों के लिए 17 जुलाई से 19 जुलाई 1983 ई. को उदयपुर के सूचना केन्द्र, उदयपुर (17 जुलाई), मेडिकल कॉलेज, उदयपुर (18 जुलाई) व 'आज' कार्यालय, उदयपुर (19 जुलाई) में 'आज' संगठन ने ब्रिटिश काउन्सिल, मुम्बई के सौजन्य से प्राप्त तीन कला विषयक फिल्मों का प्रदर्शन किया । फिल्मों के शीर्षक थे –

1. हेनरी मूर–लैंग्वेज ऑफ स्कल्पचर
2. रिचर्ड स्मिथ–प्राईवेट लैडस्केप व
3. डेविड होकनी व उनके चित्र

तीनों ही फिल्में उदयपुर के कलाकारों व कलाप्रेमियों द्वारा काफी सराही गयी।[95]

09 नवम्बर से 14 नवम्बर 1983 ई. तक उदयपुर की आधुनिक कला दीर्घा में आज संगठन के सदस्य कलाकारों की समूह चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया व 24 नवम्बर से 30 नवम्बर 1983 ई. तक बेंगलुरू के कुमार कृष्ण आर्ट कॉम्पलेक्स में संगठन की समूह चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इसी वर्ष 'आज' के सक्रिय चित्रकार सदस्य बसन्त कश्यप की एकल चित्र प्रदर्शनी का आयोजन अहमदाबाद की आधुनिक कला दीर्घा में किया गया।

03 मार्च 1984 ई. को प्रो. पी. एन. चोयल के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से सेवानिवृत होने पर 'आज' की ओर से सूचना केन्द्र, उदयपुर में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। 11 मार्च 1984 ई. को इन्दौर में संगठन के संस्थापक सदस्य प्रो. शैल चोयल का व्याख्यान कार्यक्रम हुआ। 09 मई से 18 मई 1984 ई. तक सी. टी. ए. ई. कॉलेज, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में 'आज' संगठन ने म्यूरल शिविर का आयोजन सी. टी. ए. ई. कॉलेज कैम्पस में हुआ। इस म्यूरल शिविर में तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर के दो सदस्य कलाकार रामेश्वर सिंह राजपूत व तेजसिंह को आंमत्रित किया गया था। 'आज' के सदस्य कलाकारों के साथ–साथ आंमत्रित अतिथि कलाकारों ने इस नौ दिवसीय शिविर में म्यूरल कलाकृतियों का सृजन किया। इस शिविर में सी. टी. ए. ई. कॉलेज के मुख्य भवन की 40'x30' की भित्ति के लिए म्यूरल तैयार किया गया।[96] 'आज' द्वारा अखिल राजस्थान लघुचित्र आधारित प्रदर्शनी का आयोजन 13 सितम्बर 1984 ई. को सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। इस प्रदर्शनी में से सर्वोत्कृष्ट चित्रों का चयन जाने–माने भारतीय चित्रकार वी. एस. गायतोण्डे ने किया। इसमें से पाँच कलाकारों हरेन्द्र सौलंकी (देवगढ), संदीप शर्मा (जयपुर), लाल चन्द मारोठिया (जयपुर), पृथ्वी सिंह कच्छावा (जयपुर), राजेन्द्र सोनी की कलाकृतियाँ अवार्ड के लिए चयनित की गई।[97] सभी चयनित कलाकारों को नरेन्द्र सिंह सिसोदिया, तत्कालीन आयुक्त, ट्राईबल डवलपमेन्ट, राजस्थान ने सम्मानित किया। उक्त प्रदर्शनी का ध्येय किसी भी रूप में लघु चित्रों की अनुकृतियाँ करना नहीं वरन सृजनशील व रचनाधर्मी चित्रकारों के द्वारा अपनी ही विधिवत शैली में परिष्कार लाना रहा। प्रदर्शनी में चित्रों का आकार 1 वर्ग इन्च से 200 वर्ग इन्च तक रखा गया। इस प्रदर्शनी में कलाकारों के तीन स्तर रखे गये – अतिथि कलाकार, प्रतियोगी कलाकार और 'आज' कला संगठन के सदस्य कलाकार। पुरस्कार केवल प्रतियोगी कलाकारों के स्तर में ही प्रदान किये गये।[98] 20 नवम्बर 1984 ई. को संगठन के सदस्य चित्रकार बसन्त कश्यप ने बड़ौदा में एकल चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया। वहीं 21 नवम्बर से 26 नवम्बर 1984 ई. तक 'आज' के संरक्षक कलाकार प्रो. पी. एन. चोयल व सदस्य कलाकार प्रो. शैल चोयल व सुरजीत कौर की समूह प्रदर्शनी जहाँगीर आर्ट गैलरी, बोम्बे में आयोजित की गई।

12 अप्रेल 1985 ई. को थॉमस सोकोलोवेस्की, निदेशक, ग्रे आर्ट गैलरी एण्ड स्टडी सेन्टर, न्यूयार्क यूनिवर्सिटी के स्लाइड शो एवं वार्ता का आयोजन 'आज' संगठन ने सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया। इस वर्ष की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन 16 अप्रेल से 19 अप्रेल तक सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। इसी वर्ष की 12 मई को उदयपुर में दो दिवसीय कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में 'आज' संगठन के पी.

एन. चोयल, शैल चोयल, किरण मुर्डिया, बसन्त कश्यप, सुरजीत कौर चोयल, नीलकमल, अब्बास बाटलीवाला आदि ने भाग लिया । यह प्रदर्शनी तूलिका कलाकार परिषद् उदयपुर ने 'आज' संगठन व कन्टेम्परॅरि आर्ट गैलरी के संयुक्त सहयोग से आयोजित की थी।[99] 'आज' संगठन द्वारा 21 जून से 30 जून 1985 ई. में अखिल भारतीय चित्रकार शिविर का आयोजन उदयपुर में किया गया । इस वर्ष के जुलाई माह में 'आज' संगठन ने सी.टी.ई.ए. कॉलेज, उदयपुर के सहयोग से द्वितीय म्यूरल शिविर का आयोजन किया। 03 अगस्त से 05 अगस्त 1985 ई. में सूचना केन्द्र, उदयपुर में समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसी माह की 17 व 19 तारीख को टाउन हॉल, उदयपुर में भी समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 05 नवम्बर से 08 नवम्बर 1985 ई. में 'आज' के सदस्य कलाकारों की एक समूह प्रदर्शनी का आयोजन समकालीन कला दीर्घा, अहमदाबाद में किया गया।

वर्ष 1986 ई. के फरवरी माह में 'आज' के सदस्य कलाकारों ने नई दिल्ली में आयोजित कला मेला में भाग लिया व इसी वर्ष 16 से 26 मई तक अखिल भारतीय छापा चित्रकार शिविर का आयोजन उदयपुर में किया गया तथा 26 मई से 30 मई तक सूचना केन्द्र, उदयपुर में छापा आधारित समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस वर्ष के सितम्बर माह में 'आज' संगठन की दो सफल महिला चित्रकार किरण मुर्डिया व सुरजीत चोयल की प्रदर्शनी मुम्बई की जहाँगीर आर्ट गैलरी में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी से महिला चित्रकारों को प्रेरणा मिली। महिलाओं के भीतर छुपा हुआ चित्रकार बाहर आने लगा तथा वह सृजन करने में व्यस्त हुई।[100] 'आज' द्वारा 10 अक्टूबर से 13 अक्टूबर 1986 ई. में महिला चित्रकारों की समूह प्रदर्शनी का आयोजन सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। इसी प्रकार 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 1986 ई. में मोलेला गांव में अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का शुभारम्भ मोलेला के वरिष्ठ लोक कलाकार खेमराज ने किया। इस शिविर में बड़ौदा से महेन्द्र पाण्ड्या, त्रिवेन्द्रम से एस. राधाकृष्णन, आस्ट्रेलिया से टोनी वब्रुटन, बेंगलुरू से लक्ष्मी जोशी, दिल्ली से प्रभा शाह, उदयपुर से सुरजीत कौर चोयल, किरण मुर्डिया, नीलकमल, बसन्त कश्यप, शैल चोयल, ए. एल. दमामी, त्रिलोक श्रीमाली, नाथद्वारा से भंवर शर्मा, मोलेला से दिनेश कुमार व मांगीलाल प्रजापति ने भाग लिया।[101] इस शिविर की तीन घंटे की विडियों रिकार्डिंग की गई। जिसे बाद में सम्पादन कर आधे घंटे की शोर्ट फिल्म बनायी गई। इस वर्ष में टोनी वब्रुटन, लक्ष्मी जोशी, महेन्द्र पाण्ड्या, पी. एन. चोयल, डॉ. शैल चोयल, सुरजीत कौर, किरण मुर्डिया आदि के स्लाईड शो भी समय–समय पर आयोजित किये जाते रहे ।

04 अगस्त से 09 अगस्त 1987 ई. तक लूव्र संग्रहालय, फ्रान्स की 'चित्रमय फ्रान्स' नामक प्रदर्शनी का आयोजन सूचना केन्द्र, उदयपुर में किया गया। यह आयोजन 'आज' संगठन ने फ्रेन्च दूतावास के सांस्कृतिक विभाग के सहयोग से किया था। इस प्रदर्शनी में लूव्र संग्रहालय की काल्कोग्राफी के चित्र प्रदर्शित किये गये थे। 22 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 1987 ई. तक अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर का आयोजन किया गया ।

14 मार्च 1988 ई. को 'आज' कार्यालय में हेनरी मूर सेन्टर फॉर स्टडी ऑफ स्कल्पचर, यू. के. के निदेशक रोर्बट हॉपर ने मूर्तिकला के कहानी चित्रों के बारे में व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस वर्ष की 16 मई से 26 मई तक संगठन द्वारा अखिल भारतीय ग्राफिक शिविर का आयोजन किशनगढ़, उदयपुर में किया । इस शिविर में बीस ग्राफिक कलाकारों ने भाग लिया[102] व 24 मई से 27 मई तक 'आज' संगठन की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में किशनगढ़ में चल रहे अखिल भारतीय ग्राफिक शिविर में पधारे हुए ख्यातनाम ग्राफिक चित्रकार ज्योति भट्ट, रीनी धूमल, पी. डी. धूमल, अनूप सूद, जय झरोठिया, पॉल कोल, कृष्ण आहूजा, एन. दीक्षित आदि उपस्थित थे। 28 सितम्बर से 04 अक्टूबर 1988 ई. तक 'आज' के पंद्रह सदस्य चित्रकारों की जहाँगीर आर्ट गैलरी, बोम्बे में समूह चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में सुरजीत कौर चोयल, अब्बास अली बाटलीवाला, नीलकमल, प्रभा शाह, बसन्त कश्यप, अशोक कुमार, पी. एन. चोयल, शैल चोयल, किरण मुर्डिया तथा त्रिलोक श्रीमाली की कृतियों को दर्शकों ने विशेष रूप से सराहा। 26 अक्टूबर 1988 ई. में एलिक पद्मसे के उदयपुर आगमन पर 'आज' के सदस्य कलाकारों की चित्रकृतियों व 'ऑन नाथद्वारा–द स्प्रिट इज लाइव' के स्लाईड़ शो का आयोजन 'आज' के कार्यालय पर किया गया।[103]

06 जनवरी 1989 ई. में आज के संरक्षक प्रो. पी. एन. चोयल के चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन सूचना केन्द्र, उदयपुर में मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर के तत्कालीन उप कुलपति डॉ. आर. एन. सिंह ने किया । 'आज' द्वारा 15 मई से 24 मई 1989 ई. तक अखिल भारतीय चित्रकार शिविर का आयोजन किशनगढ़, उदयपुर में किया गया। इस शिविर में नरेननाथ (दिल्ली), बालकृष्ण पटेल (अहमदाबाद), सी. एम. मिश्रा (देहरादून), तेजसिंह, नन्दवाना, मीना बया, रामेश्वर सिंह (उदयपुर) व 'आज' के सदस्य चित्रकारों ने भाग लिया । इस शिविर में 17 मई को नरेननाथ, 18 मई को प्रो. पी. एन. चोयल, शैल चोयल, सुरजीत कौर चोयल, 19 मई को किरण मुर्डिया, बसन्त कश्यप, रामेश्वर सिंह, 20 मई को आज के अन्य सदस्य चित्रकारों की चित्रकृतियों पर आधारित

स्लाईड शो का प्रदर्शन भी किया गया। 25 दिसम्बर 1989 ई. को मौलेला गाँव में 'आज' संगठन द्वारा टेराकोटा शिविर का आयोजन किया गया । इस शिविर में 16 कलाकारों ने भाग लिया। जिनमें शशि अरोड़ा (दिल्ली), प्रभा शाह (दिल्ली), सी. एम. मिश्रा (देहरादून), एम. के. शर्मा 'सुमहेन्द्र' (जयपुर), शीला शर्मा (वनस्थली), ओम चौहान, शैल चोयल, प्रभा शाह, बसन्त कश्यप, त्रिलोक श्रीमाली, तेज सिंह, अशोक कुमार, किरण मुर्ड़िया, नीलकमल, (सभी उदयपुर) व फ्रेन्च महिला आर्टिस्ट रोसालिया आदि प्रमुख थे। स्थानीय लोक कलाकार बग्गाजी व उदयलाल ने सभी अतिथि कलाकारों को कुमकुम लगा व नारियल भेंट कर इस शिविर का शुभारम्भ किया था । शिविर में स्थानीय परम्परागत टेराकोटा कलाकारों के साथ मिलकर अतिथि कलाकारों नें रामायण पर आधारित कुछ टेराकोटा कृतियों की रचना की । इस शिविर में सभी कलाकारों ने टेराकोटा कला में नये–नये प्रयोग किये । सी. एम. मिश्रा ने आसपास के मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के टूटे–फूटे बर्तनों को एकत्र कर 30 कलात्मक कृतियों का निर्माण किया। प्रभा शाह ने सजावटी मोटिफ में कार्य कर खिलोनों के आकारों से अपनी कृतियों को सजाया। कुमार अशोक ने परम्परा व आधुनिकता का मिश्रण करते हुए 'लवर्स' शीर्षक से प्रेम आधारित पाँच फलक तैयार किये। नीलकमल व किरण मुर्डिया ने परम्परागत अलंकरणों का प्रयोग कर फलको का निर्माण किया। शैल चोयल ने 23x7 फीट के रिलिफ का निर्माण किया, सुमहेन्द्र व तेज सिंह ने त्रिआयामी स्थापत्य को बनाया वहीं फ्रेन्च आर्टिस्ट रासोलिया ने राजस्थानी महिला का पोट्रेट बना कर सभी को चौका दिया । प्रतिदिन सन्ध्या के समय कलाकारों के दिनभर के कार्यों का स्लाईड शो हुआ करता था जिसमें उनके काम करने के तौर तरीकों पर चर्चा हुआ करती थी। 01 जनवरी 1990 ई. को शिविर का समापन हुआ। इस शिविर में बनी सभी कलाकृतियों को कला मेला व भारत में आयोजित सातवें त्रिनाले में प्रदर्शित किया गया। वर्ष 1990 ई. में संगठन से जुडे सभी कलाकारों के रंगीन मोनोग्राफ्स (चित्र–58) प्रकाशित किये गये।

फरवरी,1991 ई. में 'आज' संगठन के दस सदस्य चित्रकारों ने ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित कला मेला में भाग लिया । 10 मई से 20 मई 1991 ई. तक 'आज' के द्वारा प्रिन्ट मेकिंग शिविर का आयोजन अधिकारी प्रशिक्षण केन्द्र, उदयपुर में किया गया। इस शिविर में 17 कलाकारों–सुमित घिल्डियाल, सुरेन्द्र जोशी, सपना शर्मा, सी.एस.मेहता, शैल चोयल, सुरजीत कौर चोयल, बसन्त कश्यप, किरण मुर्डिया, अब्बास बाटलीवाला, त्रिलोक श्रीमाली, मीना बया, आभा मुर्डिया, मो. यूनूस, नरेन्द्र सिंह, मो. मकबूल,

एकेश्वर हटवाल, सी.एम. मिश्रा और कला समीक्षक सुरेन्द्र मंजुल ने भाग लिया।[104] इस शिविर में निर्मित कलाकृतियों को 25 जुलाई 1991 ई. को सूचना केन्द्र, उदयपुर में एक प्रदर्शनी आयोजित कर प्रदर्शित किया गया। पूर्व में मोलेला में आयोजित अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर में निर्मित कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी का आयोजन 23 सितम्बर से 25 सितम्बर 1991 ई. में सूचना केन्द्र,उदयपुर में किया गया। 'आज' कार्यालय में 10 अप्रेल 1991 ई. को फ्रेन्च महिला चित्रकार रोसालिया ने वैष्णव धर्मशास्त्र व उससे जुड़ी वल्लभ सम्प्रदाय की पिछवाई कला पर चर्चा की। 26 अक्टूबर 1991 ई. को अखिल भारतीय चित्रकार शिविर का आयोजन उदयपुर में किया गया। इस अवसर पर शिविर में अतिथि चित्रकार के रूप में आमंत्रित प्रसिद्ध चित्रकार इटालियन एप्लाईड आर्टिस्ट सेलवान न्यूकिओ ने भारतीय लोक और पारम्परिक प्रतीक चिन्हों को समकालीन एप्लाईड और ग्राफिक आर्ट में कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है, विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। 10 नवम्बर से 16 नवम्बर 1991 ई. को 'आज' संगठन के संरक्षक प्रो. पी. एन. चोयल, संस्थापक सदस्य डॉ. शैल चोयल, सुरजीत कौर चोयल की समूह प्रदर्शनी का आयोजन राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर में हुआ। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान की तत्कालीन संस्कृति मंत्री पुष्पा जैन के कर कमलों द्वारा किया गया।[105]

जनवरी, 1992 ई. में 'आज' संगठन के कलाकार सदस्यों ने ललित कला अकादमी द्वारा बोम्बे में आयोजित कला मेला में भाग लिया। फरवरी 1992 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी ने राजस्थान कला मेला का संयोजक 'आज' संगठन के कलाकार सदस्य बसन्त कश्यप को बनाया। यह कला मेला उदयपुर में आयोजित किया गया। इस कला मेला में 'आज' के कलाकारों ने न केवल भाग लिया अपितु आयोजन में सहयोग भी किया। इसी माह में ही बोम्बे में सिटी बैंक की ओर से आयोजित सिटी उत्सव में 'आज' के कलाकार सदस्यों ने भाग लिया । 01 मार्च से 02 मार्च तक 'आज', उदयपुर और 'सहमत', दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय चित्रकारों की एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन दिल्ली के चेतक सर्किल के पास किया गया। यह प्रदर्शनी 'साम्प्रदायिकता के विरूद्ध कलाकार' विचारधारा पर आधारित थी। 03 मार्च 1992 ई. में वरिष्ठ चित्रकार आर. बी. भास्करन उदयपुर भ्रमण के लिए आए। इस अवसर पर उन्होंने 'आज' के सदस्य चित्रकारों से कलात्मक संवाद किए तथा 'आज' के ग्राफिक स्टूडियों का भी अवलोकन किया। इस माह में संगठन के अब्बास बाटलीवाला की एक चित्र प्रदर्शनी उदयपुर के सूचना केन्द्र में लगाई गई। 12 जून 1992 ई. को जनजाति शोध संस्थान, उदयपुर में अखिल भारतीय चित्रकार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्घाटन वरिष्ठ चित्रकार

गोवर्धन लाल जोशी ने किया। शिविर में चित्रकार किशोर राण्ड़ीवे (बोम्बे), वर्षा राण्डीवे (बोम्बे), वी. एल. मेवाड़ा (बड़ौदा), सी. एम. मिश्रा (देहारादून), सुरेन्द्र जोशी (जयपुर) सुरेन्द्र मंजुल (जयपुर), शीला शर्मा (वनस्थली), प्रो. पी. एन. चोयल, जी. एल. जोशी, डॉ. शैल चोयल, अब्बास बाटलीवाला, सुरजीत कौर, किरण मुर्डिया, त्रिलोक श्रीमाली, कुमार अशोक, ए. एल. दमामी, बसन्त कश्यप व रामेश्वर सिंह (सभी उदयपुर) ने भाग लिया। 23 जुलाई 1992 ई. को जापान का कलाकार समूह 'शिमनगिको' उदयपुर की यात्रा पर आया। इस अवसर पर 'आज' संगठन ने होटल जगत निवास में एक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में मेवाड़ की लघु चित्रशैली, लोक कला व समकालीन कला का प्रदर्शन किया गया। 01 नवम्बर से 06 नवम्बर 1992 ई. तक जयपुर के कला संगठन 'हस्ताक्षर' द्वारा आयोजित अखिल भारतीय चित्रकार शिविर में संगठन की सक्रिय महिला चित्रकार किरण मुर्डिया ने भाग लिया।

02 अप्रेल से 08 अप्रेल 1993 ई. तक 'आज' के सदस्य कलाकारों ने भण्डारी दर्शक मण्डप में कला प्रदर्शनी का आयोजन किया। 25 अप्रेल 1993 ई. में उदयपुर स्थापना दिवस पर 'आज' संगठन के कलाकारों ने एक समूह कला प्रदर्शनी का आयोजन किया। 17 मई से 27 मई 1993 ई. तक अखिल भारतीय प्रिन्ट मेकिंग शिविर का आयोजन किया गया। यह ग्यारह दिवसीय आयोजन पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, बागोर की हवेली, उदयपुर में किया गया। इस शिविर में चौबीस प्रिन्ट मैकर्स ने भाग लिया था जिनमें प्रमुख रूप से कविता नय्यर (दिल्ली), के.आर. सुब्बान्ना (दिल्ली), प्रभाशाह (दिल्ली), अभिजित रॉय (बड़ौदा), कश्यप पारिख(बड़ौदा),सरोज सिंह (लखनऊ), सरोज भाटिया (लखनऊ), सुरेन्द्र जोशी (जयपुर) व राजेन्द्र सिंह (जयपुर) थे। इस शिविर में कुल 35 प्रिन्टों का सृजन हुआ जो कि लिथोग्राफ, एंचिग, ड्राईपाईन्ट, विस्कोसिटी और कोलोग्राफ तकनीक से बनाये गये थे। 23 सितम्बर 1993 ई. में फ्रेन्च महिला चित्रकार मेरी एस. रोसालिया की 'वैष्णव धर्म और दृश्य कला' विषय पर आधारित वार्ता का आयोजन किया गया व इसी वर्ष की 25 दिसम्बर को चेन्नई के आर.बी. भास्करन की 'एशिया में प्रिंटमेकिंग की सम्भावनाएं' विषय पर आधारित वार्ता का आयोजन भी किया गया।

10 जनवरी से 15 जनवरी 1994 ई. तक 'आज' संगठन ने ग्राफिक प्रिन्ट्स आधारित प्रदर्शनी का आयोजन भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर में किया। 30 मार्च 1994 ई. में मलेशिया के अब्राहम हुसैन की 'अमेरिका में वस्तु निरपेक्ष कला आन्दोलन' विषय पर एक कलावार्ता का आयोजन किया गया। 14 अप्रैल से 19 अप्रैल 1994 ई. तक

मुम्बई की जहांगीर आर्ट गैलरी में आयोजित 'आज' की चित्रकला प्रदर्शनी ने राजस्थान की समकालीन कला की स्थिति को राष्ट्रीय स्तर पर उकेरा।[106] 14 अगस्त से 20 अगस्त 1994 ई. तक अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर का आयोजन मौलेला गाँव में किया गया। इस शिविर में 22 समकालीन कलाकारों ने स्थानीय लोक कलाकारों से आपस में अन्तःसंवाद करके लगभग 100 कलाकृतियों का निर्माण किया। 22 समकालीन कलाकारों में से 10 कलाकार गुजरात, दिल्ली, कर्नाटक, जम्मू कश्मीर और चण्डीगढ़ के थे तथा 12 कलाकार इसी संगठन से थे। 7 अक्टूबर से 16 अक्टूबर 1994 ई. तक पूर्व में आयोजित अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर, मोलेला की कृतियों की प्रदर्शनी भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर में आयोजित की गई। जिसमें प्रेम सिंह, शशि अरोडा, महेन्द्र पन्ड्या, एस.राधाकृष्ण एवं कई उभरते हुए कलाकारों के साथ–साथ 'आज' के सदस्य कलाकारों का कार्य भी प्रदर्शित किया गया था।

वर्ष 1995 ई. में 'आज' कार्यालय में फरवरी, अप्रेल एवं जून में तीन बार समसामयिक चित्रकारों की पारदर्शियों का प्रदर्शन एवं समसामयिक कला विषय पर वार्ता आयोजित की गई। इस वर्ष ही 'आज' ने जापानी कला प्रशंसक ओक्यूमारा के साथ कलागोष्ठि की एवं संगठन के चित्रकार प्रो. पी.एन. चोयल, शैल चोयल, सुरजीत कौर चोयल, किरण मुर्डिया के चित्र जून, 1995 ई. में जापान में होने वाली प्रदर्शनी के लिए चयनित किये गये। अक्टूबर, 1995 ई. में भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर व आज के संयुक्त तत्वावधान में 'दस दिवसीय राष्ट्रीय चित्रकार शिविर' का आयोजन उदयपुर में किया गया। इस शिविर में चण्ड़ीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्ट्स के तत्कालीन प्राचार्य व प्रसिद्ध चित्रकार प्रेम सिंह, मुम्बई के चित्रकार दीपक शिन्दे, दिल्ली के चित्रकार उमेश वर्मा व प्रभा शाह, ओडिशा मूल के जतिन दास(चित्र–59) के साथ 'आज' कला समूह के सदस्य चित्रकारों ने भाग लिया। इस चित्रकार शिविर में जतिन दास ने एक साक्षात्कार में कहा था कि – "एक कलाकार का कभी अन्त नहीं होता वह अपनी कलाधर्मिता की बदौलत संजीवनी पाए होता है। पाश्चात्य सोच का सहारा लेकर आगे बढ़ने के पक्षधरों का विरोध करने वाले जतिनदास का कहना था कि हमारे यहाँ भी कला का सुविकसित उत्सव रहा है। यहाँ कला का निरन्तर परिशोधन होता रहा है। उसकी अपनी चितंन धारा है, तत्व शक्ति है, उसी को हमें ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रसंग में उन्होंने भारतीय पारम्परिक चित्रकला की अजन्ता, एलोरा, बौद्ध मठों, खजूराहों शिल्प तथा नाथद्वारा और पहाड़ी शैलियों का जिक्र किया तथा उसमें छिपी ऊर्जा को पहचानने और उसे ग्रहण करने की बात कही। उन्होंने कला की

पुरातन देन को व्याख्यायित किया तथा कहा कि हिन्दुस्तानी कला को समय की सीमा में बांधा नहीं जा सकता।''[107] कला में रसास्वादन की बात पर जतिनदास ने कहा कि–''हमारा कलात्मक बोध बहुत ऊँचा है। जो कलाकार बढ़िया रेखांकन कर सकता है, वही सच्चा कलाकार है किन्तु विडम्बना ही है ज्यों ही मानव को जीवन का रसास्वादन होने लगता है, वह नियति के हाथों उठा लिया जाता है।''[108]

'आज' संगठन द्वारा उदयपुर के पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र में 14 जून से 23 जून 1997 ई. में 'अखिल भारतीय छापा कला शिविर' का आयोजन भी अपने आप में अनूठा रहा। इसमें जय झरोठिया (दिल्ली), सुशांत गुहा (दिल्ली), ब्रह्म प्रकाश (दिल्ली), सपना शर्मा (दिल्ली), वी. नागदास (केरल), विशाखा आप्टे (भोपाल), राजेश अम्बालकर (भोपाल), सी.एम. मिश्रा (देहरादून), मधुकर (मुम्बई), रामेश्वर सिंह (जयपुर) (चित्र–60) सहित उदयपुर के स्थानीय चित्रकारों ने संभागी बनकर अनेक उत्कृष्ट एवं प्रभाववादी छापा–चित्र सृजित कर अपने मनोभावों एवं संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति की। तकनीकी दृष्टिकोण से इस शिविर में एचिंग एवं लिथोग्राफ दो विधियों का प्रयोग करते हुए छापे चित्र तैयार किए गए। शिविर के आयोजनों का एक पक्ष यह भी होता है कि संभागी चित्रकारों की सृजनयात्रा के दौरान बनाई अनेक कृतियों की पारदर्शियों को स्क्रीन पर स्लाइड शो दिखाकर उनके सन्दर्भ में चर्चाएँ, आलोचनाऐं करना तथा उठे विवादों, समस्याओं एवं प्रश्नों का निराकरण करना। इससे भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के विविध तकनीकी, भौतिक एवं मानसिक पक्षों के अनेक कारणों, तरीकों, विवरणों एवं गहराइयों को परस्पर समझने–समझाने का मंच मिलता है। इस दृष्टि से यह शिविर सार्थक रहा।[109]

'आज' ने प्रदर्शनकारी कलाओं के प्रोत्साहन के लिए भी कार्य किया। इस संगठन के संरक्षक प्रो. पी.एन. चोयल चित्रकार होने के साथ–साथ एक सफल लेखक एवं नाटककार भी थे। उनके द्वारा लिखित व निर्देशित कलात्मक नाटक 'चलते–फिरते बुत' (चित्र–61) तत्कालीन कला संदर्भो में अधिक चर्चित रहा था।[110] अप्रैल, 1985 ई. में मलयालम के नाट्यकार एवं निर्देशक वालम नारायण पणिकर के नाटक 'पशु–गायत्री' में 'आज' के भानु भारती ने नाटक के पात्रों को अरावली की कंदराओं में रहने वाले भील आदिवासियों के 'गवरी' उत्सव के फार्म में प्रस्तुत किया। 'पशु गायत्री' के काव्य–प्रतीकों और कथानक को 'गवरी' फार्म में ऐसे संजोया गया था कि उसे आदिवासी भील दर्शकों और आधुनिक शहरी दर्शकों ने समान रूप से ग्रहण किया। नाट्य कथा का भाषांतरण मेवाड़ी भाषा में दीपक जोशी ने किया था।[111]

'आज' ने 'दिशा नाट्य संस्थान, उदयपुर' के साथ मिलकर 'काल–कथा'(चित्र–62) नामक नाटक का मंचन भी किया था। इस नाटक में भीलों को कलाकार के रूप में प्रस्तुत किया गया था। नाटक में प्रमुख भील कलाकार खेमा, देवा, माना, रोड़ाराम, नन्दा, पन्ना, स्वरूप, खुमान, अम्बा, तुलसी, हीरा, सुगनी, मोहिनी आदि थे।[112] 'काल–कथा' नाटक का मंच 'आज' संगठन के संस्थापक सदस्य शैल चोयल द्वारा तैयार किया गया था जबकि इस नाटक का लेखक व निर्देशन भानु भारती ने किया था। इस कथा में बरसों से पड़ रहे सूखे से त्रस्त ग्रामीण भैरव के भक्त 'भोपा' के पास जाते हैं। पुजारी भोपा में भैरव प्रकट हो एक कुंवारी कन्या की बलि देने पर वर्षा होने की बात कहते है। कबीले के लोग एक नवयुवती 'गौरी' की बलि चढ़ाना चाहते हैं, लेकिन वह कबीला छोड़ भागती है और देह–व्यापारियों के हाथ लग जाती है। वे उसे बड़े व्यापारी को बेच देते है। इस व्यापारी का कत्ल कर गौरी जंगल में भाग जाती है। वहां उसे शेर मिलता है जिसे वह सम्मोहित कर सवारी करने लगती है। शेर पर सवार गौरी को जंगल का दस्यु सरदार देवी दुर्गा समझ लेता है। गौरी डाकू दल की सरदार बन जाती है। वह मुनाफाखोरों से अनाज लूटती है और अकालग्रस्त ग्रामीणों में बांट देती है। अंत में जब रहस्य खुलता है, तो ग्रामीण फिर वर्षा के लिए उसकी बलि देना चाहते है, पर दस्यु सरदार प्रेम प्रदर्शित कर उसकी रक्षा करता है।[113]

'आज' नाम से विख्यात इस रंग मण्ड़ल में आदिवासी रंगकर्मियों के साथ शहरी रंगकर्मी भी जुडे है। इस रंग मण्डल ने फरवरी, 1991 ई. में उदयपुर के राजस्थान महिला विद्यालय के खेल मैदान में भील आख्यान पर आधारित नाटक 'अमरबीज' का मंचन भी किया। नाटक 'अमरबीज' के कथानक का तानाबाना एक भील युवक धारिया को केन्द्र में रखकर रचा गया है। धारिया एक दिन घने जंगल में जाता है और बरगद का पेड़ काटने की सोचता है। बरगद पर धारिया की कुल्हाड़ी के पहले वार से स्वच्छ जल निकलता है। दूसरे प्रहार से दूध तथा तीसरे प्रहार से रक्त बह निकलता है जो सैलाब का रूप धारण कर लेता है। इस सैलाब में पृथ्वी डूबने लगती है। रक्त से जन्में पिशाच, मानव सभ्यता को नष्ट करने लगते है। हतप्रभ धारिया देवी मां (प्रकृति) से रक्षा की प्रार्थना करता है जो उसे पाताल लोक जाकर अमरबीज लाने को कहती है। पाताल लोक में शेषनाग के फन से निकली ज्वाला में धारिया जलने लगता है। देवी मां पुनः धारिया की रक्षा को आती है और स्वयं अमरबीज प्राप्त कर समस्त मानव सभ्यता को पापों से मुक्ति दिलाती है। इस प्रस्तुति के पूरे मंचन में ढ़ाक, ढ़ोलक, थाली, डमरू के प्रभावी प्रयोग ने गति बनाए रखी। प्रस्तुति देखकर तब लगा था कि नष्ट होते हुए सामाजिक एवं सांस्कृतिक माहौल को बहाल करने के लिए हमारा लोक जीवन बहुत कुछ दे सकता है।[114]

भानु भारती के निर्देशन में 'आज' की प्रदर्शनकारी इकाई वर्तमान में नाट्य विधा से जुड़ी कई राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मंचों पर सफल प्रस्तुतियां प्रस्तुत कर रही है।

लगभग दस–पन्द्रह वर्षों से इस संगठन की दृश्य कला इकाई की ओर से संगठनात्मक स्तर पर कोई कार्यक्रम नहीं किया जा रहा है। इस इकाई को पूर्व मे केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा आर्थिक अनुदान प्रदान किया जाता रहा था।

वर्ष 1986–87 ई. मे अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर के लिए 7000 रू. केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली व 5000 रू. राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा इस संगठन को प्राप्त हुए। इसी वर्ष ग्राफिक, प्रिन्टिंग कला के संवर्धन के लिए ग्राफिक स्टूड़ियों के उपकरण खरीदने के लिए 7000 रू. केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के द्वारा प्रदान किये गये।

वर्ष 1987–88 ई. मे इसी उद्देश्य हेतु 7500 रू की ओर सहायता उपलब्ध कराई गयी व 14000 रू. अखिल भारतीय प्रिन्ट मेकिंग शिविर के लिए केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली की ओर से प्रदान किये गये। इसी वर्ष इसी शिविर के लिए राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर की ओर से 5000 रू. का आर्थिक अनुदान स्वीकृत किया गया।[115]

वर्ष 1988–89 ई. मे 10000 रू. अखिल भारतीय चित्रकार शिविर के लिए केन्द्रीय कला अकादमी, नई दिल्ली के द्वारा स्वीकृत किये गये व इसी वर्ष इस शिविर के लिए राजस्थान ललित कला अकादमी की ओर से भी 5000 रू. स्वीकृत किये गये। इस वर्ष ही दृश्य– श्रव्य साधनों की खरीद हेतु केन्द्रीय ललित कला अकादमी की ओर से 25000 रू. का आर्थिक अनुदान स्वीकृत हुआ।

वर्ष 1989–90 ई.मे मौलेला मे आयोजित अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर के लिए केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली की ओर से 10000 रू. व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर की ओर से 8000 रू. की सहायता दी गई।[116] इसी वर्ष कलाकारों के मोनोग्राफ्स प्रकाशित करने के लिए केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 25000 रू व वर्ष 1990–91 ई. मे एचिंग प्रेस के लिए 24000 रू. स्वीकृत किये गये।[117]

वर्ष 1995 ई. के बाद से दोनों अकादमियों द्वारा सभी कला संगठनों को आर्थिक अनुदान बन्द कर दिये जाने के कारण इस संगठन का भी आर्थिक अनुदान बंद कर दिया

गया। जिससे संगठन की ओर से की जाने वाली कलात्मक गतिविधियाँ थम गयी। संगठन के सदस्य कलाकार अपने–अपने कलाकर्म मे व्यस्त हो गए तथा कुछ उदयपुर छोड़ भारत के अन्य राज्यों में बस गये। इस तरह 'आज' संगठन की दृश्य कला इकाई अस्ताचल की ओर बढ़ती गयी। 'आज' के सदस्य कलाकारों के बारे में कला समीक्षक महेश वर्धन ने लिखा है कि–''आजकल कलाकार अपने काम के प्रति उतने गंभीर नहीं होते जितना अपना प्रभावशाली 'बायोडाटा' बनाने के प्रति। लेकिन 'आज' के कलाकारों का बायोडाटा उनकी कलाकृतियाँ है, जो बिना प्रयत्न किए प्रेक्षक के मन–मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़ देती है। इन सभी कलाकारों में पारम्परिक राजस्थानी कलाकारों जैसी तकनीकी दक्षता के प्रति आकर्षण उल्लेखनीय है। आधुनिक कला के नाम पर सर्कस करने की प्रवृत्ति का न होना इनकी कला धर्म के प्रति ईमानदारी दर्शाता है।''

5.2 राजस्थान के अन्य प्रमुख कला संगठन

5.2.1 राजस्थान कला केन्द्र, जयपुर

इस कला संस्था की स्थापना 1958 ई. में जयपुर मे हुई। प्रदर्शनियों के आयोजन के अलावा कला शिक्षा के माध्यम से कला चेतना उत्पन्न करना संस्था का प्रमुख ध्येय रहा है।[118] कतिपय संस्थागत कारणो से यह संस्था एक लम्बे अरसे तक अधिक सक्रिय न रह सकी किन्तु फिर भी संस्था द्वारा कुछ पारम्परिक लघु चित्र प्रदर्शनियों के आयोजन के अलावा समय–समय पर कला वार्ताओं आदि का आयोजन किया जाता रहा। आशा है, निकट भविष्य में संस्था कला के उत्थान में अपेक्षित योगदान दे सकेगी।

5.2.2 आदर्श लोक, बीकानेर

वर्ष 1969 ई. में बीकानेर में स्थापित यह संगठन बच्चों की मौलिक कला प्रतिभा को प्रोत्साहन के माध्यम से समाज में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने की दिशा में प्रयासरत है।[119] इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये संगठन द्वारा राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर वार्षिक बाल समारोह और शहरों–कस्बों मे तत्स्थलीय बाल चित्रांकन व प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है।

5.2.3 रंगबोध, कोटा

1970 के दशक में चित्रकार, कला समीक्षक रामकुमार की राजस्थान के उद्योग नगर कोटा में भारत सरकार के संस्थान आई. एल. में नौकरी लगी तो गुलाबी नगर जयपुर में पत्रकारिता कर्म और कला माहौल का रूझान छोड़कर वो कोटा में बस गये। उस समय कोटा में भी कुछ युवा चित्रकार सक्रिय रूप से कला सृजन में लगे हुए थे लेकिन न तो

कही संगठित प्रयास थे और न कोई कला प्रदर्शनियाँ आदि कला आयोजन करने का समुचित स्थान भी।[120] ऐसे में चित्रकार रामकुमार ने कोटा के चित्रकारों सुभाष केकरे, मोहम्मद शफी एवं अन्य कुछ मित्रों के साथ मिलकर कला को समर्पित संस्था 'रंगबोध' का 1971 ई. में कोटा में गठन किया। कुछ समय बाद इस संस्था को पंजीकृत करवाया गया।[121] कोटा, बूंदी और झालावाड़ के चित्रकारों की एकल एवं समूह चित्र प्रदर्शनियों आदि के कार्यक्रम सूचना केन्द्र के पुस्तकालय कक्ष या सर्किट हाउस की प्रथम मंजिल पर एक बड़े कमरे में करना शुरू किया। इन्दौर के अजीत जैन, जयपुर के डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, लालचन्द मारोठिया जैसे कई चित्रकारों सहित मोहम्मद शफी, डॉ. रमेश सत्यार्थी, सुभाष केकरे, डॉ. हेमलता कुमावत आदि कई चित्रकारों की प्रदर्शनियाँ रंगबोध द्वारा आयोजित की गई।

सर्किट हाउस में 1970 के दशक में ही हाड़ौती के चित्रकारों की विशाल समूह प्रदर्शनी मे डॉ. पी. एन. चोयल के प्रयासों से देश के जाने–माने चित्रकार के. के. हेब्बार भी मुम्बई से आये और उन्होंने प्रदर्शनी एवं अन्य कला आयोजनों का उस समय उद्घाटन किया। 1980 के दशक में सूचना केन्द्र में हॉल बन जाने से सुभाष केकरे, मोहम्मद शफी, जगमोहन माथोड़िया, शरद इन्द्रा, जयश्री आदि कई चित्रकारों की एकल प्रदर्शनियों का समय–समय पर आयोजन किया गया। डॉ. पी. एन. चोयल एवं शैल चोयल आदि की वार्ताऐं, स्लाइड शो कार्यक्रम भी रखे गये।

इस प्रकार कोटा में अब कला माहौल तैयार होने लगा था। नये उभरते चित्रकारों की प्रदर्शनियाँ, कार्यशालाऐं आदि के महत्वपूर्ण आयोजन भी सूचना केन्द्र, कोटा के हॉल में हुए लेकिन कोटा में एक कला दीर्घा की कमी सदैव खटकती रही। कोटा में कला दीर्घा निर्माण के लिए रंगबोध ने प्रयास किये। परिणामस्वरूप कोटा के ब्रज विलास संग्रहालय में राज्य सभा सांसद भुवनेश चतुर्वेदी के सांसद कोष से 35 लाख रूपयें कला दीर्घा निर्माण के लिये प्रदान किये गये। कला दीर्घा निर्माण में कोटा के तत्कालीन जिलाधीश जे. सी. महान्ति व राजस्थान ललित कला अकादमी के सचिव समंदर सिंह खंगारोत का सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा।

1 से 6 जनवरी 1999 ई. मे राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा शिल्प ग्राम, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में आयोजित 7वें कला मेला में रंगबोध के चित्रकार सदस्य डॉ. रमेश सत्यार्थी, सुभाष केकरे, एम. शफी सुहैल, कमल बक्शी, प्रमोद आर्य, डॉ. सविता वर्मा व सीमा चतुर्वेदी ने भाग लिया।[122]

इसी तरह 23 से 28 मार्च 2000 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा शिल्प ग्राम, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में आयोजित 8वें कला मेला में रंगबोध के चित्रकार सदस्य डॉ. रमेश सत्यार्थी, सुभाष केकरे, एम. शफी सुहैल, कमल बक्शी, व एस. एम. वाघमारे ने भागीदारी निभाई।

3 से 9 फरवरी 2002 ई. तक रंगबोध द्वारा कला दीर्घा, ब्रज विलास संग्रहालय, कोटा में सामूहिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत व राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर के तत्कालीन सचिव समदर सिंह खंगारोत ने किया। (चित्र–63) इस चित्र प्रदर्शनी में 19 कलाकारों ने भाग लिया। इसी वर्ष रंगबोध की कार्यकारिणी के चुनाव हुए जिसमें संरक्षक–रामकुमार, अध्यक्ष– डॉ. शरद इन्दिरा, उपाध्यक्ष– एम. शफी. सुहैल, महासचिव– सुभाष केकरे, सहसचिव– डॉ. हेमलता कुमावत, कोषाध्यक्ष– कमल बक्शी, सलाहकार– डॉ. रमेश सत्यार्थी, अरनी रॉबर्ट व कार्यकारिणी सदस्यों के रूप में एस. एम. वाघमारे, चक्रपाणि गौतम, चन्द्र सेन आदि का मनोनयन किया गया।

2 अक्टूबर 2009 ई. में रंगबोध के चित्रकार सदस्य सुभाष केकरे की एकल प्रदर्शनी का आयोजन मॉडर्न आर्ट गैलरी, कोटा में किया गया। रंगबोध हाड़ौती क्षेत्र में निरन्तर कला प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, कला शिविरों आदि विविध आयोजनों के माध्यम से सृजनशीलता को प्रोत्साहन देने और कला के प्रति आम रूचि जागृत करने की दिशा में प्रयत्नशील है।

5.2.4 साहित्य कला मन्दिर, कोटा

यह संस्था ललित कला के उत्थान और तत्सम्बन्धी शोध के उद्देश्य से कोटा में 1974 ई. में स्थापित की गई।[123] समूह प्रदर्शनियों के आयोजन, प्रख्यात कलाकारों के सम्मान–समारोह के आयोजन और छात्रों को कला प्रशिक्षण देने सम्बन्धी कार्यक्रमों में इस संस्था की विशेष रूचि है।(चित्र–64)

5.2.5 कलम, बूंदी

राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में कला के विकास और इस क्षेत्र की कला का परिचय राजस्थान ही नहीं वरन देश के विभिन्न अंचलों तक कराने के उद्देश्य से बूंदी में 'कलम' की स्थापना 1975 ई. में हुई।[124] इस संस्था ने बूंदी कलम के चित्रों की गरिमा बनाये रखते हुए बूंदी शैली के उन्नयन में उल्लेखनीय योगदान दिया। प्रकाशन कार्य को मुख्य कार्य बिन्दु

मानने वाली इस संस्था ने राजस्थानी चित्रकला विषयक प्रकाशन कर राज्य की पारम्परिक कला शैली की बारीकियों को उजागर किया है। संस्था द्वारा समूह प्रदर्शनियाँ आयोजित करने के अतिरिक्त कला गोष्ठियाँ, भाषणमालाओं एवं कला फिल्मों का प्रदर्शन भी समय–समय पर किया जाता रहा हैं। संस्थापक अध्यक्ष डॉ. रमेश सत्यार्थी के निधन के बाद इसके आयोजनों में शिथिलता आयी हैं।

5.2.6 धोरा कला संस्थान, जोधपुर

रेत के टीलों के लिये प्रयुक्त पश्चिमी राजस्थान के आंचलिक शब्द 'धोरा' के नाम से इस संस्था का गठन 1976 ई. में जोधपुर में हुआ।[125] समूह प्रदर्शनियों, एकल प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं व अन्य आयोजनों के माध्यम से यह संस्था आम आदमी में सौन्दर्य चेतना प्रस्फुटित करने की दिशा में निरन्तर कोशिश करती रही है।

वर्ष 1979 ई. में स्क्रीन प्रिन्टिंग कार्यशाला, 1981 ई. में बातिक कार्यशाला, 1982 ई. में अभिरूचि कार्यशाला, 1983 ई. में फेब्रिक व टाईल्स पेन्टिंग कार्यशाला का आयोजन धोरा द्वारा किया गया। बच्चों की कला प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्था द्वारा बाल चित्र कला प्रतियोगिता का आयोजन भी समय–समय पर किया जाता रहा है।[126]

वर्ष 2000 ई. में विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर धोरा कला संस्था द्वारा सूचना केन्द्र, जोधपुर मे महिला चित्रकारों की समूह प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में 19 महिला कलाकारों–रीता नागर, रानी रश्मि सिंह, डॉ. ऋतु जौहरी, शालिनी सोनी, स्नेहलता नरूका, संतोष मित्तल, सुप्रिया सप्रे, स्वीटी भटनागर, गीता शर्मा, ललिता वर्मा, शालिनी तोमर, मेघना गोयल, सुलोचना गोयल, सीमा शर्मा, रूपवती ओझा, नम्रता स्वर्णकार, सैद संजीदा, सैद सीमाब और नीतू राठी की कलाकृतियाँ प्रदर्शनार्थ रखी गई जिसे दर्शकों द्वारा सराहा गया। प्रदर्शनी का उद्‌घाटन जोधपुर की पूर्व राजकुमारी कृष्णा कुमारी ने किया।[127] वर्तमान में धोरा संस्था पुरातन महत्व के भवनों, कलाकृतियों का अभिलेखन एवं जनचेतना, जन अभिरूचियों की गतिविधियों का संचालन कर रही है।

5.2.7 मयूर–6, वनस्थली

वनस्थली विद्यापीठ के सृजनशील कलाकारों की लघुकला संस्था–'मयूर–6' का गठन 1980 ई. में हुआ।[128] सृजनशीलता को नये आयाम प्रदान करने और कला प्रवृतियों को जन–जन से जोड़ने के उद्देश्य से कार्यरत यह संस्था समूह व एकल प्रदर्शनियों, कला

चर्चा व गोष्ठियों, विभिन्न स्थलों पर रेखांकन हेतु भ्रमण कार्यक्रम आयोजित करने आदि माध्यमों से रचनात्मक प्रयास किये है। संस्था के कलाकार राज्य की विभिन्न कला गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। वर्तमान में इसके संस्थापक कलाविद् देवकीनन्दन शर्मा का निधन हो जाने के बाद से इस संस्था की कला गतिविधियों में कमी आयी है।(चित्र–65)

5.2.8 फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी (फेस), जयपुर

भारतीय और राजस्थानी पारम्परिक कला के संवर्धन के उद्देश्य से इस संगठन का निर्माण वर्ष 1981 ई. में किया गया था।[129] इसके संरक्षक पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत, संस्थापक अध्यक्ष वेदपाल शर्मा 'बन्नू', संस्थापक सचिव समदर सिंह खंगारोत 'सागर' थे। इसके अन्य सदस्यों में शिल्प गुरू तिलक गिताई, नृत्य गुरू हरिदत्त कल्ला, मूर्तिकार अर्जुन प्रजापति, रूपचन्द्र शर्मा, चित्रकार आर.के. कौशिक, हरशिव शर्मा, कक्कू माथुर, संगीता जैन, रमेश शर्मा, रामअवतार सोनी, महावीर स्वामी, गोपाल शर्मा, हरिशंकर गुप्ता, शहजाद अली आदि थे।[130] इस संगठन द्वारा प्रतिवर्ष पारम्परिक कला के विविध विषयों में से किसी एक विषय पर शिविर व कलावार्ताओं का आयोजन किया जाता था। फेस द्वारा आयोजित शिविरों में रागमाला पेन्टिंग शिविर, बारहमासा पेन्टिंग शिविर, नायक–नायिका भेद पेन्टिंग शिविर, शिकार विषयक पेन्टिंग शिविर व वार्ताए आदि प्रमुख हैं।(चित्र–66)

वर्ष 1996 ई. में इसके संस्थापक सचिव समदर सिंह खंगारोत 'सागर' के राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के सचिव बन जाने के कारण उन्होंने इस संगठन से त्याग पत्र दे दिया। इनके बाद के सदस्यों ने इस संगठन के विकास के लिए कोई कार्य नहीं किया तथा धीरे–धीरे यह संगठन बिखर गया।

5.2.9 चितेरा संस्था, जोधपुर

नन्हें बालकों में विकासोन्मुख कला के गुण को खोजने, परखने और उसे निखार कर बालक को एक रोजगार रूपी आयाम देने के उद्देश्य को लेकर 'चितेरा' संस्था जोधपुर में सक्रिय है। शहर के सृजनशील कलाकारों को लेकर 1986 ई. की एक खुशनुमा शाम के दरम्यान इस संस्था का जन्म हुआ और आज सतत् साधना स्वरूप 'चितेरा' संस्था की सफलता में विश्व एवं राष्ट्रीय स्तरीय कलाकारों के नाम जुड़े हुए है।[131]

'चितेरा' के संस्थापक सचिव अनन्तराम अपने और 'चितेरा' के इन प्रयासों से संतुष्ट दिखते है। वे बताते है कि मात्र सात कलाकारों द्वारा रोपा गया ये पौधा आज कला जगत का विशाल वट वृक्ष बन चुका है।[132] जिसके सदस्यों की संख्या सौ के पार पहुँच चुकी है तथा संस्था की सक्रियता जोधपुर से बाहर निकल कर बीकानेर, अजमेर, श्रीगंगानर, हनुमानगढ़, बाड़मेर, पाली, जैसलमेर, सिरोही तथा राजस्थान के अन्य जिलों में प्रतिभा तलाशने के कार्य के साथ बढ़ रही है। संस्था के बेनर तले सूचना केन्द्र, जोधपुर में अनेक चित्र प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम 1986 ई. में मात्र सात कलाकारों की कृतियों से 'चितेरा' ने एक चित्र प्रदर्शनी लगाई थी। वर्ष 1988 ई. में स्व. तीरथदास स्मृति चित्र प्रदर्शनी में 22 कलाकारों की 110 चित्रकृतियों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसी वर्ष के मार्च माह में मंजू पाटनी के चित्रो की एकल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया व नवम्बर माह में आशा शेखावत व मंजू पाटनी के चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई । सूचना केन्द्र, जोधपुर में चित्रकार धर्मदास हीरानन्दानी के चित्रों की प्रदर्शनी भी इसी वर्ष आयोजित की गई।[133] चित्रकार सम्मान योजना के अन्तर्गत चितेरा की ओर से सन् 1989 ई. में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त चित्रकार लाल सिंह भाटी सहित इन्दू राजपुरोहित, एस. मनीष तथा अनिता आंचलिया को विभिन्न उपलब्धियों के लिये सम्मानित किया गया।[134] 27 मई 1991 ई. में चितेरा की कार्यकारिणी के चुनाव मोहन सिंह टांक की देखरेख में सम्पन्न हुआ। इसमें रतन सिंह राजपुरोहित को अध्यक्ष, बंशीलाल टांक को उपाध्यक्ष, अनन्तराम को सचिव, एस.मनीष को संयुक्त सचिव तथा अनिता आंचलिया को कोषाध्यक्ष चुना गया। इनके अतिरिक्त भगवान शंकर, जगदीश गोइल, कंवल पंवार व सुनीता गांधी को सदस्य चुना गया। संस्था के परामर्शदाता के रूप में नवल जोशी व बी.एम. व्यास को मनोनीत किया गया।[135]

'चितेरा' की नियमित वार्षिक गतिविधियों में चित्रकला प्रशिक्षण शिविर लगाने एवं प्रदर्शनियाँ आयोजित करने के अलावा बच्चों व बड़ों के लिए चित्रों का आयोजन करना भी शामिल है। इसके तहत प्रतिवर्ष स्व. सुश्री संगीता सोलंकी स्मृति नव वर्ष बधाई पत्र निर्माण प्रतियोगिता, वीर दुर्गादास जयन्ती पर प्रतिवर्ष चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन, विश्व पर्यावरण दिवस पर विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु 'डेको' संस्था के सहयोग से पर्यावरण विषयक पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन, सामाजिक कुरूतियों के उन्मूलन विषयक चित्र प्रतियोगिता का सफल संचालन करना तथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु इसी विषय पर प्रतियोगिता के माध्यम से

छात्र–छात्राओं में देश भक्ति की भावना विकसित करना भी 'चितेरा' के उद्देश्यो में संनिहित है। संस्था 'चितेरा' द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर राजस्थान के अलग–अलग जिलों के चित्रकारों की प्रदर्शनी जोधपुर में आयोजित की जाती रही है। संस्था की गौरवगाथा में एक स्वर्ण सौपान तब और जुड़ गया जब 'चितेरा' संस्था के प्रयासों से जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में स्नातक स्तर तक चित्रकला विषयक कक्षाओं की शुरूआत हुई थी। 'चितेरा' से जुड़े अनेक कलाकार अपनी कला में निष्णात होकर कला जगत में सक्रिय है। संस्था के कलाकार लाल सिंह भाटी कला क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के कारण भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित हो चुके है। इसके अलावा सूरज शर्मा (राष्ट्रीय स्तर), भगवान शर्मा, खुर्शीद, अशोक दईया को राज्य स्तरीय हस्तकला सम्मान मिल चुका है। संस्था के ही एक नये बाल कलाकार रणजीत सिंह राठौड़ द्वारा निर्मित सरदार सीनीयर सैकण्डरी विद्यालय का मॉडल तत्कालीन राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा द्वारा प्रशंसित किया गया। 'चितेरा' के ही एक कलाकार वीरेन्द्र सिंह राठौड़ इन दिनों चर्चित टी. वी. चैनल जी. टी. वी. के कला विभाग में कार्यरत है। संस्था से प्रशिक्षित सुनीता गांधी मुम्बई में डिजाइनिंग क्षेत्र में सक्रिय है।[136]

कला के प्रति समर्पित इस संस्था के कार्यों और उद्देश्यों को देखा जाए तो 'चितेरा' की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय है। संस्था आज भी निष्ठावान कलाकारों की बदौलत निरन्तर उन्नतिशील और सृजनशील है। छुपे हुए कलाकारों को खोजना और बिसरा दिये गये पुराने कलाकारों की साधना को मंच प्रदान करना 'चितेरा' की योजना है और 'चितेरा' इसे फलीभूत करने में सतत् प्रयासरत है। साथ ही संस्था जोधपुर में एक स्थाई आर्ट गैलरी के निर्माण करवाने का स्वप्न साकार करने में लगी है ताकि कला गतिविधियों को एक केन्द्र मिल सके। नवकलाकारों के लिए स्थाई रूप से प्रशिक्षण की व्यवस्था करना भी 'चितेरा' की अपनी योजना है। संस्था शीघ्र ही इस योजना को भी साकार करेगी।(चित्र–67)

5.2.10 आर्ट कौन्सिल ऑफ राजस्थान, जयपुर

राजस्थान में दृश्य व प्रदर्शनकारी कलाओं के उचित प्रदर्शन, उनके कलाकारों को उचित अवसर व मंच प्रदान करने, उन्हें सम्मानित करने के उद्देश्य से आर्ट कौन्सिल ऑफ राजस्थान की स्थापना 1990 ई. में जयपुर में की गई।[137] इस संगठन के सूत्रधार चित्रकार समदर सिंह खंगारोत थे, जिन्होंने चित्रकार आर.बी. गौतम व विद्यासागर उपाध्याय की सहायता से राजस्थान की कला जगत की सभी दिग्गज हस्तियों को इस संगठन में शामिल कर लिया था, इनमें प्रमुख रूप से चित्रकार पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत, पद्मश्री रामगोपाल

विजयवर्गीय, मोहन वीणा वादक पद्मश्री विश्वमोहन भट्ट, नाट्यकर्मी रणवीर सिंह डूंगरोत, मूर्तिकार सत्यनारायण नाहटा, लोक गायक लंगा; मांगणियार बन्धु आदि थे।[138] इस संगठन द्वारा ही राजस्थान और वेल्स, इंग्लैण्ड के बीच कलाकारों का आदान–प्रदान आरम्भ हुआ। जिसके अन्तर्गत पाँच साल के लिए दो कलाकार राजस्थान से वेल्स व दो कलाकार वेल्स से राजस्थान आकर अपना कलाकर्म करते थे लेकिन यह संगठन भी अधिक समय तक अपनी गतिविधियाँ संचालित नहीं कर सका।(चित्र–68)

5.2.11 आकार कला समूह, अजमेर

आकार कला समूह की स्थापना वर्ष 1991 ई. में राजस्थान के अजमेर जिले में हुई। इस संगठन को बनाने की योजना चित्रकार लक्ष्यपाल सिंह राठौड़ के अजमेर केसरगंज गोल मार्केट के पास बने स्टूडियो में बनी और यहीं संगठन की आरम्भिक गतिविधियाँ संचालित हुई।[139] आकार कला समूह के संस्थापक सदस्यों में लक्ष्यपाल सिंह राठौड़, महेश खारोल, स्व. सुभाष कुलहरी, किरीट छत्री, प्रहलाद शर्मा आदि थे। एक बड़े सपने को परवान चढ़ाने के लिए सही नेतृत्व की आवश्यकता होती है। 'आकार' को सही नेतृत्व मिल सके इसलिए इन पाँचों ने अपने शिक्षक डॉ. अनुपम भटनागर से 'आकार' के अध्यक्ष पद को संभालने की अपील की। शिष्यों के आग्रह को डॉ. अनुपम भटनागर आज तक 'आकार' के अध्यक्ष के रूप में निभा रहे है। आकार समूह के संरक्षक के रूप में अजमेर के वरिष्ठ चित्रकार प्रकाश झा को मनोनीत किया गया।[140] इस संगठन ने राजस्थान ही नहीं अपितु राज्य के बाहर के कलाकारों को भी अपने संगठन में जोड़ा। संगठन की स्थापना के समय ही इसके उद्देश्य [141] तय किये गये जो निम्नलिखित है–

I. संगठन द्वारा प्रयोगवाद को बढ़ावा दिया जायेगा।
II. वर्तमान के विषयों को भी सम्मिलित किया जायेगा।
III. प्रत्येक कलाकार की शैली पर कलावार्ता का आयोजन समय–समय पर किया जायेगा।
IV. कलाकारों को आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए प्रयासरत रहेंगे।
V. राजस्थान के नवोदित कलाकारों की स्वयं की शैली को प्रोत्साहित किया जायेगा।
VI. प्रत्येक चित्रकार की एकल चित्र प्रदर्शनी का प्रयास किया जायेगा।

यह संगठन किसी तरह की कोई वित्तीय सहायता नहीं लेता। कलाकार स्वयं के खर्चे पर कला प्रदर्शनियों का आयोजन करते है। इस कला संगठन में कलाकार को अपना

अस्तित्व बनाये रखने के लिए संगठन द्वारा आयोजित कला प्रदर्शनियों में प्रत्येक बार नई कलाकृति प्रस्तुत करना आवश्यक है। एक बार एक प्रदर्शनी में लगाई गई कलाकृति दूसरी प्रदर्शनी में नहीं लगाई जा सकती। आकार द्वारा अब तक देश के विभिन्न प्रान्तों में कला प्रदर्शनी का आयोजन किया जा चुका है। 'आकार' की आरम्भिक प्रदर्शनियाँ अजमेर के सूचना केन्द्र में लगाई जाती रही।

फरवरी, 1997 ई. में 'आकार' द्वारा अजमेर के सूचना केन्द्र में कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में लक्ष्यपाल सिंह राठौड़, सुभाष कुलहरी, आकाश सूर्यवंशी, दयाराम, वेदप्रकाश, महेश खारोल और प्रहलाद शर्मा ने अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। इनमें से अधिकतर चित्रकार दयानन्द महाविद्यालय से चित्रकला में स्नातकोत्तर उपाधि लिये हुए थे। आकाश सूर्यवंशी ने कही से कोई उपाधि नहीं ली थी, अभ्यास से ही तूलिका में जादू का असर देखने को मिलता है।[142]

27 जनवरी 1998 ई. को अजमेर के सूचना केन्द्र में ही आकार समूह की कला प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में 24 युवा चित्रकारों की कलाकृतियो को प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन वयोवृद्ध चित्रकार आर. वी. साखलकर ने त्वरित रेखांकन कर किया। प्रदर्शनी में कुल 71 कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई।[143] 11 फरवरी से 14 फरवरी 1999 ई. तक अजमेर के सूचना केन्द्र में ही 'आकार' की कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में नए प्रतीकों, प्रतिमानों और रंग संयोजन के द्वारा नवीन रचना संसार प्रस्तुत किया गया।[144] 14 फरवरी 2000 ई. में सूचना केन्द्र, अजमेर में 'आकार' द्वारा चार दिवसीय कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में सत्ताईस कलाकारों की कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शनी में अजमेर के जाने माने प्रकाश आर्टिस्ट के द्वारा एयर ब्रश से बनाए गए पोट्रेट व तेल चित्रों को दर्शकों की सराहना मिली।[145] 4 फरवरी 2002 ई. को 'आकार' की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन अजमेर के सूचना केन्द्र में किया गया। इस प्रदर्शनी में 21 कलाकारों द्वारा बनाए गए 108 चित्रों सहित 17 मूर्ति शिल्प प्रदर्शित किए गए।[146] अब 'आकार' का आकार बढ़ता जा रहा था वो अपने फलक को विस्तार दे रहा था। इसी क्रम में 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2002 ई. को जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में 25 कलाकार साथियों के साथ एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।[147] 22 फरवरी से 27 फरवरी 2003 ई. को अजमेर के सूचना केन्द्र में संगठन की वार्षिक कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में गुजरात नरसंहार पर आधारित चित्रकृतियों को भी प्रदर्शित किया गया।[148] 25 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2003 ई.

तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर की 'सुरेख' एवं 'सुकृति' कला दीर्घाओं में 'आकार' के इक्कीस कलाकारों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।[149] 8 फरवरी 2004 ई. को 'आकार' की चित्र प्रदर्शनी का उद्‌घाटन कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एण्ड म्यूजिक, श्रीनगर के प्राचार्य शब्बीर अहमद ने सूचना केन्द्र, अजमेर में किया। इस प्रदर्शनी में 22 कलाकारों ने स्वनिर्मित कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी में बधिर चित्रकार जितेन्द्र कुमावत ने अपनी कलाकृतियों में मानव आकृतियों को तोड़कर विभिन्न रंगो के माध्यम से संयोजित किया।[150] 11 जनवरी से 14 जनवरी 2005 ई. तक अजमेर के सूचना केन्द्र में संगठन के 27 कलाकारों की पेन्टिंग व मूर्तिकला को प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी में संगठन के संस्थापक स्व. प्रकाश झा की कृतियों के अनोखे रंग संयोजन ने उनकी याद को ताजा कर दिया।[151] 3 नवम्बर से 30 नवम्बर 2005 ई. तक 'आकार' की कला प्रदर्शनी पवित्र पुष्कर में आयोजित की गई। कार्तिक मास की सर्द भरी शाम को पुष्कर के रेतीले टीबों के बीच यह प्रदर्शनी यादगार रही।[152] 26 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2005 ई. को संगठन की कला प्रदर्शनी जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में कुल 21 कलाकारों के 90 चित्रों और मूर्तिशिल्पों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी की खासियत यह रही कि कृतियाँ चाहे यथार्थ शैली की हो, समकालीन अथवा अमूर्त शैली की सभी कलाकारों की प्रयोगवादी सोच रही। प्रदर्शनी में दिल्ली, गुडगांव, लखनऊ और मथुरा के छः कलाकारों की कृतियाँ भी बतौर अतिथि कलाकार सम्मलित की गई।[153]

9 जनवरी से 13 जनवरी 2006 ई. तक 'आकार' के दो कलाकारों अमित राजवंशी और प्रहलाद शर्मा की प्रदर्शनी का आयोजन जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में किया गया। इस प्रदर्शनी में नारी और प्रकृति को दर्शाती हुई कलाकृतियों का प्रदर्शन चित्रकारों ने किया।[154] 12 फरवरी 2006 ई. को 'आकार' कला समूह की इक्कीसवीं कला प्रदर्शनी सूचना केन्द्र, अजमेर में आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में आधुनिक व परम्परागत कला का संगम दिखाई दिया।[155] 3 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2006 ई. तक ग्रीनमार्क आर्ट गैलरी, गाजियाबाद में 'आकार' समूह की कला प्रदर्शनी आयोजित की गई।[156] 26 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2006 ई. तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर की 'सुरेख' व 'सुकृति' कला दीर्घा में 'आकार' समूह द्वारा 23 कलाकारों की कला प्रदर्शनी आयोजित की गई।[157] 4 फरवरी से 7 फरवरी 2007 ई. तक सूचना केन्द्र, अजमेर में 'आकार' की कला प्रदर्शनी आयोजित की गई।[158] 21 जून से 27 जून 2007 ई. तक 'आकार' समूह के द्वारा इंदौर के रेसकोर्स रोड़ स्थित रिफ्लेक्शन आर्ट गैलरी में कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में विनय

त्रिवेदी, प्रहलाद शर्मा, लक्ष्यपाल सिंह राठौड़, अमित राजवंशी ने अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया।[159] 18 अक्टूबर से 30 अक्टूबर 2008 ई. तक जयपुर के गणपति प्लाजा स्थित समन्वय आर्ट गैलरी में 'आकार' समूह के सौलह चित्रकारों की कला प्रदर्शनी आयोजित की गई[160] व 1 दिसम्बर से 7 दिसम्बर 2008 ई. तक ऑल इण्डिया फाईन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसाईटी, नई दिल्ली में समूह के 25 कलाकारों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। इसी तरह 26 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2008 ई. तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में समूह के 27 कलाकारों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी आयोजित की गई।[161] 3 नवम्बर से 7 नवम्बर 2009 ई. तक 'आकार' समूह के चित्रकारो की प्रदर्शनी का आयोजन कर्नाटक चित्रकला परिषद, बेंगलुरू में किया गया। इस प्रदर्शनी में लक्ष्यपाल सिंह राठौड़ ने राजस्थानी जनजीवन संस्कृति और प्राकृतिक सौन्दर्य, ममता चतुर्वेदी ने खिड़कियों के झरोखे, विनय त्रिवेदी ने प्रकृति और मानव के रहस्यात्मक संबंधो पर बनाई कलाकृतियाँ प्रदर्शित की। प्रदर्शनी में प्रमोद सिंह ने नवीन श्रृंखला व कम्पोजिशन, देवेन्द्र खारोल, अनिल मोहनपुरिया ने लैण्डस्केप के जरिए प्राकृतिक सौन्दर्य को उकेरा। अशोक दीक्षित, नीता कुमारी, रागिनी सिन्हा और प्रिया राठौड़ ने भी प्रकृति, मानवीय भाव, मूर्तिशिल्प और अन्य विषयों को शामिल किया।[162] 25 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2009 ई. तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर की 'सुकृति' व 'सुरेख' कला दीर्घाओं में समूह की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में 24 कलाकारों ने भागीदारी निभाई।[163]

25 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2010 ई. तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर की दोनों कला दीर्घाओं में 'आकार' समूह की कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 24 मई से 30 मई 2012 ई. तक ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में समूह के कलाकारों की कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । 26 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2012 ई. तक जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में 'आकार' समूह की कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। 24 सितम्बर से 30 सितम्बर 2013 ई. तक नेहरू सेन्टर, वरली, मुम्बई में 'आकार' की कला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।(चित्र–69) 22 मई से 26 मई 2014 ई. तक राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के क्षेत्रीय केन्द्र, लखनऊ में 'आकार' समूह की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

अजमेर के कुछ युवा कलाकारों के साथ शुरू हुए इस कला समूह की आरम्भिक गतिविधियाँ अजमेर तक ही सीमित रही लेकिन धीरे–धीरे इसका दायरा बढ़ता गया और इसने अपनी एक व्यापक पहचान बनाई है तथा वर्तमान में सक्रिय कला संगठनों में से एक है।

5.2.12 अंकन, भीलवाड़ा

राजस्थान की ललित कला, लोक कला एवं शिल्प कला की प्रवृत्तियों के प्रोत्साहन एवं विकास के लिए और प्रान्त की सांस्कृतिक एकता स्थापित करने के महत्त उद्देश्य से 'अंकन' की स्थापना सितम्बर 1994 ई. में भीलवाड़ा में की गई।[164]

3 अक्टूबर 1994 ई. के दिन भीलवाड़ा में सुविख्यात चित्रकार श्रीलाल जोशी के कर कमलों द्वारा प्रथम प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। अब तक 21 वार्षिक कला प्रदर्शनियों के अलावा ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर, मांडना प्रशिक्षण शिविर, चित्रकला प्रतियोगिताओं, कला वार्ताओं, एकल कला प्रदर्शनियों एवं बाहर के चित्रकारों की प्रदर्शनी का आयोजन इसकी प्रमुख गतिविधियाँ है।(चित्र–70) वार्षिक कला प्रदर्शनी में 5 श्रेष्ठ कलाकृतियों को नगद पुरस्कार दिए जाते रहे है। राजस्थान में लोक कलाओं के शोध एवं संरक्षण के लिए भी संस्था प्रयासरत है। मेवाड़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स के मानद सचिव सूर्यप्रकाश नाथानी, पद्मश्री प्राप्त श्री लाल जोशी के संरक्षण एवं राजस्थान के सर्वोच्च कला सम्मान 'कलाविद्' से सम्मानित रमेश गर्ग के मार्गदर्शन में 'अंकन' की उपलब्धियाँ ऐसी है जिससे यह कहा जा सकता है कि यह संस्था सक्रिय कार्य करने के कारण राजस्थान की अन्य कला संस्थाओं में अपना स्थान बना चुकी है। 'अंकन' की सफलता के पीछे इसके प्रतिभाशाली कलाकारों का योगदान है। वर्ष 1998 ई. में गठित कार्यकारिणी मे संरक्षक–सूर्यप्रकाश नाथानी, श्रीलाल जोशी; निदेशक–रमेश गर्ग; अध्यक्ष–भँवर पत्रिया; उपाध्यक्ष–श्याम सुन्दर राजानी; सचिव–कल्याण जोशी; सहसचिव–राजेश गर्ग; सदस्य–विमलेश वर्मा, वन्दना अग्रवाल, कुक्कु माथुर, नन्द किशोर जोशी, सुबोध जोशी, घनश्याम नुवाल, सतीश शर्मा, गोपाल आचार्य, के. जी. कदम, अनिल जोशी, मीनू शर्मा, मीना जैन, गोपाल जोशी, राजेश डाड, हितहरि दास वैष्णव, राजीव मानसिंहका, सुनील सोमानी, विनोद बिड़ला व मुकेश सोनी मनोनीत किये गये।

वर्ष 2002 में गोवर्धन सिंह पंवार को सह–निदेशक पद पर चुना गया। वर्तमान में संस्था भीलवाड़ा में कला दीर्घा के निर्माण की योजना पर कार्य कर रही है जिससे की कला गतिविधियाँ सुचारू रूप से संचालित हो सके।

5.2.13 अलंकृति कलाकार समूह, अजमेर

अलंकृति कलाकार समूह की स्थापना वर्ष 1997 ई. में कलाविद् राम जैसवाल द्वारा अजमेर में की गई। यह समूह अभी तक पंजीकृत नहीं है तथा न ही किसी तरह की कोई वित्तीय सहायता सरकार से प्राप्त करता है।[165] समूह के कलाकारों द्वारा ही कला प्रदर्शनियों, कलावार्ताओं, कला–कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है तथा सम्पूर्ण खर्च उठाया जाता है। (चित्र–71) वर्तमान में अलंकृति कलाकार समूह के अध्यक्ष–राम जैसवाल, उपाध्यक्ष–डॉ. सविन्दर सिंह चुघ, सचिव–पवन कुमावत, कोषाध्यक्ष–डॉ. तिलक राज व सदस्यों में डॉ. बी. एल. शर्मा, आशा भार्गव, ममता माथुर, बी. सी. गोयल, डॉ. अर्चना है।

5.2.14 सरस्वती कला केन्द्र, जयपुर

संग्राम कला संगम और पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत से चित्रकला में प्रवीणता प्राप्त बाबूलाल मारोठिया का राजस्थान की परम्परागत लघुचित्र शैली के कलाकारों में मुख्य स्थान है। युवा कलाकार की यह विशेषता है कि वह कला को अपने तक सीमित नहीं रखना चाहते किन्तु वह चाहते हैं कि इस समृद्ध धरोहर को नई पीढी आगे ले जावें। इसी उद्देश्य से अपने बंधु–बांधव और साथी कलाकारों के सहयोग से बाबूलाल मारोठिया द्वारा सरस्वती कला केन्द्र की स्थापना की गई है। इसी कला केन्द्र के माध्यम से गत वर्षों में निरन्तर शिविर लगाकर किशोरावस्था के कलाकारों को परम्परागत चित्रकला का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अतिरिक्त कुछ कलाकार वर्ष भर ही उनसे चित्रकला की शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं। चित्रकार बाबूलाल मारोठिया के निर्देशन मे सरस्वती कला केन्द्र द्वारा सर्वप्रथम सन् 1998 ई. में परम्परागत लघुचित्र शैली प्रशिक्षण शिविर की व्यवस्था की गई है। बाबा हरिशचन्द्र मार्ग स्थित उनके स्टूडियो में आयोजित इस शिविर मे 15 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। 10 से 25 मई तक आयोजित इस शिविर में प्रशिक्षणार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार सभी परम्परागत लघुचित्र शैलियों का प्रशिक्षण दिया गया।[166] प्रशिक्षणार्थियों के रूझान को देखते हुए मारोठिया द्वारा प्रतिवर्ष इस प्रकार के शिविर लगाने का निश्चय किया गया और वह क्रम अब तक जारी हैं। बाबा हरिशचन्द्र मार्ग के स्टूडियों में सीमित स्थान को देखते हुए सरस्वती कला केन्द्र द्वारा द्वितीय प्रशिक्षण शिविर एस.एम. एस. अस्पताल के निकट के विवेकानन्द मार्ग स्थित 'श्री निवास' में आयोजित किया गया। 5 से 25 मई, 1999 ई. तक आयोजित इस शिविर में 25 बालक–बालिकाओं ने गजानन अथवा गौरी पुत्र गणेश का चित्रण किया। पारंपरिक लघु चित्र शैली के ख्याति प्राप्त कलाकार वेदपाल शर्मा 'बन्नू' ने दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का उद्घाटन किया। सरस्वती

कला केन्द्र के इस द्वितीय प्रशिक्षण शिविर में स्टोन व जलरंगों से तैयार किये गये गणेश के 36 चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन जवाहर कला केन्द्र की 'सुकृति' कला दीर्घा में किया गया। 4 से 7 जुलाई 1999 ई. तक आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ कलाकार एवं कला समीक्षक डॉ. सुमहेन्द्र द्वारा किया गया। प्रदर्शनी में भगवान गणेश को चार, छह, आठ भुजाओं के साथ अपने वाहन मूषक और विविध आयुधों से सुसज्जित कर विभिन्न रूपों में प्रदर्शित किया गया।

नई सहस्त्राब्दी के प्रथम वर्ष में 5 से 20 जून 2000 ई. तक सरस्वती कला केन्द्र द्वारा विवेकानन्द मार्ग स्थित 'श्री निवास' में चित्रकला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। 15 दिवसीय इस शिविर में ढूंढ़ाढ़ (जयपुर) और किशनगढ़ चित्र शैलियों का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर में 47 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस शिविर में वरिष्ठ कलाकार डॉ. सुमहेन्द्र, द्वारका प्रसाद शर्मा तथा बद्रीनारायण व हरिनारायण मारोठिया और महेन्द्र कुमावत ने भी समय–समय पर आकर प्रशिक्षण दिया और नवोदित कलाकारों और आयोजकों का हौसला बढ़ाया। शिविर के दौरान पूर्व जयपुर राजघरानें की राजकुमारी दीया और कुंवर नरेन्द्र सिंह ने सिटी पैलेस संग्रहालय निदेशक यदुएन्द्र सहाय के साथ शिविर का अवलोकन किया। राजकुमारी दीया ने इस अवसर पर कहा कि ''राजस्थान की परम्परागत लघुचित्र शैली की कलाकृतियों की बड़ी मांग है, अतः इन शैलियों के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।''[167] उन्होंने सरस्वती कला केन्द्र के इस प्रयास की सराहना की।(चित्र–72) शिविर के समापन समारोह की अध्यक्षता जयपुर की तत्कालीन महापौर श्रीमती निर्मला वर्मा ने की। इस अवसर पर कलाकार डॉ. सुमहेन्द्र को स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनन्दन किया गया। सरस्वती कला केन्द्र के संचालक अन्य संस्थाओं द्वारा चलाये जाने वाले कला सृजन कार्यक्रमों को सहयोग देने में पीछे नहीं है। महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय की पुण्य तिथि के अवसर पर एस.एम.एस. संग्रहालय ट्रस्ट, 'रंगरीत' और 'सरस्वती कला केन्द्र' द्वारा 21 जून से 3 जुलाई 2000 ई. तक सिटी पैलेस मे कला प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे 70 बालक बालिकाओं ने निशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त किया। सरस्वती कला केन्द्र द्वारा आयोजित उपरोक्त सभी शिविर निःशुल्क थे। सरस्वती कला केन्द्र के द्वारा वयोवद्ध कलाकार व साहित्यकार रामगोपाल विजयवर्गीय का भी अभिनन्दन किया गया। जयपुर के पूर्व नरेश ब्रि. सवाई भवानी सिंह ने भी इस कला केन्द्र का अवलोकन किया।

सरस्वती कला केन्द्र के संचालकों की यही कामना है कि परम्परागत लघुचित्रों की गुणवत्ता बनी रहें, इसके लिए नई पीढी को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था जारी रखना जरूरी है।

5.2.15 वी, कोटा

वी ग्रुप की स्थापना वर्ष 1999 ई. में की गई थी। यह ग्रुप हाड़ौती के युवा कलाकारों द्वारा बनाया गया था। 'वी' एक अंग्रेजी शब्द WE से बना है जिसका हिन्दी अर्थ 'हम' होता है अर्थात 'हम कलाकारों का एक समूह' इस ग्रुप में मदन मीणा, सिम्मी चतुर्वेदी, घर्मेद्र शाक्यवाल, मुक्ति पाराशर, साबिर हुसैन, बृज संन्दर शर्मा व रितेश शर्मा, संस्थापक सदस्यों में से है।[168] आरम्भ में इसमें हाड़ौती क्षेत्र के कलाकारों को जोडा गया बाद में इसमें राजस्थान के अन्य क्षेत्रों के कलाकारों को भी जोड़ लिया गया। मार्च 2003 ई. में ग्रुप द्वारा जवाहर कला केन्द्र, जयपुर व कोटा आर्ट गैलरी, कोटा में समूह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में बृज सुन्दर शर्मा, रितेश शर्मा, संघमित्रा सौदा, अवन्तिका गोयल, मुक्ति पाराशर, सिम्मी चतुर्वेदी, मनोज शर्मा, राम प्रतिहार, आशीष श्रृंगी व मदन मीणा ने भाग लिया।(चित्र–73)

5.2.16 विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स–वास्ट, (महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, राजस्थान), उदयपुर

21 वीं शताब्दी के उद्घोषक वर्ष 2001 ई. के जुलाई माह में विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स–वास्ट (महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, राजस्थान) की स्थापना उदयपुर, राजस्थान में हुई। डॉ. राजीव गर्ग एवं विष्णु प्रकाश माली की परिकल्पना तथा डॉ. बसन्त कश्यप, डॉ. रघुनाथ, लोकेश जैन, गगन दाधीच, प्रो. मदन सिंह राठौड़, सतीश गुप्ता आदि के स्थापना प्रयासों को प्रो. सी. एस. मेहता के सहयोग से विशेष बल मिला।[169] राजस्थान संस्था रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1958 (राज. अधिनियम संख्या 28, 1958) के अन्तर्गत क्रमांक 244/उदयपुर/01–02 पर पंजीकृत हुई।[170] इस संस्था से राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के दृश्य कला आचार्य जुड़े है। इस संस्था से प्रमुख रूप से प्रो. सी. एस. मेहता, प्रो. वीर बाला भावसर, डॉ. रघुनाथ, डॉ. युगल किशोर शर्मा, डॉ. विष्णु प्रकाश माली, डॉ. इन्द्र सिंह राजपुरोहित, डॉ. राजीव गर्ग, डॉ. बंशीलाल शर्मा, डॉ. लोकेश जैन, हनुमान अस्थाना, किरण सरना, प्रो. मदन सिंह राठौड, डॉ. प्रमोद कुमार सिंह, डॉ. ममता रोकणा, डॉ. सविन्द्र सिंह चुघ, डॉ. अनुपम भटनागर, डॉ महेन्द्र सिंह पंवार, डॉ. चित्रा भटनागर, डॉ. वीना पटेल, डॉ. पुष्पा दुल्लर, डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला,

डॉ. विजया सोलंकी, डॉ. रमेश वर्मा, डॉ. सतीश गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र पाल मेघ, डॉ. नरेन्द्र कुमार वर्मा, डॉ. चित्रा भार्गव, डॉ. पूर्णिमा माथुर, डॉ. हेमलता कुमावत, डॉ. मणि भारतीय, डॉ. माधवी सिंह, डॉ. अरविन्द मेन्डोंला, डॉ. बेला माथुर, डॉ. सविता वर्मा, मोनिका चौधरी, डॉ. रीता प्रताप, डॉ. रेखा भटनागर, प्रियंका वर्मा, डॉ. अर्चना जोशी, डॉ. रजनी पाण्डे, डॉ. सुरभि बिरमीवाल, डॉ. अनिल गुप्ता, डॉ. रितु जौहरी, डॉ. रेणु शर्मा, डॉ. अर्चना, डॉ. चेतना टिक्किवाल, डॉ. अर्चना कुलश्रेष्ठ, शालिनी भारती, निधि मीणा, पूर्णाशंकर मीणा, कृष्णा महावर, डॉ. गगन दाधीच, डॉ. रेखा पंचोली, दीपक भारद्वाज, डॉ. मीना बया, सुशील निम्बार्क, डॉ. आशा भार्गव, डॉ. रूचि शर्मा, किरण मुर्डिया, डॉ. बसन्त कश्यप, डॉ. पुष्पा भारद्वाज, मनीषा चौबीसा, डॉ. कहानी भाणावत, पुष्पा मीणा, राम सिंह भाटी, डॉ. निधि भारद्वाज एवं राजस्थान प्रदेश के बाहर से विशिष्ट सदस्यों के रूप में डॉ. शेखर जोशी (कुमॉऊ विश्वविद्यालय, अलमोड़ा), डॉ. इन्दू जोशी (आगरा विश्वविद्यालय, आगरा) व मनन सचदेवा (कन्या विश्वविद्यालय, जालन्धर, पंजाब) जुड़े हुए है। वास्ट अपने स्थापना वर्ष से ही सेमिनार, कार्यशाला, शिविर, प्रदर्शनी एवं शोध कार्य प्रकाशन आदि के माध्यम से कला, संस्कृति एवं शिक्षा के नवीन पक्ष उजागर कर रहा है। वास्ट द्वारा अब तक तीन शोध संकलन प्रकाशित हो चुके है।(चित्र–74) 13 से 16 दिसम्बर 2003 ई. तक वास्ट के सदस्य कलाकारों के चित्र, रेखाचित्र, मूर्तिशिल्प एवं मिश्रित माध्यम से निर्मित कृतियों की समूह प्रदर्शनी कला दीर्घा, बागोर की हवेली, गणगौर घाट, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर में आयोजित की गई।[171] 4 मई से 6 जून, 2005 ई. तक वास्ट के सचिव रघुनाथ के प्रकृति आधारित रेखाचित्रों एवं छायाचित्रों की एकल प्रदर्शनी का आयोजन वास्ट द्वारा कला दीर्घा, बागोर की हवेली, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर में किया गया।[172] वास्ट के शोध संकलन प्रकाशन व कला प्रदर्शनी आयोजन में पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर का सहयोग रहा है। राजस्थान में हुए अब तक के शोध कार्यों की जानकारी प्रदान करने की दिशा में भी 'वास्ट' के पदाधिकारियों ने उल्लेखनीय कार्य किया है।

5.2.17 हस्ताक्षर, जयपुर

'हस्ताक्षर' कला संगठन ने कला के सर्वांगिण विकास में अपनी महत्ती भूमिका निभाई ऐसे ही कुछ प्रयासों में 1 से 7 नवम्बर 1992 ई. को 'हस्ताक्षर' कला संगठन द्वारा जयपुर में आयोजित अखिल भारतीय कलाकार शिविर रहा। इस शिविर का उद्‌घाटन राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूर चन्द कुलिश ने दीप प्रज्वलित कर किया जबकि चित्रकार जे. स्वामीनाथन ने कैनवास पर नाइफ पेन्टिंग कर शिविर का विधिवित शुम्भारभ किया था। इस शिविर में चित्रकार प्रफुल्ला दहानुकर, प्रो. पी.एन. चोयल, मनजीत बावा,

डॉ. सुमहेन्द्र, रामगोपाल विजयवर्गीय, जापानी ग्राफिक कलाकार एत्सुको इशिकावा, कला समीक्षक विनोद भारद्वाज, सुनील चौपड़ा, मंगलेश ड़बराल के अतिरिक्त किरण मुर्डिया, वीरबाला भावसार, मोहनलाल गुप्ता, राजेन्द्र शर्मा, ध्रुव यादव, डॉ. रामानुज पंचोली, महेन्द्र प्रताप शर्मा, विनय त्रिवेदी, राजेन्द्र सिंह, रुपचन्द्र, हरिशंकर जोशी, हरिशंकर शर्मा आदि ने भाग लिया। यह शिविर राजस्थान के कलाकर्मियों के विशिष्ट शिविर के रुप में सदैव स्मरणीय रहेगा।[173](चित्र–75)

इस संगठन ने राजस्थान की समसामयिक–चित्रकला, मूर्तिकला एवं छापाकला को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से राजस्थान के 25 कलाकारों की 60 कलाकृतियों को राजस्थान ललित कला अकादमी की कला दीर्घा में 17 नवम्बर से 18 नवम्बर 1992 तक प्रदर्शित की।[174] 'हस्ताक्षर' कला संगठन के संस्थापक सदस्यों में एकेश्वर हटवाल, सुनीत घिल्ड़ियाल, ध्रुव यादव, महेन्द्र प्रताप व रामकिशन अड़िग आदि प्रमुख है।

5.2.18 आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर

कला एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान' की स्थापना चित्रकार प्रो. चिन्मय मेहता द्वारा की गई।[175] वर्तमान में संस्थान द्वारा ऑन–लाईन आर्ट गैलरी का भी शुभारम्भ किया गया है। संस्थान के माध्यम से समय–समय पर कला प्रदर्शनियों, कला विषयक कार्यशालाओं एवं कलावार्ताओं का भी आयोजन किया जाता रहा हैं। संस्थान पेशेवर चित्रकारों को आधार उपलब्ध करवाता हैं। संस्थान ने कई योजनाओं को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया हैं। इन्हीं में से एक चौखी–ढ़ाणी के सौन्दर्यकरण की योजना को 'आयाम' द्वारा सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया है।[176] वर्तमान में यह संस्थान ना लाभ, ना नुकसान के साथ चल रहा है। संस्थान में सृजनात्मक विचारों का स्वागत किया जाता है और समाज में नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करने वाली कला को बढ़ावा दिया जाता है।(चित्र–76) 'आयाम' से प्रो. चिन्मय मेहता, एस.एन. शर्मा, धर्मपाल, सीमा जिन्दल, रितु जौहरी, एल. मोनिका देवी, अन्शु पवन, गीतिका गोयल आदि कलाकार जुड़े है जो 'आयाम' के उद्देश्यों के अनुरूप कला सृजन में मग्न है।

5.2.19 आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा

कला को समर्पित 'आकृति कला संस्थान', भीलवाड़ा की परिकल्पना व आधारशिला मूर्तिशिल्पी गोवर्धन सिंह पंवार, चित्रकार श्याम सुन्दर राजानी व कैलाशचन्द्र पालिया द्वारा रखी गई।[177] 17 फरवरी से 22 फरवरी, 2011 ई. तक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित 14वें कला मेला में 'आकृति' के मूर्तिकार गोवर्धन सिंह पंवार, श्याम सुन्दर राजानी, मूलचंद अजमेरा, कैलाश पालिया व दीपिका पाराशर की कलाकृतियों को

प्रदर्शित किया गया। जिसमें ऑन द स्पॉट पेन्टिंग कॉम्पटीशन में संस्थान की दीपिका पाराशर ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।[178] 28 मार्च से 31 मार्च 2011 ई. तक भीलवाड़ा में समूह चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।[179] 31 जुलाई 2011 ई. को संस्थान द्वारा भीलवाड़ा में 'रंग—मल्हार' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमे भीलवाड़ा स्मृति वन की पहाड़ियों में जल एवं पर्यावरण संरक्षण की कामना को लेकर कलाकारों ने अपनी—अपनी शैली में छातों पर चित्रांकन किया।[180] 31 अगस्त 2011 ई. को प्रथम पूज्य भगवान श्री गणेश के महापर्व को अनूठा बनाने के लिए शिव—बालाजी, रोकड़िया गणेश मन्दिर समिति, भीलवाड़ा एवं आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में भीलवाड़ा के 25 कलाकारों की 7 दिवसीय गणेश कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमे शहर के वरिष्ठ एवं युवा कलाकारों ने गणेश को विभिन्न स्वरूपों में कैनवास पर उकेरा। गणेश कार्यशाला का उद्घाटन भीलवाड़ा के अन्तर्राष्ट्रीय फड़ चित्रकार पद्मश्री श्रीलाल जोशी ने गणपति का चित्र बनाकर किया।[181] 25 दिसम्बर से 27 दिसम्बर 2011 ई. तक आकृति कला संस्थान, जिला उधोग केन्द्र एवं पर्यटन विभाग, भीलवाड़ा के संयुक्त तत्वावधान में भीलवाड़ा महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें 40 कलाकारों के चित्र एवं मूर्ति शिल्पों का प्रदर्शन किया गया।[182] 22 फरवरी 2012 ई. को राजस्थान संस्था पंजीकरण अधिनियम 1958 के अन्तर्गत आकृति कला संस्थान, भीलवाडा का पंजीकरण किया गया। इसके पंजीकरण क्रमांक 202/भीलवाडा/2011—12 है। नियमानुसार एक कार्यकारिणी गठित की गई जिसमें अध्यक्ष गोवर्धन सिंह पंवार, उपाध्यक्ष—श्यामसुन्दर राजानी, सचिव—कैलाश चन्द पालिया, कोषाध्यक्ष—दीपिका पाराशर, सह सचिव—रामेश्वर जीनगर व सदस्य के रूप में मंजू मिश्रा, हितहरीदास वैष्णव को मनोनीत किया गया।[183] 24 फरवरी से 28 फरवरी, 2012 ई. तक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय 15वें कला मेला में आकृति कला संस्थान के 18 कलाकारों ने अपनी 50 कलाकृतियाँ एवं 3 मूर्ति शिल्पों का प्रदर्शन किया। इस समूह प्रदर्शनी में वरिष्ठ मूर्तिकार गोवर्धन सिंह पंवार, मूलचंद अजमेरा, मंजू मिश्रा, श्याम सुन्दर राजानी, कैलाश पालिया, मुकुट जोशी, रामेश्वर जीनगर, नन्द किशोर शर्मा, नतालिया, हितहरिदास वैष्णव, गोपाल वैष्णव, चंदशेखर कुम्हार, रचना दारूका, दीपिका पाराशर, लोकेश जोशी, विपुल व्यास, महेश विश्नोई व अफसाना मंसूरी की कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर भीलवाड़ा के दो कलाकरों दीपिका पाराशर की कृति 'सृजन' एवं चित्रकार मुकुट जोशी की कृति 'स्टोरी ऑफ पाबूजी' को पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत की स्मृति में पुरस्कृत किया गया। इस कला मेले में भीलवाड़ा के राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त प्रकाश जोशी ने जीवंत प्रदर्शन कर भीलवाड़ा का गौरव बढ़ाया।[184] 3 जून से 10 जून 2012 ई. तक सात दिवसीय मल्टीमीड़िया शिविर सूचना केन्द्र,

भीलवाड़ा में आयोजित किया गया। इस कैम्प में भीलवाड़ा के 30 कलाकारों ने भाग लिया। कला शिविर के मध्य दिनांक 05.06.2012 ई. को राजस्थान ललित कला अकादमी के अध्यक्ष प्रो. भवानी शंकर शर्मा ने अवलोकन किया। 22 नवम्बर से 27 नवम्बर 2012 ई. तक आकृति कला संस्थान ने एल. एन. जे. समूह के सहयोग से प्रथम राज्य कला प्रदर्शनी का आयोजन भीलवाड़ा में किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार के तत्कालीन सार्वजनिक निर्माण मंत्री भरत सिंह के मुख्य आतिथ्य, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के तत्कालीन अध्यक्ष भवानी शंकर शर्मा की अध्यक्षता व एलएनजे समूह के प्रबंध निदेशक रिजु झुनझुनवाला के विशिष्ठ आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस कला प्रदर्शनी में अखिल राजस्थान से 97 कलाकारों की 170 कलाकृतियों को सूचना केन्द्र, भीलवाड़ा स्थित दो कला दीर्घाओं में प्रदर्शित किया गया। इस प्रदर्शनी में निर्णायक मण्डल द्वारा चयनित कलाकारों की कलाकृतियों को पुरस्कृत किया गया। अफसाना मंसूरी, कोटडी की 'जंगल में मंगल', दीपशिखा वैष्णव, कपासन की 'अनटाइटल्ड', गजेन्द्र कुमावत, जयपुर की 'अनटाइटल्ड IV', पंकज सिसोदिया, बूंदी की 'दिन', राजेन्द्र कुमार शर्मा, आसींद की 'मदर एण्ड चाइल्ड', राकेश शर्मा, उदयपुर की 'घोस्ट सीरीज–I', संदीप कुमार, उदयपुर की 'ग्राफिक्स अनटाइटल्ड' को 5000 रूपये नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। इसी तरह गोपाल वैष्णव, भीलवाड़ा को स्व. बालमुकंद स्मृति में, सत्यनारायण सोनी, भीलवाडा को स्व. भूरसिंह शेखावत स्मृति में, कपिल खन्ना, अजमेर को स्व. गुलाबचंद इनाणी की स्मृति में, डा. मणि भारतीय, बूंदी को स्व. रामप्रसाद लढ्ढ़ा एवं रामेश्वर लाल जीनगर को स्व. सोजाराम नौलखा की स्मृति में 5000 रूपये नकद एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। ''जो कला के प्रति समर्पित है वही कलाकार है। कला महज एक चित्र या तस्वीर नहीं वरन् पूरा जीवन है।'' यह विचार राष्ट्रीय कला वार्ता विषय 'Art as a full time career' में दिल्ली से आए कला समीक्षक विनोद भारद्वाज ने व्यक्त किए। इस राष्ट्रीय कला वार्ता में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के तत्कालीन अध्यक्ष भवानी शंकर शर्मा एवं संभागीय आयुक्त, अजमेर व चित्रकार किरण सोनी गुप्ता ने भी भाग लिया। 20 फरवरी से 24 फरवरी 2013 ई. तक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित 16वें कला मेला में आकृति संस्थान के 16 कलाकारों ने भागीदारी निभाई। 29 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2013 ई. तक आकृति संस्थान ने जिला प्रशासन भीलवाड़ा एवं पर्यटन विभाग, राजस्थान के सहयोग से भीलवाड़ा महोत्सव के अन्तर्गत चित्र एवं मूर्तिशिल्प प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस कला प्रदर्शनी में 38 कलाकारों ने भाग लिया। 7 फरवरी से 11 फरवरी 2014 ई. तक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा शिल्पग्राम, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में आयोजित 17वें कला मेला में संस्थान के 19 कलाकारों ने

भागीदारी निभाई। आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा द्वारा नियमित वार्षिक कला प्रदर्शनी राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित कला मेले व भीलवाड़ा महोत्सव के अन्तर्गत चित्र व मूर्तिशिल्प प्रदर्शनी का क्रम बना हुआ है। इसके साथ–साथ संस्थान द्वारा समय–समय पर कला वार्ताएँ, संगोष्ठियां, कार्यशालाओं आदि का भी आयोजन किया जाता रहा है। (चित्र–77)

5.2.20 बून्दी ब्रश, बून्दी

पारम्परिक बून्दी शैली के कलाकारो के अभाव को दूर करने व बून्दी शैली की ऐतिहासिकता को उजागर करने के उद्देश्य से बून्दी ब्रश संस्थान की स्थापना जनवरी, 2014 ई. में बून्दी में की गई। प्रशासन, पर्यटकों व आमजन का ध्यान जीर्ण शीर्ण हो रही ऐतिहासिक धरोहरो के संरक्षण की ओर भी जाये इस उद्देश्य से बून्दी ब्रश प्रतिवर्ष ऐसे स्थानों पर कार्यशालाएँ आयोजित करता है तथा हाड़ौती की लोक संस्कृति से सम्बन्धित मांडणा कला को प्रोत्साहित करने के लिए मांडणा कला प्रशिक्षण शिविर भी बून्दी ब्रश द्वारा आयोजित किये जाते है। यह संस्थान समय–समय पर कला के माध्यम से पल्स पोलियो, बेटी बचाओ, मतदान जागरूकता, बालिका शिक्षा, समाज में व्याप्त कुरीतियों, पर भी जागरूकता अभियान चलाता रहता है। इस संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. युवराज सिंह, उपाध्यक्ष पंकज सिसोदिया, सचिव सुनिल जांगिड़, कोषाध्यक्ष नन्द प्रकाश शर्मा व सदस्यों में विजय सिंह सौलंकी, हरिनारायण जी भाटी, अरिहन्त सिंह, दोस्त अहमद आदि है।[185] इस संस्थान ने अपने अल्प कार्यकाल और अपने सीमित साधनों के उपरान्त भी समाज में कला चेतना जागृत करने का अद्भुत प्रयास किया है।

राजस्थान के कला संगठनों ने राज्य के उत्थान और सामान्यजन का कला से एकात्म स्थापित करने की दिशा में राजस्थान ललित कला अकादमी के समानान्तर विशिष्ट प्रयास किए है–वर्तमान में कला सृजनशीलता का वातावरण और राज्य की कला का राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थान इस बात की सनद है।

सन्दर्भ

1. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, पृष्ठ–81
2. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, पृष्ठ–52
3. रघुनाथ : राजस्थान की समकालीन कला में दृश्यकला विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के योगदान का प्रदेश के अन्य समकक्ष विभागों से तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, वर्ष 2012 ई., पृष्ठ–20
4. भँवर लाल शर्मा, प्रथम सचिव, तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित
5. डॉ. आर. के. वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और सर्जक, पृष्ठ–186
6. रघुनाथ : राजस्थान की समकालीन कला में दृश्यकला विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के योगदान का प्रदेश के अन्य समकक्ष विभागों से तुलनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध), मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, वर्ष 2012 ई., पृष्ठ–20
7. वही
8. वार्षिक प्रतिवेदन, तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर, वर्ष–1965ई. से लगातार ....
9. द्वितीय वार्षिक कला प्रदर्शनी विवरणिका, तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर, वर्ष 1967 ई. से लगातार ....
10. तेज सिंह : प्रस्तावना, द्वितीय वार्षिक कला प्रदर्शनी विवरणिका, तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर, वर्ष 1967 ई.
11. वार्षिकी–1968, तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर
12. 'प्रायोगिक चित्रकारों के प्रयोग', फुटपाथ (साप्ताहिक समाचार–पत्र), उदयपुर, 15 जून, 1971 ई.
13. 'षष्ठ वार्षिक कला प्रदर्शनी सम्पन्न', जय राजस्थान (दैनिक समाचार–पत्र), उदयपुर, 26 जून, 1972 ई.
14. ग्राम्य एवं लोक कला प्रदर्शनी स्मारिका, केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली एवं तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर, 1974 ई., पृष्ठ–16
15. वही, पृष्ठ–11

16. वही
17. वही, पृष्ठ–10
18. वही
19. ए.एल. दमामी : 'तूलिका कला प्रदर्शनी : कुछ नयेपन की तलाश', जय राजस्थान, 24 अक्टूबर, 1982 ई., पृष्ठ–4
20. आर.बी. गौतम : 'आधुनिक और पारम्परिक कला का समन्वय', राजस्थान–पत्रिका, 29 मई, 1983 ई., पृष्ठ–5
21. 'तूलिका का चित्रकार शिविर प्रारम्भ', यंग पावर, 2 जून, 1983 ई., पृष्ठ–1
22. बसन्त कश्यपः 'तूलिका की वार्षिक प्रदर्शनी', राजस्थान–पत्रिका, 17 जुलाई, 1983 ई., पृष्ठ–5
23. राजस्थान–पत्रिका, उदयपुर, 18 मई, 1984 ई., पृष्ठ–3
24. राजस्थान–पत्रिका, उदयपुर, 14 मई, 1985 ई., पृष्ठ–3
25. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति–समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष–14, अंक–5, मई, 1991 ई., पृष्ठ–2
26. राजस्थान–पत्रिका, उदयपुर, 27 दिसम्बर, 2002 ई., पृष्ठ–3
27. जय–राजस्थान, उदयपुर, 01 जनवरी, 2003 ई., पृष्ठ–3
28. एस.एच. काजी : टखमण–28 एवं राजस्थान की समसामयिक कला (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ), मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, वर्ष 1998 ई., पृष्ठ–27
29. डॉ. आर. के. वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और सर्जक, पृष्ठ–187
30. एस.एच. काजी : टखमण–28 एवं राजस्थान की समसामयिक कला (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ), वर्ष 1998 ई., पृष्ठ–28
31. वही
32. घोषणा–पत्र, प्रथम कला प्रदर्शनी विवरणिका, टखमण–28, उदयपुर, 29 मार्च, 1968 ई.
33. प्रथम कला प्रदर्शनी विवरणिका, टखमण–28, उदयपुर, 29 मार्च, 1968 ई. से लगातार.....
34. वार्षिक प्रतिवेदन, टखमण–28, उदयपुर, 1971 ई. से लगातार ....
35. राजस्थान–पत्रिका, रविवारिय परिशिष्ठ, जयपुर, 30 जनवरी, 1983 ई.
36. प्रथम अखिल भारतीय छापा चित्र प्रदर्शनी विवरणिका, टखमण–28, उदयपुर, वर्ष 1984 ई. से लगातार ....

37. इन्टरनेशनल स्कल्पर्ट्स सिम्पोजियम केटेलॉग, टखमण–28, उदयपुर, 20 फरवरी से 16 मार्च, 1998 ई.
38. डेट लाइन, दैनिक भास्कर, उदयपुर, 20 जून, 2007 ई., पृष्ठ–1
39. डॉ. आर.के. वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और सर्जक, पृष्ठ–188
40. सूजा : माई जयपुर पीरियड़, राजस्थान ललित कला अकादमी एवं प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, 1986 ई., पृष्ठ–2
41. आर.बी. गौतम, संस्थापक सदस्य, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर से साक्षात्कार के आधार पर
42. समूह प्रदर्शनी विवरणिका, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, वर्ष 1970 ई. से लगातार..
43. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष 1987 ई., पृष्ठ–52
44. विधान–पत्र, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, 19 अप्रेल, 1978 ई.
45. वार्षिक प्रतिवेदन, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, 1979 ई. से लगातार ......
46. आर. बी. गौतम (सम्पादक) : अवंत गार्दे आर्टिस्ट ऑफ राजस्थान, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, पृष्ठ–2
47. आर. बी. गौतम (सम्पादक) : आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष–11, अंक–1, जनवरी 1988 ई., पृष्ठ–11
48. आर. बी. गौतम एवं शैलेन्द्र भटनागर (सम्पादक) : राजस्थान की महिला चित्रकार, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर व ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ–2
49. आर. बी. गौतम (सम्पादक) : मोहन, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, मार्च, 1992 ई., पृष्ठ–2
50. आकृति राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, जून–जुलाई, 1992 ई., पृष्ठ–14
51. आकृति राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, मई, 1993 ई., पृष्ठ–13
52. आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान के कलाविद्, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, पृष्ठ–2
53. सिटी भास्कर, दैनिक भास्कर, जयपुर, 7 नवम्बर, 2013 ई., पृष्ठ–1
54. सिटी भास्कर, दैनिक भास्कर, जयपुर, 24 मई, 2015 ई., पृष्ठ–2
55. एक्सपोजिशन–2012, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, 2012 ई., पृष्ठ–3
56. वही

57. आर.बी. गौतम, अध्यक्ष, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर से साक्षात्कार के आधार पर।
58. महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र', संस्थापक, कलावृत से साक्षात्कार के आधार पर।
59. वही
60. वही
61. वही
62. वार्षिक प्रतिवेदन, कलावृत, जयपुर, 1975 ई. से लगातार.......
63. संस्था–पंजीयन पत्र, कलावृत, जयपुर, 1978 ई.
64. वही
65. सुमहेन्द्र (सम्पादक) कलावृत कला पत्रिका, कलावृत, जयपुर, वर्ष 1979 ई., पृष्ठ–47
66. वही, पृष्ठ–47–49
67. वही, पृष्ठ–49–50
68. वही, पृष्ठ–50–55
69. वही, पृष्ठ–56
70. सुमहेन्द्र (सम्पादक) : कलावृत कला पत्रिका, कलावृत, जयपुर, वर्ष–1980 ई., पृष्ठ–2
71. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष–11, अंक–1, जनवरी, 1988, पृष्ठ–11
72. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : राजस्थान के रंग, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1998 ई., पृष्ठ–47
73. सुमहेन्द्र (सम्पादक) : कलावृत कला पत्रिका, कलावृत, जयपुर, जनवरी–मार्च, 1990 ई., पृष्ठ–2
74. प्रो. आर. वी. साखलकर : 'सिम्बोलिज्म इन कन्टम्पररि आर्ट', सुमहेन्द्र (सम्पादक) : कलावृत कला पत्रिका, कलावृत, जयपुर, जनवरी–मार्च, 1991 ई., पृष्ठ–1–20
75. सुरेन्द्र मंजुल : आकृति समाचार बुलेटिन, वर्ष–15, अंक–4, अप्रेल, 1992 ई., पृष्ठ–14
76. राधेश्याम तिवारी : 'फ्रेस्को का चितेरा', पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान सुजस, सितम्बर, 2012 ई., पृष्ठ–41
77. दैनिक भास्कर, जयपुर, 20 जुलाई, 2012 ई., पृष्ठ–1
78. सिटी भास्कर, दैनिक भास्कर, जयपुर, 20 जुलाई, 2013 ई., पृष्ठ–2

79. मूमल (कला पाक्षिक), जयपुर, वर्ष–10, अंक–21, 16 फरवरी, 2015 ई., पृष्ठ–8
80. महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र', संस्थापक, कलावृत, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित
81. पंजीयन प्रमाण–पत्र, आज, उदयपुर, 1979 ई.
82. समूह प्रदर्शनी विवरणिका, आज, उदयपुर, 1979 ई. से लगातार .....
83. दैनिक नवज्योति, जयपुर, 25 अप्रेल, 1979 ई., पृष्ठ–2
84. दैनिक नवज्योति, जयपुर, 30 अप्रेल, 1979 ई., पृष्ठ–2
85. सुधा शीर्ष : 'आज की दूसरी कला प्रदर्शनी' राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 2 जून, 1979 ई., पृष्ठ–4
86. वार्षिक प्रतिवेदन, आज, उदयपुर, 1979 ई. से लगातार ....
87. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 2, अंक : 11 नवम्बर, 1979 ई., पृष्ठ–2
88. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 3, अंक : 2 फरवरी, 1980 ई., पृष्ठ–4
89. दैनिक नवज्योति, जयपुर, 22 सितम्बर 1980 ई., पृष्ठ–2
90. दिनमान, 9–15 नवम्बर, 1980 ई., पृष्ठ–8
91. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 5, अंक : 2 नवम्बर, 1982 ई., पृष्ठ–3
92. आज, उदयपुर को केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त होने का पत्र, पत्र क्रमांक LK/142,1-19/G+S, 30 नवम्बर 1982 ई.
93. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 6, अंक : 2 फरवरी, 1983 ई., पृष्ठ–4
94. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 8 फरवरी, 1983 ई., पृष्ठ–4
95. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 6, अंक : 11 नवम्बर, 1983 ई., पृष्ठ–4
96. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 18 मई, 1984 ई., पृष्ठ–3
97. अखिल राजस्थान लघुचित्र आधारित प्रदर्शनी विवरणिका, आज, उदयपुर, 13 सितम्बर, 1984 ई.
98. वही
99. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 14 मई, 1985 ई., पृष्ठ–4

100. दि इवनिंग न्यूज ऑफ इण्डिया, बॉम्बे, 27 सितम्बर, 1986 ई., पृष्ठ–7

101. अखिल भारतीय टेराकोटा शिविर, मोलेला विवरणिका, आज, उदयपुर, 25 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 1986 ई. से लगातार ....

102. अखिल भारतीय ग्राफिक शिविर, किशनगढ़, उदयपुर विवरणिका, आज, उदयपुर, 16 मई से 26 मई, 1988 ई. से लगातार ....

103. राजस्थान–पत्रिका, उदयपुर, 27 अक्टूबर, 1988 ई., पृष्ठ–4

104. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 14, अंकः 7 जुलाई, 1991 ई., पृष्ठ–7

105. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 11 नवम्बर, 1991 ई., पृष्ठ–2

106. दि इण्डिपेन्डेन्ट, बोम्बे, 14 अप्रेल, 1994 ई., पृष्ठ–3

107. राजस्थान – पत्रिका, उदयपुर, 11 अक्टूबर, 1995 ई., पृष्ठ–4

108. वही

109. सुशील निम्बार्क : 'अखिल भारतीय छापा कला शिविर', इतवारी पत्रिका, जयपुर, 13 जुलाई, 1997 ई., पृष्ठ–4

110. आर.बी. गौतम : 'प्रयोगधर्मी चित्रकार–पी.एन. चोयल'; पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान–सुजस (मासिक), सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जयपुर, वर्ष : 21, अंक : 9, 20 सितम्बर, 2012 ई., पृष्ठ–40

111. ओम सैनी : 'रंगकर्म के पर्याय भानु–भारती'; पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान सुजस (मासिक) सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जयपुर, वर्ष : 21, अंक : 7, 20 जुलाई, 2012 ई., पृष्ठ–58

112. काल–कथा नाटक विवरणिका, आज, उदयपुर, वर्ष 1988 ई., पृष्ठ–1–4

113. ओम सैनी : 'रंगकर्म के पर्याय भानु–भारती', पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान सुजस (मासिक) सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जयपुर, वर्ष : 21, अंक : 7, 20 जुलाई, 2012 ई., पृष्ठ–58

114. वही

115. वित्तीय लेखा–जोखा, आज, उदयपुर, वर्ष 1986 ई. से 1991 ई. तक

116. वही

117. वही

118. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1987 ई., पृष्ठ–52

119. वही

120. रामकुमार : रंगबोध का सफर, रंगबोध, कोटा, 2002 ई., पृष्ठ–1

121. वही, पृष्ठ–2

122. वार्षिक प्रतिवेदन, रंगबोध, कोटा, 1999 ई. से लगातार ....

123. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1987 ई., पृष्ठ–53

124. वही

125. वही, पृष्ठ–54

126. वही

127. अरुणा शेखावत (सम्पादक) : कला किरण, वर्ष : 3,4, अंक : 4,1–2 मई, 2000 ई.– जनवरी, 2001 ई. (संयुक्तांक), पृष्ठ–13

128. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1987 ई., पृष्ठ–54

129. समदर सिंह खंगारोत 'सागर', संस्थापक–सचिव, फाईन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी (फेस), जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

130. वही

131. मनीष सौलंकी : 'रेत के रंगों की रखवाली करती संस्था–चितेरा', अरुणा शेखावत (सम्पादक) : कला किरण, जयपुर, वर्ष : 3, 4, अंक : 4, 1–2 मई, 2000 ई.– जनवरी, 2001 ई. (संयुक्तांक), पृष्ठ–53

132. वही

133. वही, पृष्ठ–54

134. वही

135. आकृति समाचार बुलेटिन : राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्षः 14, अंक : 7, जुलाई, 1991 ई., पृष्ठ–7

136. मनीष सौलंकी : 'रेत के रंगों की रखवाली करती संस्था–चितेरा', अरुणा शेखावत (सम्पादक) : कला किरण, जयपुर, वर्ष : 3, 4, अंक : 4, 1–2 मई, 2000 ई. –जनवरी, 2001 ई. (संयुक्तांक), पृष्ठ–53

137. समदर सिंह खंगारोत 'सागर', संस्थापक, आर्ट कौन्सिल ऑफ राजस्थान, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

138. वही

139. लक्ष्यपाल सिंह राठौड़, संस्थापक–सदस्य, आकार–कला समूह, अजमेर से साक्षात्कार पर आधारित।

140. वही

141. वही

142. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली : 'आकार बुनती संभावनाए', दैनिक नवज्योति, 20 फरवरी, 1994 ई., पृष्ठ–2

143. राजस्थान–पत्रिका, अजमेर, 28 जनवरी, 1998 ई., पृष्ठ–4

144. दैनिक नवज्योति, अजमेर, 16 फरवरी, 1999 ई., पृष्ठ–2

145. राजस्थान–पत्रिका, अजमेर, 15 फरवरी, 2000 ई., पृष्ठ–8

146. दैनिक नवज्योति, अजमेर, 5 फरवरी, 2002 ई., पृष्ठ–2

147. सुरेन्द्र चतुर्वेदी : 'रंगों का संसार', दैनिक भास्कर, अजमेर, 13 जनवरी, 2003 ई., पृष्ठ–2

148. दैनिक नवज्योति, अजमेर, 24 फरवरी, 2003 ई., पृष्ठ–2

149. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 27 दिसम्बर, 2003 ई., पृष्ठ–4

150. दैनिक नवज्योति, अजमेर, 9 फरवरी, 2004 ई., पृष्ठ–5

151. दैनिक नवज्योति, अजमेर, 14 जनवरी, 2005 ई., पृष्ठ–2

152. राजस्थान–पत्रिका, अजमेर, 4 नवम्बर, 2005 ई., पृष्ठ–5

153. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 27 दिसम्बर, 2005 ई., पृष्ठ–4

154. हिन्दुस्तान टाईम्स, जयपुर, 12 जनवरी, 2006 ई., पृष्ठ–4

155. दैनिक भास्कर, अजमेर, 13 फरवरी, 2006 ई., पृष्ठ–2

156. समूह प्रदर्शनी विवरणिका, आकार कला समूह, अजमेर, 3 अक्टूबर से 17 अक्टूबर, 2006 ई.

157. दैनिक भास्कर, जयपुर, 27 दिसम्बर, 2006 ई., पृष्ठ–16

158. दैनिक भास्कर, अजमेर, 5 फरवरी, 2007 ई., पृष्ठ–4

159. हिन्दूस्तान टाईम्स, इन्दौर, 23 जून, 2007 ई., पृष्ठ–4

160. महका भारत, जयपुर, 20 अक्टूबर, 2008 ई., पृष्ठ–6

161. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 27 दिसम्बर, 2008 ई., पृष्ठ–16

162. राजस्थान–पत्रिका, अजमेर, 1 नवम्बर, 2009 ई., पृष्ठ–5

163. समूह प्रदर्शनी विवरणिका, आकार कला समूह, अजमेर, 25 दिसम्बर से 30 दिसम्बर, 2009 ई. तक से लगातार ....

164. वार्षिक प्रतिवेदन, अंकन, भीलवाड़ा, वर्ष 1994 ई. से लगातार ......

165. कलाविद् राम जैसवाल, संस्थापक, अंलकृति कलाकार समूह, अजमेर से साक्षात्कार पर आधारित।

166. देवी सिंह नरुका : 'परम्परागत कला सृजन के लिए प्रयत्नशील सरस्वती कला केन्द्र', अरुणा शेखावत (सम्पादक) : कला किरण–त्रैमासिक कला पत्रिका, जयपुर, वर्ष : 3, अंक : 4, वर्ष : 4, अंक : 1–2, मई, 2000 ई., जनवरी, 2001 ई. (संयुक्तांक), पृष्ठ 23

167. वही

168. वी ग्रुप, कोटा विवरणिका, वर्ष 2003 ई., पृष्ठ–2

169. रघुनाथ (सम्पादक) : वास्ट एण्ड विजन, उदयपुर, अंक : 2, वर्ष 2004–05 ई., पृष्ठ 84

170. वही

171. वास्ट सदस्य कलाकारों की समूह प्रदर्शनी विवरणिका, वास्ट, उदयपुर, 13 से 16 दिसम्बर, 2003 ई.

172. रघुनाथ के प्रकृति आधारित रेखाचित्रों एवं छायाचित्रों की एकल प्रदर्शनी विवरणिका, वास्ट, उदयपुर, 4 मई से 6 जून, 2005 ई.

173. लवनीन : 'हस्ताक्षर' का कला शिविर, सुरेन्द्र मंजुल (सम्पादक) : आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्षः15, अंकः11–12, नवम्बर–दिसम्बर, 1992 ई., पृष्ठ–19–21

174. वही

175. प्रो. चिन्मय मेहता, संस्थापक, आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

176. वही

177. पंजीकरण–पत्र, आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा, वर्ष–2012 ई.

178. वार्षिक–प्रतिवेदन, आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा, वर्ष 2011 ई.

179. वही

180. दैनिक भास्कर, भीलवाड़ा, 1 अगस्त, 2011 ई., पृष्ठ–2

181. गणेश महापर्व विवरणिका, शिव बालाजी रोकड़िया गणेश मन्दिर समिति एवं आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा, वर्ष 2011 ई.

182. भीलवाड़ा महोत्सव विवरणिका, जिला उधोग केन्द्र, पर्यटन विभाग, भीलवाड़ा एवं आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा, वर्ष 2011 ई.

183. पंजीकरण–पत्र, आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा, वर्ष 2012 ई.

184. वार्षिक प्रतिवेदन, आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा, वर्ष 2012 से लगातार ....

185. विधान–पत्र, बूंदी ब्रश, वर्ष 2014 ई.

fp=&13 % rfydk dykdkj ifj"kn] mn;ij d fp=dkj&1968 b-

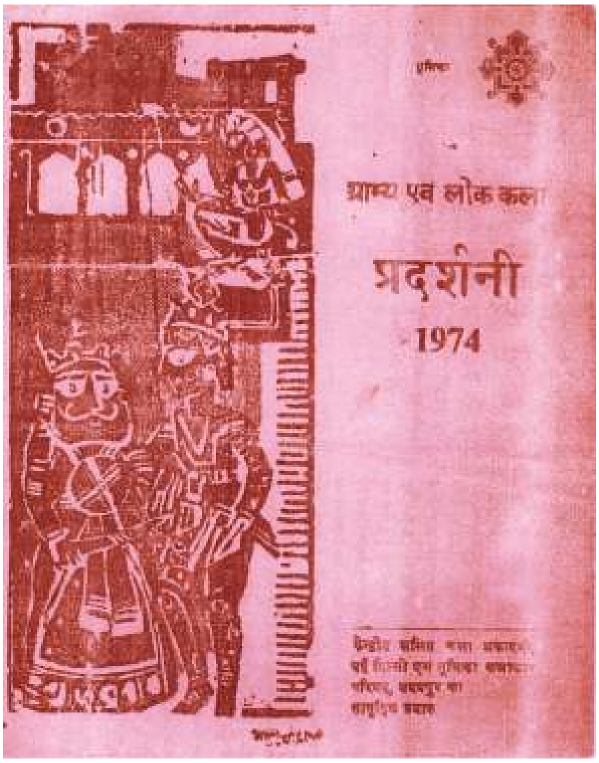

fp=&14 % dUnh; yfyr dyk vdkneh] ub fnYyh ,o rfydk dykdkj ifj"kn] mn;ij d l;Dr rRoko/kku e vk;kftr xkE; ,o ykd dyk in'kuh&1974 b- dh foojf.kdk

fp=&15 % rfydk dykdkj ifj"kn] mn;ij }kjk
vk;kftr dyk f'kfoj] _"kHk no&1977 b-

fp=&16 % rfydk dykdkj ifj"kn] mn;ij dh 14oh dyk in'kuh] 1981&82 b-
dh foojf.kdk ,o ^t; jktLFkku* lekpkj i= e idkf'kr lekpkj

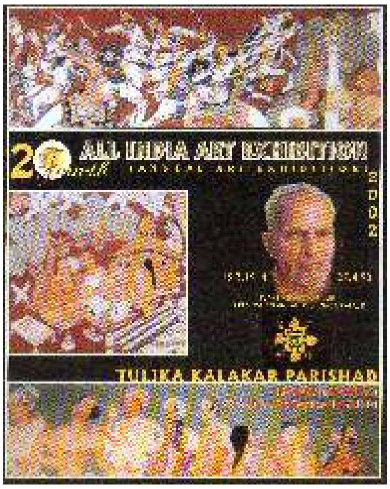

fp=&17 % rfydk dykdkj ifj"kn] mn;ij dh
24oh dyk in'kuh&2002 b- dh foojf.kdk

fp=&18 ½ V[ke.k&28] mn;ij d ikjfEHkd ;ok fp=dkj

fp=&19 ½ V[ke.k&28] mn;ij dh iFke in'kuh] foojf.kdk&1968 b-

fp=&20 ½ V[ke.k&28] mn;ij }kjk vk;kftr Nkik fp=dkj f'kfoj e
fp=dkjk d e/; rRdkyhu xg lfpo ,p-,l- je.kh

fp=&21 % V[ke.k&28] mn;ij]
dyk in'kuh foojf.kdk&1983 b-

fp=&22 % V[ke.k&28] mn;ij }kjk
vk;kftr f}rh; vf[ky Hkkjrh;
Nkik in'kuh&1987 b-

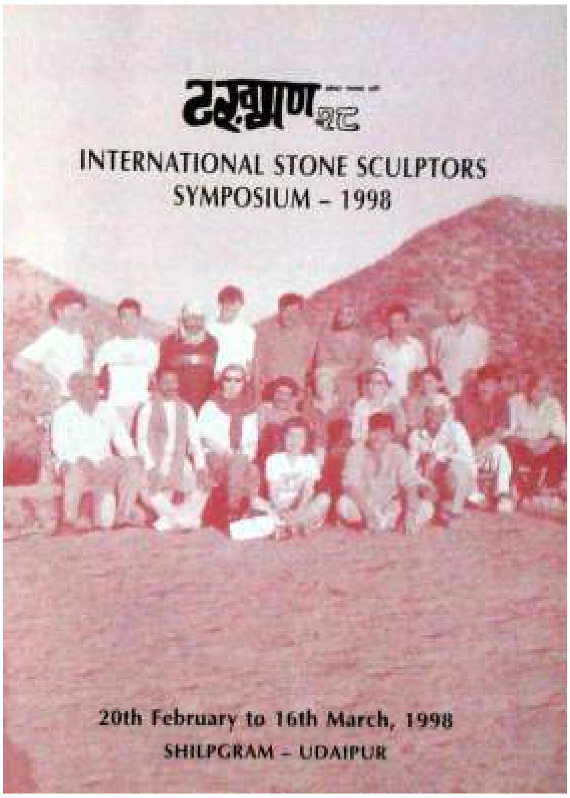

fp=&23 % V[ke.k&28] mn;ij }kjk vk;kftr b.Vju'kuy LVku LdYiVl
flEikft;e&1998 b- dh foojf.kdk ,o flEikft;e dk mn?kkVu djr egkjk.kk
Jhth vjfoUn flg eokM o e[; vfrfFk;k }kjk efrf'kYi dk;'kkyk dk voykdu

fp=&24 % V[ke.k&28] mn;ij ifjlj

कलाकारों को प्रत्यक्ष रुप से पहचान दिलाता है टखमण-28

उदयपुर, 19 फरवरी(कास.)। कला के क्षेत्र में प्रयोगधर्मा के रुप में देश-विदेश में ख्याति अर्जित करने वाली संस्था टखमण-28 का आगामी 22 फरवरी से 16 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय मूर्तिकार शिविर आयोजित किया जायेगा जिसमें देश विदेश के मूर्तिशिल्पकार अपनी भागीदारी निभाते हुए इस संस्था को शीर्ष स्थान देंगे।

संस्था के अध्यक्ष एवम वरिष्ठ चित्रकार श्री सुरेश शर्मा ने गुरुवार को आयोजित प्रेस कांफेस में टखमल-28 की तीन दशक पुरानी कलायात्रा एवम विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा करते हुए बताया कि समय-समय पर संस्था के सफल आयोजन से इसके सदस्य कलाकारों ने न केवल भारत अपितु राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति अर्जित की है। भारत में ऐसी मात्र केवल दो ही संस्था प.भारत की चोला मण्डल-मद्रास तथा टखमल-28 उदयपुर है। जिसकी स्थापना आज से 30 वर्ष पूर्व 28 फर.1968 में की गई थी। 28 फर. को स्थापना होने से इसके नामकरण के पीछे 28 लगाया जाता है।

आज वे बताते है कि राजस्थान की [illegible] चित्रकला की दृष्टि से अपना विशेष महत्व र[illegible] जाती है। यहां के चित्रकारों ने समय-समय अ[illegible]पनी कला प्रतिभा के बल पर निजी का सृजन [illegible] जनमानस की यहां की लोककलाओं संस्कृति [illegible] से रुबरु किया है। मानो इन कलाकारों को प्रत्यक्ष रुप से पहचान टखमल-28 से ही मिली है। समकालीन चित्रकला को शीर्ष स्थान दिलाने में यह संस्था काफी मददगार सिद्ध हुई है। यह संस्था समकालिन कला आन्दोलन अखिल भारतीय मूर्ति शिल्पकला शिविर [illegible] शिविर चित्रकला शिविर तथा [illegible] कलाकार शिविर इत्यादि के माध्यम से कला परिचर्चा तथा [illegible] सम्मेलन, प्रदर्शनी के आयोजन इत्यादि को सम्पन्न कराने का श्रेय भी इसी [illegible] जाता है। अब तक संस्था ने राज्य व देश [illegible] राजधानी दिल्ली मुम्बई कलकत्ता मद्रास हैदराबाद, बनारस, जयपुर, उदयपुर इत्यादि में सफलतापूर्वक प्रदर्शनि[illegible] आयोजित कर चुका है।

प्रो.शर्मा ने संस्थापक कुछ दिग्गज कलाकारों के नाम भी गिनाये तथा प्रवृत्तियों के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने आगामी 22 से आयोजित होने वाले शिविर के बारे में जानकारियां देते हुए बताया कि इस शिविर का आयोजन पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र टखमल-28 के संयुक्त तत्वाधान में किया जा रहा है, जिसमें राज्य के मूर्तिशिल्पीयों के अलावा देश-विदेश के मूर्तिशिल्प भाग लेंगे। जिनमें कोरिया, जापान,जर्मनी, इटली, स्पेन के मूर्ति कलाकारों के अलावा भारत के नई दिल्ली, बनारस, भीलवाड़ा, उदयपुर के मूर्तिशिल्पी भी भाग लेंगे। इस प्रकार के अन्तराष्ट्रीय स्तर पर शिविर का आयोजन उदयपुर में प्रथम बार हो रहा है। जिसमें सेमिनार, कलावार्ता, स्लाइडस, फिल्म प्रदर्शन इत्यादि का आयोजन कर विस्तृत चर्चा की जायेगी।

उन्होंने संस्था की भावी योजनाएं भी बताई जिसमें भवन निर्माण, कला दीर्घा, संग्रहालय, पुस्तकालय, कार्यशाला, स्टूडियो, पत्रिका प्रकाशन, प्रायोगिक रंगमंच, शोध संस्थान लोक चित्रण व शिल्प संस्थान तथा कला प्रशिक्षण कार्यशाला इत्यादि प्रवृत्तियां शामिल है।

fp=&25 % V[ke.k&28] mn;ij ij idkf'kr ,d lekpkj

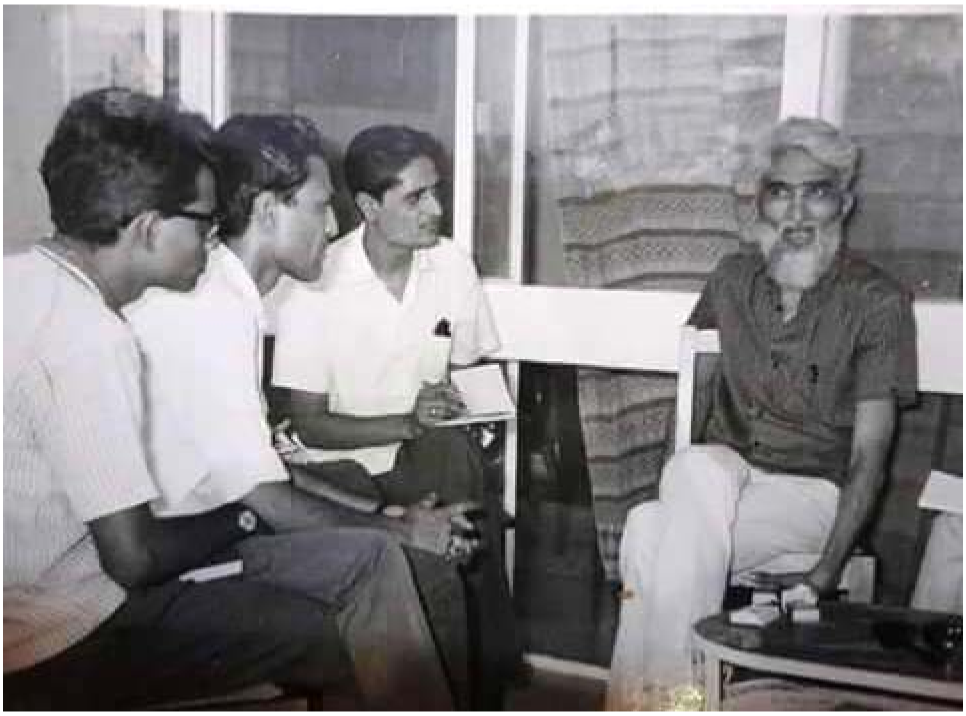

fp=&26 % ix] eEcb d lLFkkid lnL; ,e-,Q- glu d lkFk
ix] t;ij d lLFkkid lnL; Mk- vkj-ch- xkre]
Mk- iepUn xkLokeh o vU;

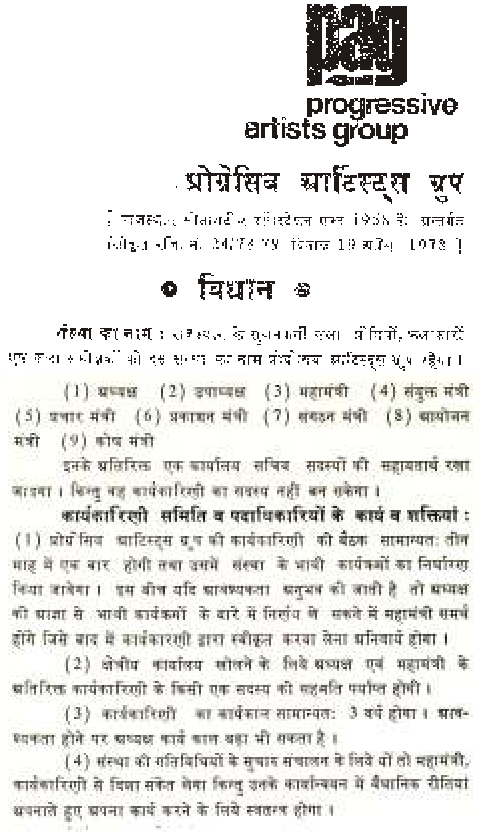

progressive
artists group

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप

[राजस्थान [illegible] रजिस्ट्रेशन एक्ट 1958 के अन्तर्गत
[illegible] 24/78-79 दिनांक 19 अप्रैल 1978]

● विधान ●

संस्था का नाम : [illegible]
[illegible] संस्था का नाम प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप रहेगा।

(1) अध्यक्ष (2) उपाध्यक्ष (3) महामंत्री (4) संयुक्त मंत्री (5) प्रचार मंत्री (6) प्रकाशन मंत्री (7) संगठन मंत्री (8) आयोजन मंत्री (9) कोष मंत्री

इनके अतिरिक्त एक कार्यालय सचिव सदस्यों की सहायतार्थ रखा जायगा। किन्तु वह कार्यकारिणी का सदस्य नहीं बन सकेगा।

कार्यकारिणी समिति व पदाधिकारियों के कार्य व शक्तियां :

(1) प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप की कार्यकारिणी की बैठक सामान्यतः तीन माह में एक बार होगी तथा उसमें संस्था के भावी कार्यक्रमों का निर्धारण किया जावेगा। इस बीच यदि आवश्यकता अनुभव की जाती है तो अध्यक्ष की आज्ञा से भावी कार्यक्रमों के बारे में निर्णय ले सकने में महामंत्री समर्थ होंगे जिसे बाद में कार्यकारणी द्वारा स्वीकृत करवा लेना अनिवार्य होगा।

(2) क्षेत्रीय कार्यालय खोलने के लिये अध्यक्ष एवं महामंत्री के अतिरिक्त कार्यकारिणी के किसी एक सदस्य की सहमति पर्याप्त होगी।

(3) कार्यकारिणी का कार्यकाल सामान्यतः 3 वर्ष होगा। आवश्यकता होने पर अध्यक्ष कार्य काल बढ़ा भी सकता है।

(4) संस्था की गतिविधियों के सुचारु संचालन के लिये यों तो महामंत्री, कार्यकारिणी से दिशा संकेत लेगा किन्तु उनके कार्यान्वयन में वैधानिक रीतियां अपनाते हुए अपना कार्य करने के लिये स्वतन्त्र होगा।

fp=&27 % ix] t;ij dk fo/kku i=&1978 b-

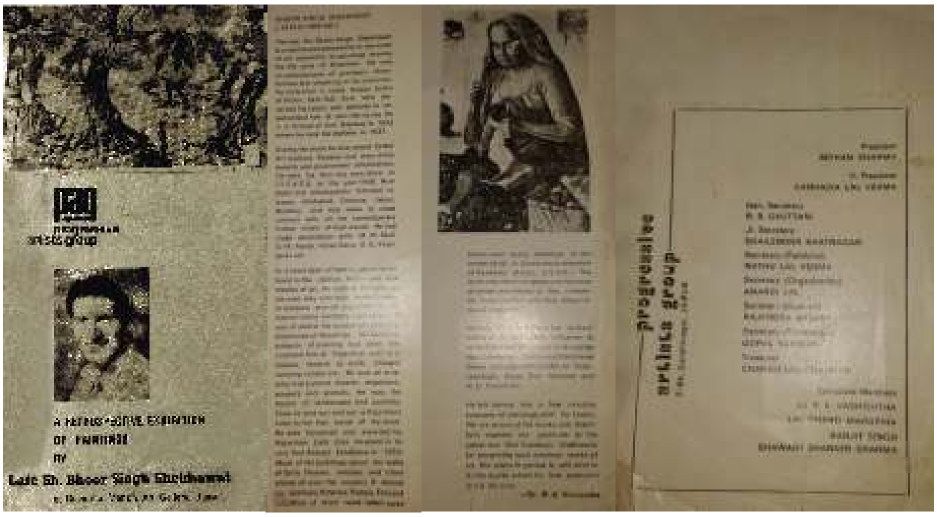

fp=&28 % ix] t;ij }kjk Lo- Jh Hkjflg 'k[kkor
dh Lefr e vk;kftr fp=dyk in'kuh&1982 b- dh foojf.kdk

fp=&29 % ix] t;ij d lfpo vkj-ch- xkre }kjk ix] eEcj d lLFkkid lnL;
,Q-,u- lwtk dk vfHkuUnu rFkk lwtk d t;ij iokl ij ix] t;ij
}kjk idkf'kr ,d ifLrdk] 9 ekp 1986 b-

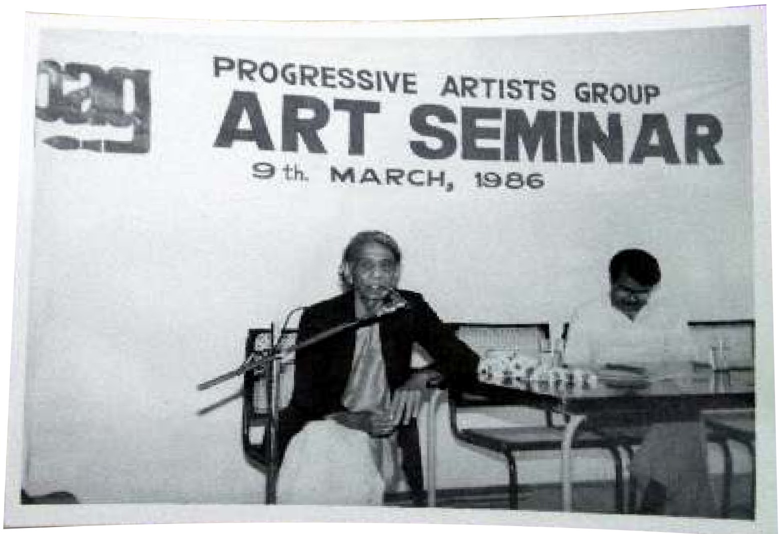

fp=&30 % ix] t;ij }kjk vk;kftr dyk lxk"Bh e dyk okrk iLrr
djr g, ofj"B fp=dkj jkexkiky fot;oxh;] 9 ekp 1986 b-

fp=&31 % ix] t;ij }kjk dUnh; yfyr dyk vdkneh] ub fnYyh d lg;kx l e/;in'k dyk ifj"kn] Hkkiky dh fofFkdk e vk;kftr dyk in'kuh dh foojf.kdk&1992 b-

fp=&32 % ix] t;ij }kjk idkf'kr fofo/k dyk idk'ku

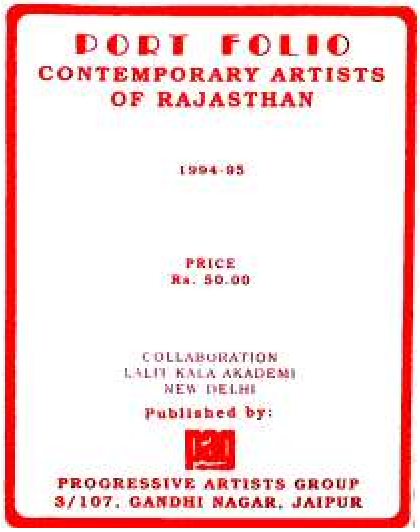

PORT FOLIO
CONTEMPORARY ARTISTS
OF RAJASTHAN

1994-95

PRICE
Rs. 50.00

COLLABORATION
LALIT KALA AKADEMI
NEW DELHI

Published by:

PROGRESSIVE ARTISTS GROUP
3/107, GANDHI NAGAR, JAIPUR

fp=&33 ¼ ix] t ; ij }kjk jk t LFkku d
ledkyhu fp=dkjk ij idkf'kr ikVQkfy;k&1994 b-

fp=&34 ¼ ix] t ; ij d lnL; fp=dkjk dh dykusjh dyk nh?kk]
t ; ij e vk;kftr leg fp= in'kuh&2011 b-

fp=&35 ½ ix] t;ij d lfØ; fp=dkj dykfon Mk- iepUn xkLokeh dh Lefr e mud dykde ij vk/kkfjr ix] t;ij }kjk vk;kftr dyk in'kuh&2012 b- e [;kruke oh.kkoknd xeh vokM fotrk iùJh if.Mr fo'o ekgu HkVV o jktLFkku yfyr dyk vdkneh] t;ij d rRdkyhu v/;{k Hkokuh 'kdj 'kek d lkFk 'kk/kkFkh ¼'kk/kkFkh u dykfon Mk- iepUn xkLokeh d —frRo o 0;fDrRo ij vk/kkfjr y?k 'kk/k icU/k Hkh i.k fd;k g½

fp=&36 ½ ix] t;ij }kjk vk;kftr fofHkUu le; in'kfu;k dh foojf.kdk,

fp=&37 % ix] t;ij }kjk vk;kftr t;ij vkV lfeV&2013 b-

fp=&38 % ix] t;ij }kjk Hkkjr vkj uiky HkdEi ihfMrk dh lgk;rkFk ub fnYyh dh Mh-lh- vkV xyjh e vk;kftr leg in'kuh&2015 dk voykdu djrh lkaln o vfHkus=h t;ink o nfud HkkLdj e idkf'kr lekpkj

fp=&39 % ix] t;ij }kjk vk;kftr t;ij vkV lfeV&2015 b-

fp=&40 % dykoÙk i f=dk d fofHkUu vd

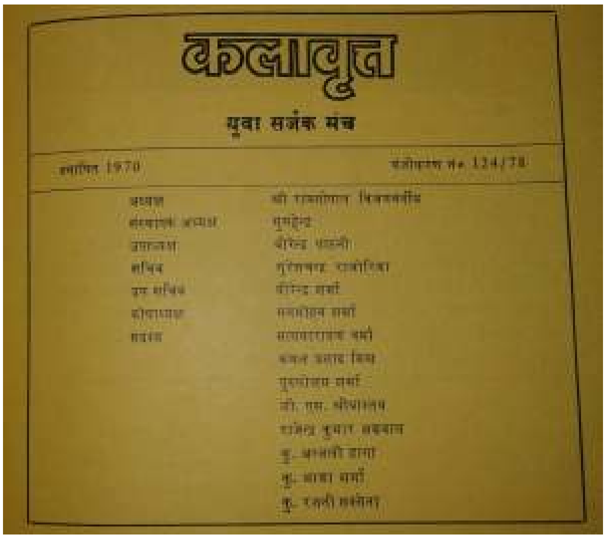

कलावृत्त

युवा सर्जक मंच

स्थापित 1970 पंजीकरण सं. 124/78

अध्यक्ष	श्री रामगोपाल विजयवर्गीय
संस्थापक अध्यक्ष	सुमहेन्द्र
उपाध्यक्ष	वीरेन्द्र पालनी
सचिव	सुरेशचन्द्र राजोरिया
उप सचिव	वीरेन्द्र शर्मा
कोषाध्यक्ष	मनमोहन शर्मा
सदस्य	सत्यनारायण वर्मा
	कमल प्रसाद मिश्र
	पुरुषोत्तम शर्मा
	जी. एस. श्रीवास्तव
	राजेन्द्र कुमार अग्रवाल
	कु. [illegible]
	कु. आशा शर्मा
	कु. रजनी सक्सेना

fp=&41 % dykoÙk lxBu dh dk;dkfj.kh&1978 b-

fp=&42 ¼ dykoÙk }kjk o;ko) fp=dkj ';ke lUnj dk lEeku
¼ck;½ o in'kuh dk mn?kkVu dju d i'pkr voykdu djrh
jktLFkku dh rRdkyhu dyk ,o lL—fr e=h Jherh deyk ¼nk;½

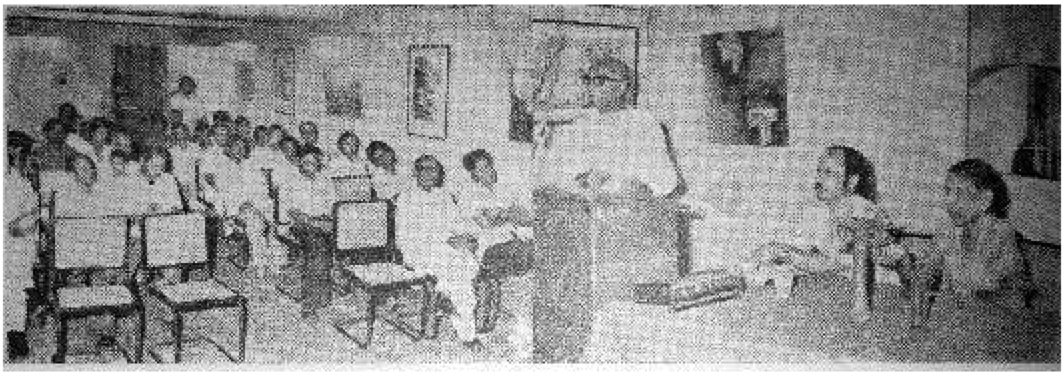

fp=&43¼ dykoÙk }kjk vk;kftr ^dyk f'k{kk :i vkj ik:i*
fo"k; ij vk;kftr fopkj xk"Bh&1979 b-

fp=&44¼ dykoÙk }kjk vk;kftr uoe vf[ky Hkkjrh; ;ok
efrf'kYi f'kfoj&1991 b-

fp=&45½ dykoÙk }kjk vk;kftr pkchlok vf[ky Hkkjrh;
efrf'kYi f'kfoj&2006 b-

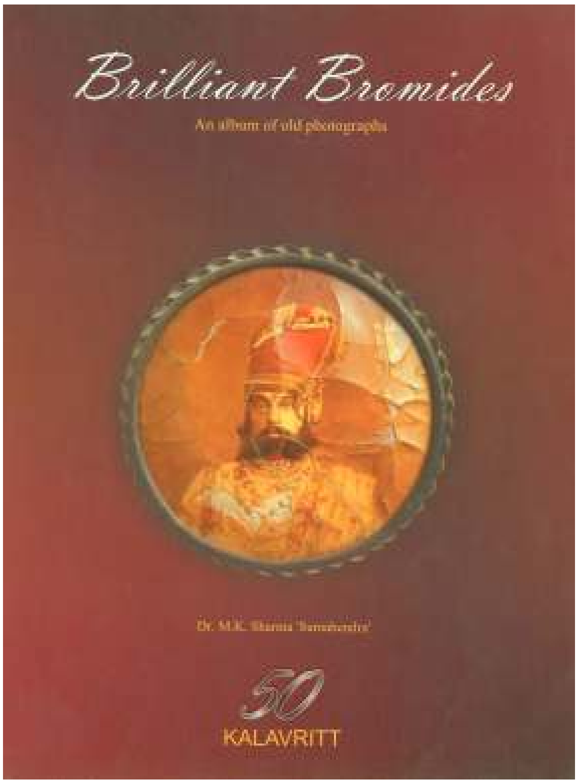

fp=&46½ lEiknd legUn }kjk lEikfnr
dykoÙk if=dk dk 50ok vd

fp=&47% dykoÙk d lLFkkid legUn dh Lefr e dykoÙk lLFkk vkj
jktLFkku fo'ofo|ky;] t;ij d n';&dyk foHkkx d
l;Dr rRoko/kku e vk;kftr efrf'kYi dk;'kkyk&2015 b-

fp=&48% dykoÙk d lLFkkid legUn dh Lefr e dykoÙk lLFkk vkj
jktLFkku fo'ofo|ky;] t;ij d n';&dyk foHkkx d
l;Dr rRoko/kku e vk;kftr y?kfp=.k f'kfoj&2015 b-

fp=&49% dykoÙk d lLFkkid legUn }kjk fufer johUnukFk Bkdj
dh vknedn efr ¼johUn ep] t;ij½

CONCEPTS

Indian Art with its unlimited potentialities can amalgamate modern experiments without sacrificing its essential Indianness.

'AAJ' aims to enthuse both the artists and art lovers with a fresh and radical awareness of contemporary Indian Art – an art which has its own idiom and a live tradition.

'AAJ' maintains its identity by a contribution of programmes, holding art exhibitions, group discussions, seminars, conferences and projecting art films & slides.

While fore-doing creativity it also aims to provide the public an understanding of the cultural heritage and thereby widen their aesthetic horizons and sharpen their sensibilities.

THE FORMATION

Four young painters Shail Choyal, A. L. Damami, Om Chouhan and Kiran Murdia used to meet casually to discuss the propagation of Art among the masses.

The idea was realised on 24th March 1979, when 'AAJ' was formed with other young and like minded artists who also joined in.

The very name of the group 'AAJ' is a concept in itself to keep the artists in the high mood of 'today' meaning to be creative and current.

PATRONS
Dr. K. N. NAG
SHRI P. N. CHOYAL

FOUNDER MEMBERS
SHAIL CHOYAL
A. L. DAMAMI
OM CHOUHAN
KIRAN MURDIA

PRESIDENT
SHEELA SHARMA

VICE-PRESIDENT
RAJENDRA SHARMA

SECRETARY
BHAMINI TALESARA

JOINT SECRETARY
ASHOK HAZRA

FINANCE SECRETARY
KIRAN MURDIA

PUBLIC RELATION SECRETARIES
PURNIMA KAUL
A. L. DAMAMI
OM CHOUHAN

fp=&50% ^vkt^ lxBu] mn;iqj] iFke in'kuh foojf.kdk&1979 b-

fp=&51% ^vkt^ lxBu] mn;iqj }kjk vk;kftr iFke vf[ky Hkkjrh; xkfQd
in'kuh&1979 b- dk 'kHkkjEHk djr g,
jktLFkku d rRdkyhu jkT;iky Jh j?kdy fryd

fp=&52% ekyyk xko d VjkdkVk dyk d ykd&dykdkjk d
lkFk ^vkt* lxBu d lnL; dykdkj&1979 b-

fp=&53% Hkkjrh; ikjEifjd dyk fo"k; ij okrk iLrr
djr g, ik- ih-,u- pk;y&1980 b-

fp=&54½ ^vkt* lxBu] mn;ij }kjk fodykx cPpk d fy,
vk;kftr fp=dyk ifr;kfxrk&1980 b-

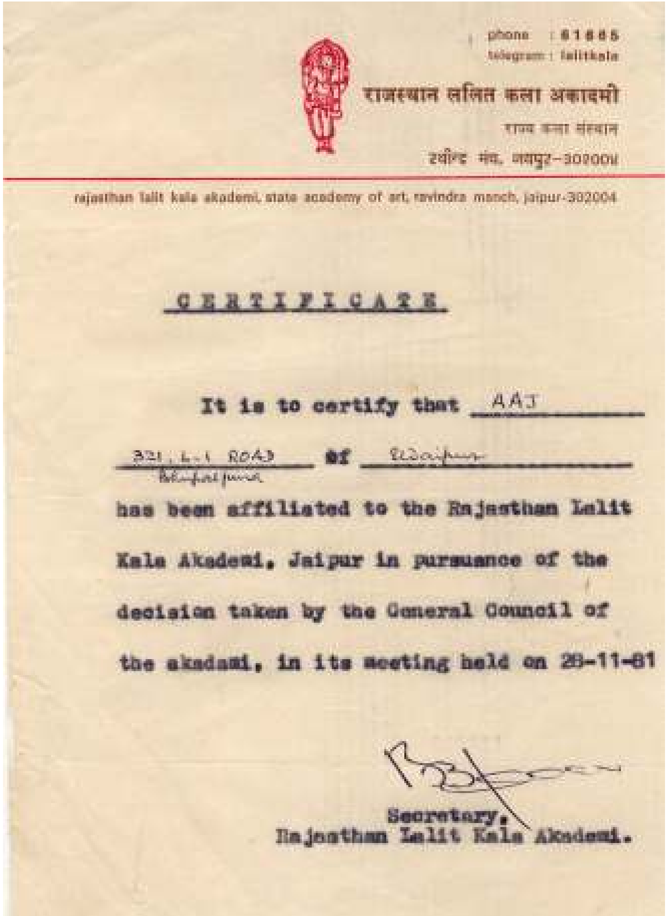

phone : 61665
telegram : lalitkala

राजस्थान ललित कला अकादमी
राज्य कला संस्थान
रवीन्द्र मंच, जयपुर–302004

rajasthan lalit kala akademi, state academy of art, ravindra manch, jaipur-302004

CERTIFICATE

It is to certify that AAJ
321, L-1 ROAD Bhupalpura of Udaipur
has been affiliated to the Rajasthan Lalit Kala Akademi, Jaipur in pursuance of the decision taken by the General Council of the akadami, in its meeting held on 28-11-81

Secretary,
Rajasthan Lalit Kala Akademi.

fp=&55½ ^vkt* lxBu] mn;ij dk jktLFkku
yfyr dyk vdkneh] t;ij l ekU;rk iek.k&i=&1981 b-

fp=&56% ^vkt* lxBu] mn;ij d e/; fp=dkj y{e.k i&1982 b-

fp=&57% ^vkt* lxBu] mn;ij d lLFkkid lnL; 'ky pk;y
^Hkkjrh; ledkyhu xkfQd dyk* ij okrk iLrr djr g,&1982 b-

fp=&58% ^vkt* lxBu] mn;ij }kjk idkf'kr ekukxk¶l ,o
fofHkUu in'kfu;k dh foojf.kdk,

fp=&59% ^vkt* lxBu] mn;ij ,o Hkkjrh; ykd dyk e.My] mn;ij d
l;Dr rRoko/kku e vk;kftr jk"Vh; fp=dkj f'kfoj&1995 b-
e i/kkj fp=dkj tfru nkl

fp=&60% ^vkt* lxBu] mn;ij }kjk vk;kftr
vf[ky Hkkjrh; Nkik dyk f'kfoj&1997 b- e i/kkj fp=dkj jke'oj flg

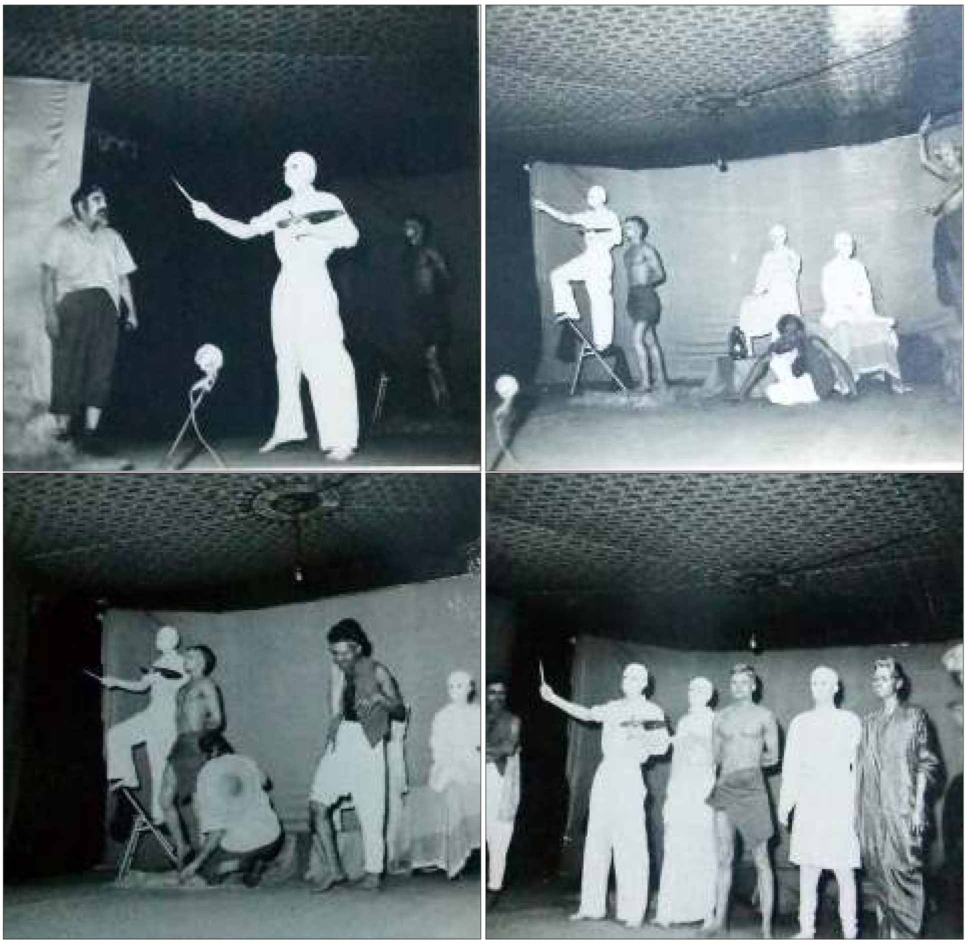

fp=&61% ik- ih-,u- pk;y }kjk funf'kr dykRed ukVd
^pyr&fQjr cr*

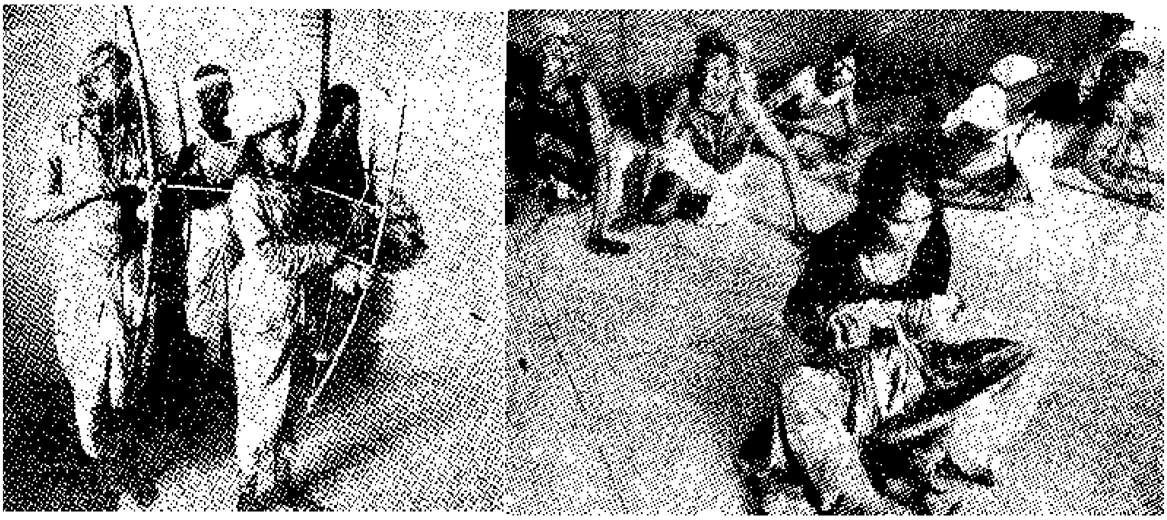

fp=&62% ^vkt* lxBu o fn'kk ukV; lLFkku] mn;ij
}kjk fufer ^dky&dFkk* ukVd

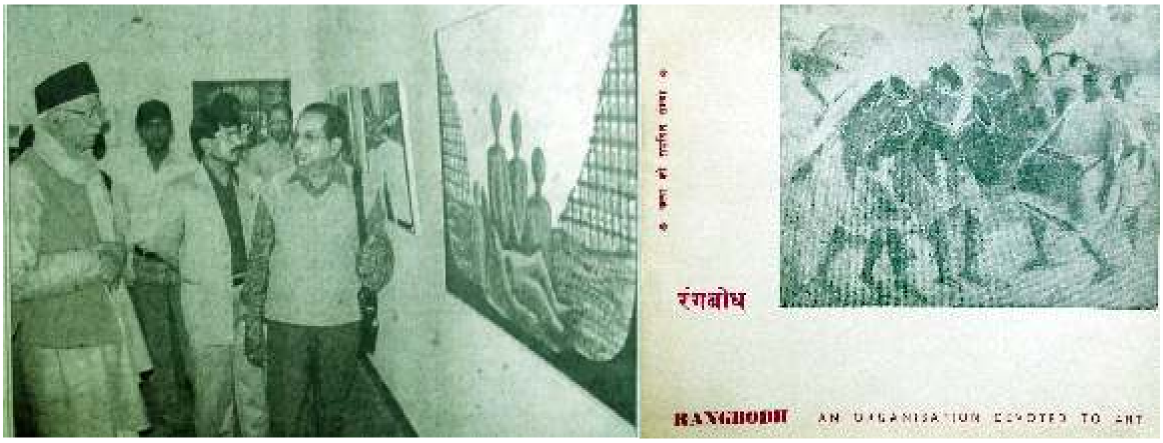

fp=&63½ jxck/k lLFkku dh vkj l vk;kftr fp=dyk in'kuh&2002 b-
dk voykdu djr iùJh –iky flg 'k[kkor o jktLFkku yfyr dyk vdkneh
d rRdkyhu lfpo lenj flg [kxkjkr ¼chp e½ vkj jxck/k d lfpo lHkk"k ddj
,o jxck/k dh leg dyk in'kuh dh ,d foojf.kdk

fp=&64½ ^lkfgR; dyk efnj* dkVk }kjk vk;kftr
fp= in'kuh&1985 b- dk voykdu djr n'kd

fp=&65½ e;j&6] ouLFkyh }kjk vk;kftr leg dyk
in'kuh&1980 b- dh foojf.kdk

fp=&66% Qkbu vkV ,D lii'ku lkslk;Vh ¼Qsl½] t;iqj }kjk vk;kftr ckjgeklk dyk f'kfoj&tu] 1987 b-

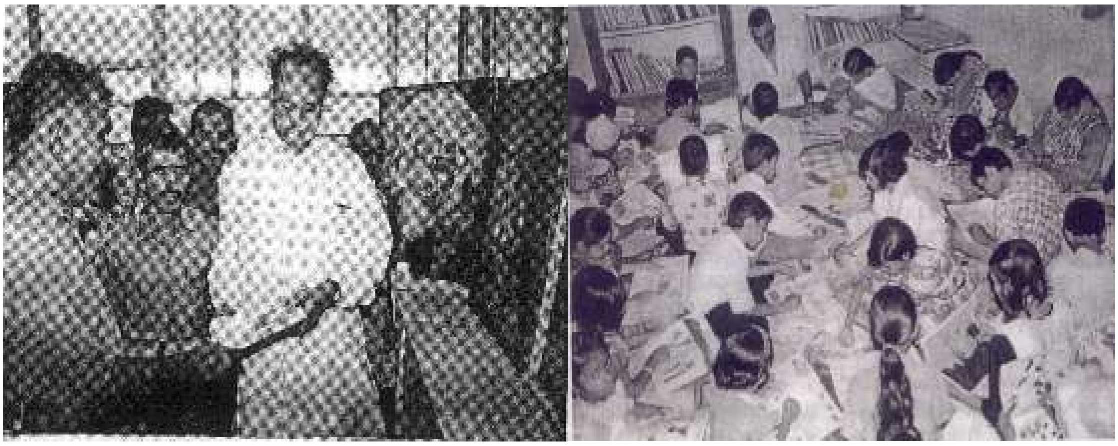

fp=&67% fprjk] tk/kij dh leg dyk in'kuh dk voykdu djr g,
jktLFkku d rRdkyhu e[;e=h v'kkd xgykr ,o fprjk tk/kij
}kjk vk;kftr cky f'kfoj&2000 b-

Magic of the East

YOU MIGHT be familiar with the intricate miniature paintings from Indian's past, but to see such detail expanded on to a large scale is a rare treat.

FINE DETAIL: Samdar in action, working on his intricate designs — and below, a painting called The Anxious Heroine

fp=&68½ vkV dkfly vkQ jktLFkku] t;iqj d lLFkkid lnL;
lenj flg [kxkjkr ^lkxj* fcVu d oYl jkT; e lt ujr
¼fcVu d oYl jkT; d ifl) lekpkj i=&
lkmFk oYl ^bdk* e 21 eb] 1993 b- e idkf'kr lekpkj½

fp=&69½ vkdkj dyk leg] vtej }kjk ug: vkV lUVj] eEcb e vk;kftr
leg dyk in'kuh&2013 b- dk mn?kkVu djr g, uuk jk; ,o in'kuh
dk voykdu djr y[kd o vfHkurk fxfj'k dukM

fp=&70% vdu dyk leg] HkhyokMk dh fofHkUu
dykRed xfrfof/k;k

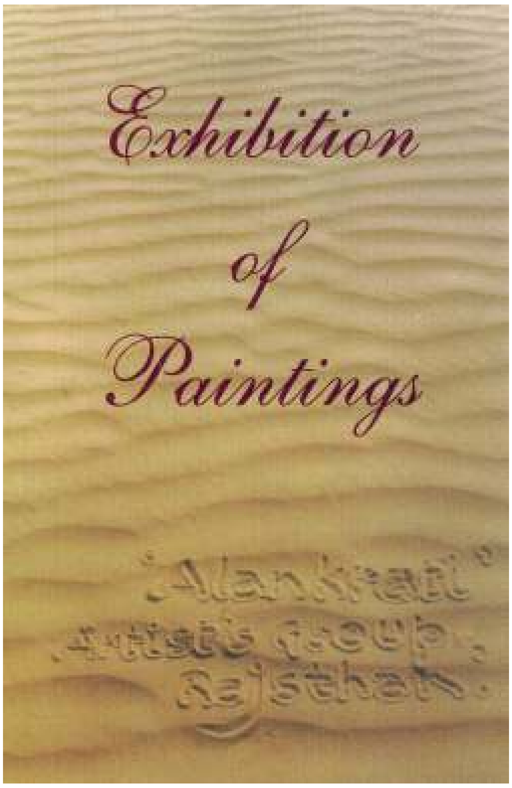

fp=&71% vy—fr dyk leg] vtej
dh ,d leg dyk in'kuh dh foojf.kdk

fp=&72½ ljLorh dyk dUn] t;ij d }kjk vk;kftr fp=dyk if'k{k.k f'kfoj&2000 b-
dk voykdu djr g, t;ij jkt?kjku dh jktdekjh nh;k dekjh vkj doj ujUn flg
,o f'kfoj e lQy ifrHkkfx;k dk lEekfur djr g,

fp=&73 ½ oh] dkVk dh leg in'kuh&2003 b-

fp=&74 ½ fotvy vkV lkl;Vh Qkj Vhpl&okLV
¼egkfo|ky; ,o fo'ofo|ky;] jktLFkku½ mn;ij
}kjk idkf'kr 'kk/k&if=dk ^okLV ,.M fotu* d fofo/k vd

fp=&75 % gLrk{kj] t;ij }kjk vk;kftr ^vf[ky Hkkjrh; dykdkj f'kfoj&1992 b-*
dk mn?kkVu djr g, fp=dkj t- Lokehukfku ,o dykdkj f'kfoj dk
lEckf/kr djr g, fp=dkj ik- ih-,u- pk;y

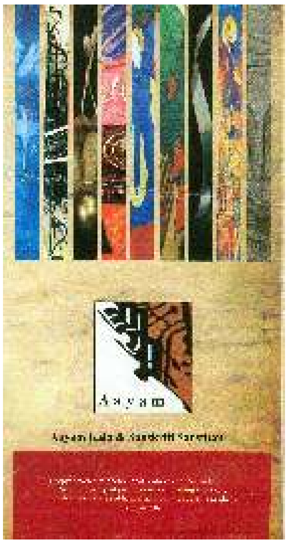

fp=&76 % vk;ke dyk ,o lL—fr lLFkku] t;ij
dh ,d leg dyk in'kuh dh foojf.kdk

fp=&77 % vk—fr dyk lLFkku] Hkhyokm+k dh fofHkUu dykRed xfrfof/k;k

अध्याय-षष्ठम

राजस्थान के समकालीन कला संगठनों के प्रमुख कलाकारों की समकालीन कला में भूमिका

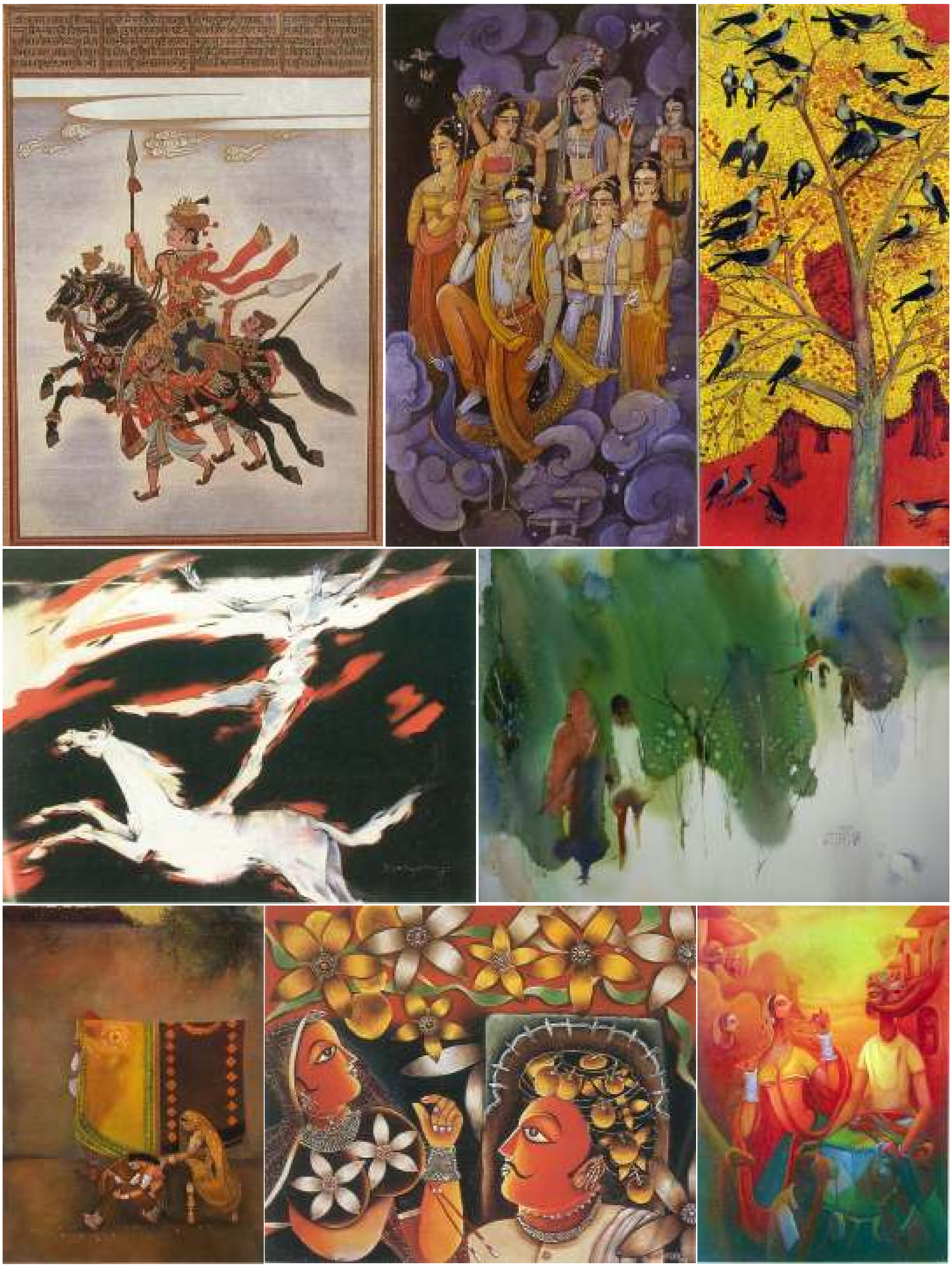

राजस्थान के समकालीन कला संगठनों के प्रमुख कलाकारों की समकालीन कला में भूमिका

राजस्थान के समकालीन कलाकारों ने विभिन्न कला अकादमियों व कला संगठनों से जुड़कर रूढ़िवादी परम्पराओं की लीक से हटकर प्रचलित आधुनिक कला प्रवृतियों के अनुरूप कार्य किया तथा नवीन कला प्रयोगों को प्रोत्साहित करने में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वहन किया है साथ ही इन कलाकारों ने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान भी बनाई है। राजस्थान के प्रमुख कला संगठनों से जुड़े कुछ प्रतिनिधि कलाकारों का विवरण निम्नलिखित है –

6.1 तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर के कलाकार

6.1.1 कलाविद् मोनी सान्याल (1912–1988 ई.)

मोनी सान्याल के चित्रों में यथार्थता झलकती है। इनके चित्रों में धरती की अपार सहनशीलता, पेड़ों की उदारता, पहाड़ों की ऊंचाई, गर्मी की तेजी, सर्दी की ठंड़क, हवा की सरसराहट आदि देखने को मिलती है। मोनी सान्याल के प्रिय विषय रहे है–युवतियों की अंगडाईयाँ, तालाब पर पड़ती धूप की चमक, मांसल गुदगुदी नव–यौवनाएँ इत्यादि। इस स्वर्गिक कल्पनाशीलता के साथ मजदूरों के लौह शरीर से निकलती पसीने की गंध एवं जीवन के कठोर अनुभव इनके चित्रों में देखने को मिलेंगे। थकान से टूटे शरीरों पर सान्याल ने जीवन की मुस्कान देखी है, कार्यरत आकारों में जीवन शक्ति परखी है और एक–एक तूलिकाघात से प्रकृति का माधुर्य जीवन का उल्लास, नारी की यथार्थ कमनीयता तथा यथार्थ के कठोर धरातल को अपने कैनवास पर शाश्वत कर दिया।[1](चित्र–78)

इनके कला–जीवन का उदयपुर प्रवास स्वर्णिम काल था, जब वहां के रंगीन परिधान, उन्मुक्त सरल जीवन, विस्तृत जमीन, पानी और आकाश ने इनकी कला साधना को पूर्णता प्राप्त करने के नये–नये आयाम दिये। पिछोला का चंचल विस्तार इनकी रचनाओं में रच गया। कुछ समय पश्चात् सान्याल जयपुर आ गये। यहां आकर जो काम किया वह अब तक के उपलब्ध अनुभवों का सार रूप था, जो कभी–कभी कैनवास पर उतर आया करता था। यहां से सेवानिवृत होने के बाद वापिस उदयपुर चले गये। इनके मकान को छूती हुई पिछोला की लहरों के सुखद स्पर्शों ने इन्हें उसका निष्काम प्रेमी बना लिया। उनके कुछ दृश्य चित्र जो कभी पहाड़ की सैर के समय बनाये गये थे। उन्हें देखकर कोई

साधारण व्यक्ति भी यह अनायास ही कह देगा ''यही कला है।'' एक चित्र में धुन्ध छाई पर्वत माला के बीच एक मकान की दीवार पर धूप का टुकड़ा दिखता है। उस ठण्डे सर्द वातावरण में हल्के सिन्दूरी धूप के टुकड़े में डूबते सूरज की लाली और धूप की गुनगुनी गर्माहट देखते हैं तो मन पुलकित हो उठता है। उस सौन्दर्य को शब्द देना कठिन हैं।[2]

आपने वर्ष 1952 ई. में बगदाद में आयोजित भारतीय कला प्रदर्शनी में भाग लिया व वर्ष 1982–83 ई. में सान्याल को राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया।

6.1.2 कलाविद् गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा' (1914 ई.–1998 ई.)

तूलिका कलाकार परिषद् के संस्थापक सदस्य में से एक रहे गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा' का नाम राजस्थान के वरिष्ठ कलाकारों में प्रमुखता से लिया जाता है। निःसंदेह श्री जोशी ने चित्रण का प्रारम्भिक ज्ञान नाथद्वारा के पारम्परिक चित्रकारों के सान्निध्य में प्राप्त किया, किन्तु इनके रचनात्मक व्यक्तित्व की चित्रगत पहचान के रूप में शान्ति निकेतन के कला शिक्षकों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही है और यही कारण है कि इनकी कला में जहाँ परम्परा से जुड़े रहने का मोह दिखाई देता है, वहीं आधुनिकता व नव प्रवृत्तियों को अपने रचना संसार में समाहित करने का मुक्त भाव भी स्पष्ट दिखाई देता है।

गोवर्धन लाल जोशी का कला के प्रति रूझान द्वारकाधीश मंदिर में चित्रित किये जाने वाले भित्ति चित्र व पिछवाई चित्रों को देखकर पैदा हुआ। नाथद्वारा चित्र शैली के तत्कालीन प्रसिद्ध चित्रकार घासीरामजी के शिष्यत्व में रेखा व रंग की बारीक जानकारी को सीखा। स्कूली शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् उन्हें उदयपुर स्थित विद्या भवन में जाने का सुअवसर मिला। डॉ. श्रीमाली ने इन्हें वज़ीफा दिलवाकर उच्च अध्ययन के लिए शान्ति निकेतन भेजा। यहाँ आकर अवनी बाबू की प्रेरणा से इन्होंने राजस्थान की लोक संस्कृति व मेवाड़ी भील जनजाति की जीवन शैली को अपनी तूलिका से जीवन्त किया। अपने गुरू नन्दलाल बोस से उत्प्रेरित हो बाबा ने लयबद्ध व गव्यात्मक रेखांकन करना प्रारम्भ किया जो आगे जाकर इनकी चित्रगत–शैलीगत पहचान भी बनी। बाबा की रेखाओं में लयबद्ध गति और लौकिक स्पन्दन इनकी कला रचना को विशिष्टता प्रदान करती हैं।[3]

शान्ति निकेतन से अध्ययन के उपरान्त 'बाबा' पुनः उदयपुर आये और विद्या भवन में कला अध्यापन करने के साथ–साथ पूरे जोश–खरोश से कला को समर्पित हो गये। सादृश्य के साथ यथार्थ चित्रांकन के प्रति 'बाबा' का विशेष मोह दिखाई देता है। चाहे वह

भील जनजाति से जुड़ा कोई विषय हो अथवा सामान्य जन–जीवन का विषय या ऐतिहासिक व पौराणिक विषय ही क्यों न हो। रेखा की गति, लय व स्पन्दन को उन्होंने अपने सभी चित्रों में बरकरार रखा। संयोजन पद्धति के रूप में देखे तो 'बाबा' राजस्थानी लघु चित्रण, उदयपुर की नगरीय संरचना तथा ग्राम्य संरचना से उत्प्रेरित दिखाई देते हैं। विषयों को इन्होंने बड़े वर्णनात्मक ढ़ंग से, 'मल्टीटीयर पर्सपेक्टिव' का रचनात्मक आधार लेकर रूपायित किया है। इस परिधि में उनके प्रसिद्ध चित्र 'गणगौर की सवारी,' 'जौहर ज्वाला,' 'पन्नाधाय,' 'राणा प्रताप', 'बुद्ध निर्वाण' व 'गवरी' का उल्लेख विशेष रूप से किया जा सकता है। ताउम्र भील जनजाति की जीवन–शैली के विविध कलात्मक व सांस्कृतिक पक्षों को रचकर अपनी विशेष पहचान बनाने वाले 'बाबा' का रचनात्मक आकर्षण रहा है– भील नर–नारियों की दैहिक लय का विविध भाव मुद्राओं के साथ रूपांकन करना। उन्होंने भीलों के त्यौहार, लोक नृत्य गवरी के साथ–साथ विश्रामरत भील बालिकाएँ, श्रमरत भील नर–नारी, आमोद–प्रमोदरत युवक–युवतियाँ, नृत्यरत महिलाएँ, फसल काटते–खुशियाँ मनाते हुए भील नर–नारी जैसे विषयों को भी कई बार भाँति–भाँति से चित्रांकित किया है। इन विषयों को बाबा ने गहरे व धूसर रंगों से चित्रित किया है।[4] (चित्र–79)

'बाबा' के कलात्मक योगदान के लिए वर्ष 1954 ई. में दशहरा प्रदर्शनी में पुरस्कृत व त्रिवेन्द्रम में आयोजित कला प्रदर्शनी में पुरस्कृत किया गया। वर्ष 1962 ई. में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय सांस्कृतिक शोधवृत्ति प्रदान की गई। राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा वर्ष 1963 ई., 1964 ई., 1965 ई., 1966 ई. और 1969 ई. में सम्मानित किया गया। वर्ष 1972–73 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष 1979 ई. में केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा भील जाति के जीवन पर वृहद अध्ययन करने के लिये फैलोशिप प्रदान की गई। वर्ष 1984 ई. में ऑल इण्डिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा, वर्ष 1986 ई. में राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा 'कलानिधि' सम्मान, वर्ष 1989 ई. में रोटरी क्लब पुरस्कार व वर्ष 1990 ई. में महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन, उदयपुर द्वारा विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'बाबा' की 'राजस्थान के तीन मन्दिर' नामक एक सचित्र पुस्तक का प्रकाशन राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर में किया। आप राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के उपाध्यक्ष भी रहे। 84 वर्ष की अवस्था में भीलों का यह चितेरा अपना कला–संसार छोड़ गया। लगातार छह दशक चित्रण में लीन रहकर बाबा ने अपनी रचनात्मक पहचान बनाई थी।

6.1.3. कलाविद् प्रो. परमानन्द चोयल (1924 ई.–2012 ई.)

प्रो. परमानन्द चोयल राजस्थान के प्रथम कला संगठन तूलिका कलाकार परिषद् के संस्थापक रहे। तूलिका कलाकार परिषद् से पूर्व राज्य में कला व कलाकारों को प्रोत्साहन देने के लिए कोई प्रमाणित संगठन नहीं था। इसके साथ ही प्रदेश की आधुनिक चित्रकला के विस्तार और विकास प्रक्रिया में प्रो. पी.एन. चोयल का विशेष योगदान रहा है।

चित्रकला के प्रति विशेष अभिरूचि को देखकर कोटा नरेश महाराजा श्री भीम सिंह जी ने तत्कालीन महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स में प्रवेश दिलवाया और बंगाल के चित्रकार आचार्य शैलेन्द्रनाथ डे तथा रामगोपाल विजयवर्गीय के मार्गदर्शन में उन्हें चित्रकला का अध्ययन कराया। चोयल प्रारम्भ से ही परम्परा के बंधन से मुक्त रहे तथा उस काल में बनाए गए 'चित्रकार और शारदा' के चित्रों से काफी ख्याति मिली। 1946 ई. में कला में डिप्लोमा प्राप्त कर नवीन कला धारा से जुड़ गए एवं तत्कालीन जनजीवन के विषय लेकर के टेम्परा पद्धति से कार्यरत रहकर अपनी विशिष्ट कला शैली बनाई। 1960 ई. से उन्होंने तेलरंग के चमत्कारी प्रयोगों से अपनी कला के सौंदर्य में अभिवर्धन करना प्रारम्भ किया तथा वास्तववादी चित्रों के माध्यम से नव प्रयोगों का समावेश किया। उन्होंने 1961–62 ई. में स्लेड़ यूनिवर्सिटी, लंदन में प्रवेश लिया और वहां अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय देकर ख्याति अर्जित की। उनकी सृजनात्मक दक्षता को देखकर लंदन के कला समीक्षक प्रो. नटल स्मिथ ने लिखा कि ''चोयल ने लंदन को एक विशेष दृष्टिकोण से देखा है जो यहां के लिए सर्वथा अनूठा एवं अनुकरणीय है।''[5] इनकी संवेदनशीलता और सृजनात्मक से इनकी कलाकृतियां अपनी अलग ही पहचान बनाती हैं। लंदन में कला शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे ड़िजाइन और संरचना के प्रति अधिक सजग हो गए। कलाकृतियों में वस्तु निरपेक्षता को अधिक बढ़ावा देने लगे। उदयपुर के वातावरण को भी उन्होंने अपनी कलात्मक दृष्टि से देखा और अभिव्यक्त किया है। यहां के प्राचीन वैभव को इन्होंने नए रूपों में अंकित करने का प्रयास किया और अपने अनुयायियों को प्रेरणा दी।

चोयल ने चित्रों के माध्यम से सामाजिक उत्पीड़न के मध्य जीवन संघर्ष के साक्ष्य उपस्थित किए। 1955 से 1960 ई. तक चोयल के चित्र 'इम्पेस्टो तकनीक' के होते थे। (सीधे नाइफ से लगाये मोटे रंग) चोयल के चित्रों पर फ्रांसीसी कलाकार 'वान गॉग' का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। लंदन प्रवास के दौरान उनकी चित्रण शैली में बदलाव आया और वे चित्रों में पतली तहों में रंग लगाने लगे। लंदन में बनाई प्रमुख कृतियों में 'लंदन की शाम', 'अराउन्ड हाउस', 'वुमैन' है। हेमन्त शेष के शब्दों में – ''पी.एन. चोयल के तेल चित्र

हमें ले जाते हैं पसीजी हुई दीवारों, धुंधमय भवन, आकृतियों में जो पिघलते रंगों के टेक्स्चर में भीग रही हैं।''[6] 'परसेप्शन ऑफ उदयपुर' नामक चित्र शृंखला में पी.एन.चोयल दरारों, दीवारों, खपरैल के मकानों, बुझती हुई निस्तेज रोशनी और एक अव्यक्त उदासी की घनीभूत सृष्टि रचते है। 1956 से 1960 ई. के बीच चोयल ने 'भैसों' का गहरा अध्ययन किया था और भैंसों को लेकर बनाए गए चित्रों तथा रेखांकनों ने उन्हें पर्याप्त ख्याति दी। चोयल ने परम्परावादी, यथार्थवादी, प्रभाववादी, अभिव्यंजनवादी और नितान्त नव्यवादी रूप में भिन्न–भिन्न प्रयोग (वॉश, टेम्परा, जल व तेलरंग) सभी पद्धतियों में किये हैं। (चित्र–80)

प्रो. चोयल न केवल कुशल चित्रकार थे बल्कि एक सफल लेखक एवं अभिनयकर्ता के रूप में भी ख्याति अर्जित कर चुके थे। 1960 ई. में वे अपने द्वारा लिखित नाटक 'चलते–फिरते बुत' से काफी चर्चित रहे थे। आपके कलात्मक योगदान के फलस्वरूप ही आपको राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा वर्ष 1960 ई., 1961 ई., 1963 ई., 1964 ई., 1965 ई. व 1968 ई. में पुरस्कृत किया गया। वर्ष 1981–82 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया व मोनोग्राफ्स का प्रकाशन किया गया। वर्ष 1983 ई., 1986 ई., 1990 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया व वर्ष 1984 ई. में आईफैक्स द्वारा ही 'वेर्टन आर्टिस्ट' सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष 1988 ई. में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया। चोयल की देश के विभिन्न राज्यों में कला प्रदर्शनियों के अतिरिक्त विदेश में आयोजित कला प्रदर्शनियाँ भी महत्वपूर्ण रही इनमें विदेश में आयोजित प्रमुख कला प्रदर्शनियां 1984 ई., मास्को; 1991 ई., सिंगापुर; 1992 ई., ब्राजील व जर्मनी; 1994 ई., कनाड़ा आदि है।

6.1.4 अरूण चन्द्रायण (1929–1973 ई.)

अरूण चन्द्रायण ने 1959 ई. में उदयपुर के कला जगत में तूलिका कलाकार परिषद् में सक्रिय भूमिका निभाते हुए 1968 ई. में तूलिका देवीलाल स्मृति स्वर्ण पदक सम्मान प्राप्त किया। सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुम्बई से पंचवर्षीय कला डिप्लोमा लेने के पश्चात् भी कला शिक्षा की ललक ने नियमित रूप से 1968 ई. में उदयपुर विश्वविद्यालय से चित्रकला में स्नातकोत्तर उपाधि पूर्ण करने की ओर अग्रसर किया। आपकी कलाकृतियाँ युवा पीढ़ी को कला के सूक्ष्म अध्ययन की प्रेरणा प्रदान करती है।[7] (चित्र–81)

6.1.5 नारायण शाकद्वीपी (1933 ई.)

आप तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर के महामंत्री एवं अध्यक्ष रहे। राजस्थान ललित कला अकादमी की समकालीन कला प्रदर्शनी, दिल्ली 1967 ई., ललित कला अकादमी, जयपुर के राज्य पुरस्कार 1964 ई. एवं तूलिका स्वर्ण पदक 1969 ई. पुरस्कार से पुरस्कृत हुए।[8] (चित्र–82)

6.1.6. तेज सिंह (1939 ई. – 1992 ई.)

तेज सिंह को प्रकृति के मनोहारी और विकराल, दोनों ही रूपों ने आकर्षित और प्रेरित किया। सामाजिक समस्याएं, अकाल, बाग–बगीचें, खेत–खलियान, पेड़–पौंधे, फूल, महल, किलें, आकाश, पर्वत, पक्षी, झील आदि उनकी रचना/संयोजन के प्रिय विषय रहे। इन सबके बीच नायक नायिका, स्त्री, पुरूष की आकृतियाँ रहीं। लाल, नीले और हरे रंगों का उन्होंने अपनी रचना में बहुलता से प्रयोग किया। उन्होंने प्रकृति और मानव को एक दूसरे का पूरक माना। उनके चित्रों से ऐसा लगता है कि वे हमें यह संदेश देते हैं: ''मानव को प्रकृति के करीब, उसके साथ रहना चाहिए, तभी प्रकृति की हरियाली उसके जीवन को भी हरा–भरा रखेगी।''[9](चित्र–83)

आपको वर्ष 1987 ई. में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। 'प्रकृति और पुरूष' के अद्‌भूत चितेरे, सौम्य, शांत, गम्भीर, स्वभाव वाले इस चित्रकार ने 02 नवम्बर, 1992 ई. को असामयिक ही संसार से विदा ले ली। राष्ट्रीय आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली सहित अनेक संग्रहों में उनकी कृतियां संग्रहित है। वे राजस्थान ललित कला अकादमी के आम सभा के सदस्य भी रहे थे।

6.1.7. रामेश्वर सिंह (1948 – 2014 ई.)

रामेश्वर सिंह अपने चित्रों में इतिहास को बार–बार खंगालते हैं। ऐसे में उनके चित्रों की विषयवस्तु में कभी पौराणिक कहानियाँ आ जाती हैं तो कभी प्रेमाख्यान आ जाते हैं, कभी राजा–महाराजाओं के किस्से–कहानियाँ आ जाती हैं। यहीं नहीं इन सबके साथ आधुनिक मानवाकृतियाँ भी है। इनके चित्रों की आकृतियों में आधुनिकता तो है परन्तु इतिहास का मानों वे अन्वेषण भी करती हैं। इस रुप में भी कि कोलाज में समायी आकृतियों में पारम्परिक चित्रों की शैलियों में पेड़ है, फूल–पत्तियाँ हैं, मांडणे हैं और पुरातन चीजों यथा बहियाँ, जन्मपत्रियाँ, कार्ड, किसी धर्मग्रन्थ के गलते हुए पन्ने हैं–पूर्ण नहीं बल्कि

अधजले रुप में। मानों काल के ग्रास में समाती इन चीजों को फिर से जीवित करने का प्रयास किया गया है।[10](चित्र–84)

आपको वर्ष 1977 ई., 1980 ई. में तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर द्वारा पुरस्कार स्वरूप पदक; 1983 ई., 1987 ई., 1990 ई. में इण्डियन अकेड़मी ऑफ फाईन आर्ट, अमृतसर द्वारा पुरस्कार, 1984 ई. में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार; उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ द्वारा पुरस्कार; हैदराबाद आर्ट सोसायटी, हैदराबाद द्वारा पुरस्कार, आन्ध्रप्रदेश कौन्सिल ऑफ आर्टिस्ट्स, हैदराबाद द्वारा पुरस्कार; 1984 ई., 1990 ई. में महाकौशल कला परिषद्, रायपुर द्वारा पुरस्कार; 1985 ई., 1987 ई. में बोम्बे आर्ट सोसायटी, कोलकाता द्वारा पुरस्कार, कर्नाटक चित्रकला परिषद्, बेंगलुरू द्वारा पुरस्कार; 1985 ई., 1990 ई. में क्रियेटर्स, अम्बाला कैन्ट द्वारा पुरस्कार, 1986 ई. में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा रिसर्च स्कॉलरशिप; 1988 ई. में भारत कला परिषद्, हैदराबाद द्वारा पुरस्कार; 1990 ई. में दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर द्वारा पुरस्कार; 1992 ई. में बनारस आर्टिस्ट्स एसोसिएशन, बनारस द्वारा पुरस्कार; प्रथम भारतीय चित्रकला बिनाले, चण्डीगढ़ में पुरस्कार; 1995 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कार; 1997 ई. में ऑल इण्डिया आर्ट बिनाले ऑफ राजस्थान, जयपुर में पुरस्कार, 2000 ई. में नागरीदास कला संस्थान, किशनगढ़, अजमेर द्वारा पुरस्कार, ऑल इण्डिया ऑर्ट बिनाले ऑफ राजस्थान, जयपुर में पुरस्कार; 2004 ई. में अंकन कला परिषद्, भीलवाड़ा द्वारा पुरस्कार; 2006 ई. में तमिलनाडु सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। राज्य व राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में भागीदारी निभाने के साथ साथ आपने विदेशों में आयोजित प्रमुख कला प्रदर्शनियों में भाग लिया जिनमें प्रमुख रूप से वर्ष 1983 ई. में टोक्यों, जापान में आयोजित इन्टरनेशनल आर्ट शो; 2000 ई. में इण्डिया हैरिटेज सेन्टर, वांशिगटन; 2004 ई. में ढ़ाका, बांग्लादेश में आयोजित ग्यारहवें एशियन आर्ट बिनाले आदि में भागीदारी निभाई। आपने राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न एकल कला प्रदर्शनियों के आयोजन के साथ–साथ हॉलैण्ड, एम्स्टर्डम की जन स्टीन गैलरी में भी अपनी एकल कला प्रदर्शनी आयोजित की।

6.1.8 देवेन्द्र दाहिमा (1958 ई.)

अपनी अनेक एकल प्रदर्शनियों व समूह प्रदर्शनियों में प्रदर्शित कलाकृतियों से 1982 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, 1984 ई. में तूलिका ताम्र पदक एवं 1983 ई. में टखमण–28; 1995 ई. में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, दिल्ली से राष्ट्रीय पुरस्कार का सम्मान प्राप्त किया। आप ऑल इण्डिया महाकौशल कला परिषद् की राष्ट्रीय प्रदर्शनी 1984 ई., 1991 ई., 1993 ई. एवं ओरियन्टल आर्ट सोसायटी, कोलकाता 1984 ई. में भाग लेकर पुरस्कृत हुए।[11] (चित्र–85)

6.2 टखमण–28, उदयपुर के प्रमुख कलाकार

6.2.1 ओमदत्त उपाध्याय (1937 ई.)

आप प्रदेश के प्रयोगशील कला संगठन टखमण–28 के स्थापना में प्रमुख प्रणेता रहे। आपने प्रो. र.वि. साखलकर के निर्देशन में कला की प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुम्बई में नियमित कला अध्ययन किया। जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स की छात्र प्रतियोगिता–1958 ई. में स्वर्ण पदक प्राप्त किया इसके पश्चात् जी.डी. कॉमर्शियल आर्ट तथा 1961 ई. में जी.डी. पेन्टिंग प्रथम श्रेणी में सफलता प्राप्त की। इसके साथ ही मुम्बई राज्य की प्रथम कला प्रदर्शनी–1958 ई. में आपके दो चित्रों को प्रदर्शित भी किया गया। इसी वर्ष राजस्थान ललित कला अकादमी की प्रथम वार्षिक कला प्रदर्शनी में राज्य पुरस्कार दिया गया तथा षष्ठम् वार्षिक कला प्रदर्शनी 1963 ई. में भी राज्य पुरस्कार से पुरस्कृत किये गये। तत्पश्चात् युगोस्लाविया की द्विवर्षीय छात्रवृत्ति 1964–66 ई. से स्नातकोत्तर कला शिक्षा प्राप्त कर 'मगिस्तार स्लीकार्ट' (निष्णात चित्रकार) की उपाधि उच्चतम अंको से प्राप्त की। 1973 ई. में आपके चित्रों को राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में प्रतिनिधित्व मिला। इसी क्रम में 1976 ई. में आपके कला प्रयोगों को 'द इन्टरनेशनल सोसायटी फॉर द आर्ट्स साइन्सेज एण्ड टेक्नोलॉजी, यू.एस.ए.' ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल 'लियोनार्डो' में विशेष स्थान दिया। 1981 ई. में दूरसंचार विभाग, भारत सरकार ने इन्हें प्रतियोगिता से चयनित कर राजस्थान में सेरेमिक के विशाल चित्र निर्माण (15' x 12') का कार्य दिया जिसे चितौड़गढ़ डाक एवं तार घर में देखा जा सकता है। 1981 ई. में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली ने आपके शोधपत्र 'ए कम्परेटिव स्टेडी ऑफ द आर्ट ऑफ अजन्ता एण्ड सोपोचेनी' को मुद्रण अनुदान देकर प्रकाशन व्यवस्था की। 1994 ई. से आप पेब्रोक प्रिंस फ्लोर 33024 यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका में डिजिटल के यांत्रिक कला प्रयोगों में व्यस्त है।[12] (चित्र–86)

6.2.2 कलाविद् प्रो. सुरेश शर्मा (1937 ई.)

कलाविद् प्रो. सुरेश शर्मा राजस्थान के प्रयोगशील कलाकार संगठन टखमण 28 के चेयरपर्सन है। इनका राजस्थान की समसामयिक कला आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सुरेश शर्मा द्वारा टखमण 28 के लिए किए गये कार्यों से ही आज यह संगठन राजस्थान के प्रमुख कला संगठनों में से एक हैं। सुरेश शर्मा का सृजन आकृति रहित अमूर्तता का है। आपका कला संसार साधारण भासित रूपों से परे एक स्वप्निल संसार है; जिसमें आकार व विस्तार दोनों का सामंजस्य आकाश की भव्यता के समान अनन्त हैं। आपके फलक आकृति में बंधे रूप ही नहीं है, अपितु वे निराकार ब्रह्म के संवाहक की अनुभूति कराते है। विषय, ऋतु से परे, रंग पट्टिकाओं एवं रंगतों के स्वच्छन्द व धूमिल होते स्तर, कभी रंग पट्टिकाओं में तो कभी चौखानों में बंटे हुये दृष्टिगोचर होते हैं। इस प्रकार आपकी कलाकृतियाँ शुद्ध चाक्षुक आनन्द की वस्तु होकर दर्शक को नवीन आध्यात्मिक विश्व के दर्शन कराती हैं। आपके चित्रों को मोटे रूप से अन्तर्राष्ट्रीय कला आन्दोलनों कठोर किनार, मिनिमल आर्ट, आकारविहिन रंगवादी कलाकारों से जोड़ते हैं। 'रेड ऑन रेड' आपकी उत्कृष्ट कृतियों में गिनी जाती हैं। (चित्र–87)

आपने अपने चित्रों को इस प्रकार व्याख्यायित किया है, "मेरे चित्र कला नहीं, स्वयं कला है, यह वस्तुओं का चित्रण नहीं हैं, वरन् स्वयं प्रकृति है।"[13] इसी प्रकार आप आगे कहते है कि, कलाकार स्वयं यह कभी नहीं कहता है कि "मैं, यह, वह आदि जानता हूँ, कला यह–वह कुछ भी नहीं, कला तो शुद्ध रचना है।"[14] आपकी कृतियों में प्रिय रंगों में हरा, पीला, नारंगी, लाल एवं काला है, जो एक्रेलिक माध्यम के हैं। रोथकों, लेरीपून, स्टेला, मदरवेल, बरनार्डन्यूमेन जैसे महारथी कलाकारों की कृतियों से प्रभावित होकर वे कला में शुद्ध कला की भावना को महत्व देने लगे। कलाकृतियाँ आकारविहीन, रूपविहिन एवं विषय के बन्धन से मुक्त एक नवीन डिजाइन का रूप लेने लगी। 'हार्ड एज' शृंखला में कलाकार ने स्पष्ट ज्यामितिक आकारों को सफाई से तकनीकी महारत के साथ फलक पर तैयार किया। उन्होंने प्रवाह पूर्ण बारीक स्पष्ट पट्टिकाओं पर निश्चित दिशा बोध के साथ रंगतों के आरोह–अवरोह, रूपाकारों की एकरसता को तोड़ते कलात्मक संकेतों से ज्यामितिक आकारों का प्रभावी अंकन किया। ऐक्रेलिक रंगों में निर्मित इस चित्र शृंखला में चाक्षुष भ्रम (ओप आर्ट) का प्रभावी अंकन भी देखा जा सकता है। धीरे–धीरे कलाकार 'हार्ड ऐज' के बन्धन से मुक्त हो रंगतों के प्रभाव को चित्रित करने लगा। अब फलक में विभिन्न सीमित रंगों का फैलाव आ गया। जिसमें एक ही वर्ण में चित्रण कर कलाकार ने अवकाश एवं

आकार के बंधन को तोड़ा। फलक के समक्ष खड़े होकर देखना स्वयं में एक रहस्यात्मक अनुभूति हैं। जहां विचारों की कल्पनात्मक उड़ान थमती है वहीं इस महान अनुभूति का शुभारंभ होता है।[15] सुरेश शर्मा के चित्र अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों में चयनित व प्रदर्शित हो चुके हैं। आपके चित्रों की एकल एवं समूह प्रदर्शनियाँ भी देश की महत्वपूर्ण कला दीर्घाओं में आयोजित हो चुकी है। आपने देश–विदेश की अनेक चित्रण एवं ग्राफिक कार्यशालाओं में भाग लिया है। आपकी कृतियां आज देश–विदेश के दर्जनों महत्वपूर्ण संग्रहों में संग्रहीत हैं।

आपके कला के प्रति समर्पण भाव को स्मरण रखते हुये ही राजस्थान सरकार ने आपको राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर का सदस्य व उपाध्यक्ष पद पर मनोनयन किया तथा वर्ष 1984–85 ई. में इसी अकादमी द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया। सुरेश शर्मा को वर्ष 1968 ई., 1972 ई. और 1982 ई. में श्रेष्ठ कृतियों के लिए राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा वर्ष 1977 ई. में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'कमण्डेशन' प्राप्त हुआ। वर्ष 2015 ई. में आपको राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।[16]

6.2.3 लक्ष्मीलाल वर्मा (1944 ई.)

टखमण–28 के संस्थापक सदस्य व राजस्थान में सर्वप्रथम छापा–चित्रों की क्रान्ति के अग्रणी कलाकारों में लक्ष्मीलाल वर्मा का नाम है, जिन्होंने न केवल राजस्थान के छापा चित्रों के आन्दोलन को एक नवीन दिशा दी है बल्कि चित्रकला के क्षेत्र में भी प्राचीन परम्पराओं को तोड़ते हुए नवीन माध्यमों एवं तकनीकों का उपयोग करके नये प्रयोग करने में सफलता अर्जित की है। उनके कला के विकास को हम मोटे रूप से तीन चरणों में बाँट सकते हैं। पहले चरण में उन्होंने अपने छापा चित्रों के माध्यम से आनन्ददायी आकृतियों को अक्सर रहस्यात्मक विरोधाभासों में रखने का प्रयास किया है। इस प्रकार की कृतियों के मुख्य उदाहरण इनके आरम्भिक आकृतिमूलक परन्तु अमूर्त अभिव्यंजना के निकट आकृति वाले छापा चित्रों में देखे जा सकते हैं। आपके यह प्रयोग कला प्रदर्शनियों में सराहे गये और इस काल के छापा माला क्रम डीइटि नाम से अत्यन्त प्रसिद्ध हुए। संयोजन की दृष्टि से इस काल के चित्रों में अपने ढ़ंग का एक नवीन प्रयोग एवं आरम्भिक रामकुमार के चित्रों की परम्परा की झलक देखने को मिलती हैं। ताजगी, अबोधता एवं बच्चे जैसे सहज भावों को इस श्रृंखला के चित्रों में देखा जा सकता हैं। साथ ही यहाँ पर लक्ष्मीलाल वर्मा ने अपने

चित्रों में सुप्रचलित चित्रोंपम मुहावरें को दर्शाने का प्रयास किया है। यद्यपि वर्मा के चित्र रंग–योजना एवं आकारों की दृष्टि से रामकुमार एवं डी स्टील के समीप हैं परन्तु इन दोनों से एक महत्वपूर्ण अन्तर भी हमें यहाँ दिखाई देता है। रामकुमार के चित्रोपम अवकाश स्थापित और मुख्य रूप से स्पष्ट है परन्तु वर्मा के चित्रों के आकार सुनियोजित एवं वस्तुमूलक हैं। द्वितीय चरण में लक्ष्मीलाल वर्मा के छापा–चित्रों की तुलना में चित्रों की ओर उन्मुख हुए जिनमें अमूर्तता का प्रतिनिधित्व देखने को मिलता है। विशेष रूप से ज्यामितीय अमूर्तता का। आपके आकारों में ज्यामितीकरण उभर कर सामने आने लगा और ये आकार दृश्यात्मक संगीत से परिपूरित हो गये। उल्लेखनीय बात यह है कि इनके कैनवासों में, कम से कम रूपाकार लिये ज्यामितीय आकार में प्रतिबोध की गहनता दृष्टव्य है। वर्मा के ज्यॉमितीय आकारों में वैविध्यता तो है ही पर इनमें तीव्रता, सपाट सतह एवं कई गुणा योजना भेद भी दर्शाया गया है। पारदर्शक रंगों के प्रयोग द्वारा नीचे के आकार झांकते हुए दिखाये गये है। चित्रों के रंग अत्यन्त ही आकर्षक हैं। इस चरण के आपके ज्यामितीय मूलक चित्र मोन्द्रिया की कला एवं फ्रेंजहाल अमेरिकन हार्ड ऐज से प्रभावित है। मोन्द्रिया ने अपने चित्रों में रेखाओं के माध्यम द्वारा एक–दूसरे से अमूर्त ज्यामिती संरचना में ऐन्द्रिक प्रभाव उत्पादकता दर्शायी है जबकि वर्मा की रचना मोन्द्रिया से अलग हटकर एक नवीन द्रष्टव्य संगीत उत्पन्न करती है। इनके चित्रों में कम से कम आकारों एवं रंगों का प्रयोग उन्हें अमेरिकन हार्ड ऐज कलाकारों के सामीप्य में ले जाता है। रेनहार्ट के चित्रों की भांति श्री वर्मा ने एक ही रंग की रंगतों में वर्गों और आयतों को एक–दूसरे पर रखकर ऐन्द्रिय प्रभाव उत्पन्न किया हैं।[17] इनका तीसरा चरण पूर्व के दो से भिन्न है और चिन्तन, पूर्ण आत्म–विश्वास और संरचना की अभूतपूर्व विविधता को लिये है जिसे पूर्णरूपेण आकृतिमूलक और न पूर्णरूपेण अमूर्तन की संज्ञा दे सकते हैं। विभिन्न रंग एक–दूसरे में घुलमिल कर जो एक टेक्सचर बनाते हैं। उसमें पूरे कैनवास पर एक आकृति उभर कर आती है तथा वहाँ पर पृष्ठभूमि सपाट रंगो में दिखाई गयी है। आपके इन रूपाकारों को भाषाई एकीकृति की संज्ञा दी जा सकती है। आपकी नवीन चित्र–शृंखला में मानव परिस्थिति, विकृति, तनाव, विभ्रम, गति, आशा आदि द्रष्टव्य है। बौद्धिक धरातल के साथ जब हम चित्रों की ओर बढ़ते हैं तो वह हमें कहते हैं कि उन्हें कहां से ग्रहण किया गया हैं। रेखांकित करने योग्य यह है कि ये सम्मिलित अनुभव है क्योंकि टेक्सचर धरातल, घनत्व से ऐन्द्रिय आनन्द बनता है। नाटकीयता और चित्रतत्व मानव साधारणीकरण की ओर आकर्षित करते हुये हमें चिन्तन की ओर ले जाते है। (चित्र–88)

वर्मा को वर्ष 1967 ई., 1969 ई. व 1974 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा आन्ध्रप्रदेश कौंसिल ऑफ आर्टिस्ट, आन्ध्र प्रदेश की ओर से 'अखिल भारतीय पुरस्कार' भी प्रदान किया गया।[18] वर्मा राजस्थान के अत्याधुनिक प्रयोगधर्मी कलाकार हैं जो अपने समकालीन अन्य चित्रकारों की तुलना में किसी भी भांति कम सृजनशील नहीं हैं।

6.2.4 शब्बीर हसन काजी (1946 ई.)

शब्बीर हसन काजी ने प्रारम्भ में सपाट आकारों का संतुलन देखा, बाद में केलीग्राफी को आकार के रुप में प्रयुक्त किया जिसमें रंग संगति मधुर और प्रभावी रुप में आई। इनकी आरम्भिक कृतियाँ 'ओप आर्ट' एवं 'हार्ड एज' से प्रभावित रही किन्तु आज इनके फलक में गहराई, रंगतों में सलीके से संयोजित फारसी लिपि का प्रयोग अमूर्त अभिव्यंजना का उदाहरण है। काजी मूलतः अन्तः मन स्थितियों का चित्रण करते है।[19](चित्र–89)

काजी को वर्ष 1972 ई., 1974 ई., 1975 ई., 1984 ई. व 1988 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी का राज्य पुरस्कार प्राप्त हुआ। वर्ष 1977 ई. में उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी का पुरस्कार; वर्ष 1982 ई., 1985 ई. में आईफैक्स पुरस्कार; वर्ष 1983 ई. में ओनरेबल मेंशन अवार्ड, द्वितीय एशियन बेनाले, ढ़ाका; 1989 ई. में बिहार सरकार द्वारा पुरस्कृत व वर्ष 1993 ई. में केन्द्रीय ललित कला अकादमी द्वारा अखिल भारतीय पुरस्कार से पुरस्कृत हुये। काजी ने भारत के अलावा विदेशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया है जिनमें नैरोबी में एकल चित्र प्रदर्शनी, टोकियों बेनाले, ढ़ाका बेनाले प्रमुख हैं।[20]

6.2.5 अब्दुल करीम (1948 ई.)

अब्दुल करीम रंगतों का स्पष्ट आकारों में सीमित प्रयोग कर 'टेन्शन' शृंखला से अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने में सफल हुए हैं। शान्त स्वभाव, हंसमुख एवं तनाव रहित रहने वाले अब्दुल करीम अपने चित्रों में 'तनाव' की अमूर्त भावाभिव्यक्ति ज्यामितीय रूपों को लेकर करते हैं। करीम के तेल–चित्र ज्यामितीय होते है। ये ज्यामितीय स्वरूप किसी सिलेण्डर या पाइप का आभास देते है। अपने चित्रों में इन पाइपों को मोड़कर एक दूसरे में फंसा कर एक तनाव पैदा करते है। इनके चित्रों में रंगतों एवं तानों की प्रधानता देखने को मिलती है। चित्राकृतियों में तनाव की भावाभिव्यक्ति के साथ–साथ अलंकारिकता भी नजर आती है, कुछ चित्रों में मानवाकृतियों की उपस्थिति भी दर्शाने का प्रयास किया है।[21]

(चित्र–90) आपको वर्ष 1978 ई., 1989 ई., 1994 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी का राज्य पुरस्कार व वर्ष 1992 ई. में इसी अकादमी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत किया गया। आपकी कला कृतियां राष्ट्रीय आधुनिक कलादीर्घा, राजस्थान की आधुनिक कला दीर्घा एवं ललित कला अकादमी आदि में संग्रहीत हैं।

6.2.6 डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (1948 ई.)

डॉ. विद्यासागर उपाध्याय राजस्थान के उन कलाकारों में से हैं, जिनकी राजस्थानी पृष्ठभूमि को भी याद करने का एक अर्थ है। यह अर्थ उनके काम ने स्वयं रचा है। उन्होंने राजस्थानी जन–जीवन, वास्तुशिल्प या रंगों को तो कभी अपनी कला में प्रत्यक्ष रूप से नहीं उभारा, लेकिन परोक्ष रूप से उनकी कला में राजस्थानी परिवेश कई तरह से हैं। डॉ. विद्यासागर ने अपने काम में काले रंग को ही प्रमुखता दी (अन्य रंग भी उनके काम में आगे चलकर प्रकट हुए जरूर, पर वह एक अलग संदर्भ है)। काले की इस 'प्रमुखता' के पीछे एक सोच–विचार भी लगता है। राजस्थान एक अरसे से कला और जीवन में रंगों के लिए ख्यात रहा हैं और यह ख्याति कुछ 'रूढ़' भी हो गई है। ऐसा लगता है कि विद्यासागर इस 'रूढ़ि' से भी छुटकारा चाहते थे और क्योंकि रूढ़ि किसी भी चीज की हो और कितनी भी अच्छी चीज की हो, कई बार एक बाधा भी बनती है और कई दूसरे पहलुओं को आंख से ओझल रखती है। विद्यासागर की कला ने राजस्थान को अपने काम में बरकरार रखा है पर रंगो की भरमार को हटाकर। ऐसा करके उन्होंने अपनी कला का एक नया और अलग संदर्भ भी बनाया है। यह महत्वपूर्ण है। उनकी शैली की 'पहचान' में इस स्थिति का भी एक योगदान हैं।[22] डॉ. विद्यासागर के आकारों में एक तरह का 'एकांत बोध' भी हैं और वह अनिवार्य टकराहट भी जो चौतरफा परिवेश के साथ होती है।(चित्र–91)

आपको कला क्षेत्र में विभिन्न मान–सम्मान भी प्राप्त हुये। वर्ष 1969 ई., 1975 ई., 1978 ई., 1980 ई., 1982 ई. व 1984 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य स्तरीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको वर्ष 1981 ई. में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली से 'राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 1984 ई. में उत्तर प्रदेश कला अकादमी; वर्ष 1989 ई. में बिहार कला परिषद्; वर्ष 1991 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अखिल भारतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्तमान में आप राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर के चित्रकला विभाग के विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हो चुके है। आप राजस्थान ललित कला अकादमी के विभिन्न पदों पर

भी कार्यरत रहे है तथा केन्द्रीय ललित कला अकादमी की जनरल एवं एक्जीक्यूटीव कौंसिल के सदस्य भी रह चुके हैं।[23]

6.2.7 ललित शर्मा (1953 ई.)

ललित शर्मा ने मेवाड़ की परम्परागत कला को तेल रंगो में बड़े आकार के कैनवास पर अपनी तरह से रूपायित किया हैं। फलक का विस्तार, अलंकारिता, धूमिल प्रभाव का द्वि–आयामी प्रस्तुतीकरण इनकी प्रमुख विशेषता हैं।[24] (चित्र–92) आपको वर्ष 1972 ई. में तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर द्वारा स्वर्ण पदक; वर्ष 1975 ई., 1979 ई., 1989 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार; वर्ष 1976 ई. में केन्द्रीय ललित कला अकादमी व वर्ष 1997 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया।[25]

6.2.8 दिलीप सिंह चौहान (1954 ई.)

कलाकार के सृजन कर्म को गंभीरता से स्वीकारना, नित नवीन रूपाकारों की खोज कर उन्हें भावानुरूप रूपांतरित कर फलक पर अंकित करना दिलीप सिंह के व्यक्तित्व का प्रथम गुण है। आरम्भिक रेखांकनों में इनका कलाकार मात्र रेखांकन के लावण्य को स्वीकारते हुए चित्रण किया करता था, जिसमें संयोजन का आरम्भिक दौर उजागर होता था किन्तु आरम्भ का रेखिय लावण्य धीरे–धीरे अधिक वेगमय, प्रभावोत्पादक एवं गहराई में उतरता हुआ श्वेत–श्याम आभा से आगे बढ़कर गहराती रंगतों में परिवर्तित हो गया। गहरा लाल, हरा, पीला एवं नीला इनके प्रिय रंग हैं जिनकों वे अलंकारिकता के मोह से ऊपर अभिव्यक्तिपरक धरातल पर ले जाते है। फलक की बनावट में संयोजन का विशेष महत्व हैं। पड़ी या खड़ी विविध मुद्राओं में मानवाकृतियों का अंकन पारम्परिक आकृति संयोजन से ऊपर उठकर काल्पनिक धरातल पर ले जाने का प्रयास दृष्टिगोचर होता है, वहीं आकृतियों एवं आसपास के संसार, वस्त्रों की सलवटों, पृष्ठभूमि में खिड़कियों अथवा बंधन का आभास होता हैं। उनमें मानव की भौतिकवादी भूख से उत्पन्न संघर्ष, विवाद, टूटन एवं स्वयं के अस्तितव को पहचानने की छटपटाहट स्पष्टतः देखी जा सकती है। आकृतियों में सूक्ष्म अंकन का न होना, कला कृतियों में मुखविहीन मानव का प्रदर्शन निश्चित उद्देश्य की ओर संकेत हैं।[26] (चित्र–93) दिलीप सिंह की कृतियाँ गणित की भांति संतुलित (कैलकुलेटेड़) एवं स्पष्ट हैं। कहीं भी अनावश्यक तत्व, टेक्सचर्स, आकृतियाँ यहां तक की एक रेखा भी नहीं होती। सब कुछ कलाकार की आवश्यकता के अनुरूप है। उनमें न तो अचानक ही कोई बदलाव होता हैं और न चांस फैक्टर ही कृतियों में देखा जाता है। गहरे लाल रंग की

मानव देह धीरे–धीरे गहरे नीले में विलीन हो जाती है तो पुनः पीतवर्ण में अवतरित हो प्रमुख पाने का प्रयास करती है, वहीं श्याम वर्ण इसे पुनः समाहित कर अंधकार में सूक्ष्म प्रकाश की उपस्थिति के साथ आंतरिक उथल–पुथल का लावण्य प्रदर्शित कर कलाकार की अभिव्यक्ति एवं सृजन क्षमता का परिचय देता है। विविध पड़ावों से आगे बढ़ते दिलीप सिंह को मूर्तिकार के रूप में भी देखा जा सकता है। उन्होंने श्वेत संगमरमर के अनेकों अमूर्त रूपाकारों का निर्माण कर अपनी चहुंमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। प्रिन्टमेंकर दिलीप लिथोग्राफी, एण्टाग्लियो एवं सीरिग्राफ माध्यमों में छापे तैयार करते रहते हैं।[27] आजकल वे अपने सृजन में कम्प्यूटर माध्यम को बड़ी चतुराई से स्वीकार रहे है। उनकी नवीनतम डिजिटल प्रिन्टर की श्रृंखला में बहुवर्णीय आभा के साथ तकनीकी कौशल द्वारा रंगो व आकारों का एक नवीन अध्याय अपनी कला यात्रा में जोड़ रहे हैं जिसमें उनकी चित्र श्रृंखला का विस्तार ही परिलक्षित होता है।

आपको वर्ष 1981 ई., 1982 ई., 1986 ई., 1988 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार; वर्ष 1991 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अखिल भारतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

6.2.9 रघुनाथ (1955 ई.)

सघन वृक्षों की श्रृंखला, घेरदार घुमावदार घाटियां, चट्टानें और भी प्रकृति के बहुत सारे मनोहारी दृश्य चलती हुई बस से इन्हें देखते ऐसा नहीं लगता कि ये हमारे साथ ही चल रहे हैं। कभी मन यह भी करता है कि क्यों न इन्हें इसी रूप में अपना बना लिया जाये।.......चित्रकार रघुनाथ ने यही किया है। रघुनाथ ने 'प्रकृति' श्रृंखला के अन्तर्गत बनायी अपनी कलाकृतियों में बस से देखे उन्हीं दृश्यों को आइवरी सीट में आकार दिया है, जिनसे कि अरसे से उनका नाता रहा है। दरअसल वे प्रतिदिन उदयपुर से नाथद्वारा अपने महाविद्यालय पढ़ाने जाते हैं, शाम को पढ़ाकर लौटते भी उदयपुर है। ऐसे में बस से बाहर झांकती उनकी दृष्टि में कभी घेरदार घुमाव लिये घाटियां आ जाती तो कभी किसी पहाड़ की ओट से धीरे धीरे आसमान पर तीव्र प्रकाश में छा जाने वाला सूरज उदय होने की रश्मियां बिखेरता आ जाता। कभी अस्त होते सूर्य और दिनभर की थकान से चूर होकर नीड़ में लौटते पक्षियों का समूह अनायास ही स्मृतिपटल पर अंकित हुआ तो कभी एक–दूसरे से मिलती, लिपटती सघन वृक्षों की शाखाएं और अठखेलियां करते जीव–जन्तु आ जाते।.......रघुनाथ ने इनका स्मृति पटल से आईवरी सीट पर इस खूबसूरती से अंकन किया है कि मन करता है दृश्यावलियों के बनाये उनके स्केचेज को देखते ही रहें।[28]

(चित्र–94) रघुनाथ के चित्रों को देखते हुए बहुत सारे दृश्य स्मृति पटल पर साकार होने लगते है। प्रकृति के चित्ताकर्षक रूप यहां है तो अद्भूत लीलाएं भी हैं। छूटे हुए या फिर बीते हुए को पकड़ती उनकी आकृतियों में दबी हुई चीजों के उभरने का भान बहुत कुछ सोचने को भी विवश करता है तो इससे अपनी पृथक शैली के भी होने का अहसास होता है। प्रकृति को निहारते मानव मन के भाव भी उनके चित्रों में अनायास ही आते हैं। रघुनाथ को राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा वर्ष 2006 ई. का राज्य कला पुरस्कार भी इन्हीं चित्रों की श्रृंखला के चित्र 'व्यूज थ्रू बस विन्डोज' पर मिला है। अपने रेखाचित्रों एवं छायाचित्रों में जो माध्यम वे अपनाते हैं, उनके बारे में उनका कहना है–'कला की अपनी सोच को सार्वजनिक करने में पेंसिल, मार्कर और मोटी स्याही के पेन अपनाना मुझे सर्वाधिक अनुकूल लगता हैं। मुझे लगता है समय के हिसाब से भी ये मेरे कला माध्यम में सर्वथा अनुकूल हैं।'[29] रघुनाथ ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की उच्च माध्यमिक की चित्रकला विषय की पुस्तक 'भारतीय चित्रकला' का लेखन व सम्पादन कार्य भी किया है।[30]

(रघुनाथ विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स, उदयपुर के अध्यक्ष भी है।)

6.2.10 डॉ. विष्णु प्रकाश माली (1956 ई.)

डॉ. विष्णु प्रकाश माली को वर्ष 1998 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपकी अब तक पांच पुस्तकें कला सृजन (1991 ई.), राजस्थान की गरासिया जनजाति की कला (2002 ई.), मेवाड़ की मूर्तिकला (2004 ई.), आहाड़ की मूर्तिकला (2012 ई.) व मेवाड़ की उमा महेश्वर प्रतिमाएं (2012 ई.) प्रकाशित हुई हैं। डॉ. माली ने चित्रकार गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा' व गणगौर पर वृत चित्र का निर्माण भी किया है।[31] (चित्र–95)

6.2.11 चरण शर्मा (1958 ई.)

चरण शर्मा के चित्रों में स्वप्नलोक जैसे वर्ण्य विषयों में पेड़, फूल, पत्ते, सरोवर, कमल, बादल, पहाड़ और पात्रों की मानवेत्तर कमनीयता आदि का चाहे–अनचाहे भरपूर प्रभाव पड़ा है। उदयपुर के राजमहल, झील, सामन्ती वैभव तथा राजस्थान की अन्य तमाम विशिष्टताएँ उन्होंने देखी हैं। इसी तरह चरण शर्मा ने बौद्ध धर्म से प्रेरित होकर भी अपनी एक चित्र श्रृंखला तैयार की है।(चित्र–96) उन्होंने एक किस्म का नव–यथार्थवाद लाने की चेष्टा की है, यानी शैली और निर्वाह में आधुनिक दृष्टि दिखाई देती है।[32]

1971 ई. में सिंगापुर तथा विएना में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, 1974 ई. में उदयपुर, 1975 ई. में जयपुर 1978 ई., 1979 ई., 1980 ई. एवं 1982 ई. मुम्बई में ड्राईंग्स एवं छापा चित्रों को प्रदर्शित किया तथा राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर से 1972 ई., सिन्धिया कल्चरल एक्टीविटी पुरस्कार 1973 ई. व सिंगापुर वार्षिक चित्र प्रदर्शनी पुरस्कार 1983 ई. में आपको प्रदान किया गया। वर्तमान में आप मुम्बई में रहकर रचनात्मक कार्यो में तत्पर है।[33]

6.2.12 डॉ. गगन बिहारी दाधीच (1960)

डॉ. गगन बिहारी दाधीच को मोलेला के वैविध्यपूर्ण मृणशिल्प में इतना प्रभावित और प्रेरित किया कि उन्होंने इसे अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बना लिया। उन्होंने मोलेला में बनने वाली गणेशाकृतियों के स्थान पर गणेश के सरलीकृत रुप बनाये। डॉ. गगन के शिल्प की यह विशेषता है कि उनका शिल्प परमपरा से हटकर मौलिकता लिए हुए है। उन्होंने मृणशिल्प के पारम्परिक स्वरूप की जड़ता को तोड़ कर नया मुहावरा दिया है। कहीं उनका शिल्प हमें अमूर्तन की ओर ले जाता है तो कहीं वह लोक कला से अभिप्रेरित लगता है। उन्होंने फूल, पक्षियों जैसे लोक प्रतीकों के भी संदर्भ बदल कर उन्हें नया अर्थ प्रदान किया है। उदाहरण के लिए फूल लोक अलंकरण का प्रतीक है किन्तु उन्होंने आकृति चेहरे पर उल्लास का भाव प्रदर्शित करने के लिए इसका प्रयोग किया है। इनके शिल्प में स्त्री–पुरुष के चेहरे तो है पर परम्परा से हटकर। विविध प्रकार के चेहरे और उनकी भाव भंगिमाओं को उकेरने के लिए वे मिक्स मीड़िया भी काम लेते है। इसके लिए उन्होंने मृणशिल्प में मेटल, आयरन लोहे की जाली एल्यूमीनियम का प्रयोग कर उसे नये अर्थ प्रदान किये है।[34](चित्र–97)

आपको वर्ष 1986 ई., 1998 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तथा वर्ष 1996 ई. में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रदान की गई। वर्तमान में आप उदयपुर में रहकर मोलेला कला के संवर्धन हेतु प्रयासरत है तथा उसमें अभिनव प्रयोग कर रहे हैं।[35]

6.2.13 विनय शर्मा (1965 ई.)

सिल्क स्क्रीन में काम करने वाले विनय शर्मा न केवल राजस्थान के अग्रणी कलाकार हैं अपितु वे एक ऐसे रचनाधर्मी कलाकार भी हैं जिन्होंने अपनी अप्रतिम मेधा और रचना कौशल से इस कला को नये आयाम दिये हैं। कागज पर वे अपनी कल्पना से रंगों

का उत्सव रचते हैं और प्रकृति प्रदत्त उस सूक्ष्म पोत का ताना–बाना बुनकर उसकी आत्मा से साक्षात् कराते हैं। लयबद्ध थिरकती रेखाओं के जाल में झांकता गहन रंगों का पारदर्शी प्रभाव पोत में ऐसा सम्बोधन पैदा करता है कि आंखे एक अनिर्वचनीय दृश्य में उलझ कर प्रकृति के विराट स्वरूप का दर्शन करने लगती हैं।[36] (चित्र–98) कला की विविध विधाओं में उन्होंने छापा कला को अपनी अनुभूति की सटीक अभिव्यक्ति के अधिक नजदीक पाया फलतः वे ग्राफिक कला की ओर उन्मुख हो गये। विनय शर्मा ने छापा कला की एचिंग, लिनोकट, वुडकट एवं लिथो पद्धतियों के अलावा सेरीग्राफी का गहन अध्ययन भी किया है। राजस्थान के खण्ड़हर होते महल, किलें और हवेलियों तथा उनकी बिगड़ती स्थिति ने उन्हें बहुत व्यथित किया। फलतः उन्होंने अपने चित्रों में अनेक ऐतिहासिक इमारतों स्मारकों का समावेश किया। प्रकृति के विनाश और पक्षियों की समाप्त होती इहलीला ने भी उनके मन को झकझोरा। यही कारण है कि विनय शर्मा की चाहे कोई भी चित्रकृति हो उसमें प्रकृति और उसकी सृष्टि का अस्तित्व अवश्य होता है।[37]

आपको वर्ष 1987 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य पुरस्कार; वर्ष 1991 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अखिल भारतीय पुरस्कार; वर्ष 1993 ई. में ग्रुप–8 द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1997 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार व वर्ष 2000 ई. में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्तमान में आप राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर में प्रदर्शनी अधिकारी के रूप में कार्यरत है।[38]

6.2.14 हेमन्त द्विवेदी (1966 ई.)

टखमण–28 के सक्रिय सदस्य की भूमिका निभाते हुए अपने चित्रों की अनेक एकल प्रदर्शनियाँ, उदयपुर 1989 ई., 1999 ई., कला मेला, जयपुर 1999 ई., 2000 ई. आदि में आयोजित की तथा केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली व राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित वार्षिक कला प्रदर्शनियों में भाग लेते हुए केन्द्रीय ललित कला अकादमी एवं आइफैक्स, नई दिल्ली की 'मिलेनियम' प्रदर्शनी में चित्र चयनित तथा कला मेला, जयपुर 2000 ई. में पुरस्कृत हुए।[39] (चित्र–99)

6.2.15 भूपेश कावड़िया (1969 ई.)

भूपेश कावड़िया पत्थर माध्यम में कार्य करते है वह कहते है कि–"मैं जब पत्थर में काम करता हूँ तो सब कहते है कि पत्थर में काम करना कठिन है लेकिन मेरे लिए वो आसान है। कैनवास पर चित्र बनाने से भी ज्यादा क्योंकि मैं उस माध्यम में काम नहीं करता हूँ। मेरा माध्यम पत्थर है इसलिए बारीश व धूप का भी कोई असर नहीं होता। पत्थर हर परिस्थिति में स्थिर रहता है।"[40] पत्थर प्राकृतिक रुप में आपको कुछ कहता हुआ जान पड़ता है। आप जब भी कार्य करते है तो आपको प्रेरणा आस–पास के समाज से ही मिलती है। आप ने जो अभिव्यक्त किया है वह भी वापस समाज में ही जा रहा है तो समाज एवं आपका मेल हमेशा प्रेरणा बनती है। (चित्र–100)

आपके शिल्प राजस्थान ललित कला अकादमी एवं आईफैक्स द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों में पुरस्कृत किये जाते रहे हैं। आपको वर्ष 1997 ई. में राजस्थान वेल्स आदान–प्रदान कार्यक्रमांतर्गत फैलोशिप भी प्रदान की गई।[41]

6.2.16 हेमन्त जोशी (1971 ई.)

हेमन्त जोशी का मानना है कि हम समाज से जुड़े है समाज अगर किसी को अस्वीकार कर दे तो आप आगे नहीं बढ़ सकते। आप कहते है कि मैं मानवाकृतियाँ बनाता हूँ। समाज से जुड़कर ही कार्य करता हूँ जो भी देखता हूँ उसको ही आत्मसात कर कला के रुप में प्रकट करने का प्रयास करता हूँ।[42] हेमन्त जोशी का माध्यम पत्थर है, आपने डेनमार्क में जाकर भी कार्य किया। उदयपुर में भुवाण बाईपास के गौरव–पथ पर वेस्ट मार्बल से 7 फीट की मनोहारी मूर्ति शिल्पों का निर्माण किया है जो आने–जाने वाले राहगीर को अपनी ओर आकर्षित करते है।[43](चित्र–101) आपको वर्ष 1996 ई. में जवाहर कला केन्द्र, जयपुर द्वारा 'यूथ अवार्ड' व 1997 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा स्टेट स्कॉलरशिप भी प्रदान की गई।[44]

6.2.17 दीपक खण्डेलवाल (1974 ई.)

आपने अनेक राज्य व अखिल भारतीय स्तर की कला प्रदर्शनियों में भाग लिया। आपको राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 2000 ई. में राज्य कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[45] (चित्र–102)

6.3 प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के प्रमुख कलाकार

6.3.1 कलाविद् मोहन शर्मा (1924–1988 ई.)

राजस्थान में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप (पेग) के संस्थापकों में से एक रहे मोहन शर्मा अपने सरलीकृत मूर्त–अमूर्त चित्र फलक व ज्यामितिय रूपाकारों के लिये प्रसिद्ध है। मोहन शर्मा के चित्र प्रकृति व काल्पनिक रूपाकारों से बुने है, जो आयताकार, गोलाकार, त्रिकोणात्मक व अन्य ज्यामितिय आकारों के इन्द्रधनुषी रंगों द्वारा बिम्बों के आकर्षक संसार में ले जाते हैं। प्रारम्भ में आपके चित्र के संयोजनों में मानव से ज्यादा मानव रचित वस्तुओं का अधिक समावेश था। दरवाजे, पुल, दीवारों खिडकियाँ, गलियाँ, मेज पर रखी विविध सामग्री, जैसे–पुस्तक, फल, पुष्प, बर्तन जिसे आपने सुन्दर छाया–प्रकाश दिखाकर वास्तविक रंगों के प्रभाव द्वारा निखारा। इसके पश्चात् आपने 'मुम्बई की भव्य इमारतें,' 'छोटी बड़ी गलियां,' 'जयपुर का जन्तर–मन्तर', 'ऐतिहासिक इमारतें,' 'चौड़ी सड़कें,' 'स्टिल लाइफ,' आदि को ज्यामितिय छोटे–बड़े आकरों में बनाया। सन् 1975–76 ई. में ब्रिटिश छात्रवृत्ति से लंदन प्रवास के दौरान बनाये चित्रों में 'स्टिल लाइफ,' 'हाउस ऑफ पार्लियामेन्ट,' 'रिफ्लेक्शन' आदि से प्रकाश युक्त रूपाकार जिनमें सफेद के साथ लाल, नारंगी रंग लिये चित्र और अधिक विविधता दर्शाते हैं। आपका लंदन में बिताया समय चरमोत्कर्ष का था। भारत आने के पश्चात् सन् 1985–86 ई. में बनाई 'डेजर्ट श्रृंखला' में भी प्रकाश युक्त ज्यामितीय रूपाकार ही थे। इसके अलावा मोहन शर्मा ने स्याही व पैन से सैकड़ों छोटे–बड़े रेखांकन बनाये, जो उनका अस्तित्व रखती है।[46](चित्र–103) मोहन शर्मा की कृतियों के बारे में प्रकाश परिमल कलावृत में लिखते है– ''The paintings of Mohan Sharma give the impression as if they are set in a universal observatory. The myriad display of geometrical forms and various harmonies in colour, and their setting in a space, present a similar impressional. Like observatories which are there to read the movements of various planets, Mohan Sharma's painting reveal the secret of the beauty created out of form and colour. All advanced and developed. Cities of the world today project thousands of such architectural forms with equal number of variation. Mohan Sharma's forms are limited and are often repeated in the painting he has done. But he might be justified in his belief that ultimately the forms of urban geometry some how resemble the key form created by him.'' [47]

आपने देश–विदेश में अपनी एकल व समूह प्रदर्शनियों का आयोजन किया जिनमें वर्ष 1976 ई. में 'टी सेन्टर लन्दन' में 'इंटीरियर शृंखला', 1986 ई. में 'आर्ट्स–38 गैलरी', लन्दन; 1976 ई. में 'ब्रिटिश कौंसिल' लन्दन, 'राष्ट्रीय प्रदर्शनी आईफैक्स', दिल्ली; 1985 ई. में 'ग्रे आर्ट गैलरी', न्यूयार्क, 'द्वितीय एशियन आर्ट शो', 'फूं–फूं', जापान आदि प्रमुख है। मोहन शर्मा को अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए भरपूर मान–सम्मान भी मिला। वर्ष 1966 ई., 1974 ई., 1975 ई., 1981 ई., 1884 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी का राज्य पुरस्कार; वर्ष 1965 ई. में डोली कर्सटजी अकादमी पुरस्कार; वर्ष 1972 ई. में राष्ट्रीय कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार; 1973 ई. आईफैक्स अवार्ड; 1987–88 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी के सर्वोच्च सम्मान 'कलाविद्' से सम्मानित किया गया।

(आप राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के सक्रिय सदस्य भी रहे थे।)

6.3.2 कलाविद् रणजीत सिंह जे. चूडावाला (1934 ई.)

चित्रकार रणजीत सिंह जे. चूडावाला के लिए चित्रण का शगल हमेशा से ही अभिव्यक्ति का एक सहज–सरल माध्यम रहा। एक सृजनरत चित्रकार के रूप में उनकी इस रचनात्मक भागीदारी को भी रेखांकित किया जाना चाहिए कि अकादमी की स्थापना के वर्ष से ही अकादमी की तमाम प्रदर्शनियों में नियमित भागीदारी करते रहे। इनके चित्रों को देखने से मोटे रूप में यह विचार सत्यापित होता है कि उन्होंने अपने समय के सत्य को अपने नजरिए से अभिव्यक्त किया है और निःसन्देह, उनका यह रचनात्मक नजरिया कलाकार की अभिव्यक्ति के कारण बदलाव भी लेता रहता है। ये चित्रकृतियां सहज–सरल व आकृतिमूलक रूप में अपनी पहचान रखती है। चित्रकार के रूप में इन्होंने कई विषयों को रचा है, जिनमें अभिव्यक्ति सहज भी है तो प्रतीकात्मक भी और यथार्थ, अतियथार्थ व नाटकीय भी। अपनी परम्परा व लोक सांस्कृतिक परिवेश से भी वे उत्प्रेरित देखे जा सकते है और यही कारण है कि उन्हें अपने नैसर्गिक सौन्दर्य को आत्ममुग्ध भाव के साथ प्रदर्शित करती उनकी मॉडल 'मालण' तो उत्प्रेरित करती ही है, गायों के समूह के साथ पशुओं के मातृत्व भाव को 'प्रणयोन्मत' की संरचना में अभिव्यंजित करने की भावनाएं भी रचनात्मक देखी जा सकती हैं।[48] कला को समर्पित सौम्य स्वभाव के रणजीत सिंह ने अपनी प्रयोगधर्मी छवि को बनाते हुए आसपास के जन–जीवन, प्राकृतिक सौन्दर्य को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। अपनी कला यात्रा के प्रारम्भिक समय से ही प्राकृतिक सौन्दर्य के मोहपाश में बंधे इस कलाकार ने प्रकृति के खुले वातावरण को आत्मसात कर रेखांकन व जलरंग के माध्यम से दृश्यांकित किए है। रणजीत सिंह ने जहाँ जल व तेल रंगों में समान

रूप से दक्षता प्राप्त की है, वही काली स्याही से सृजित रेखांकनों में भावों की अभिव्यक्ति भी प्रशंसनीय है। सामाजिक जन–जीवन से प्रभावित अपनी कलाकृतियों में मानवीय–संवेदनाओं, हर्ष–विषाद के भावों, सौन्दर्यपरक जीवन अभिव्यक्ति देते चित्रों में दृश्य चित्र, स्टिल लाइफ, व्यक्ति चित्र, प्रेमी युगल, पशु–पक्षी अंकन, गांव–नदी, औरत का दृश्य विशेष रूप से प्रशंसनीय है।(चित्र–104) रणजीत सिंह की अन्य कृतियां 'रघुवंश,' .'ऋतु–संहार' व 'शंकुतला' पर आधारित सशक्त रेखांकन अद्भूत मनभावन रंग संयोजन से सृजित ऐसी कलाकृतियां हैं जिन्हें प्रदेश के कला जगत ने सराहा।[49] वास्तव में रणजीत सिंह चूडावाला की कला यथार्थपरक आकृतिमूलक व भावपूर्ण है। उनकें द्वारा चित्रित नवयौवनाओं के चित्रों में स्फूर्ति व ताजगी भरी हैं, उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि मानों वो अभी कैनवास तोड़ कर बाहर आने वाली हो।

आपको वर्ष 1960 ई., 1962 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार; 1965 ई. में पर्यावरण विभाग, राजस्थान द्वारा पुरस्कार; 1979 ई. में पैग, जयपुर द्वारा पैग अवार्ड; 1985 ई. में कलावृत्त, जयपुर द्वारा सम्मान; 1997–98 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'फैलोशिप', 2002 ई. में रंगरीत, जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया।[50]

6.3.3 कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी (1936 ई.–2012 ई.)

राजस्थान में आधुनिक शैली के प्रणेता, पैच पद्धति के सिद्वहस्त प्रयोगधर्मी चित्रकार, रंगों और रेखाओं के जादूगर, कला समीक्षाकार, साहित्यकार, बालमन के धनी, सहज–सरल स्वभाव वाले कलाविद् चित्रकार डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी प्रयोगशील चित्रकार थे तथा उनकी शैली निरन्तर बदलती रही। उन्होंने नाईफ स्ट्रोकों के माध्यम से नवीन प्रयोग किये जो कला जगत की थाती है। डॉ. गोस्वामी आधुनिक कला के उन चित्रकारों में से हैं जो कलाकृति के सौन्दर्य पक्ष को महत्व देते है। उसके संदेशात्मक रूप को नहीं। डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी रूपाकारों का निर्माण केवल इसीलिए करते है कि दर्शक को सम्मोहित कर सके। वह स्वयं कहते थे कि– ''मेरे अमूर्त चित्रों में कोई दर्शन या सन्देश नहीं है, वहां केवल सौन्दर्यानुभूति हैं।''[51] डॉ. गोस्वामी ने अपने चित्र विषयों को जीवन की प्रयोगशाला के व्यापक स्तरों से लेने–देने का प्रयास किया है। यही कारण है कि इनकी आकृतियों के पीछे घटनाओं के चेहरे झांकते दिखते हैं। अहसासों की अभिव्यक्ति अपनी विषय–वस्तु के आस–पास अमूर्त रेखाओं रंगों और आकृतियों में दूर तक फैली लगती हैं। 'रंगोत्सव', 'रंगयात्रा', 'आकाश गंगा' तथा 'मेरा गांव' आदि शीर्षकों से बनाये गये चित्र जहां एक प्रभाव

पूर्ण रंगमय परिवेश की सृष्टि करते हैं, वहां 'संघर्ष की ओर', 'परिवार,' 'अंतर्मन का द्वन्द्व' और 'यात्रा का पड़ाव' आदि चित्रों में आदमी के मन की भीतरी परतें है। आमजन का सुख–दुख तथा अर्न्तमन की पीड़ा डॉ. गोस्वामी के चित्रों में मूर्त हुयी हैं। ऐसे चित्रों में 'नीले चांद का शहर', 'विभक्त व्यक्तित्व,' 'एक अकेली बस्ती,' 'रंगशयन', 'रास्ते की गपशप' तथा 'जुड़वां व्यक्तित्व' जैसे और भी अनेक सशक्त चित्र है। जो उनकी लम्बी कला यात्रा का बोध कराते है। 'फाल्गुन', 'समारोह के बाद,' 'बिखरते रंग,' 'रंगबिंब,' 'आसमान के नीचे,' 'रंगबोध' तथा 'स्वप्नलोक' आदि ऐसे चित्र है जो चित्रकार के मन में उपजे उल्लास को चित्रफलक पर ताजगी देते है।(चित्र–105) गोस्वामी जी ने तन्त्र चित्रण पर भी कार्य किया है तथा उनके ये चित्र तन्त्र–विज्ञान के आधार पर ही बनाये गये है।[52]

आपको वर्ष 1963 ई., 1965 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार; 1976 ई. में बीकानेर समाज द्वारा सम्मान; 1981 ई. में मौलिक साहित्य सृजन हेतु राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित; 1982 ई. में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा सम्मानित; 1986–87 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'फैलोशिप'; 1990 ई. में राजस्थान दिवस समारोह समिति द्वारा सम्मानित; 1977 ई. में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया।[53] आपने कई कला सम्बन्धी पुस्तकों का लेखन व सम्पादन भी किया जिनमें 'आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ', 'राजस्थान की लघुचित्र शैलियाँ' (सम्पादित), 'कला : सन्दर्भ और प्रकृति' (सम्पादित), 'कलात्मक सौन्दर्य की भावभूमि' (सम्पादित), 'भारतीय कला के विविध स्वरूप' आदि प्रमुख है। आपकी कलात्मक उपलब्धियों पर राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा तथा साहित्यिक उपलब्धियों पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा 'मोनोग्राफ्स' का प्रकाशन भी किया गया है। आधुनिक प्रयोगवादी अमूर्तन शैली को नये आयाम देने वाले डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी के कारण ही आधुनिक कला आन्दोलन में प्रदेश का नाम भी गर्व के साथ जोड़ा जा सका है।

6.3.4 आनन्दीलाल वर्मा (1936 ई.)

आनन्दीलाल वर्मा प्रारम्भ में वाश पद्धति पर आधारित चित्र बनाया करते थे बाद में मूर्तिशिल्प की पारम्परिक यथार्थिक रचनाशीलता के साथ–साथ इनकी रूचि आधुनिक प्रयोगशीलता में समान गति से रमी है। इनके सृजनशील प्रयोगवादी मूर्तिशिल्पों ने विविध माध्यमों में इनके उपकरणीय प्रभाव और कलात्मक दक्षता का यथावत मैत्रेय सम्बन्ध रखा है।[54] वर्मा के काष्ठ शिल्पों में विषय की विविधता तो नहीं परन्तु माध्यम की विशिष्ठता

अवश्य है। उनकी आकृतियाँ ठीक उनके स्वभाव की तरह सहज और सरल है। वह न तो अमूर्तता के अनंत संसार में विचरण करते हैं और ना ही मानव आकृतियों से भिन्न कोई विषय हमारे सामने रखते हैं।[55] (चित्र–106)

आपको वर्ष 1964 ई., 1965 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार व वर्ष 1997 ई. में जयपुर समारोह के अन्तर्गत आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया।

6.3.5 गोपाल वर्मन (1936 ई.)

गोपाल वर्मन की कृतियां विशेष रूप से सफेद स्याह रंगों में अपनी अद्भूत सृजन क्षमता का परिचय देती है।[56] वर्मन के कृतित्व में उनकी महत्वाकांक्षाएँ कल्पना शक्ति और व्यक्तित्व का एक अपेक्षित संसार हावी होता दिखाई देता है।[57] (चित्र–107)

6.3.6 डॉ. रमेश सत्यार्थी (1938 ई.)

डॉ. रमेश सत्यार्थी जीवनपर्यन्त अपनी साधना में सतत् क्रियाशील बने रहे। सत्यार्थी ने अपनी ग्रामीण श्रृंखला के चित्रों में बूंदी की छतरियां, दुर्ग आदि के स्थलों का प्रयोग करते हुए ग्रामीण एहसास को सफल अभिव्यक्ति प्रदान की थी।[58](चित्र–108) बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न सत्यार्थी कला की अनेक धाराओं से जुड़े हुये थे। सत्यार्थी जी का पूरा नाम रमेश सहाय सक्सैना है, परन्तु प्रबुद्ध समाज इनको रमेश सत्यार्थी के नाम से जानता है। आपको वर्ष 1995 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया।

(रमेश सत्यार्थी कलम कला समूह, बून्दी के अध्यक्ष भी रहे।)

6.3.7 डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ (1938 ई.)

डॉ. वशिष्ठ अपने आधुनिकतम प्रयोगों से अपनी साधना की परिपक्वता को झलकाने में सफल प्रतीत होते है। आपके प्रायः सभी चित्र फिगरेटिव होते हुए भी उनमें आधुनिक चित्र संयोजन के सिद्धान्तों का समावेश है। रेखाओं की विभिन्न गतियों विरूपात्मक अभिव्यक्ति तूलिका संचालन तथा चित्रण तत्वों के तर्क संगत प्रयोग से सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति के नवीन दृष्टिकोण जन साधारण एवं आधुनिक शिक्षा शास्त्रियों को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकते।[59] (चित्र–109)

आपको वर्ष 1967 ई. में कला शिक्षक पुरस्कार; 1980 ई., 1982 ई. में तूलिका पुरस्कार; 1980 ई. में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर द्वारा पुरस्कार; 1986 ई. में पटियाला आर्टिस्ट पुरस्कार एवं महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा महाराणा सज्जन सिंह पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको राजस्थान के प्रथम पीएच.डी. व डी.लिट् उपाधि धारक होने का गौरव भी प्राप्त है। आपने अब तक कला विषयक अनेक पुस्तकों का सृजन किया है, जिनमें 'मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा–1984 ई.'; 'आर्ट एण्ड आर्टिस्ट ऑफ राजस्थान–1994 ई.'; 'वाल पेंटिंग्स ऑफ राजस्थान–1998 ई.'; 'राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक–2008 ई'; आदि प्रमुख है। आपने राजस्थान ललित कला अकादमी, जवाहर कला केन्द्र व अन्य कई संस्थाओं की पत्र–पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया हैं। आप राजस्थान ललित कला अकादमी के सदस्य भी रहे है।[60]

(डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ तूलिका कलाकार परिषद्, उदयपुर व टखमण–28 उदयपुर से भी सम्बद्ध रहे है।)

6.3.8. कलाविद् राधाबल्लभ गौतम (1940 ई.)

राधाबल्लभ गौतम राजस्थान के चिर–परिचित कला–संहति 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप' जयपुर के वर्तमान अध्यक्ष है। इससे पूर्व भी इस संगठन के विभिन्न पदों पर रहते हुए अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण निष्ठा के साथ निभाया। गौतम का माध्यम तेलरंग है जिनके लिए कृतियों में ''विषय'' महत्वपूर्ण है। अपनी प्रारंभिक रचनाओं में वह डरावने और कुछ अहसासों के रचनाकार हैं। कालान्तर में उनके ऐसे चित्रों की संवेदना मानववादी है। यह हमारे समय के सत्य की पहचान कराने की भाव प्रवण कोशिश है। उत्पीड़न और यातना के विरूद्ध ये कृतियां मनुष्य के अस्तित्व के बारे में अभिव्यक्त की गई चित्रकार की चिन्ताएं हैं। उनमें एक खास तरह की समसामयिकता और युग–चेतना है। गौतम समकालीन राजनैतिक प्रसंगों से भी कला के प्रभावित होने को सृजन चेतना की एक अनिवार्य बात मानते हैं।[61] इनके कथापरक चित्रों में चाकू या ब्लेड के आघात से उभरे हैं–कुछ गाढ़े रंग, जो वर्ण–अनुभवों की कई तहें खोलते है। 1984 ई. में गौतम ने मानवीय संवेगों का अमूर्तिकरण करने वाली एक छोटी चित्र–शृंखला तैयार की थी–जिसमें चेहरों पर छाए भावों और मुखाकृतियों के जरिये उन्होंनें मनुष्य के भीतर की हिंसक–वृत्ति, पशुविकता, क्रुरता और प्रतिहिंसा की प्रवृत्तियों का चित्रीकरण किया था। इस शृंखला में उन्होंने प्रतीकात्मक रूप से मनुष्य की अन्दरूनी कमजोरियों को चित्राभिव्यक्ति दी थी। चित्रों में अमूर्तिकरण को लेकर गौतम यह मानते है–''एक वास्तविक कलाकार कभी सायास, वस्तुओं का विरूपण नही कर

सकता। अगर वह जान–बुझकर ऐसा करता है तो उसकी यह प्रयत्न साध्य कोशिश कला में पकड़ी जा सकती है।''[62] उनकी मान्यता है कि कलाकार की मानसिकता और उसके अचेतन में कार्य कर रहे संस्कार स्वतः ही इस अमूर्तन का मार्ग प्रशस्त करते है। साधारण रूप से जो हमें दिखलाई दे रहा है, कलाकार की अपनी अन्दरूनी शक्ति, उसे सरल अनुभव से एक जटिल कलानुभव में बदलती है। (चित्र–110)

आपको आपके कलाकर्म के लिए वर्ष 1961 ई. में गुजरात ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा वर्ष 1968 ई., 1982 ई., 1984 ई. 1986 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1979 ई. में पैग, जयपुर द्वारा पुरस्कृत किया गया। आपको वर्ष 1981 ई. में राजस्थान स्टेट बेस्ट टेबलेक्स डिजाइन के लिए भी पुरस्कृत किया गया। वर्ष 1994 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा अखिल भारतीय कला पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। वहीं वर्ष 1995–96 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य के सर्वोच्च कला सम्मान 'कलाविद्' से सम्मानित किया गया।[63]

6.3.9 पारस भंसाली (1940 ई.)

1960 ई. में सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुम्बई से कला डिप्लोमा पूर्णकर राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर तथा ललित कला अकादमी, दिल्ली की समूह कला प्रदर्शनियों में भाग लिया। 1970 ई. में आपको राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[64] (चित्र–111)

6.3.10 चन्दूलाल चौहान (1940 ई.)

चन्दूलाल चौहान ने पारम्परिक कला के चलन को अपनी कृतियों में प्राणवान बनाया है। इनकी कृतियों में मुगल चित्रण पद्धति एवं विषयवस्तु का वर्तमान रूप प्रस्तुत हुआ है।[65] चौहान ने अपनी कृतियों में नये पुराने चित्रों की छवियों को कुशलता के साथ अंकित किया है,[66](चित्र–112) आपको राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर व हैण्डीक्राफ्ट बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा 1985 ई. में पुरस्कृत किया गया।

6.3.11 कलाविद् कन्हैया लाल वर्मा (1943 ई.–2015 ई.)

प्राचीन और अर्वाचीन कला–शैलियों के समन्वय से अपनी निजी कला–शैली का सृजन करने वाले कन्हैयालाल वर्मा ने राजस्थान की गौरवमयी संस्कृति को अपनी तूलिका से रंगायित किया है। राजस्थानी रागरंग, जनजीवन, ऋतु–त्यौहार, बारहमासा, राग–रागनियाँ, यहाँ की वीर रस पूर्ण गाथाओं, प्रेमख्यानों, धार्मिक और साहित्यिक सभी विषयों को इन्होंने अपनी कलाकृतियों में नवीनता तथा निजता के साथ रूपायित किया है। इनका चित्रकार 1964 ई. से अपने कलाकर्म में प्रवृत्त हुआ और 1973 ई. तक राजस्थान के सामान्य विषयों के पुनरांकन तक सीमित रहा। 1974 ई. से 1984 ई. का समय वर्मा का सागर को गागर में भरने का प्रयत्न काल था। इनकी महत्वकांक्षा ने जैसे इस काल में राजस्थान की सम्पूर्ण संस्कृति और उल्लेखनीय साहित्य को अपनी कल्पना और कौशल के ताने–बाने देकर साकार करने का निश्चय कर लिया। ढ़ोला–मारू, जेठवा–ऊजली, पद्मनी का जौहर, हम्मीर की माँ, सेनाणी, मूमल–महेन्द्र, निहालदे–सुलताण, रूपमती–वाज बहादुर, जसमा– ओड़ण तथा आभल–खींव सिंह आदि को इस काल में इनके चित्रकार ने समसामयिक जगत की परम्परावादी कला से परिचित करवाया। 1985 ई. से 1988 ई. तक इनके चित्रकार ने राजस्थानी काव्यों को अपनी कला का विषय बनाया तथा बिहारी सतसई, वीर सतसई, राठौड़ राज पृथ्वीराज री कही, रागमाला, वेलि क्रिसण रूकमणी के अध्यात्मपरक प्रेमाख्यान में प्रेम और श्रृंगार के चित्रण प्रतीकों द्वारा वर्मा ने ब्रह्म और आत्मा के शाश्वत संबंध तथा मिलनोत्कंठा को प्रदर्शित करने के लिये मानवीय मुद्राओं एवं रंगप्रतीकों का उपयोग किया है। 'वीरांगना', 'पद्मनी का जौहर' आदि की चित्र श्रृंखलाओं में नारी के वीर और त्याग भाव को कन्हैयालाल वर्मा ने रूपांकित किया है।[67] कन्हैया लाल वर्मा की कला जहाँ राजस्थान के अतीत का सांस्कृतिक गौरव प्रस्तुत करती है, वही चित्रकला की राजपूत और कांगडा कला–शैली की कमनीयता और सुषमा में अपनी पैठ देती हुई समसामयिक प्रभाव में सांस लेती पायी जा सकती है। (चित्र–113)

आपको समय–समय पर विभिन्न पुरस्कारों व सम्मानों से भी विभूषित किया गया जिनमें वर्ष 1974 ई., 1975 ई., 1977 ई., 1982 ई, 1984 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार; वर्ष 1975 ई. में राजस्थान स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1978 ई. में राजस्थान आर्ट टीचर्स एग्जीबिशन पुरस्कार; वर्ष 1980 ई. में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1985 ई., 1986 ई., 1988 ई., 1990 ई. में कालिदास अकादमी, उज्जैन द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कार; वर्ष 1987 ई. में

आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा अखिल भारतीय स्तर पुरस्कार; वर्ष 1990 ई. में दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर द्वारा अखिल भारतीय स्तर पुरस्कार; वर्ष 1993 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा अखिल भारतीय स्तर पुरस्कार; वर्ष 1999 ई. में शिक्षा विभाग, राजस्थान द्वारा राज्यस्तरीय पुरस्कार; वर्ष 2000 ई. में भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री के.आर. नारायणन् द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान; वर्ष 2003 ई. में अवन्तिका, दिल्ली द्वारा 'गुरु द्रोणाचार्य सम्मान'; वर्ष 2010 ई. में सिटी पैलेस, जयपुर द्वारा महाराजा जगतसिंह सम्मान; वर्ष 2013–14 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'फैलोशिप' आदि प्रमुख है। आपको वर्ष 1983 ई से 1985 ई. और वर्ष 1989 ई. से 1991 ई. तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजस्थान की लघुचित्र शैली में विशेष कार्य करने के लिए फैलोशिप भी प्रदान की गई।[68]

6.3.12 प्रो. भवानी शंकर शर्मा (1945 ई.)

कलाविद् देवकीनन्दन शर्मा के सुपुत्र प्रो. भवानी शंकर शर्मा ने कला के समकालीन स्वरूप को अपने सृजन से विकसित किया है। मूर्त–अमूर्त के बीच की राह चुनते हुए आपने अनेक माध्यमों में कार्य किया है। प्रो. भवानी शंकर शर्मा के चित्र परम्परागत संस्कारों के प्रति समर्पित है उनके कैनवास की पृष्ठभूमि में उनके अनुभवों का गहरा सरोकार उनकी रेखाओं में बोलता हैं, इसलिए उनके चित्रों में सामूहिक उल्लास की अभिव्यक्ति है जिसे उन्होंने संस्कारों से लिया है उनके चित्रों में किसी आयातित कुंठा, घुटन या निराशा की अभिव्यक्ति नहीं है, इसलिए उनका प्रिय पक्षी मोर जो उनके चित्रों की प्रेरणा है कभी अकेला नहीं होता, उसके साथ पूरा जंगल होता है जिसमें दूसरे जंगली जानवर या पक्षी भी देखे जा सकते है मोर कई रूपों और आकृतियों में देखा जा सकता है किन्तु रंगों के चयन में उन्होंने अपनी मौलिकता का परिचय दिया है इसलिए उनका मोर परम्परागत रंगों में नहीं होकर एक प्रभाववादी अभिव्यंजना में देखा जा सकता है। मोर जंगल के राजा की कुर्सी पर बैठा दिखाई देता है और उसके पास शेर दास भाव से उसकी और देख रहा है।[69] (चित्र–114)

प्रो. शर्मा सफल चित्रकार होने के साथ–साथ एक सफल छापा चित्रकार भी है। उनके द्वारा निर्मित एचिंग, ड्राईपोइंट, इन्टेलिंगों एवं लिथोग्राफ के छापे उनकी कला के तात्विक स्तम्भ रहे है। आपको आपके कलाकर्म के लिए वर्ष 1965 ई., 1971 ई., 1975 ई., 1979 ई., 1981 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार; 1979ई. में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर द्वारा पैग अवार्ड; 1983 ई. में इटालियन सरकार द्वारा

फैलोशिप; 1995 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी' में पुरस्कार आदि प्रदान किये गये। भारत के प्रमुख शहरों में आयोजित कला प्रदर्शनियों के साथ–साथ आपने विदेश में आयोजित कला प्रदर्शनियों में भी अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई है। विदेश में आयोजित कला प्रदर्शनियों में– वर्ष 1979 ई. में कला प्रदर्शनी, टोक्यों, जापान; 1985 ई. में ट्रेवलिंग एग्जीबिशन ऑफ ग्राफिक्स; 1993 ई. इन्टरनेशनल प्रिन्ट बिनाले, हॉलैण्ड आदि प्रमुख है। आप राजस्थान ललित कला अकादमी के अध्यक्ष भी रह चुके है।[70]

6.3.13 शैलेन्द्र भटनागर (1945 ई.)

शैलेन्द्र भटनागर की चित्र रचनायें अपने अनुभव संसार की व्यापकता की पहचान है। इनकी 'इवोल्यूशन' श्वेत–श्याम चित्रकृतियों में पोत की सार्थक भूमिका सराहनीय है। भटनागर के चित्र अमूर्त आकारों का संयोजन है और इनमें आधुनिक कला का दर्शन होता हैं।[71] (चित्र–115) आपको वर्ष 1980 ई. में पैग, जयपुर द्वारा अवार्ड, वर्ष 1988 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी के द्वारा राज्य कला पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।[72]

6.3.14 डॉ. नाथू लाल वर्मा (1946 ई.)

डॉ. नाथू लाल वर्मा वर्तमान में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर के सचिव पद पर कार्यरत है। डॉ. वर्मा परम्परागत चित्रण शैली में जितने पारंगत है, उतने ही पोट्रेट कला में भी, जिस परम्परागत राजस्थानी चित्र शैली का निर्वहन डॉ. वर्मा कर रहे हैं उसके बारे में इतना ही कि उसका कही कोई सानी नहीं है। नाथू लाल वर्मा अपने गुरू कृपाल सिंह शेखावत के शिष्य के रूप में प्रतिष्ठित होते आ रहे है। उन्हें गर्व है कि अपने आप को कृपाल सिंह का शिष्य कहलवाने में, यद्यपि कुछ अंश तक उन पर अपने कलागुरू का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है जिसे सहजता से वे स्वीकार भी करते है परन्तु अपने बढ़ते अनुभवों के साथ–साथ उनकी कार्य शैली भी प्रौढ़ होती चली गई। उनके प्रकृति चित्रण, रंग–विन्यास, आलेखन और शिल्प विधि में व्यापकता आती गई। अपनी गुरू परम्परा को उन्होंने अपनी शिक्षा और अभ्यास के विभिन्न स्तरों पर मांजा है। रंगों के प्रयोग में अपनी सूक्ष्मता का परिचय दिया है ब्रुश पर उनकी पकड़ कमाल की है जो एक नई सृष्टि का निर्माण करती है। हल्के तेज चटख रंगों का प्रयोग उनकी विशेषता मानी जा सकती है। संयोजन उनका लाजवाब है। अपने व्यक्ति चित्रों के साथ उन्होंने दृश्य चित्रों (प्रकृति) का

अधिक से अधिक उपयोग किया है। उनकी प्रकृति में भिन्न–भिन्न पेड़ है, पौंधे है और ताजगी का अहसास कराते पुष्प है और इन सबके साथ है पक्षी के रूप में विचरते मयूर।[73] राजस्थानी प्रेमाख्यान परम्परा को जीवंतता भी उनके द्वारा प्रदान की गई है। वियोग और संयोग, नायिका विरह आदि प्रसंगो को गतिशील बनाया है। अपने स्तर पर उन्होंने इन प्रेम प्रसंगों को गतिशील रेखाओं तथा वर्ण सौष्ठव के द्वारा प्रतिबिम्बित करने का प्रयास किया है। राजस्थान की नव पारम्परिक कला के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. नाथू लाल वर्मा की कला यात्रा में हमने पारम्परिक कला की धारा को प्रवाहित होते हुये देखा है, साथ ही कलाकार ने अपनी निजी शैली एवं तकनीक के माध्यम से पारम्परिक कला के प्रचलित मुहावरों से स्वतंत्र हो नव–परम्परा को फलती–फूलती देखा है जिसमें चित्रण से लेकर प्रकृति की विषय–वस्तु आकृति चित्रण से लेकर प्रकृति की विषय वस्तु एवं आकृति चित्रण से लेकर प्रकृति के विविध उपादानों के साथ सम्पूर्ण रेखांकन, रंग योजना एवं चित्र संयोजन के द्वारा अपनी निजी शैली में श्रृंखलाबद्ध चित्र रचना कर राजस्थान की कला में महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।[74] (चित्र–116)

कला के प्रति समर्पण के फलस्वरूप ही आपको भरपूर मान–सम्मान प्राप्त हुआ। जिनमें वर्ष 1974 ई., 1983 ई., 1986 ई., 1990 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार; वर्ष 1989 ई., 1990 ई., 1991 ई., में कालिदास अकादमी, उज्जैन द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कार; वर्ष 1991 ई., 1994 ई. में आईफैक्स अवार्ड; वर्ष 1999ई. में भारत सरकार द्वारा सीनियर फैलोशिप; वर्ष 2000ई. में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार; वर्ष 2004 ई. में महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा पुरस्कार; वर्ष 2006 ई. में महाराजा जगत सिंह अवार्ड; वर्ष 2010 ई. में आईफैक्स द्वारा 'वेर्टन आर्टिस्ट' सम्मान आदि प्रमुख है।[75]

6.3.15 सुभाष केकरे (1947 ई.)

चित्रकार सुभाष केकरे किसी एक शैली या दायरे में बंधकर चलने में विश्वास नहीं रखते है। प्रयोगधर्मी प्रवृत्ति को समर्पित केकरे का चित्रकार अपनी हर प्रदर्शनी में चित्रों की एक नई श्रृंखला लेकर आता है और यह सिलसिला सक्रिय रूप से चला आ रहा है। केकरे ने अपने सृजन में मिक्स मीड़िया को प्रमुखता से स्थान दिया है। सुभाष ने कोलाज कला को मिक्स मीड़िया से रंग–बिरंगा आकर्षक रूप प्रदान किया है। कोलाज में वे ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने में सफल रहे है जहाँ समाज की विकृतियां उजागर होती है। शिक्षा की स्थिति एवं बेरोजगारी को दर्शाती कृति 'मास प्रोडक्शन' अच्छा चित्रण है। चित्र में एक तरफ

मिट्टी के बर्तनों का अंबार लगा है; दूसरी तरफ डिग्रीधारियों की भीड़। इधर सीढ़ियों पर बैठे छात्र। फलक पर यह दृश्य मौजूदा शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों को सटीक रूप में संप्रेषित करता है। 'मनोरंजन का साथी' में मनोरंजन की अभिव्यक्ति हुई है। 'काली आंधी' में नीग्रो लोगों के सुलगते असंतोष को बताया गया है। 'कुर्सी का मोह' में राजनीति पर सटीक व्यंग्य किया गया है। 'दुआ' कोलाज में बच्चे के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है। 'उदासी—मायुसी' में घोड़ों को प्रतीक मान कर जीवन के एक पक्ष को प्रभावी रूप में अंकित किया गया है।[76] कोलाज के सिद्धहस्त चितेरे सुभाष केकरे कला जगत में कोलाज की प्रायोगिक शैली को निखारने में लगे है। उनमें शोषित, उत्पीड़ित के लिए वेदना है, तड़प है और वे अपने हृदय के इन्हीं उद्‌गारों का सजीव चित्रण कोलाज शैली में प्रस्तुत करते है।[77] (चित्र—117)

(सुभाष केकरे रंगबोध, कोटा के महासचिव भी है।)

6.3.16 लालचन्द मारोठिया (1949 ई.)

लालचन्द मारोठिया की पकड़ परम्परागत कलम के साथ आधुनिक मुहावरों पर भी मजबूत हैं। बिना विराम के निरन्तर कला—साधना करते रहना भी मरोठिया के चित्रकार की एक खूबी है। जीवन के विविध पक्षों को लेकर बनाये गये मरोठिया के चित्र हमारे समक्ष एक विविधता से पूर्ण व्यापक फलक प्रस्तुत करते है। परम्परागत चित्रों की लम्बी शृंखला से उनके चित्रकार की यात्रा की शुरूआत करें तो एक ऐसे माहौल में जहाँ, जंगल और जंगलों के बाशिन्दें, पशु—पक्षियों का अस्तित्व एक खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है और नगरों एवं महानगरों की एक क्रूर 'संस्कृति' अपना वर्चस्व कायम कर रही है, वहाँ हरे—भरे प्राकृतिक जीवन की अनुभूति करना और पक्षियों के चहकते जीवन की कामना करना एक दुष्कर कार्य है लेकिन लालचन्द मारोठिया के भीतर छिपा संवेदना और सौन्दर्य की परिकल्पना से भरपूर चित्रकार आज भी पशु—पक्षियों और प्रकृति की उन्मुक्त जिन्दगी के जीवन्त—चित्रों का सृजन करके एक ऐसा कला—संसार प्रस्तुत करता है, जो हमें एक ऐसे समय की ओर ले जाता है जहां आदमी और प्रकृति के बीच एक सीधा और अटूट सम्बन्ध था। आदमी और प्रकृति के बीच एक तालमेल था। मरोठिया का हर चित्र एक सुखद अनुभूति छोड़ता है।[78] मारोठिया के लैण्डस्केप में आयी प्रकृति की दृश्यावलियों का मौन मानों बोलना चाहता है। रंगों का चटकपन यहां अखरता नहीं, समुद्र—नदियों के जल में छिपी अथाह सम्पदा और मछलियां मानों अपनी समग्रता में अपने सौन्दर्य से रिझाने का प्रयास करती है। यही नही पेड़, रूख और उसकी जड़ों का अंकन, उनका जल में हूबहू वैसा ही प्रतिबिम्ब दर्शाते मारोठिया के

चित्र देखने वाले को ऐसे अनोखे संसार में भी बार–बार ले जाते है जहाँ सब कुछ व्यवस्थित और सुन्दर है।[79] (चित्र–118)

आपको आपके कला सृजन के लिए वर्ष 1974 ई. में राजस्थान आर्टिस्ट एसोसिएशन द्वारा पुरस्कार; 1979 ई. में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर द्वारा पैग अवार्ड; 1984 ई. में 'आज' अवार्ड; 1984 ई., 1985 ई में अखिल भारतीय कला पुरस्कार अम्बाला, होशियारपुर; 1990 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार; 1993 ई., 2002 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।[80]

6.3.17 राजेन्द्र मिश्रा (1950 ई.)

इनकी शिल्पाकृतियों ने सोच के अनुरूप आकार ग्रहण किये हैं और रचना के प्रति दर्शक की दृष्टि आकर्षित करने के लिये विविध टेक्सचर्स को अपने अन्दर समाहित किया है। इनकी प्रायः शिल्पकृतियाँ संगमरमर के पत्थरों को अपने अन्दर छुपे रहस्य प्रगट करने का उपयुक्त माध्यम समझती है। उनकी कुछ शिल्पाकृतियों में टेक्सचर इतने प्रबल है कि ध्यान सीधा टैक्सचर की बनावट की तरफ जाता है। वहां आप उसके कथ्य की चर्चा करना ही भूल जायेंगे। मगर जहां रचना सामग्री के कथ्य और तकनीक में बराबर तालमेल है, वहां उनकी कृतियाँ सौन्दर्य के उत्कर्ष को स्पर्श करती नजर आती है। मिश्रा ने धातु, पत्थर, मिट्टी (क्ले) व प्लास्टर इन सभी तरह की रचना सामग्री को अपने शिल्प का माध्यम चुना है किन्तु विविध वर्णों वाले संगमरमर इनके मनपसन्द माध्यम रहे है। विषय कोई भी हो, वह पत्थर को इस अंदाज से तराशते हैं कि चाक्षुष रूप से आह्लादित करने वाले आकारों के बीच पत्थर का अपना वैयक्तिक सौन्दर्य बखूबी चढ़कर बोलता हैं।[81] (चित्र–119)

आपको वर्ष 1969 ई., 1970 ई., 1975 ई., 1977 ई., 1986 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार व वर्ष 1995 ई. में अखिल भारतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।[82]

6.3.18 मंजू मिश्रा (1950 ई.)

मंजू की कला में लोककला की स्पष्ट छाप है। राजस्थान के सुदूर अंचलों में इस प्रकार की कला प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती है। इन कलाकृतियों में राजस्थानी मिट्टी की गंध है।[83] मंजू मिश्रा ने जिस सहजता के साथ अपनी रिलीफ आकृति में रंगों से भिन्न सामग्री का प्रयोग कर, जिस सार्थक रूप में आकृतियों को उकेरकर अभिव्यक्ति दी है, वह

इनकी प्रतिभा के प्रति आश्वस्त करता है।[84] (चित्र–120) आपको वर्ष 1973 ई., 1974 ई. में राजस्थान हैण्डीक्राफ्ट बोर्ड एवं वर्ष 1981 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार प्रदान किया गया।[85]

6.3.19 डॉ. राजीव गर्ग (1953 ई.)

जलरंग, पानी और रंग के कुशलतापूर्ण पारम्परिक संपर्क द्वारा रचा गया ऐसा अनोखा माध्यम है जिसकी तरलता, पारदर्शिता और कोमलता अद्वितीय है। सरल इतना कि बालक भी निर्भय होकर कार्य कर सके और दुरूह ऐसा कि सिद्धहस्त कलाकार भी इसके अंतिम परिणाम से निश्चित न हो सके। अपने कलागुरुओं र.वि. साखलकर, राम जैसवाल, सूरत सिंह शेखावत व अपने बाल्यकाल के सहपाठी देशपाण्डे से चित्र सृजन सम्बन्धी आवश्यक तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर अपनी कल्पना को मोहक प्रस्तुति प्रदान की है।[86] डॉ. गर्ग के दृश्य–चित्र तत्स्थलीय नहीं है, उनमें जो देखा वो चित्रित किया का भाव नहीं है अपितु कल्पना की अतिरंजना है जिसमें प्रयोगधर्मिता एक आवश्यक गुण है। इन्होंने रंगों के मनचाहे सुहाने प्रयोग में कल्पना का सम्मिश्रण कर अपनी एक अलग मौलिक शैली विकसित की है। इस शैली में गीले में गीले रंगों का खास तरीके से नियंत्रित प्रयोग, अपने गहरे अनुभव के आधार पर लगाये गये बेतरतीब ब्रश स्ट्रोक्स, रंगों को यहाँ–वहाँ रोक कर बिम्बों के सृजन आदि की प्रक्रिया इन्हें अन्य समकालीन चित्रकारों से अलग करती है।[87] राजीव गर्ग ने अपने जलरंग चित्रों में निगेटिव स्पेस का बहुत सुन्दर उपयोग किया है। प्रकृ ति ही उनकी प्रेरणा का मुख्य स्त्रोत है इसीलिये वनस्पति का हरा–पीला, धरती का मटमैला भूरा, आकाश और जल के लिये नीले रंग का प्रयोग देखते ही बनता है जिससे प्राकृतिक सौन्दर्य को और विस्तार मिला है। कलाकार के दृश्य चित्रों में वास्तविक आकारों की स्पष्टता के बजाय रेखाओं और रंगों की भावदर्शी लय का अंकन है। गतिमान लयबद्ध रेखायें व तरल और बहते आकार बाह्य के जरिये आंतरिक सौंदर्य का प्रकटीकरण है उसमें कहीं कोई बनावटीपन नहीं है, कहीं कोई कृत्रिमता नहीं है। आंख जिस सौंदर्य को देख नहीं पाती उस अचेतन और अवचेतन के अंकन तक की गति अत्मीयता के भाव को जगाती है। डॉ. गर्ग ने प्राकृतिक परिवेश को उजागर करने के लिये स्मृति और कल्पना का सहयोग लिया है।[88] जैसा कलाकार ने अपने आस पास को अनुभव किया है और जो देखा है वह बहुत से स्तरों पर हमारा अपना सा भी शायद इसलिये लगता है कि उसमें कलाकार का आत्म है। राजीव के पेड़, पहाड़, पत्थर चट्टान, आकाश का कोई निश्चित स्थान नहीं है वे कहीं भी परन्तु अपनी एक व्यवस्था के दायरे में बिखरे पड़े हैं। राजीव गर्ग ने दृश्य चित्रण

में अलग पहचान बनाई है। इनकी कृतियाँ अपनी मौलिक सृजनात्मकता को व्यक्त करती हैं जिनमें प्रारंभिक प्रयोगात्मकता भी नजर आती हैं। प्रकृति और मानव के सहज संबन्ध को उजागर करते राजीव गर्ग के जलरंग चित्र दर्शकों को अभिभूत करते हैं।[89] (चित्र–121)

आप कला के साथ फोटोग्राफी में भी रूचि रखते है। आपको वर्ष 1987 ई. में राजस्थान सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय फोटोग्राफी अवार्ड' से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 1998 ई., 2000 ई., में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। आपको वर्ष 1999 ई. में ललित कला अकादमी; नई दिल्ली द्वारा कला मेला अवार्ड से भी सम्मानित किया गया है। वर्तमान में आप महाविद्यालय शिक्षा के उपाचार्य पद से सेवानिवृत हो, स्वतंत्र रूप से कलाकर्म व फोटोग्राफी कार्य कर रहे है।[90]

6.3.20 सुरभी बिरमीवाल (1955 ई.)

आपको वर्ष 1980 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार व इसी वर्ष प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर द्वारा 'पैग अवार्ड' से भी पुरस्कृत किया गया। आपने भारत के प्रमुख शहरों में कला प्रदर्शनियों में भागीदारी के अतिरिक्त विदेश (यू.एस.ए.) में आयोजित कला प्रदर्शनी में भाग लिया।[91] (चित्र–122)

6.3.21 डॉ. जगमोहन माथोड़िया (1959 ई.)

इंसान का सबसे वफादार मित्र माने जाने वाले 'श्वान' पर सबसे ज्यादा चित्र बनाने के लिए डॉ. माथोड़िया का नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स' में दर्ज है। डॉ. माथोड़िया ने अपनी प्रथम कृति 15 सितम्बर, 1994 ई. में बनाई थी। उसके बाद वे अन्य विषयों के साथ–साथ श्वानों का चित्रण भी नियमित करते रहे। उन्होंने अपना यह रिकॉर्ड 503 चित्रों में 3900 श्वान चित्रित कर बनाया है। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित माथोड़िया का मानना है कि वर्तमान समय में जब आदमी ही आदमी का दुश्मन हैं, श्वान ही उसका सच्चा मित्र हो सकता है। इसी बात से प्रेरित होकर उन्होंने श्वान के चित्र बनाये। आप ने ऐचिंग माध्यम में भी कलाकृतियों का सृजन किया है।[92] (चित्र–123)

आपको वर्ष 1986 ई. में जे.एल.एन. मेमोरियल फाउण्डेशन, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा वर्ष 1987 ई., 1995 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। वर्ष 1997 ई. में आईफैक्स द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा वर्ष 2009 ई. में बाँरा जिला प्रशासन द्वारा 'बाँरा गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया।[93]

6.3.22 डॉ. ममता चतुर्वेदी (1960 ई.)

डॉ. ममता चतुर्वेदी के चित्रों में रंगों और रेखाओं के बीच औचक उभरती आकृतियां है जो कुछ जानी–पहचानी सी लगती है। ऐसी, जिनमें आस–पास के परिवेश को ही मानों बुना गया हो। यह परिवेश भौतिकता की अंधी दौड़ का नहीं है। इसमें प्रकृति है, जीवन है और साथ ही साथ रचना भी है। डॉ. ममता के चित्रों की बड़ी विशेषता इनमें निहित वे स्मृतियाँ हैं जिनमें कैनवास पर गहरे रंग धीरे–धीरे धूसर होते बीते हुए वक्त को जैसे स्वर देते है। कुछ चित्रों में अध्यात्म हैं और अन्तर्मन आस्था भी। कुछ में उभरे रंगों में स्कल्पचरल एप्रोच भी अलग से लुभाती है। छाया–प्रकाश का संयोजन भी डॉ. ममता के इन चित्रों का अलग आकर्षण है। उनके कुछ चित्रों में पीले, हरे, लाल रंगों के मेल में दोपहर की धूप का बोध भी ऐसा है जिसे देखने का मन करता है। सभी चित्रों में आकृतियों का लयात्मक संतुलन ऐसा है जिसमें रंग अपनी कोमलता में देखने वालों को भीतर तक भरते है।[94] डॉ. ममता चतुर्वेदी के चित्रों का फलक बहुआयामी है। उनके चित्रों में पारम्परिक भारतीय कला की समृद्ध शैलियों को अनुभूत किया जा सकता हैं तो आधुनिक अमूर्तन का भी दर्शाव है। उनके चित्र ऐसे है जिनसे अपनापन जगता है। रंगों और रेंखाओं का ऐसा ताना–बाना उनके चित्र है जो अनाकृतिमूलक होते हुए भी अनाकृतिमूलक नहीं लगते और आकृतिमूलक होते हुए भी आकृतिमूलक नहीं लगते। यही उनके चित्र फलक की वह विशेषता है जिसे अलग से इंगित किया जाना जरूरी है। डॉ. ममता के चित्रों में सहजता है। लोक संस्कृति के करीब लगते ये चित्र आधुनिकता और परम्परा का मानों मेल भी कराते है। (चित्र–124)

आप चित्रकर्म के साथ–साथ कला लेखन में भी सक्रिय है। आपको समय–समय पर विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता रहा है। जिनमें वर्ष 1975 ई. में रोटरी क्लब, जयपुर द्वारा रोटरी क्लब अवार्ड; वर्ष 1976 ई. में कथा परिवेश संस्था द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1978 ई. में यूथ आर्टिस्ट ऐसोसिएशन द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1985 ई., 1994 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार; वर्ष 1998 ई. में राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वारा 'बेस्ट राईटर अवार्ड' प्रमुख है।[95] आप द्वारा लिखित पुस्तकों में 'समकालीन भारतीय कला', 'रामगोपाल विजयवर्गीय : एक शताब्दी की कला यात्रा', 'सौन्दर्यशास्त्र', 'पाश्चात्य कला' आदि प्रमुख है। वर्तमान में आप राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर में व्याख्याता, चित्रकला के पद पर कार्यरत है।[96]

6.4. कलावृत्त, जयपुर के प्रमुख कलाकार

6.4.1 पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय (1905 ई.–2003 ई.)

रामगोपाल विजयवर्गीय ने अपने कला सृजन को किसी एक विषय व सीमित दायरे में बाँध कर नहीं रखा, बल्कि इन्होंने सभी परम्परागत, पुराणों, इतिहास, धर्म, साहित्य, कथाओं के साथ सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन के अनेक विषय एवं प्रकृति के सैकड़ों चित्र उन्होंने अपनी काल्पनिक अभिव्यक्ति से बनाये।[97] बालेर के ठाकुर साहब साहित्य–कला प्रेमी थे। विजयवर्गीय को इनसे प्रेरणा व उत्साह प्राप्त हुआ। प्रारम्भ में बंगाल शैली व अजंता की चित्र शैली से प्रभावित हुए। इसके बाद इनकी कला शैली पर राजस्थानी लघु चित्रण शैली व मालवा चित्रण शैली का प्रभाव रहा। राजस्थानी जनजीवन पर तो इन्होंने सैकड़ों चित्र व रेखाचित्र बनाये हैं। विजयवर्गीय ने अपने चित्रण में संस्कृत और हिन्दी काव्यों के मार्मिक स्थलों को आधार बनाकर भी चित्रण किया है, जो उनके कृतित्व की पहचान भी है। महाकवि कालीदास के मेघदूत की कल्पना भी विजयवर्गीय ने साकार की। 'मेघदूत' संबंधी उनके चित्रों में रेखाओं की लयात्मकता, भाव–प्रवणता तथा रंगों की भव्यता और गरिमा देखते ही बनती है। (चित्र–125) नारी के शरीर सौष्ठव का मांसल और ऐन्द्रिक चित्रण करने में विजयवर्गीय सिद्धहस्त हैं। जयदेव कृत 'गीत–गोविन्द' भी राजस्थानी चित्रकला की भाँति उनका प्रिय विषय रहा है। राधा का सौन्दर्य उनके चित्रों में साकार हो उठा है। रेखाचित्र बनाने में विजयवर्गीय की विशेष रुचि रही है। विजयवर्गीय के चित्र रंगों की अपेक्षा रेखाओं पर अधिक केन्द्रित हैं। इससे पहले कि प्रेक्षक का ध्यान रंग संयोजन पर जाये, रेखायें पहले ही बोल उठती हैं। उमर खैय्याम की रुबाइयों पर आधारित उनका चित्र 'संसार से विरक्ति' इसका उदाहरण है। विजयवर्गीय ने अपने चित्रों में भावपूर्ण रंगों का प्रयोग किया है, जिसकी सादगी दर्शक के हृदय को छू जाती है। इनके प्रिय रंग हल्के गुलाबी, हरे, लाल, नीले और बैंगनी है। वॉश पद्धति की पारदर्शी रंगत उनकी विशेषता रही हैं, जिसमें ताजगी व लयात्मकता है। पौराणिक धार्मिक ग्रंथों के साथ विजयवर्गीय ने सामाजिक जीवन के फुटकर चित्र भी बनाये, इनमें 'पुष्कर मेले में', 'बस स्टेण्ड', 'मदारी के खेल', 'रिक्शा चालक', 'गाँव का कुँआ', 'सुबह का संगीत', 'श्रमिक', 'पौड़ियों में स्नान', 'सर्दी के दिन', 'बाजार की ओर', 'पेड़ के नीचे', 'दृश्यचित्रों', 'तेरहताली नृत्य', 'नागपूजा', 'मेहन्दी आलेखन', 'पनघट की ओर', 'ताँगावाला' आदि उल्लेखनीय है। विजयवर्गीय आधुनिक कला के विषय में अपना स्पष्ट व उदार मत रखते हैं। इनके अनुसार

"हम भारतीय हैं और हमारे सृजन में भारतीयता की छाप होनी चाहिए। हम जो चित्र बनायें, उनकी आत्मा भारतीय होनी चाहिए।"[98]

आपको वर्ष 1982 ई. में फाइन आर्ट सोसायटी, कोलकाता द्वारा पुरस्कार एवं पदक; फाइन आर्ट सोसायटी, दिल्ली की प्रदर्शनी में महाराजा पटियाला द्वारा सर्वोत्कृष्ट कृति हेतु पदक; इन्दौर आर्ट स्कूल से विशेष योग्यता प्रमाण–पत्र; अवनीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा योग्यता प्रमाण पत्र; 1958 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कृत; 1960 ई. में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत; 1970 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'कलाविद्' सम्मान; 1984 ई. में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' सम्मान; 1988 ई. में केन्द्रीय ललित कला अकादमी द्वारा 'रत्न सदस्यता'; 1987–89 ई. में मानव संसाधन विभाग, भारत सरकार द्वारा फैलोशिप; 1990 ई. में आईफैक्स दिल्ली द्वारा 'कला रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया। आप केन्द्रीय ललित कला अकादमी में राज्य द्वारा मनोनीत सदस्य व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के अध्यक्ष भी रहे थे।

6.4.2 कलाविद् सुरेश चन्द्र राजोरिया (1938 ई.)

चित्रकार सुरेश चन्द्र राजोरिया ने प्रकृति के यथार्थ को मानवीय भावों के परिप्रेक्ष्य में, मोहक रंगों के मेल से उद्घाटित किया है। दृश्यों के चित्रण में राजोरिया ने प्रकृति के विभिन्न रुपों के सभी पक्षों का गहराई से अध्ययन एवं निरीक्षण किया तथा उनके आन्तरिक सौंदर्यबोध से उत्प्रेरित होकर उन्हें पुनः रचा। उन्होंने प्रकृति को कला के सौंदर्य से विभूषित किया है। इस तरह नैसर्गिक और कलात्मकता के समन्वित रुप से जो दृश्य प्रकट हुए उन्हें कला में रुपान्तरित किया। प्रकृति के चितेरे राजोरिया का कौशल उनके जलरंगों में निर्मित चित्रों में उजागर हुआ है। उन्होंने प्रकृति के आँचल में समाए हुए उन सभी विषयों को चित्रित किया, जो भिन्न–भिन्न ऋतुओं में नूतन सौंदर्य लिए दृश्यमान होते हैं। उनके चित्रों की प्रकृति में नदी, नाले, पहाड़, मैदान, खण्डहर, किले, खेत, खलिहान, झोंपड़ियाँ आदि हैं तो कभी–कभी मानवाकृतियाँ भी। उनके प्रकृति चित्र सभी माध्यमों में चित्रित हुए। उन्होंने जलरंग, काली स्याही और पेन, टेम्परा, पेस्टल आदि का प्रयोग किया। चित्रकला की कोई विधा और माध्यम उनसे अछूता नहीं रहा। यद्यपि जलरंग और काली स्याही उनके सर्वाधिक प्रिय माध्यम है जिनमें उन्होंने अधिकांश चित्रण कार्य किया। प्रकृति के आनन्दमय रुपों को दृश्यमान कर उन्होंने प्रकृति में अपनी असीम आस्था प्रकट की जो उनके इस कथन से स्पष्ट है कि "प्रकृति सत्य है, वह किसी को धोखा नहीं देती, उसमें कहीं भी बनावटीपन नहीं है।"[99] (चित्र–126)

आपको वर्ष 1973 ई., 1974 ई., 1975 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1976 ई., 1977 ई. शिक्षक दिवस समारोह में पुरस्कार व वर्ष 1998–99 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'फैलोशिप' प्रदान की गई।

6.4.3 डॉ. महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' (1943 – 2012 ई.)

'कलावृत्त' संगठन के संस्थापक रहे डॉ. महेन्द्र कुमार शर्मा 'सुमहेन्द्र' को लघुचित्रणविद् के रूप में भी जाना जाता है। इनके चित्र भारतीय लघु चित्रण से प्रभावित रहे। इन्होंने किशनगढ़ शैली की नारी आकृतियों को लेकर चित्र में थोड़ा व्यंग्य का पुट देकर जो संयोजन बनाये वे काफी प्रशंसित हुए हैं। आपने अनेक माध्यमों में काम किया है एवं कई शिल्पों की रचना की हैं। परन्तु लगभग 1970–75 ई. की अवधि में इनके पारम्परिक चित्रों में अतियर्थावादी प्रभाव की विशिष्टता रही है। अंकन शैली अति–आधुनिक और समसामयिक जीवन संदर्भों एवं मानसिकता तथा सोच के साथ इनकी पारम्परिक शैली ने परम्परागत और ऐतिहासिक पात्रों को नये संदर्भों में प्रयुक्त करने का साहसिक यत्न किया है। जो अब तक पारम्परिक राजस्थानी चित्रकारों की कृतियों में नहींवत् प्रयोग हुआ है।[100] सुमहेन्द्र की कला के बारे कला–समीक्षक रामकुमार लिखते है कि–Sumahendra - a young artist from Jaipur carries the message of Rajasthani art tradition. He works as a man among a few to create a link between the rich tradition of miniature paintings of Rajasthan and the modern painting-world, with his devotion to 'kishangarh school of miniatrue paintings'. In the beginning of his career as an artist, he tried his hand in experiments in modern art, but he was arrested by the traditional 'Kalam' so much that the traditional styles became his sole-love. [101]

डॉ. सुमहेन्द्र की सादगी को देखकर उनकी विद्वत्ता और कला की योग्यता को आसानी से समझ पाना मुश्किल था। वे जितने सज्जन पुरूष थे उनकी कला में उतनी ही गहराई थी। भले ही वे प्राचीन और पारम्परिक कलाओं के पुरोधा थे लेकिन कला के आधुनिक स्वरूप को वे अपनी पत्रिका कलावृत में उजागर किया करते थे। उनका मानना था कि ''आप किसी धारा को रोककर उसके विकास को अवरूद्ध नहीं कर सकते। दोनों धाराएं साथ–साथ चलती रही हैं और साथ–साथ चलती रहेंगी। दोनों का सम्बन्ध इतना गहरा है कि पुरातन के बिना आधुनिकता मर जाएगी और आधुनिकता के बिना लोग पुराने को नहीं सराहेंगे।''[102] (चित्र–127) आपको वर्ष 1968 ई, 1984 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार; 1972 ई. में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा

पुरस्कार; 2003 ई. में सिटी पैलेस, जयपुर द्वारा महाराजा सवाई जगत सिंह अवार्ड; 2004 ई. में उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया।[103]

6.4.4 वीरेन्द्र पाटनी (1941 ई.)

वीरेन्द्र पाटनी कलावृत्त संगठन के प्रमुख स्तम्भ है। वह कलावृत्त संगठन की पत्रिका 'कलावृत्त' के बरसों तक प्रबन्ध सम्पादक रहे। पाटनी ग्राफिक विधा के सिद्धहस्त कलाकार है। इनके ग्राफिक जो सीधे ट्रेडल मशीन पर बनाये जाते हैं, देखने पर चमत्कृत कर देते है। स्पेस को संभालने का कार्य पाटनी अपने ग्राफिक्स में बखूबी करते हैं। वीरेन्द्र पाटनी के ग्राफिक्स चित्रों के बारे में डॉ. प्रकाश श्रीवास्तव का कथन है कि–''एक नजर ऐसी भी हो सकती है जो श्री पाटनी से उनकी कृत्ति का अर्थ पूछे, परन्तु मैं केवल यहीं कहूंगा कि किसी कलाकार से यदि वह वास्तव में कलाकार है और श्री पाटनी मेरी नजर में है–उसकी कृति का 'अर्थ' या उद्देश्य पूछना अपनी कम नजरी का सबूत देना है।''[104] (चित्र–128) कलाविद् आर.बी. गौतम ने वीरेन्द्र पाटनी के एक ग्राफिक से प्रभावित हो लिखा था कि–''यह कहना असत्य नहीं कि कलाकार के अवचेतन मन से निकली अभिव्यक्ति युग की सत्यता को रेखा, रंग और विविध रूपाकारों के माध्यम से कितने उद्वेग के साथ प्रकट करती है–यह सत्य मेरे कलादर्शक ने पाटनी की चित्रकृति में देखा हैं।''[105]

6.4.5 वीरेन्द्र कुमार शर्मा (1950 ई.)

वीरेन्द्र कुमार शर्मा मूलतः मिनियेचर शैली के लिये प्रसिद्ध है एवं मूर्तिकला के क्षेत्र में भी खासा नाम अर्जित किया हैं। वीरेन्द्र शर्मा के लघु चित्रों आधारित रचना जगत को नई दृष्टि से देखते हैं जिनके संयोजन पक्ष की नवीनता दर्शनीय है। इनकी कृतियों में सामयिक रूप कम, पारम्परिक अनुसरण अधिक दिखाई देता हैं।[106] (चित्र–129)

6.5 आज, उदयपुर के प्रमुख कलाकार

6.5.1 शैल चोयल (1945 ई.)

वर्तमान में 'आज कला संगठन', उदयपुर के अध्यक्ष शैल चोयल चित्रकार व छापा चित्रकार दोनों है। चोयल राजस्थान की पुरातन जमीन को 21वीं शताब्दी की आंख से देखते तौलते है, साथ ही भविष्य की भी कल्पना उनकी आंखों में होती है। वे अपने आपको नए ढ़ंग से संप्रेषित करते है। नये दृश्यों को प्रतिबिम्बित करते है पर इसके साथ ही वे पुरातनता से एकदम से कटते नहीं है उसे चोयल अपनी नवीन कल्पना की उड़ान के

सामने किसी पुराने रूकावटी पहाड़ को बर्दास्त नहीं कर सकते। इसी पृष्ठभूमि में शैल न केवल राजस्थान के नए–पुराने स्वरूप को अपनी कला में बनाये रखते है अपितु समसामयिक भारत के अंश भी उनके कैनवास पर देखे जा सकते है। शैल चोयल की कला की खासियत है कि वे पुराने सच को स्वीकार करने के बाद उस सच को आधुनिक जिन्दगी के साथ मिलकर विस्तार दे देते है। इस तरह शैल प्रगतिशील है। उनके सृजन का यही पक्ष उनके सम्पूर्ण सृजन पर गंभीर दृष्टि ड़ालने के लिए बाध्य करता है। शैल चोयल के चित्रकर्म को देखकर नेशनल गैलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक, प्रसिद्ध मूर्तिकार एवं कला चिंतक स्व. प्रदोश दास गुप्त ने लिखा था– "कोई कलाकार भारतीय परम्परा की आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए यदि आधुनिक होने का सफल दृष्टिकोण रखता है, तो वह है शैल चोयल।"[107] (चित्र–130) शैल चोयल के चित्रों को देखकर कोई भी व्यक्ति राजस्थान के अतीत तथा वर्तमान का एक साथ जायजा ले सकता है। शायद ही कोई भारतीय समसामयिक कला समीक्षक होगा, जिसने शैल के परम्परा तथा आधुनिकता के कलात्मक को प्रमाणित न किया हो।

आपको वर्ष 1969 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार; 1970 ई. में कालिदास अकादमी, उज्जैन द्वारा अखिल भारतीय प्रदर्शनी का पुरस्कार; 1971 ई. में बॉम्बे आर्ट सोसायटी अवार्ड व आईफैक्स द्वारा पुरस्कार; 1972 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर; ललित कला अकादमी, कोलकाता व आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1973 ई. में बाम्बे आर्ट सोसायटी अवार्ड; 1974 ई. में ब्रिटिश कौंसिल द्वारा फैलोशिप; 1976 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार; 1977 ई. में बॉम्बे आर्ट सोसायटी अवार्ड; 1978 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार व बॉम्बे आर्ट सोसायटी द्वारा अवार्ड; 1979 ई. में आईफैक्स द्वारा अवार्ड; 1980 ई. में महाकौशल कला परिषद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी अवार्ड; 1981 ई. में ललित कला अकादमी, अमृतसर द्वारा पुरस्कार; 1982 ई. में ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार; 1990 ई. में उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी द्वारा अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में पुरस्कार व 1991 ई. में बर्सिलोना, स्पेन द्वारा एडीओजीआई मिनी प्रिन्ट इन्टरनेशनल अवार्ड प्रदान किया गया।[108]

6.5.2 अम्बालाल दमामी (1945 ई.)

अम्बालाल दमामी मूलरूप से कला समीक्षक व लेखक है। उनकी चित्र व मूर्तिकला में भी रूचि रही है। उनके मूर्तिशिल्पों में लोक कलाकारों जैसी तकनीकी सादगी और

सरलता बिना किसी बौद्धिक प्राणायाम के परिलक्षित होती है। उनके टेराकोटा संगीत को समर्पित है। उनके मूर्तिशिल्पों की जुगलबंदी बाल सुलभ सौदर्य का वातावरण बनाने में सफल हुई हैं। (चित्र–131) आपको वर्ष 1983 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[109]

6.5.3 प्रभा शाह (1947 ई.)

प्रभा शाह में जन्म से ही सुनने और बोलने की शक्ति नहीं थी। प्रभा के गुरू श्री सेन ने उन्हें रचनात्मक आकृतियां बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे प्रभा को अपनी विकलांगता से ऊपर उठने का साहस मिला। अब उनके जीवन में केवल कला थी। प्रभा की कलाकृतियों में रोशनी है। एक आंतरिक चमक। उनकी कला में सौन्दर्य है, रूपाकार है जिसे देखकर एक अजीब सी शांति महसूस होती है। उनकी कला के हल्के–हल्के रंग कोमल फूल जैसे कि खिलने की क्रिया है, जो शायद उनकी अपनी आंतरिक दुनिया की है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि उनका व्यक्तित्व, उनकी समझ, उनका पूरा हृदय ब्रुश के माध्यम से कैनवास पर उतर आया हो। उनके काम की सराहना करते हुए उनके शिक्षक बिल व्हीटन ने लिखा था कि–''अगर आप मग्न होकर प्रभा के चित्रों को देखें तो आपको प्रभा के संसार का कुछ–कुछ अनुभव होने लगता है।''[110] (चित्र–132) प्रभा का जीवन इस बात का प्रतीक है कि एक दृढ़ निश्चय और संकल्प से कठिन से कठिन काम भी पूरे हो सकते है। उनका जीवन उनके परिवार के आश्रय ओर संवेदनशील शिक्षकों और मनुष्यों का भी प्रतीक है।

आपने राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न समूह प्रदर्शनियों में भाग लेने के साथ–साथ विदेश में अयोजित अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की समूह प्रदर्शनियों में भी भागीदारी निभाई जिनमें वर्ष 1981 ई. में इन्टरनेशनल एग्जीबिशन ऑफ डिसेबल आर्टिस्ट, लन्दन; 2003 ई. में इण्डियन कन्टेम्परॅरि आर्ट एग्जीबिशन, सिंगापुर; 2008 ई. में 'स्ट्रोक एण्ड शेड्स एग्जीबिशन' अल जुबैर म्यूजियम, ओमान; 2011 ई. में नेशनल म्यूजियम, रियाद, सऊदी अरब आदि प्रमुख है। विदेश में आयोजित समूह कला प्रदर्शनियों के साथ–साथ आपने विदेश में अपनी कलाकृतियों की एकल प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की। विदेश में आयोजित एकल प्रदर्शनियों में– वर्ष 1981 ई. में ऑनटेरियो इन्स्टीट्यूट फॉर स्ट्डीज इन एजुकेशन, टोरंटो, कनाड़ा; 1989 ई. में वेव, वारिडियन गैलेरी, यू.एस.ए.; 1994 ई. में एशिया एक्सीलेन्सी, सिंगापुर; 1997 ई. में द नेहरू सेंटर, लन्दन आदि प्रमुख है।

6.5.4 सुरजीत कौर चोयल (1948 ई.)

सुरजीत के कैनवास में कभी औरत के चेहरे व्यक्तित्व की घुटी चीख होती है तो कभी कलाकार की अर्न्तमुखी दुनिया। उनके जीवन्त आघातों में उभरे लकड़ी की छिपटी, अनपढ़ टैक्श्चर, दीवार का चटका पलस्तर या रस्सी में पड़ी गांठे उनके बीच उभरे दो हाथ जीवन की उस सच्चाई को सामने रखते है। जहाँ ये प्रतीक शब्दों से कहीं आगे जाकर हृदय को अवसन्न कर देते है। उनके चित्र अवसाद और त्रासदी युक्त मानव जीवन का सूक्तिपूर्ण परिचय हैं। सुरजीत का व्यक्तित्व एक ऐसी संवेदनशील नारी का हैं जिसे अभिव्यक्ति का गुह्य मंत्र मिल चुका है। उनके सामाजिक व्यक्तित्व का परिचय उनके कैनवासों से उभरे वह सटीक विचार है जो किसी भी समाज को बनाये रखने में समर्थ है तथा उसे निरन्तर आत्म मंथन की ओर प्रेरित करते हैं।[111] सुरजीत यथार्थ पक्ष की हामी है। यथार्थ के साथ कहीं कटु सत्य जोड़ देना कलाकार की सामाजिक विसंगति एवं विपरीत परिवेश के प्रति नाराजगी का परिचायक है। तेल रंगों में अपने आसपास घटती विसंगति को कलाकार ने अपनी भाषा में बेबाक रूप में कहा है।[112] सुरजीत के बिम्ब यथार्थ चराचर से उठाए गये है और उनका तकनीक 'फोटो रियलिज्म' का है।[113] उनके चित्रों में कोई न कोई संदेश, कोई विचार या सामाजिक टिप्पणी अवश्य रहती है। सुरजीत की कला का तकनीकी पक्ष उनकी सतत कला साधना का परिचय है। सुरजीत के चित्रों में एक प्रकार की चुप्पी, उदासी, घुटन, काल चक्र की ऐतिहासिक परिस्थितियों का चित्रण पूरे कौशल के साथ कैनवास पर उभरता है। (चित्र–133)

आपको वर्ष 1970 ई., 1985 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कार; 1986 ई. में अकादमी ऑफ फाइन आर्ट अमृतसर द्वारा पुरस्कार; 1990 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया।[114]

6.5.5 नील कमल (1949 ई.)

नीलकमल की कल्पना अपने चारों ओर के सरल जीवन से ली गई है। वह प्रकृति और उसके सौन्दर्य शास्त्र की रहस्यमय प्रभाव को पकड़ने का प्रयास नीले, हरे और पीले रंगों के माध्यम से करती है।[115] (चित्र–134)

6.5.6 हर्ष छाजेड़ (1949 ई.)

हर्ष छाजेड़ ने राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, दिल्ली एवं ललित कला अकादमी, जयपुर; टखमण–28 समूह प्रदर्शनी 1970 ई., 1973 ई., 'आज' समूह, उदयपुर, 1989 ई. में भाग लेते हुए मास्टर–क्रॉफ्टमैन राष्ट्रीय पुरस्कार–1982 ई., राजस्थान हेण्डीक्राफ्ट्स पुरस्कार 1987 ई, राजस्थान ललित कला अकादमी राज्य कला पुरस्कार–1974 ई., तूलिका ताम्र पदक सम्मान–1980 ई., महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर से महाराणा सज्जन सिंह पुरस्कार –1990 ई. का सम्मान प्राप्त किया।[116] (चित्र–135)

6.5.7 किरण मुर्डि़या (1951 ई.)

उदयपुर में जन्मी किरण मुर्डि़या एक ऐसी कलाकार है जिन्होंने न केवल प्रकृति के विविध रूपों में विद्यमान आन्तरिक सौन्दर्य का चित्रण किया है। अपितु अमूर्तन रूप से प्रकृति के विराट एवं स्थूल रूप को भी चित्रित किया है। किरण को उदयपुर की झील, पर्वत, झरने, हवेलियां, झरोखें, बावड़ी और वहां की हरीतिमा ने बहुत मोहित किया है। यही कारण है कि उनके चित्रों में इनका किसी न किसी रूप में निरूपण अवश्य हुआ है। उन्होंने इन चीजों का यथास्थिति आकृति मूलक चित्रण नहीं किया अपितु उनके स्थूल रूप के स्थान पर उनमें निहित आंतरिक सौन्दर्य को उद्घाटित किया और उदयपुर के वास्तुखण्ड, पर्वत, दरवाजे, खिड़कियां, पेड़, झरने, पक्षी आदि सभी नये सन्दर्भ के साथ उभरकर सामने आये। इन चीजों के प्रोस्पेक्टिव चित्रण में उन्होंने हरे, नीले तथा लाल रंग का प्रयोग अधिक किया है।[117] (चित्र–136)

आपको वर्ष 1971 ई., 1975 ई. में तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1974 ई., 1980 ई., 1986 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य पुरस्कार व 1989 ई. में राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किया गया।[118]

6.5.8 बसन्त कश्यप (1952 ई.)

बसन्त कश्यप सबसे अलग निराले व्यक्तित्व है। उन्होंने चित्र और मूर्ति का अद्भूत सामंजस्य कर कला को नई दिशा दी। उनकी रचनाएं देखे हुए चरित्र और व्यक्तित्वों से भरी होती है। जिनकी लोक भावना से प्रस्तुति यथार्थ के भी उतने ही निकट है। बसन्त ने काठ की गुड़िया बनाने की परम्परा को कोलाज में सुन्दर रूपान्तरित कर ख्याति अर्जित की है। बसन्त कश्यप ने आरम्भ में राजस्थान के पारम्परिक वास्तुशिल्प और राजस्थानी

लघुचित्रों से प्रभावित होकर रंग, अन्तराल, परिदृश्य आदि को लेकर प्रस्तावनाएं की थी। देवगढ़ के राजमहल के विभिन्न रूपाकारों को वहां की प्रकृति के साथ समन्वय कर कैनवास पर भिन्न–भिन्न प्रयोग किये। अधिकांश चित्रों को मोनोक्रोम रंगतों में ही रखा। वर्ष 1976 ई. से 1983 ई. तक देवगढ़ प्रवास के दौरान वहां के राजमहल में बने भित्ति चित्रों (फ्रेंस्कों) ने प्रभावित किया। बसन्त ने इनका गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन किया एवं उन्हीं मोटिव्स को लेकर चित्र तल पर फन्तासी मूलक निर्माण किया। वर्ष 1983 ई. में बसन्त कश्यप की कला में घटनास्वरूप चमत्कारिक परिवर्तन आया। इन्होंने चित्र शिल्प के मिश्रितस्वरूप में अपनी अभिव्यक्ति देना प्रारम्भ किया। गहरे काले रंग के साथ लाल व स्वर्णिम रंगों से रोमांचकारी अभिनव प्रयोग दर्शकों के सम्मुख रखा। इसी माध्यम से परम्परा, संस्कृति की समृद्ध विरासत से यथोचित उपादानों को चुनने हेतु उत्प्रेरित किया। इन्होंने राजस्थानी कठपुतलियाँ, पहिये, लोहे की पत्तियाँ, लकडी के टुकड़े, चमड़ा व विभिन्न धातु की शीटों को जोड़कर फन्तासी मूलक मेटेलिक प्रभाव उत्पन्न किया।[119] (चित्र–137)

आपको वर्ष 1985 ई., 1992 ई., 1994 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा राज्य कला पुरस्कार व वर्ष 1986 ई. में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपको क्रियेटर अम्बाला, महाकौशल कला परिषद, इण्डियन अकेडमी ऑफ फाइन आर्ट, अमृतसर एवं तूलिका कलाकार परिषद द्वारा भी सम्मानित किया गया। आपने राज्य, राष्ट्रीय व विदेश में भी अपनी कला का प्रदर्शन एकल व समूह में किया। आपने अन्तर्राष्ट्रीय त्रैवार्षिकी पंचम हवाना बेनाले मे भी सक्रिय भागीदारी निभाई।

6.5.9 अब्बास बाटलीवाला (1959 ई.)

अब्बास बाटलीवाला को राज्य में पहला त्रिनाले पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। अपने आस–पास के जीवन में जहां कहीं संस्कृति के धागे दिखाई दिये उन्हें अब्बास ने खूबसूरती से देखा और चित्रित किया। अब्बास फैंटेंसी का प्रयोग काफी चिंतन–मनन के बाद जीवन की अनसुलझी गुत्थियों को सुलझाने के लिए करते हैं। अब्बास अपने चित्रों का ताना–बाना एक दार्शनिक की तरह बुनते है। जिससे वे भी अपने सामाजिक परिवेश और मिट्‌टी से अंकुरित होता है। प्रतीकों को भाषा का रूप देकर वे अपनी बात लोक कलाकारों की शैली में कह जाते है। रंगों में अजन्ता के चित्रों जैसी मॉडलिंग उनके चित्रों को रहस्यमयता प्रदान करती है। भारतीय सोच, भारतीय रंग और भारतीय पारम्परिक प्रतीकों को आज के युग से जोड़कर वे अपने चित्र दर्शनीय बना देते हैं।[120] (चित्र–138)

आपको वर्ष 1984 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर का राज्य पुरस्कार व तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर द्वारा स्वर्ण पदक; वर्ष 1985 ई. में महाकौशल कला परिषद द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। आपको वर्ष 1991 ई. में सप्तम् अन्तर्राष्ट्रीय त्रिनाले भारत में भी पुरस्कृत किया गया। आपकी कृतियाँ राज्य, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कला प्रदर्शनियों में प्रदर्शित होती रही है।

6.5.10 त्रिलोक श्रीमाली (1961 ई.)

त्रिलोक श्रीमाली ने 'आज' समूह के सक्रिय सदस्यता के साथ राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय कला प्रदर्शनियों एवं एकल प्रदर्शनियों में चित्र प्रदर्शित कर अपना विशेष स्थान बनाया। राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 1988 ई. में आपको राज्य कला पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।[121] (चित्र–139)

6.5.11 भानु भारती

भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के सांस्कृतिक विभाग ने नाट्य निर्देशक भानु भारती को राज्य के उदयपुर में आदिवासियों का रंग मंडल बनाने के लिए आंशिक सहयोग प्रारम्भ किया था। 'आज' नाम से विख्यात इस रंग मंडल में आदिवासी रंगकर्मियों के साथ शहरी रंगकर्मी भी जुड़े है। इसी रंग मंडल ने फरवरी, 1991 ई. में उदयपुर के राजस्थान महिला विद्यालय के खेल मैदान में भील आख्यान पर आधारित नाटक 'अमरबीज' का मंचन किया था।[122] उदयपुर में ही 'पशु–गायत्री' नामक नाटक का निर्देशन भी भानु भारती द्वारा किया गया। (चित्र–140) सत्तर से अधिक नाट्य प्रस्तुतियों से भानु भारती ने विश्व परिदृश्य में भारतीय रंगमंच और अपने निर्देशक हुनर को स्थापित किया है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के रंग मंडल के लिए की गई कुछ प्रमुख प्रस्तुतियों में चन्द्रमा सिंह उर्फ चमकू, रस गन्धर्व, अजहर का ख्वाब तथा यमगाथा अक्स शामिल है। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष के रूप में प्रदेश के रंगकर्म को शास्त्रीय पहचान दिलाने का श्रेय भी उन्हें हासिल है। केन्द्रीय संगीत अकादमी ने उन्हें पुरस्कार से सम्मानित किया है तो राजस्थान साहित्य अकादमी ने उनके कवि कर्म, नाट्य और नाट्य लेखन के लिए सम्मान से नवाजा है। रंगकर्म में प्रयोगों के लिए चर्चित भानु, भारती की 'ताम्बे के कीडे', 'कथा कही एक जले पेड़ ने', 'नचनी', 'देहान्तर' तथा 'महामाई' को प्रयोगवादी प्रस्तुतियों के रूप में देखा जाता है। देश की स्वतंत्रता की स्वर्ण जयंती के अवसर पर दिल्ली के विजय चौक पर आयोजित उद्घाटन एवं समापन समारोह का रंग निर्देशन तथा आजादी की

साठवीं वर्षगांठ पर आयोजित 'भारत उत्सव' का स्वरूप इन्हीं के निर्देशन का परिणाम था।[123] राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ छात्र रहे और निर्देशन में स्वर्ण पदक प्राप्त भानु भारती आज विभिन्नताओं वाले सत्तर से ज्यादा नाटकों की प्रस्तुति के साथ देश के श्रेष्ठतम् नाट्य निर्देशकों में से एक है। राजस्थान विश्वविद्यालय में नाट्य विभाग को प्रारम्भ करने वाले भानु भारती ने जापान के टोकियों विश्वविद्यालय में जापानी लोक नाट्य परम्परा पर विशेष अध्ययन किया है। अपनी प्रस्तुतियों से भानु भारती थियेटर की विभिन्न फार्म और शैलियों को सार्वभौमिक बनाने के प्रयास में लगे हुए है। आपको वर्ष 1997 ई. में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा भी सम्मानित किया गया है।[124]

6.6 मयूर–6, वनस्थली के प्रमुख कलाकार

6.6.1 कलाविद् प्रो. देवकीनन्दन शर्मा (1917ई.–2005 ई.)

प्रो. देवकीनन्दन शर्मा पक्षी चित्रण में विश्व स्तर पर एक विशेषज्ञ माने जाते है। आपने विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षियों के दैनिक क्रियाकलापों को चित्रित करने की एक सिद्धहस्तता हासिल की है। कौवे, मयूर एवं उन्हीं से सम्बद्ध कृतियों का सधा हुआ चित्रण आपकी निजी कला शैली की पहचान बनी है। प्रो. शर्मा ने अपने चित्रों को अनेक माध्यमों से अंकित किया है। उन्होंने प्रारम्भ में जहाँ राजस्थानी लघु चित्रण शैली को अपनाया तो कालान्तर में वाश और टेम्परा पद्धति में भी अपने को पारंगत बनाया। इसी माध्यम से उन्होंने हल्के रंगों के जरिये सौन्दर्य की रचना की। इनकी फ्रेस्को पद्धति की चित्रकृतियाँ राष्ट्रीय पटल पर अपना स्थान रखती है। उनके फ्रेस्कों में राजस्थानी रंगों और लोकजीवन का पुट दिखाई देता है। पक्षियों का कलरव भी इसके साथ सुनाई देता है ऐसा अनुभव किया जा सकता है। जितना स्नेह उन्हें मोर, कबूतर, तोते, मैना, गिरगिट से है, उतना ही काले कौवों से भी है। (चित्र–141) पक्षियों के पंखों में जहाँ उन्होंने प्रकृति के असीम सौन्दर्य का संरक्षण पाया है, वहीं कमल, पलाश, सूरजमुखी के पुष्प में भी गंध का अनुभव किया। यही सौन्दर्य गंध उनके चित्रण की एक प्रमुख विशेषता बनकर उनके विभिन्न फूलों के चित्रण में उभरी है जो प्रो. शर्मा की कला का पर्याय बन गई है। अपनी चित्र अभिव्यक्ति में उन्होंने जलरंगों का ही सहारा लिया। यथार्थ से वे अपने आपको मुक्त नहीं कर पाये।[125]

आपको आपके कलाकर्म के लिए भरपूर मान–सम्मान प्राप्त हुआ। आपको वर्ष 1958 ई., 1959 ई., 1962 ई., 1967 ई., 1968 ई., 1969 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार; वर्ष 1978–80 ई. में प्रो. एमरेटस उपाधि; वर्ष 1980–81

ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'कलाविद्' सम्मान; वर्ष 1983–84 ई. में मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा वरिष्ठ अध्येतावृत्ति; वर्ष 1984 ई. में आईफैक्स द्वारा 'वेर्टन आर्टिस्ट' सम्मान से सम्मानित किया गया।

6.7 फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी, जयपुर के प्रमुख कलाकार

6.7.1 पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत (1922 ई.–2008 ई.)

कृपाल सिंह शेखावत की आरंभिक कला शिक्षा पिलानी के यथार्थवादी चित्रकार भूर सिंह शेखावत के सानिध्य में हुई। इसके पश्चात् 'लखनऊ स्कूल ऑफ ऑर्ट्स' में प्रवेश लिया लेकिन एक वर्ष पश्चात् ही शान्ति निकेतन आ गये। यहाँ रहकर कलागुरू विनोद बिहारी मुखर्जी, नन्दलाल बोस से कला तकनीकों का गहन ज्ञान प्राप्त किया। शेखावत ने जापान में तीन वर्ष तक रहकर जापानी कला के महारथी ताईकान, माईदा सेसों व हीसिदा सेसों से जापानी कला का गहन अध्ययन किया। कृपाल सिंह शेखावत ने ब्लू पॉटरी को जीवन दान दिया। जिसके परिणामस्वरूप 1967 ई. हस्तशिल्प (ब्लू पॉटरी) के लिए 'राष्ट्रपति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। वर्ष 1974 ई. में 'वर्ल्ड क्राफ्ट्स कौंसिल,' न्यूयार्क ने विश्व के दस प्रतिष्ठित शिल्पियों में शेखावत को भी एक माना। इसी वर्ष आपको भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया व 1979–80 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष 1997 ई. में आईफैक्स द्वारा 'कला विभूषण' से सम्मानित किया गया। कला भवन, शांति निकेतन के निदेशक आचार्य नन्दलाल बोस ने कृपाल सिंह के कलाकर्म से प्रभावित हो कर लिखा था– "Shri Kripal Singh Shekhawat hails from Rajputana and is an accomplished artist of Rabindra Nath Tagore Ashram at Shantiniketan. Among the group of artists that Shantiniketan has in recent years turned out, Kripal Singh holds an eminently distinct place. Lovers of art will surely appreciate his technique and the wealth and grace of his colours. He has shown a special aptitude for the characteristic technique of medieval Indian art. His brush and miniature work, wood engraving and graphic art claim special admiration of connoisseurs." [126]

आपकी कला शैली को 'कृपाल शैली' के नाम से जाना जाता है जो कि मुगल, राजपूत कला, बंगाल स्कूल और जापानी कला के समन्वय से विकसित हुई है। आपके प्रमुख चित्रण विषय राधाकृष्ण, प्रेम–प्रसंग, महाकवि जयदेव कृत 'गीत–गोविन्द' व राजस्थान के लोक और इतिहास पुरूषों की जीवन घटनाएं आदि है। आपके प्रमुख चित्रों में 'मैरिज

ऑफ पाबू जी राठौड़,' (चित्र–142) 'भरत कैरीइंग रामाज सैंडिल्स', 'वासक सज्जा नायिका' 'डेफोडिल्स,' 'प्रतीक्षारत कृष्ण,' 'पाबूजी राठौड़ ऑफ हार्स बैक,' 'मीरा का जन्म,' 'रतन राणा,' 'ठाकुर कुशल सिंह,' 'कालकी प्लाइंग विद पाबूजी राठौड़,' 'रामदेव जी,' 'गोगाजी चौहान', 'हडबूजी सांखला', 'महांजी मांगलिया', 'पंचवीर' आदि है।

कृपाल सिंह शेखावत ने महाराजा मानसिंह (द्वितीय) जयपुर संग्रहालय के सलाहकार, शिल्प कला मन्दिर, जयपुर के निदेशक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के अध्यक्ष सहित विभिन्न सरकारी–गैर सरकारी संस्थाओं के सम्मानित पदों को भी सुशोभित किया।

6.7.2 वेदपाल शर्मा 'बन्नू' (1945 ई.–2000 ई.)

पारम्परिक चित्रण के सिद्धहस्त कलाकार वेदपाल शर्मा 'बन्नू' की आरम्भिक शिक्षा उनके पिता महिपालजी के सानिध्य में हुई। आपको वर्ष 1986 ई. में अखिल भारतीय हस्तकला बोर्ड, नई दिल्ली का राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

जयपुर राजपरिवार के कुंवर नरेन्द्र सिंह जी ने बन्नू जी के बारे में कहा है कि–''कला के क्षेत्र में बन्नू जी जानी–मानी हस्ती थी। उन्होंने अपनी लगन व मेहनत से पारंपरिक कला को न केवल जयपुर, राजस्थान व सम्पूर्ण भारत अपितु विदेशों में भी स्थान दिलाया। उनका एक सपना था, पारंपरिक कला को जन–जन तक पहुंचाना और उन्होंने बहुत हद तक इसे पूर्ण भी किया। अब हमारा कर्त्तव्य है कि जो कार्य शेष रह गया है उसे पूरा किया जाये।''[127] (चित्र–143)

6.7.3 समदर सिंह खंगारोत 'सागर' (1951 ई.)

राजस्थान के ग्रामीण जन–जीवन और यहां की कला सम्पदा के सुन्दर संयोजन को लेकर जो चित्र समदर सिंह खंगारोत 'सागर' ने बनायें है, वह विदेशों में भी काफी पसंद किए गए हैं। उनके चित्रों में कल्पना की भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। 'सागर' ने कालिदास की विभिन्न रचनाओं पर अपनी मौलिक कलाकृतियों का सृजन किया हैं। 'सागर' नव–पारम्परिक कला के कुशल चितेरे है।[128] (चित्र–144) सागर को वर्ष 1975 ई., 1989 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1975 ई. में कलावृत्त, जयपुर द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1989 ई., 1991 ई. में कालिदास अकादमी, उज्जैन द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1995 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी,जयपुर द्वारा अखिल भारतीय पुरस्कार; वर्ष 1975 ई., 1980

ई., 1983 ई., 1987 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य पुरस्कार; वर्ष 2005 ई. में महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय न्यास, सिटी पैलेस, जयपुर द्वारा 'महाराजा जगत सिंह अवार्ड' व इसी वर्ष फैडरेशन ऑफ राजस्थान हैण्डीक्राफ्ट ऐसोशिएशन एक्सपोर्ट द्वारा 'फोरेक्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया। 'सागर' को वर्ष 1995–1997 ई. में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा फैलोशिप भी प्रदान की गई।[129] सागर की एकल व समूह कला प्रदर्शनियों का आयोजन राजस्थान व देश के विभिन्न राज्यों के साथ–साथ विदेशों में भी हुआ हैं। विदेशों में आयोजित प्रमुख कला प्रदर्शनियों में जापान व इंलैण्ड में आयोजित कला प्रदर्शनियां विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[130] सागर ने वर्ष 1996 ई. से वर्ष 2002 ई. तक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के सचिव पद पर रहते हुए राजस्थान के कला फलक को नई ऊँचाईयां प्रदान की है। अकादमी के सचिव पद पर रहते हुए किए गये प्रमुख कार्यों में अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, अखिल भारतीय सेमिनार, अखिल भारतीय कला शिविर, प्रथम बार राज्य के कलाकारों की विदेश (नेपाल) में कला प्रदर्शनी, प्रथम बार अन्तर्राष्ट्रीय मूर्तिकार शिविर व कोटा में कला दीर्घा का निर्माण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।[131]

6.7.4 पद्मश्री अर्जुन प्रजापति (1956 ई.)

अर्जुन प्रजापति एक आत्मदीक्षित मूर्तिकार है। प्रजापति को मूर्तिकला क्षेत्र में वर्ष 1983 ई. से 1985 ई., 1990 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा पुरस्कृत किया गया व वर्ष 1994 ई. में कालिदास अकादमी, उज्जैन के द्वारा सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। वहीं वर्ष 1998 ई. में महाराजा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा सज्जन सिंह सम्मान प्राप्त हुआ। मूर्तिकला के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने के कारण ही आपको भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रजापति की मूर्तिकला में नारी सौन्दर्य व राजस्थानी संस्कृति की झलक अनुपम हैं।[132] (चित्र–145)

6.8 आकार समूह, अजमेर के प्रमुख कलाकार

6.8.1 डॉ. अनुपम भटनागर (1955 ई.)

डॉ. अनुपम भटनागर के चित्रों में जीवन के विभिन्न रंग हैं। वे अपने आस–पास के परिवेश, घटनाओं के प्रति इतने सजग हैं कि कैनवास पर उसे हूबहू वैसे बरत देते है। उनके चित्रों में राजस्थान का लोक रंग रचा बसा है। इस लोक रंग में घूमर, कालबेलिया,

चिरमी, डांडिया जैसे लोकनृत्यों में प्रयुक्त वाद्यों के साथ वे मरुभोम का वातावरण भी सृजित करते है। (चित्र–146) चित्रों में किसी एक शैली से डॉ. अनुपम कभी बंधकर नहीं रहे है। सामयिक घटनाओं को स्वर देते उनके चित्र प्रयोगधर्मिता के भी संवाहक रहे है। चित्रों में रंगों का बर्ताव उन्होंने अत्यधिक सजग रहकर किया है हल्के रंगों में भी गहरी आभा का मेल किया है। ऐसे में रंग बहुतेरी बार चटक होते हुए भी खलते नहीं है।[133]

आपको वर्ष 2004 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया तथा वर्ष 2007 ई. में इण्डियन अकेडमी ऑफ फाईन आर्ट्स, अमृतसर के द्वारा आयोजित 73वीं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में राष्ट्रीय स्तर पर 'हाई कमाण्डेंट सर्टिफिकेट' प्रदान किया गया।

6.8.2 प्रहलाद शर्मा (1962 ई.)

प्रहलाद शर्मा प्रयोगवादी दृष्टिकोण रखते हैं। खुली आँखों से महानगरीय विसंगतियों पर गहन चिंतन करते है और ऐसे में उनके रंग कैनवास पर ढ़लते–ढ़लते सुन्दर शैली का रुप ले लेते है। प्रतीकात्मक चित्रात्मकता से परिपक्व उनके चित्र अब पूरे राजस्थान में अलग पहचान बना चुके है। पर्यावरण, प्रदूषण पर उनकी एक अलग सीरीज है।[134] प्रहलाद शर्मा के 'मशरुम' 'गुडनाइट' एवं 'मत्स्य कन्या' शीर्षक के चित्र विविध आकारों के सरलीकरण व रंगों के चटकीलेपन द्वारा दर्शकों को आकर्षित करते है।[135] (चित्र–147)

6.8.3 लक्ष्यपाल सिंह राठौड़ (1967ई.)

लक्ष्यपाल सिंह राठौड़ के चित्रों में आधुनिक और पारम्परिक भारतीय कला का बेहद सूक्ष्म समन्वय है। राजस्थान का निर्माण रज़वाड़ों के एकीकरण से हुआ था। रज़वाड़ों की कभी अपनी आन–बान–शान हुआ करती थी। रजवाड़ों की संस्कृति राजस्थान की अनमोल धरोहर है। लक्ष्यपाल सिंह भी रज़वाड़ों की उसी संस्कृति के अतीत के गलियारों में ले जाते है अपने चित्रों में जो लोक रचते हैं, वह बहुत कुछ चौंकाने वाला भी है। उनके नारी और पुरुष पात्र कैनवास पर अलग से पहचाने जा सकते हैं। यही नहीं अपने चित्रों में रंगों का बर्ताव भी उन्होंने इस खूबसूरती से किया है कि रंग चित्र के परिवेशगत समय के बारे में सहज ही अंदाज करा देते है। लक्ष्यपाल सिंह के चित्रों में नारी पात्रों की गर्दन कुछ अलग अंदाज में दिखाई देती है। बेहद लम्बी–सुराहीदार, बोरिया, नाक की बाली, मोतियों का हार, कमर में पहनी जाने वाली कंदोरी जैसे राजस्थानी आभूषण पहने नारी पात्र चाहे रानी के

रुप में हो या फिर आम ग्राम की औरत के रुप में–राजस्थान के जीवन की भी पहचान कहीं गहराई से कराती है। यही हाल पुरुष पात्रों का भी है। राजा–महाराजाओं की मूंछे लम्बी ऊपर की ओर उठी हुई। रज़वाड़ी शान झलकती–सी। ऐसे चित्रों में वह आम–आदमी भी है जो अकाल के अभाव से जूझते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ है। मूंछ यहाँ उसके जड़ों से जुड़े होने की मानों पहचान कराती है।[136] (चित्र–148)

आपको वर्ष 2002 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार व वर्ष 2004 ई. में आईफैक्स, नई दिल्ली द्वारा (राज्य व राष्ट्रीय स्तर) पुरस्कृत किया गया।[137]

6.9 अंकन, भीलवाड़ा के प्रमुख कलाकार

6.9.1 कलाविद् रमेश गर्ग (1936ई.)

चित्रकार रमेश गर्ग का कला संसार विविधरुपा है। उनकी चित्र रचना में लौकिक अलौकिक दृश्य व अदृश्य जगत के कई रुपों का सृजन हैं। जिनसे चित्रकार एक कथाकार की तरह अनेक मानवीय भावों और संवेदनाओं से साक्षात्कार कराता है। गर्ग के आरम्भिक चित्रों और चिन्तन में वानगों, पॉल गोग्वं, मातिस, पॉलक्ली और पिकासों का प्रभाव है। उनके चित्र 'एक स्त्री' (1958ई.), 'मिस जी' (1964ई.), 'हुक्म का बादशाह' और 'पान की बेगम' चित्रकृति तथा 'न कोई भूत है न कोई वर्तमान है, न भविष्य' अंग्रेजी साहित्य के कवि एवं लेखक टी.एस. इलियट की 'परम्परा एवं प्रतिभा' की व्याख्या पर आधारित चित्रकृतियाँ हैं। रमेश गर्ग ने अपने चित्रों के विषयों को किसी एक काल खण्ड़ में प्रासंगिक नहीं दर्शाया वरन् ऐसे विषयों को रचा है जिनकी अपील सर्वकालिक है। उनके चित्रों में वियोग, अभिलाषा, स्मृति, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, प्रेम, मैत्री, वात्सल्य आदि मनोदशाएँ चित्रित हुई है। उनकी चित्र प्रवृत्ति अमूर्तन और विरुपण की है। उनके चित्रों को किसी एक शैली में निरुपित नहीं किया जा सकता। कुछ चित्र मोटी गाढ़ी रेखाओं और टेक्सचर से बुने गए हैं तो कुछ आकृतियों से, जो अस्पष्ट और डिस्टोटेड़ है।(चित्र–149) गर्ग आत्म केन्द्रित कलाकार है। वे विषय सर्जन में कलातत्वों का प्रयोग एक योजनाबद्ध तरीके से करते हैं किन्तु वातावरण व आकारों के निरुपण में उनके गढ़े गढ़ाए प्रत्यय है जिनसे मौलिक रुपों को (Manifestation of Physical Form) प्रदर्शित किया। गर्ग ने मानवीय सम्बन्धों को लेकर भी चित्र बनाए हैं। इनमें 'स्त्री पुरुष का संघर्ष', 'युगल छवि', 'स्त्री को जैसा हम देखते हैं', 'युगल' आदि। प्रायः सभी चित्रों में मितव्ययता पूरी तरह से हैं, एक ही रंग की रंगतों से वातावरण निर्मित किया गया है। कभी–कभी विरोधाभास के लिए काले रंग और गहरे वर्ण

का प्रयोग भी किया है।[138] आपको वर्ष 1994–95 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा फैलोशिप प्रदान की गई।

6.10 अलंकृति कला समूह, अजमेर के प्रमुख कलाकार

6.10.1 कलाविद् राम जैसवाल (1937ई.)

राम जैसवाल ने अपनी अभिव्यक्ति में चित्रण–सौन्दर्य, बंगाल (वॉश पद्धति) शैली में, 'वियोगी शिव', 'आदि अनादि', 'युगल' (राधाकृष्ण) जैसे काव्यात्मक चित्र तो दिए ही, पारदर्शी जलरंगों में राजस्थान की अरावली श्रृंखला के अनेक रुप, उन पर सजती वर्षा, धूप, छांव, कोहरा यहाँ के कस्बों, नगरों की गलियाँ, भवन–दुर्ग, महल दृश्य चित्रों में रचे, जो यहाँ के कला जगत में एक संस्कारित जुड़ाव सिद्ध हुआ और अपनी एक मौलिक पहचान बनाई। 'आदि–अनादि', 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे', 'बसन्त आगमन' (चित्र–150) 'सुबह की प्रतीक्षा', 'अचानक', 'अजान' और स्थानीय भव्य दृश्य चित्रों ने उन्हें पहचान दिलाई। दृश्य चित्रों के अलावा जैसवाल ने प्रतीक चित्रों का भी सृजन किया। इनके ये प्रतीक चित्र दर्शक से आज के परिवेश से साक्षात्कार ही नहीं कराते वरन् आज के जीवन सूत्र के कई रंगों से उसके मन को बांधते है। उनके दृश्य–चित्रण या बंगाल शैली चित्रण की तरह उनमें माध्यम या आकारीकरण की बंदिश नहीं है। इनके ये प्रतीक चित्र किसी भी माध्यम शैली में सृजित हैं, पर अपने वर्तमान को परिभाषित करते हैं। यथा 'नीतिज्ञ', 'खड़ित संस्कृति', 'स्वतंत्रता के बाद', 'भय' इत्यादि कई ऐसी रचनाएं हैं, जो अपनी प्रस्तुति में दर्शक के अवचेतन में उतरती हैं और अपना दीर्घकालीन प्रभाव छोड़ती हैं। जैसवाल चित्रण को मात्र 'कला के लिए कला' या 'कौशल' नहीं मानते। चित्रण उनके लिए अभिव्यक्ति का संवेदनशील माध्यम है।[139]

कला के प्रति समर्पित जैसवाल को वर्ष 1955 ई., 1956 ई., 1958 ई. में ललित कला परिषद, लखनऊ द्वारा पुरस्कार; वर्ष 1968 ई., 1970 ई., 1971 ई., 1988 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा राज्य कला पुरस्कार; वर्ष 1996–97 ई. में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया।[140] आप एक अच्छे कलाकार के साथ–साथ एक सुधी कला लेखक, साहित्यकार भी है। आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है।

(कलाविद् राम जैसवाल कैनवास आर्टिस्ट्स ग्रुप, अजमेर के संस्थापक अध्यक्ष भी है।)

6.11 आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर के प्रमुख कलाकार

6.11.1 प्रो. चिन्मय शेष मेहता (1942 ई.)

प्रो. मेहता किसी एक शैली और माध्यम से कभी बंधे नहीं रहे। नये–नये रुपाकारों में, माध्यमों में कार्य करते रहे। शुरुआत में कैनवास पर चित्रण किया परन्तु बाद में कैनवास की चौकोर सतह को तोड़कर द्विआयामी रुपांकन से त्रिआयामी अभिकल्पन की ओर आकर्षित होते गये। देश–विदेश में अपने बातिक चित्रों की अनेक प्रदर्शनियों के आयोजन एवं कला जगत में अपनी एक सक्रिय भूमिका के साथ प्रो. मेहता बड़े आकार के म्यूरल्स की रचना करने लगे। टेराकोटा, सिरेमिक तथा मेटल में निर्मित इनके म्यूरल में देशज अमूर्तता, परम्परा एवं लोक तत्वों की अभिव्यंजना दिखाई देती है। (चित्र–151) एथनिक पर्यावरणीय अभिकल्पन की अद्‌भूत परिकल्पना के रुप में उन्होंने 'चोखी ढ़ाणी' की रचना की। लोक शैली में एक और ऐसी ही वास्तु परिकल्पना 'ढ़ोला री ढ़ाणी' के नाम से हैदराबाद में रची। जयपुर में दड़ा मार्केट स्थित रेमण्ड शोरुम में, एम.आई. रोड़ स्थित नटराज रेस्त्रां में टेराकोटा तथा गणपति प्लाज़ा के बाहर मेटल में बना म्यूरल प्रो. मेहता का बनाया हुआ है।[141]

(प्रो. चिन्मय शेष मेहता विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स, उदयपुर के संरक्षक भी है।)

6.12 आकृति कला संस्थान के प्रमुख कलाकार

6.12.1 गोवर्धन सिंह पंवार (1938 ई.)

गोवर्धन सिंह पंवार ने समकालीन राजनीति और नेताओं के चरित्र पर अपने मिट्‌टी में रचे गये गुब्बारे आकार के मूर्तिशिल्पों के माध्यम से सटीक व्यंग्य किये है। बहुत छोटे सिर और विशालकाय तोंद वाले कुर्सी को ले कर लड़ते नेताओं की मुद्राएँ समसामयिक राजनीतिक–सामाजिक विद्रूप पर कड़ी व्यंग्यात्मक प्रतिक्रियाएँ हैं। उनमें बहुत कुछ देखने और सोचने लायक हैं। वे काव्यात्मक भी हैं और पीड़ादायक भी।[142] (चित्र–152)

आपको हैण्डीक्राफ्ट के लिए 1957 ई. में राजस्थान, 1960 ई. में बिहार; 1970 ई. में गुजरात सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। वर्ष 1972 ई. में एम.एस. यूनिवर्सिटी, बड़ौदा द्वारा हंसा मेहता गोल्ड मेडल; 1982 ई., 1985 ई., 1988 ई., 1991 ई., 1993 ई., 1995 ई.

में ऑल इण्डिया आर्ट कॉन्टेस्ट अवार्ड इन स्कल्पचर; 2000 ई. में आईफैक्स अवार्ड प्रदान किया गया। वर्तमान में आप भीलवाड़ा में रहकर सृजन कार्य में व्यस्त है।

(गोवर्धन सिंह पंवार टखमण–28, उदयपुर के सदस्य भी है।)

इस तरह राजस्थान प्रदेश के समकालीन कला संगठनों के प्रतिनिधि कलाकारों के उल्लेख व उनके द्वारा समकालीन कला में निर्वहन की गई भूमिका यहाँ के कला जगत के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। कला क्षेत्र में उनके अध्ययन व लगन से जो सृजन कार्य हुए उसकी प्रेरणा आज भावी पीढ़ी को प्राप्त हो रही है, जो वास्तव में अनुकरणीय है।

सन्दर्भ

1. सुमहेन्द्र : 'काल्पनिक यथार्थ का मंजा हुआ चितेरा मोनी सान्याल', सुमहेन्द्र (सम्पादक) : कलावृत, जयपुर, जनवरी, 1980 ई., पृष्ठ–37
2. वही
3. डॉ. गगन बिहारी दाधीच : 'लौकिक परिवेश के सशक्त चितेरे', डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आभार–राजस्थान के वरिष्ठ कलाकारों का प्रलेखन, पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष 1998 ई., पृष्ठ–12
4. वही, पृष्ठ–19
5. आर.बी. गौतम : 'प्रयोगधर्मी चित्रकार–पी.एन.चोयल', पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान सुजस (मासिक), सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान, वर्ष : 21, अंक : 9, सितम्बर 2012 ई., पृष्ठ–40
6. शुची रानी गुर्टू : 'कला के प्रणेता–पी.एन. चोयल' : बंसत कश्यप (सम्पादक) : आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 9, अंक : 6, वर्ष 1986 ई., पृष्ठ 34–35
7. डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, पृष्ठ–100
8. वही, पृष्ठ–101
9. सुरेन्द्र मंजुल : आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, नवम्बर–दिसम्बर, 1992 ई., पृष्ठ–8
10. डॉ. राजेश कुमार व्यास : कलावाक्, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष 2010 ई., पृष्ठ 80–81
11. डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, पृष्ठ–126
12. वही, पृष्ठ–106
13. रामकृष्ण शर्मा : 'सुरेश शर्मा', आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष : 9, अंक : 9, सितम्बर 1986 ई., पृष्ठ–2–5
14. वही
15. विद्यासागर उपाध्याय : 'शुद्ध रंगों का अद्‌भुत संसार', राजस्थान सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान, 2001 ई., पृष्ठ–55
16. सुरेश शर्मा, संस्थापक सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

17. सुरेश शर्मा : 'लक्ष्मीलाल वर्मा : प्रयोगधर्मिता में तकनीकी परिस्थिति', दिलीप सिंह चौहान (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष 1990 ई., पृष्ठ–71–78
18. लक्ष्मीलाल वर्मा, संस्थापक सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
19. विद्यासागर उपाध्याय : 'राजस्थान के समसामयिक कलाकार', विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति रजत जयंती अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1987 ई., पृष्ठ–41
20. शब्बीर हसन काजी, संस्थापक सदस्य टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित
21. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति त्रैमासिक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, जुलाई–सितम्बर 1995 ई., पृष्ठ–25
22. प्रयाग शुक्ल : 'विद्यासागर उपाध्याय : काले रंग के साथ एक यात्रा' : दिलीप सिंह चौहान (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1990 ई., पृष्ठ 1–2
23. विद्यासागर उपाध्याय, संस्थापक सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
24. विद्यासागर उपाध्याय : 'राजस्थान में समसामयिक कलाकार', विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक) : आकृति–रजत जयंती अंक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1987 ई., पृष्ठ–42
25. ललित शर्मा, सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
26. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय : 'नवीन आकारों का संसार', राजस्थान सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान, मई–2001 ई., पृष्ठ–55
27. वही
28. डॉ. राजेश कुमार व्यास : कलावाक्, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 2010 ई., पृष्ठ–144
29. वही, पृष्ठ–145
30. रघुनाथ, सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
31. डॉ. विष्णु प्रकाश माली, सचिव, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
32. डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, पृष्ठ–120

33. वही, पृष्ठ–121
34. डॉ. गगन बिहारी दाधीच, सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
35. वही
36. डॉ. देवदत्त शर्मा : 'थिरकती रेखाओं का सम्मोहन', राजस्थान सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जून–जुलाई 2002 ई., पृष्ठ 5–6
37. वही
38. विनय शर्मा, सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
39. हेमन्त द्विवेदी, सदस्य टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
40. भूपेश कावड़िया, सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
41. वही
42. हेमन्त जोशी, सदस्य, टखमण–28, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
43. वही
44. वही
45. www.takhman28.org
46. भवानी शंकर शर्मा : मोहन शर्मा, मोनोग्राफ, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1990 ई.
47. प्रकाश परिमल : 'मोहन शर्मा', सुमहेन्द्र (सम्पादक), कलावृत्त, जयपुर, अक्टूबर–दिसम्बर, 1986 ई., पृष्ठ 4–5
48. 'विषयगत विविधता से रचे गये चित्र', दैनिक नवज्योति, 1998 ई., पृष्ठ–4
49. चन्द्रभान सिंह नरुका : कला में नवाचार (कलाविद् रणजीत जे. सिंह चूण्डावाला की एकल कला प्रदर्शनी की विवरणिका), राजस्थान ललित कला अकादमी व जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, 2006 ई., पृष्ठ–2
50. कलाविद् रणजीत सिंह जे. चूण्डावाला, सदस्य–पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
51. योगेन्द्र सिंह नरुका : कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध) महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, 2008 ई., पृष्ठ–77
52. वही, पृष्ठ–78
53. कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, सदस्य–पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

54. आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, मार्च 1988 ई., पृष्ठ–4
55. राजस्थान–पत्रिका, जयपुर, 3 अक्टूबर 1993 ई., पृष्ठ–4
56. नवभारत टाइम्स, मुम्बई, 31 मार्च 1987 ई., पृष्ठ–7
57. दैनिक नवज्योति, जयपुर, 5 अक्टूबर 1984 ई., पृष्ठ–3
58. दैनिक नवज्योति, जयपुर, 23 फरवरी, 1987 ई., पृष्ठ–3
59. इतवारी–पत्रिका, जयपुर, 15 फरवरी 1976 ई., पृष्ठ–2
60. डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ, सदस्य–पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
61. हेमन्त शेष : 'आर.बी. गौतम : कुछ कहती है कबन्ध आकृतियाँ', दिलीप सिंह चौहान (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1990 ई., पृष्ठ–11
62. वही, पृष्ठ–16
63. कलाविद् आर.बी. गौतम, संस्थापक–सदस्य, पैग जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
64. पारस भंसाली, सदस्य, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
65. राजस्थान–पत्रिका, 26 दिसम्बर 1982 ई., पृष्ठ–4
66. दैनिक नवज्योति, 17 जून 1990 ई., पृष्ठ–3
67. आर.बी. गौतम : 'कन्हैयालाल वर्मा : पुरा संस्कृति के रेखा शिल्पी', दिलीप सिंह चौहान (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1990 ई., पृष्ठ–65
68. कन्हैया लाल वर्मा, सदस्य–पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
69. 'परम्परा और आधुनिकता को जोड़ती कृतियाँ', राजस्थान–पत्रिका, 20 नवम्बर, 1994 ई., पृष्ठ–2
70. डॉ. भवानी शंकर शर्मा, सदस्य–पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित
71. इतवारी पत्रिका, जयपुर, 10 दिसम्बर 1978 ई., पृष्ठ–3
72. शैलेन्द्र भटनागर, सदस्य–पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
73. सुरेन्द्र मंजुल : 'व्यापकता की ओर नाथू लाल वर्मा', आकृति (मासिक), राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, सितम्बर, 1991 ई., पृष्ठ–4
74. डॉ. नाथू लाल वर्मा की रेखाकंन चित्र विवरणिका का आमुख, 2011 ई., पृष्ठ–1
75. डॉ. नाथू लाल वर्मा, सचिव, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

76. शिवनन्दन चतुर्वेदी : 'प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, ख्याति प्राप्त चितेरे सुभाष केकरे', फिल्मांकन, बुलेटिन:3, वर्ष:1, सितम्बर, 1984 ई., पृष्ठ–9
77. वही
78. रामकुमार : 'लालचन्द मारोठिया का रंग–संसार, आकृति (मासिक), राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, दिसम्बर, 1991 ई., पृष्ठ 4–5
79. डॉ. राजेश कुमार व्यास : कलावाक्, 2010 ई., पृष्ठ 92–93
80. लालचन्द मारोठिया, सदस्य, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
81. रविवारीय पत्रिका, जयपुर, 4 जुलाई, 1993 ई., पृष्ठ–3
82. राजेन्द्र मिश्रा, सदस्य, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
83. नवभारत टाइम्स, मुम्बई, 25 नवम्बर, 1976 ई., पृष्ठ–4
84. इतवारी–पत्रिका, जयपुर, 10 दिसम्बर, 1978 ई., पृष्ठ–4
85. मंजू मिश्रा, सदस्य, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
86. डॉ. राजीव गर्ग, सदस्य, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
87. वही
88. सन्मार्ग, 8 अप्रेल, 1989 ई., पृष्ठ–6
89. दैनिक भास्कर, भोपाल, 25 जून, 1992 ई., पृष्ठ–3
90. डॉ. राजीव गर्ग, सदस्य, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
91. प्रदर्शनी विवरणिका–2012 ई., प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर
92. डॉ. जगमोहन माथोड़िया से साक्षात्कार पर आधारित।
93. वही
94. डॉ. राजेश कुमार व्यास : कलावाक्, 2010 ई., पृष्ठ 109
95. डॉ. ममता चतुर्वेदी, सदस्य, पैग, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।
96. वही
97. मनोहर प्रभाकर : ललित कला सीरीज ऑफ कन्टेम्परॅरि आर्ट, मोनोग्राफ, रामगोपाल विजयवर्गीय, केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 1988 ई.
98. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, 2004 ई., पृष्ठ 382
99. ए.एल. दमामी : राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद्, 2004 ई., पृष्ठ–7
100. आर.बी. गौतम, 'राजस्थान की नवपरम्परावादी कला और कलाकार', आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की समसामयिक कला, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1989 ई., पृष्ठ–64

101. रामकुमार : 'सुमहेन्द्र–स्टेप डिपली इन राजस्थानी ट्रेडिशन', सुमहेन्द्र (सम्पादक) : कलावृत्त (त्रैमासिक कला पत्रिका), अप्रेल–जून 1987 ई., पृष्ठ–1

102. राधेश्याम तिवारी : 'फ्रेस्को का चितेरा–सुमहेन्द्र', पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान–सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान, वर्ष : 21, अंक : 9, सितम्बर 2012 ई., पृष्ठ–41

103. डॉ. सुमहेन्द्र, संस्थापक–कलावृत, जयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

104. डॉ. सुमहेन्द्र (सम्पादक), कलावृत, जयपुर, जनवरी 1980 ई., पृष्ठ–50

105. वही

106. डॉ. सुमहेन्द्र : 'राजस्थान : समसामयिक कला आन्दोलन', एकेश्वर हटवाल (सम्पादक) : आकृति वार्षिकी, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1991–92 ई., पृष्ठ–68

107. सीमा जुल्का : 'परम्परा और आधुनिकता का संगम है शैल चोयल', आकृति (मासिक), राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, सितम्बर–अक्टूबर, 1992 ई., पृष्ठ–5

108. शैल चोयल, संस्थापक–आज, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

109. अम्बालाल दमामी, सदस्य–आज, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

110. विक्रम दत्त : 'रंगों के जरिए प्रभाशाह, आकृति (मासिक), राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, नवम्बर–दिसम्बर 1992 ई., पृष्ठ–5

111. डॉ. मृदुला भसीन : 'राजस्थान की कुछ महिला कलाकार', एकेश्वर हटवाल (सम्पादक) : आकृति वार्षिकी, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1991–92 ई., पृष्ठ–18

112. डॉ. सुमहेन्द्र : 'राजस्थान : समसामयिक कला आन्दोलन', एकेश्वर हटवाल (सम्पादक) : आकृति वार्षिकी, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1991–92 ई., पृष्ठ 69

113. परमानन्द चोयल : 'राजस्थान में पुनर्जागरण', आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की समसामयिक कला, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1989 ई., पृष्ठ–32

114. सुरजीत कौर चोयल, सदस्य–आज, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

115. आज–प्रदर्शनी विवरणिका, 1990 ई., पृष्ठ–9

116. डॉ. विद्यासागर उपाध्याय (सम्पादक), राजस्थान के रंग, पृष्ठ–65

117. डॉ. देवदत्त शर्मा : 'प्रकृति के विराट रुप का अमूर्त चित्रण', राजस्थान सुजस, राजस्थान सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जयपुर, अक्टूबर 2000 ई., पृष्ठ–76

118. किरण मुर्डिया, सदस्य–आज, उदयपुर से साक्षात्कार पर आधारित।

119. नरेन्द्र इस्टवाल : 'बसन्त कश्यप के अभिनव प्रयोग', सुरेन्द्र मंजुल (सम्पादक) : आकृति समाचार बुलेटिन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, मई 1992 ई., पृष्ठ–7–9

120. डॉ. सुमहेन्द्र : 'राजस्थान का समसामयिक कला आन्दोलन', एकेश्वर हटवाल (सम्पादक) : आकृति वार्षिकी, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1991–92 ई., पृष्ठ–67

121. डॉ. राधाकृष्ण वशिष्ठ : राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, पृष्ठ–128

122. ओम सैनी : 'रंगकर्म के पर्याय–भानु भारती', पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान–सुजस (मासिक), सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान, जुलाई 2012 ई., पृष्ठ 58–59

123. वही

124. वही

125. आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान के कलाविद्, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर, 1993–94 ई., पृष्ठ–21

126. डॉ. रीता प्रताप : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, पृष्ठ–396

127. अरुणा शेखावत (सम्पादक) : कला– किरण, जयपुर, पृष्ठ–31

128. समदर सिंह खंगारोत 'सागर' से शोधार्थी द्वारा लिये गये साक्षात्कार पर आधारित।

129. वही

130. वही

131. वही

132. पद्मश्री अर्जुन प्रजापति से शोधार्थी द्वारा लिये गये साक्षात्कार पर आधारित।

133. डॉ. राजेश कुमार व्यास : कलावाक्, 2010 ई., पृष्ठ–131–132

134. डॉ. आदर्श मदान : 'अजमेर के कला संसार को 'आकार' देते कलाकार', दैनिक भास्कर, 11 मई 1997 ई., पृष्ठ–3

135. दैनिक नवज्योति, अजमेर, 5 फवरी 2002 ई., पृष्ठ–10

136. डॉ. राजेश कुमार व्यास : कलावाक्, 2010 ई., पृष्ठ–135

137. लक्ष्यपाल सिंह राठौड़, संस्थापक–सदस्य, आकार समूह, अजमेर से साक्षात्कार पर आधारित

138. ए.एल. दमामी : राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद्, 2004 ई., पृष्ठ–95

139. प्रफुल्ल प्रभाकर : 'अनुभूति एवं संवेदनाओं के चित्रकार राम जैसवाल', पुष्पा गोस्वामी (सम्पादक) : राजस्थान सुजस (मासिक), सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान, वर्ष : 21, अंक : 4, अप्रेल 2012 ई., पृष्ठ 30

140. कलाविद् राम जैसवाल, संस्थापक–अंलकृति कला समूह व कैनवास आर्टिस्ट्स समूह, अजमेर से साक्षात्कार पर आधारित।

141. डॉ. त्रिलोकी नाथ गौतम : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, 2010 ई., पृष्ठ–132–133

142. हेमन्त शेष : 'आधुनिक मूर्तिशिल्प और राजस्थान', आर.बी. गौतम (सम्पादक) : राजस्थान की समसामयिक कला, राजस्थान ललित कला अकादमी,
जयपुर, 1989 ई., पृष्ठ–48

fp=&78 % dykfon ekuh lkU;ky dh —fr ^LukueXu ;orh*

fp=&79 % dykfon xko/ku yky tk'kh dh —fr ^[kfygku dh >kdh*

fp=&80 % dykfon ik- ih-,u- pk;y dh —fr ^,yo'ku&10*

fp=&81 % v:.k pUnk;.k dh —fr ^Lor=rk lukuh*

fp=&82 % ukjk;.k 'kkd}hih dh ,d j[kkdu —fr

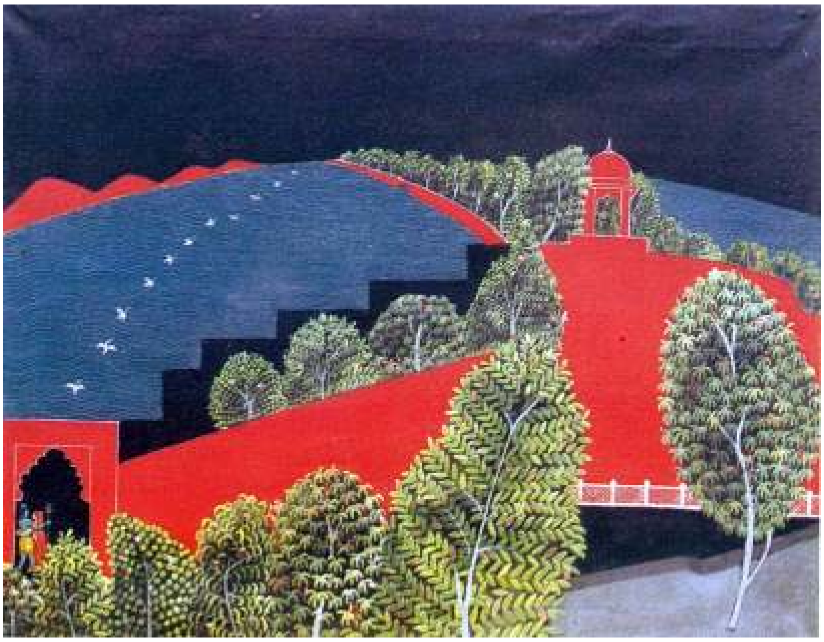

fp=&83 % r t f l g dh —fr ^mn ; i j*

fp=&84 % jke'oj f l g dh —fr ^mn ; i j*

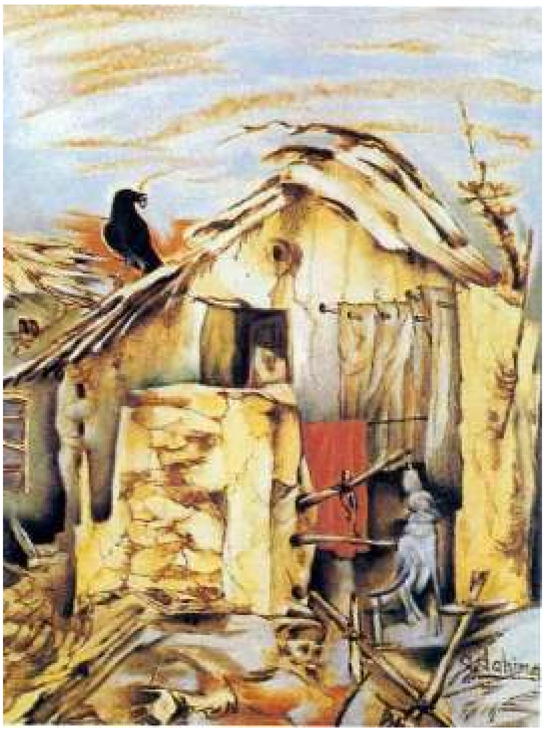

fp=&85 % noUn nkfgek dh —fr ^nork&5*

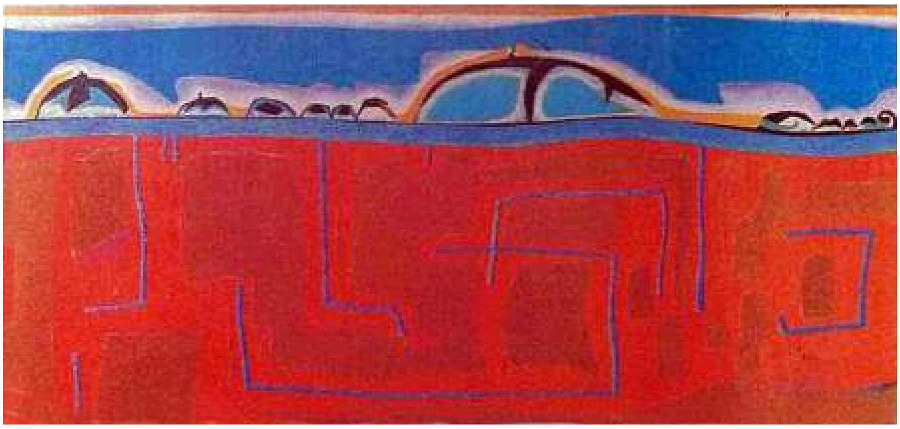

fp=&86 % vkenÙk mik/;k; dh —fr ^l;ktu*

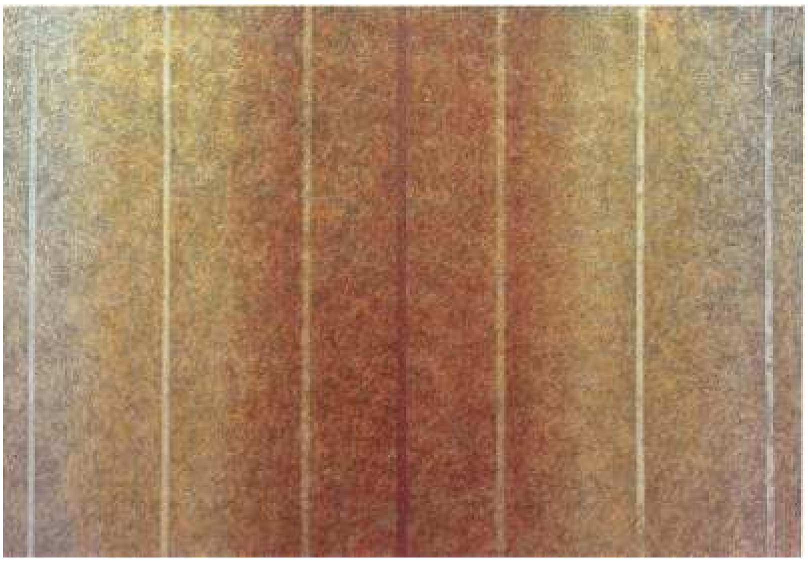

fp=&87 % lj'k 'kek dh —fr ^'kh"kdghu*

fp=&88 % y{ehyky oek dh —fr ^vkdLVk*

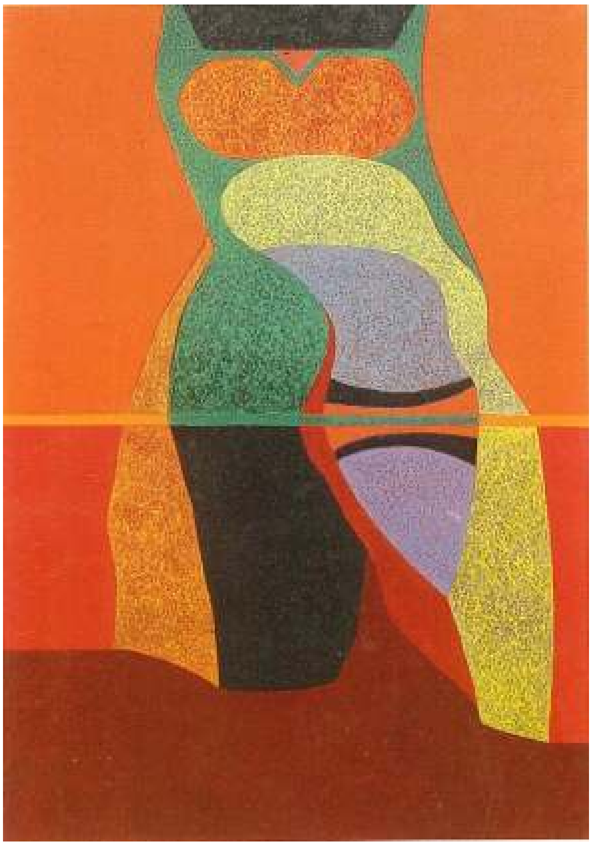

fp=&89 % 'kCchj glu dkth dh —fr ^'kh"kdghu*

fp=&90 % vCny djhe dh —fr ^rukko*

fp=&91 % fo|klkxj mik/;k; dh —fr ^'kh"kdghu*

fp=&92 % yfyr 'kek dh —fr
^mn;ij*

fp=&93 % fnyhi flg pkgku
dh —fr ^duokl*

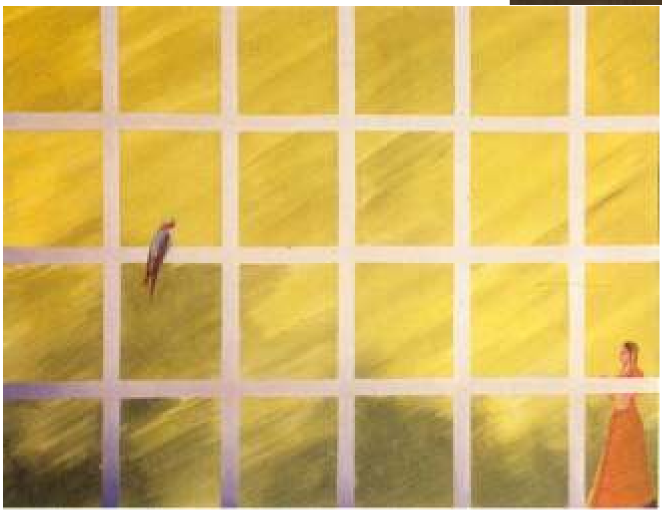

fp=&94 % j?kukFk 'kek dh —fr ^lUn'k*

fp=&95 % fo".k idk'k ekyh dh —fr ^vj.;*

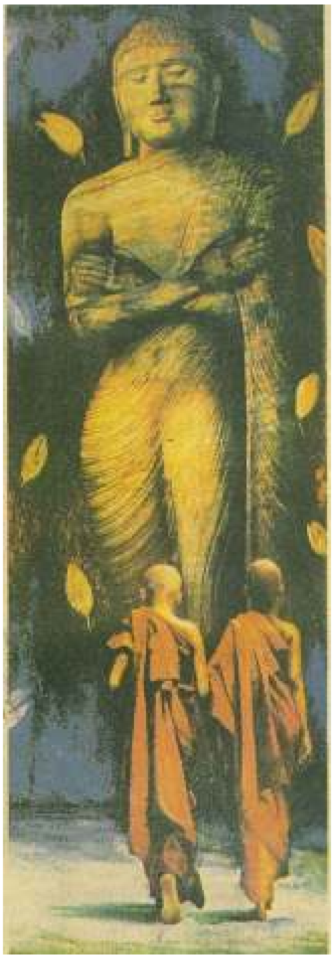

fp=&96% pj.k 'kek dh —fr ^c)e 'kj.ke*

fp=&97 % xxu fcgkjh nk/khp dh —fr ^;f{k.kh&f}rh;*

fp=&98 % fou; 'kek dh ,d —fr

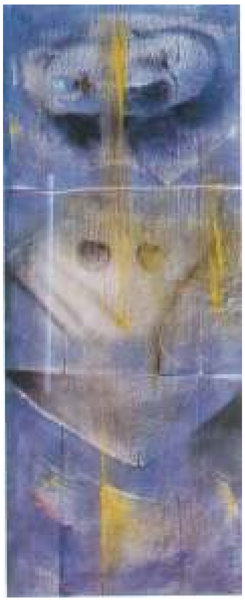

fp=&99% geUr f}onh dh —fr ^v{k*

fp=&100 % Hki'k dkofM;k dk ,d efr f'kYi ^enj ,.M pkbYM*

fp=&101 % geUr tk'kh dk ,d efr f'kYi

fp=&102 % nhid [k.Myoky dh ,d —fr

fp=&103 % dykfon ekgu 'kek dh —fr ^y.MLdi*

fp=&104 % dykfon j.kthr flg pMkokyk
dh —fr ^eky.k*

fp=&105 % dykfon Mk- iepUn xkLokeh dh —fr
^Loluykd*

fp=&106 % vkuUnh yky oek dk
,d efr f'kYi ^MkUl*

fp=&107 % xkiky ceu dh ,d —fr

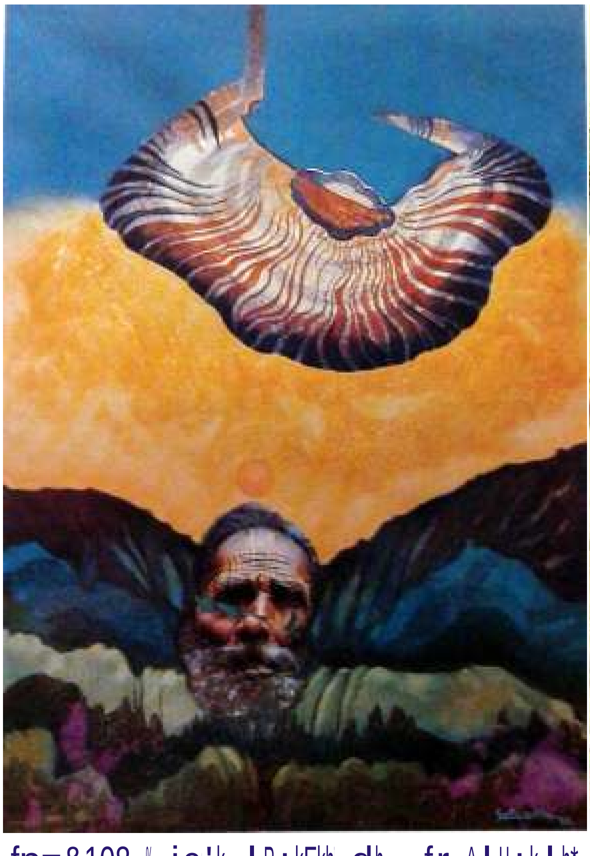

fp=&108 % je'k lR;kFkh dh —fr ^lU;klh*

fp=&109 % Mk- jk/kk—".k of'k"B dh —fr ^uo&fookfgrk,¡*

fp=&110 % dykfon Mk- vkj-ch- xkre dh —fr
^eu ,.M upj*

fp=&111 % ikjl Hkl kyh dh —fr ^l ;ktu*

fp=&112 % pUnyky pkgku dh ,d —fr

fp=&113 % dUg;k yky oek dh —fr ^Mkf.M;k mRlo*

fp=&114 % ik- Hkokuh 'kdj 'kek dh —fr ^bu n txy*

fp=&115 % 'kyUn HkVukxj dh ,d —fr

fp=&116 % Mk- ukFkyky oek dh —fr ^jke&jko.k ;)*

fp=&117 % lHkk"k ddj dh —fr ^l;ktu*

fp=&118 % yky pUn ekjkfB;k dh ,d —fr

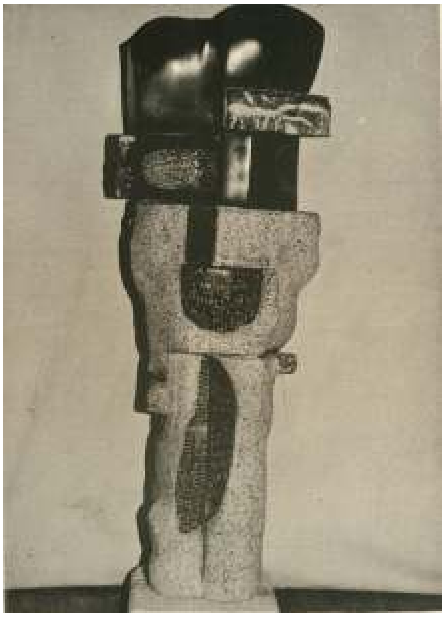

fp=&119 ½ jktUn feJk dk ,d efr f'kYi

fp=&120 ½ eUt feJk dh ,d —fr

fp=&121 ½ Mk- jktho xx dh —fr ^y.MLdi*

fp=&122 ¼ Mk- ljHkh fcjehoky dh ,d —fr

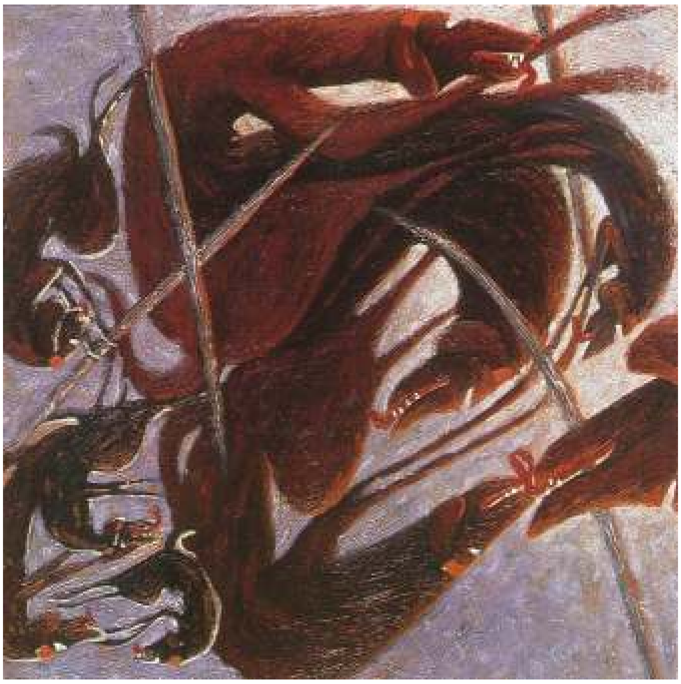

fp=&123 ¼ txekgu ekFkkfM;k dh —fr ^'oku*

fp=&124 ¼ Mk- eerk pronh dh ,d —fr

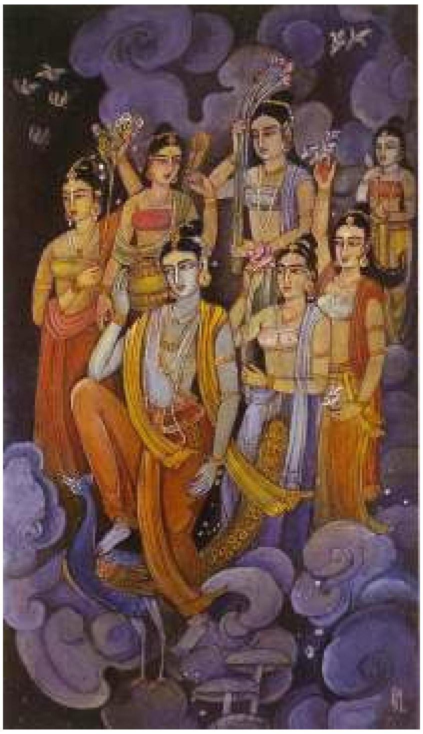

fp=&125 % jkexkiky fot ;oxh; dh —fr ^e?knr*

fp=&126 % lj'k pUn jktkfj;k dh —fr ^Hk&n';*

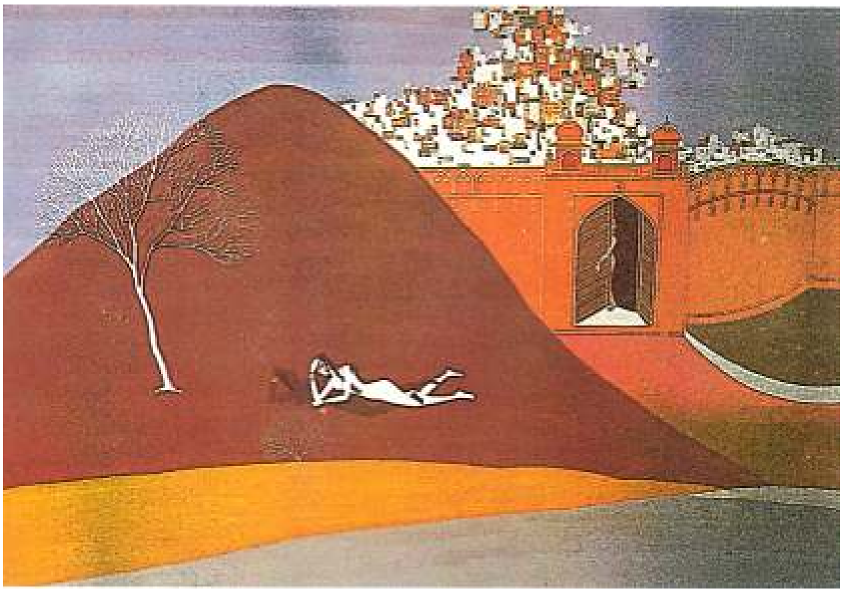

fp=&127 % ,e-d- 'kek ^legUn* dh —fr ^vdykiu*

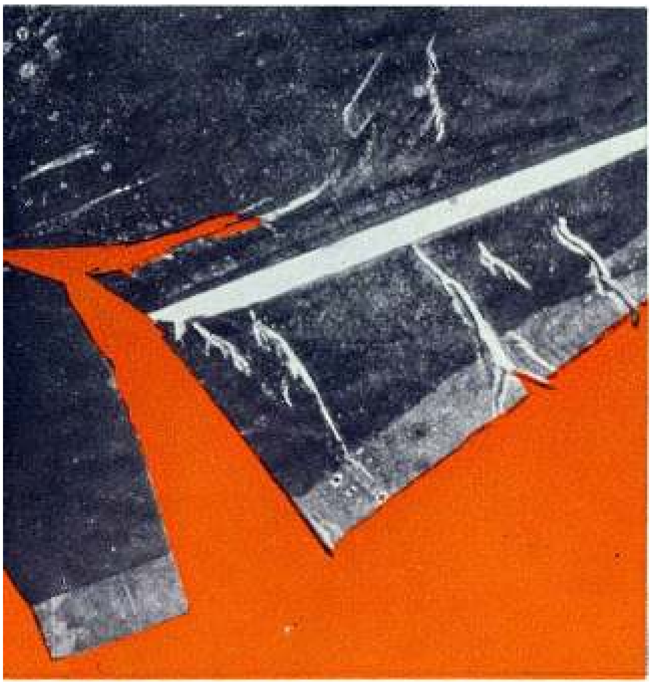

fp=&128 % ohjsUnz ikVuh dh ,d xzkfQd —fr

fp=&129 % ohjsUnz 'kekZ dh —fr ^Lolu*

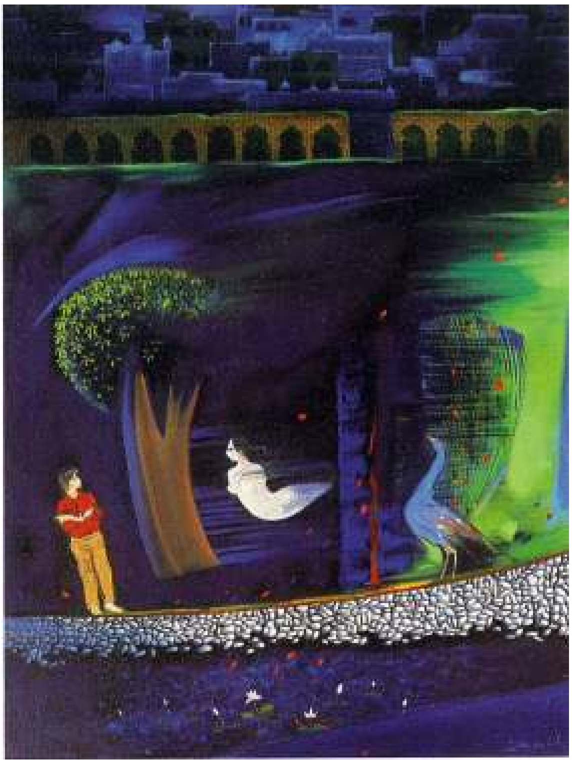

fp=&130 % 'kSy pkS;y dh —fr ^mn;iqj*

fp=&131 % ,-,y- nekeh dh —fr ^jkx fojkx*

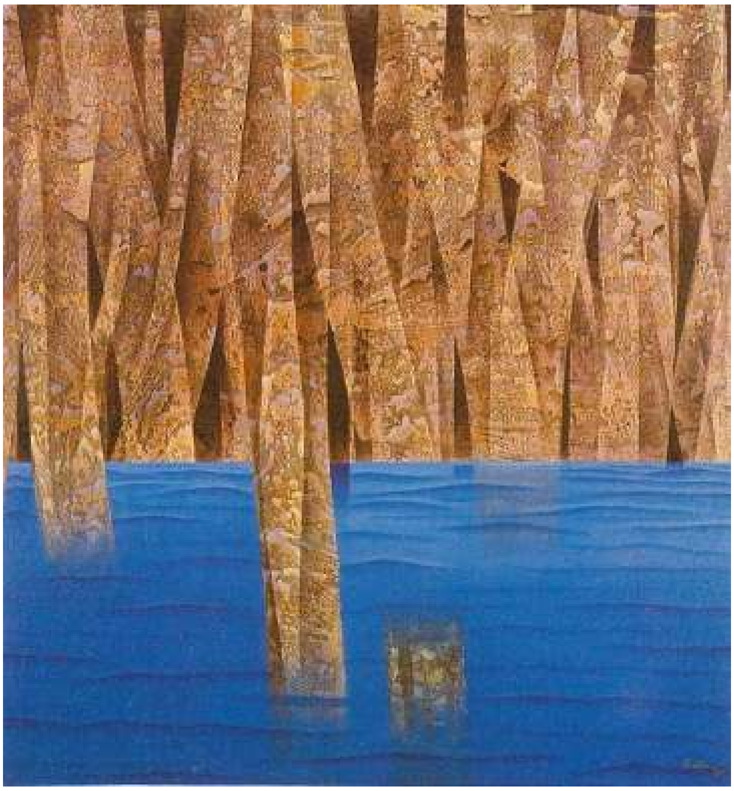

fp=&132 ½ iHkk 'kkg dh ,d —fr

fp=&133 ½ ljthr pk;y dh —fr ^ijkrurk*

fp=&134 ½ uhy dey dh ,d —fr

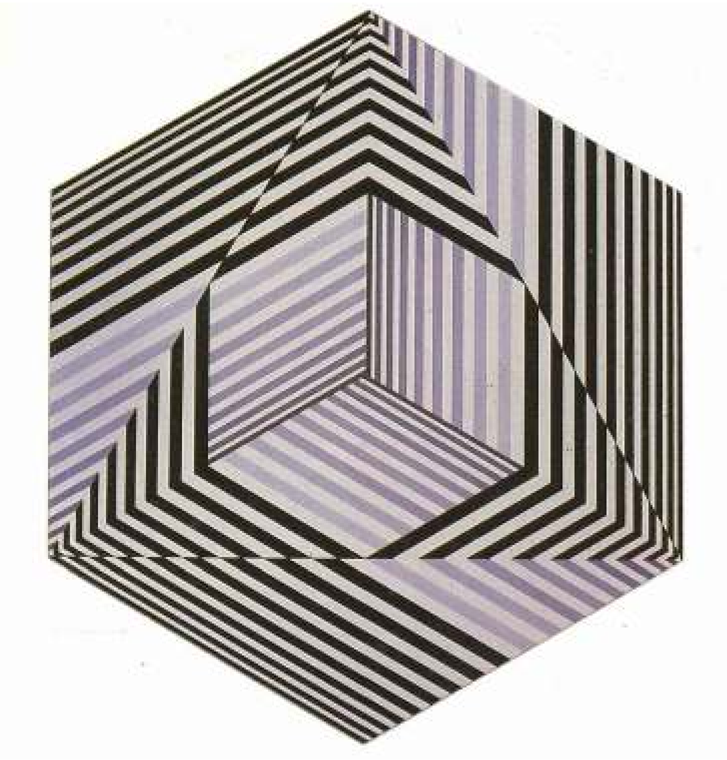

fp=&135 % g"k NktM dh —fr ^Vk;,xy o D;c*

fp=&136% fdj.k efM;k dh ,d —fr

fp=&137% clUr d';i dh —fr ^Egkj yfj;kjk*

fp=&138 % vCckl ckVyhokyk dh ,d —fr

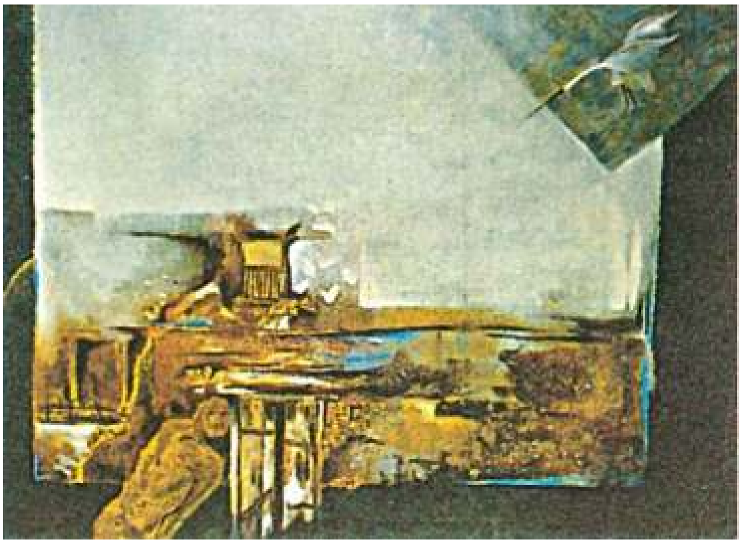

fp=&139 % f=ykd Jhekyh dh ,d —fr ^,fpx*

fp=&140 % Hkku&Hkkjrh }kjk funf'kr ukVd ^i'k&xk;=h*

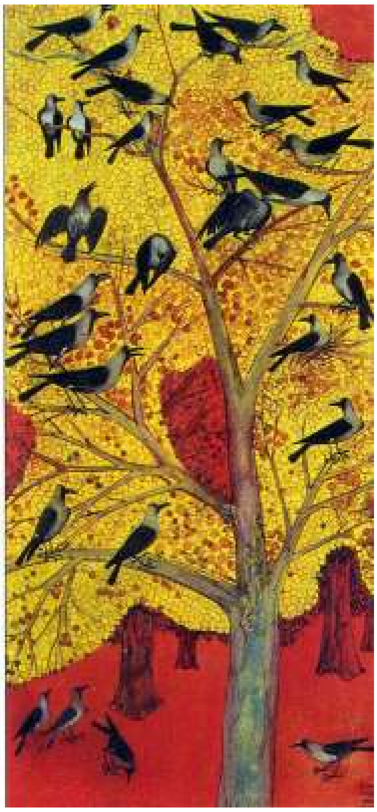

fp=&141 % dykfon nodhuUnu 'kek
dh —fr ^dkv*

fp=&142 % iùJh —iky flg 'k[kkor
dh —fr ^ikcth jkBkM*

fp=&143 % oniky 'kek ^cUu*
dh —fr ^yMh*

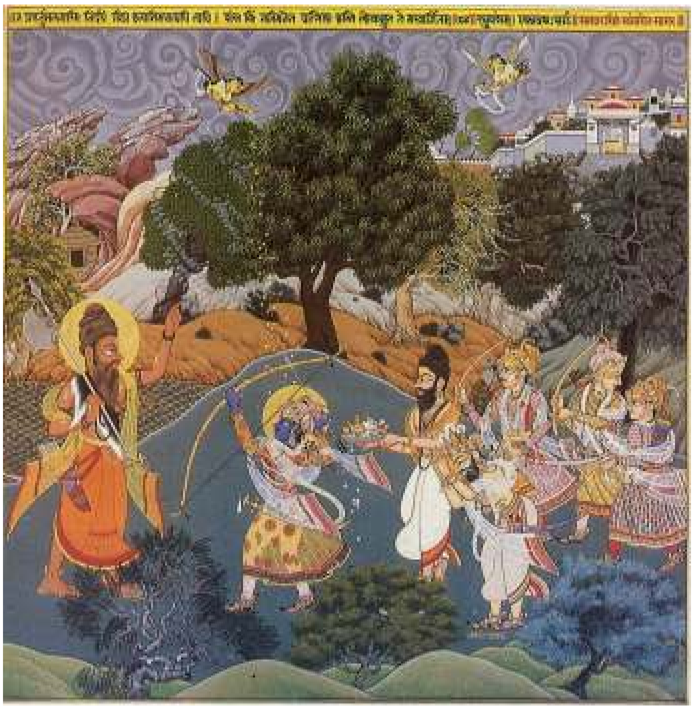

fp=&144 % lenj flg [kxkjkr ^lkxj* dh —fr ^jke&ij'kjke*

fp=&145 % iùJh vtu itkifr dk ,d efri f'kYi ^yMh*

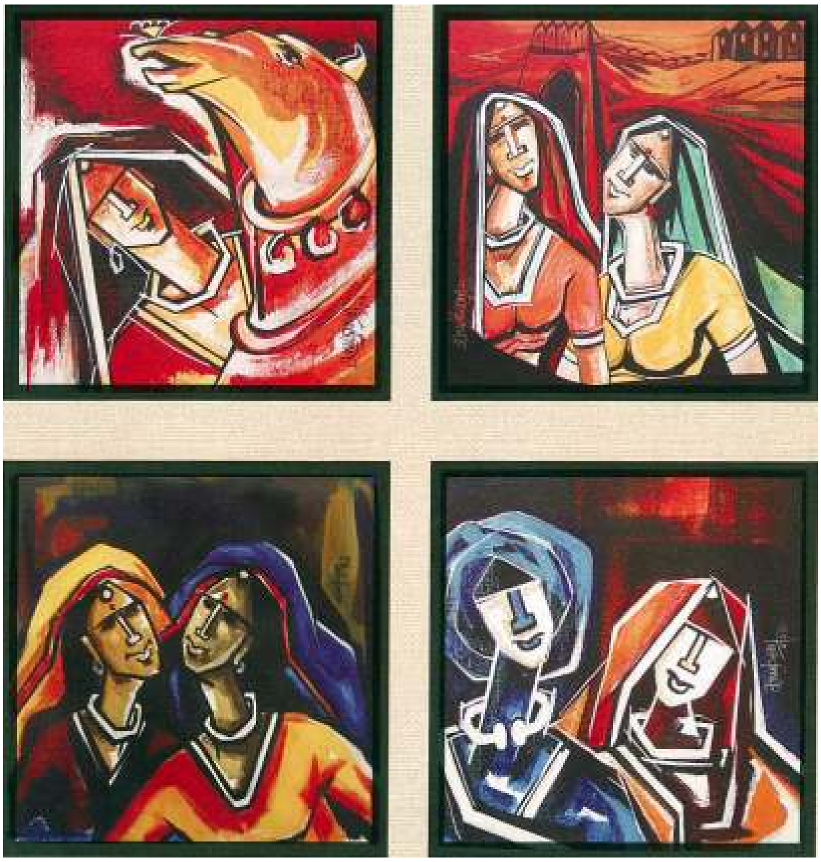

fp=&146 % vuie HkVukxj dh ,d —fr

fp=&147 % igykn 'kek dh —fr ^eRL; dU;k*

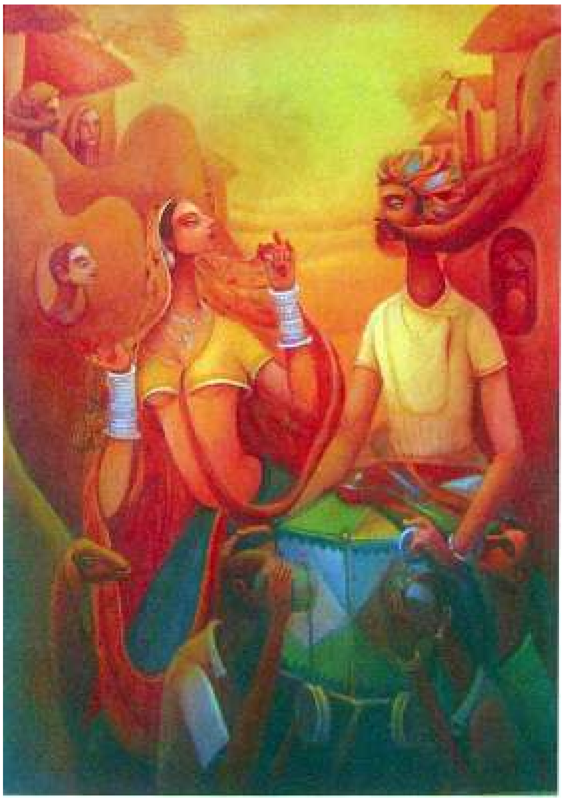

fp=&148 % y{;iky flg jkBkM dh ,d —fr

fp=&149 % je'k xx dh —fr ^l;ktu*

fp=&150 % jke tlloky dh —fr ^clr vkxeu*

fp=&151 % lh-,l- egrk dh ,d —fr ^l;ktu*

fp=&152 % xko/ku flg iokj dk ,d efr f'kYi ^l;ktu*

उपसंहार

समकालीन कला के विकास में राजस्थान के कला संगठनों का योगदान

समकालीन कला के विकास में राजस्थान के कला संगठनों का योगदान

राजस्थान में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व यहां के राजपूत शासकों के संरक्षण में विभिन्न स्थानों पर अलग–अलग लघुचित्र शैलियाँ विकसित हुई। राजस्थान की लघुचित्र शैलियों को राजपूत अथवा राजस्थानी शैली के नाम से जाना जाता है, जो राजस्थान में स्थित विभिन्न राजपूत राजघरानों के संरक्षण में पली बढ़ी। यथा–मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती, ढूढ़ाड़ शैली। इस समय के परम्परागत सिद्धहस्त चित्रकारों ने ऐसी अनूठी चित्रकृतियों का निर्माण किया जिनकी आज वैश्विक स्तर पर अपनी एक अलग पहचान है। यद्यपि इन कलाकारों के चित्र विषय राजाओं व राज–दरबारियों के व्यक्ति चित्र, उनके आमोद–प्रमोद, बारहमासों, पौराणिक व स्थानीय काव्यों में आए प्रसंगों तक ही सीमित रहे तथापि इन लघुचित्र कृतियों ने कला के क्षेत्र में राजस्थान का नाम गौरवान्वित किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब सम्पूर्ण विश्व में आधुनिक कला आन्दोलन अपने चरम पर था तब भारत का कला जगत भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। इन कला आन्दोलनों के परिणामस्वरूप भारत में भी रूढ़िवादी, पारम्परिक, सामाजिक, धार्मिक परम्पराओं में परिवर्तन आया। यहाँ के सृजनशील कलाकारों में चिन्तन–मनन व अभिव्यक्ति के स्तर पर भी बदलाव आये। भारतीय कला में पारम्परिक चित्रण पद्धति के स्थान पर पाश्चात्य आधुनिक कला के तत्वों का समावेश आरम्भ हुआ व भारतीय कला आधुनिक परिवेश में ढ़लती चली गई। भारत में बंगाल की धरा से कला का पुनरूत्थान प्रारम्भ हुआ। नन्दलाल बसु, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, गगनेन्द्र नाथ ठाकुर आदि ने अपनी पुरातन कला के अस्तित्व को पुनः पहचाना और पश्चिम, चीन, जापान आदि की कला के महत्वपूर्ण तत्वों को अपनाकर नवीनता के बोध के साथ अपनी कला में समाविष्ट कर लिया। भारतीय कला इतिहास में इनके अतुलनीय योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता।

ब्रिटिश साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के प्रभाव से भारतीय कला भी प्रभावित हुई। चेन्नई, कोलकाता, लाहौर, मुम्बई, जयपुर आदि स्थानों पर कला शिक्षण संस्थानों का शुभारम्भ हुआ और इनके माध्यम से कला की नवीन शिक्षा प्रारम्भ हुई। आगे चलकर इन्हीं स्थानों से भारतीय कला–जगत में नवीन विचाराधाराओं को लिए हुए अनेक कला संगठनों का उदय होना प्रारम्भ हुआ। इसी क्रम में 'द बांबे ग्रुप ऑफ कंटेम्परॅरि इण्डियन आर्टिस्ट्स' (यंग

तुर्क्स) व कलकत्ता ग्रुप की स्थापना हुई। इन संगठनों द्वारा कला में किये गए नवीन परिवर्तनों के फलस्वरूप कला में नवीन सम्भावनाओं को खोजा जाने लगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ–साथ मुम्बई में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप की स्थापना हुई और उसके प्रति कलाकारों का झुकाव अधिक बढ़ने लगा। इस ग्रुप के संस्थापकों सूज़ा, हुसैन, हैब्बार, रजा, आरा जैसे कलाकारों ने पारम्परिक भारतीय कला परम्परा के निर्वहन से अपने आप को बचाते हुए अपनी कृतियों में नवीन और आधुनिक तत्वों का समावेश किया। जिससे भारतीय कला को आधुनिकता के तेवर में प्रस्तुत किया जा सका। इसके पश्चात् श्रीनगर में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स एसोसिएशन व नई दिल्ली में शिल्पी चक्र की स्थापना हुई और इस प्रकार भारतीय कला में आधुनिक सोच लिये हुए चित्रकारों के नये कला संगठनों का दौर प्रारम्भ हुआ और बॉम्बे ग्रुप, ग्रुप–1890, चौला मण्ड़ल जैसे कला संगठन अस्तित्व में आये। इस परिप्रेक्ष्य से जब हम राजस्थान की समसामयिक कला का आंकलन करते है तो पाते हैं कि लघु चित्रण परम्परा के पोषक राजस्थान प्रदेश में आधुनिक कला आन्दोलन की शुरूआत कुछ विलम्ब से होती दिखाई देती है परन्तु इस कला आन्दोलन की पृष्ठभूमि राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ हो सकी जिसमें प्रमुख योगदान बंगाल की पुनर्जागरण काल की कला से प्रभावित कलाकार शैलेन्द्र नाथ डे द्वारा दिया गया। इस प्रकार राजस्थान में आधुनिक कला शिक्षा का आरम्भ हुआ व जिसके फलस्वरूप यहाँ आधुनिक कला का सूत्रपात हुआ। राजस्थान के पुनर्जागरणकालीन कलाकारों में रामगोपाल विजयवर्गीय, कृपाल सिंह शेखावत, देवकीनन्दन शर्मा, द्वारका प्रसाद शर्मा आदि प्रमुख है। रामगोपाल विजयवर्गीय ने बंगाल स्कूल की वॉश तकनीक, अजन्ता की रेखाओं की कोमलता व लयात्मकता और राजस्थान की परम्परागत चित्रकला का अद्भुत व अनूठा सम्मिश्रण कर अपने चित्रों में धार्मिक, साहित्यिक व परम्परागत विषयों को स्थान दिया। कृपाल सिंह शेखावत ने भी अजन्ता की कला और शान्ति निकेतन की कला को अपने चित्रों का आधार बनाया। वनस्थली के देवकीनन्दन शर्मा यथार्थ से प्रभावित होने पर भी अलंकारिक रेखाओं के माध्यम से राजस्थान के प्राकृतिक परिदृश्य मोर व अन्य पक्षियों का चित्रण करते रहे। द्वारका प्रसाद शर्मा परम्परागत शैली से प्रभावित होने पर भी यर्थाथवादी चित्रण करते रहे और अत्यन्त सशक्त रेखांकनों के माध्यम से उनके गाड़ियाँ लुहारों, ऊँटों व घोड़ों के चित्र उल्लेखनीय हैं। इसी कड़ी के अन्य कलाकारों में गोवर्धन लाल जोशी, राम जैसवाल व राम निवास वर्मा है जिन्होंने बंगाल की वाश तकनीक को अपनी कृतियों का आधार बनाया। भूर सिंह शेखावत व बी.सी.गुई के कलात्मक योगदान भी समीचीन है। भूर सिंह शेखावत ने अपनी कला को यथार्थवादी ग्रामीण परिवेश के माध्यम से

और बी.सी.गुई ने यूरोपीयन लैण्डस्केप को अकादमिक परम्परा के माध्यम से मुखर किया। रत्नाकर विनायक साखलकर ने भी इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया। परमानन्द चोयल भी यद्यपि इसी श्रृंखला व अवस्था के कलाकार रहें, लेकिन उन्होंने अपने आपको सीधे समसामयिक कला से जोड़ने का उपक्रम किया, प्रारम्भ में यथार्थवाद, प्रभाववाद तथा अभिव्यंजनावाद के माध्यम से अपने को उद्‌भासित किया और राजस्थान की धरती की कला धारा को समसामयिक कला से जोड़ने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस समय तक कला क्षेत्र में तकनीक व नवीनता के नाम पर वॉश, अपारदर्शी जलरंग या तेल चित्रण से अधिक जानकारी नहीं थी और 1960 तक यही स्थिति थी लेकिन बीसवीं सदी के सातवें दशक में ज्योतिस्वरूप ने कला के क्षेत्र में नये प्रयोगों का शुभारम्भ किया। इसी दशक में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक; डी.ए.वी. कॉलेज, अजमेर में कला की स्नातकोत्तर शिक्षा का श्रीगणेश हुआ व जयपुर में महारानी कॉलेज व कानोड़िया कॉलेज में स्नातक स्तर पर कला शिक्षा का शुभारम्भ हुआ।

राज्य के कलाकारों में अब कला के प्रति नवीन सोच का विकास हो रहा था। युवा कलाकारों के सामने कला के नये आयाम खुलने लगे थे फिर भी राजस्थान ललित कला अकादमी की स्थापना होने तक कुछ ही कलाकारों ने नवीन मार्ग स्वीकार कर कृतियाँ सर्जित करने का साहस किया था। अकादमी की स्थापना से कलाकार एक मंच पर खड़े होने लगे और एक दूसरे को पहचानने लगे। इस दौर में राजस्थान के कला क्षितिज पर कई रूप देखने में आए यथार्थ, प्रभाववादी, अभिव्यंजनापरक, रूमानी, परम्परागत, आकारनिष्ठ तथा अनाकृतिमूलक आदि–आदि। लेकिन इस समय तक भी राजस्थान का कलाकार देश के समकालीन कला आन्दोलन में अपने आपको नगण्य अनुभव कर रहा था। कलाकार और कलाप्रेमी दोनों ही इस स्थिति से व्यथित थे। ऐसे में पुरातन के प्रति आस्था और भविष्य की नवीन उत्कंठा लिए कलाकारों की नई पीढ़ी सक्रिय हुई जिसने कला के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन का सूत्रपात राजस्थान में किया।

इसी समय से राजस्थान की धरती पर कई कलाकार संगठनों का प्रादूर्भाव होना प्रारम्भ हो गया था। इन कलाकार संगठनों के माध्यम से कलाकार एक–दूसरे से मिल कर कला में हो रहे परिवर्तनों का समझने, आत्मसात करने व नवीन प्रयोगों में व्यस्थ हो रहे थे। इससे राजस्थान में समसामयकि कला का वातावरण बनना प्रारम्भ हो गया था। राजस्थान के कुछ युवा कलाकार मुम्बई, बड़ौदा व शान्ति निकेतन जैसे कला शिक्षण संस्थानों से प्रशिक्षित होकर राजस्थान के कला जगत में प्रवेश कर रहे थे। राजस्थान में सर्वप्रथम त्याग,

स्वाभिमान की भूमि, प्रकृति की सुरम्य छठा बिखरने वाली उदयपुर नगरी में 'तरूण कलाकार परिषद' का उदय हुआ, जिसे कालान्तर में 'तूलिका कलाकार परिषद' के नाम से जाना गया। यह राजस्थान का सर्वप्रथम कला संगठन था। तूलिका कलाकार परिषद ने राजस्थान के कलाकारों को एक मंच पर लाकर उन्हें संगठित कर उनका मनोबल बढ़ाया। राजस्थान के कला जगत में वार्षिक प्रदर्शनियों का दौर शुरू करने वाला यह प्रथम संगठन था। इन प्रदर्शनियों में श्रेष्ठ तीन कलाकृतियों के लिए क्रमशः तूलिका स्वर्ण पदक, तूलिका रजत पदक, तूलिका ताम्र पदक व श्रेष्ठ पारम्परिक कलाकृति के लिए चित्रकार स्व. देवीलाल शर्मा की स्मृति में स्वर्ण पदक प्रदान किया जाता था। परिषद ने तैईस राज्य व एक राष्ट्रीय स्तर पर वार्षिक कला प्रदर्शनियों का आयोजन कर राजस्थान के समसामयिक कला जगत में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। इन प्रदर्शनियों के माध्यम से ही कलाकार एक दूसरे को जान सके और उनके कलाकर्म को समझ सके। उस दौर में इन कला प्रदर्शनियों का आयोजन किसी कला क्रान्ति से कम नहीं था। परिषद ने वार्षिक प्रदर्शनियों के साथ–साथ चित्रकार शिविरों तथा वरिष्ठ कलाकारों की कला वार्त्ताओं का भी आयोजन कर के कला जगत में अपना महत्त योगदान दिया। जिसमें परिषद के द्वारा ख्याति प्राप्त चित्रकारों मि. हगबीस, फ्रांस; रामगोपाल विजयवर्गीय, राजस्थान की कलावार्ता व भारत के प्रतिष्ठित चित्रकार एस.डी. अमोलक की चित्र प्रदर्शनी का आयोजन अनूठा रहा। इस संगठन ने वरिष्ठ कलाकारों का सम्मान करने व उनके कृतित्व को प्रभाषित करने, उन्हें आर्थिक सहायता दिलवाने सहित अनेकों ऐसे कार्य किये जो कला जगत के लिए निश्चित रूप से प्रेरणास्पद है। राजस्थान के समकालीन कला जगत को परिषद के संस्थापक सदस्य पी.एन. चोयल ने 'इम्पेस्टो तकनीक' से परिचित करवाया इनके द्वारा परम्परावादी, यथार्थवादी, प्रभाववादी, अभिव्यंजनावादी और नितान्त नव्यवादी रूप में किये गये नये–नये प्रयोग व इनके द्वारा चित्रित चित्र श्रृंखला 'परसेप्शन ऑफ उदयपुर' व 'भैंसें' भी समकालीन कला जगत के लिए महत्वपूर्ण है। परिषद् के एक और संस्थापक सदस्य गोवर्धन लाल जोशी द्वारा सृजित 'बाबा शैली' भी समकालीन कला जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जोशी ने इसी शैली में 'भील जीवन' आधारित चित्र श्रृंखला चित्रित कर समकालीन कला जगत को एक अनुपम सौगात दी है। परिषद के एक अन्य संस्थापक सदस्य मोनी सान्याल ने बंगाल की वाश पद्धति व यूरोप की पारदर्शी जलरंग पद्धति की मिलीजुली तकनीक से राजस्थान के कला जगत को परिचित करवाया। वहीं परिषद से सम्बद्ध तेज सिंह ने नव–पारम्परिक व रामेश्वर सिंह ने पुरातन इतिहास के विषय को लोक रंग में प्रस्तुत कर कुछ नवीन विषय राजस्थान की समकालीन कला को प्रदान किये हैं। परिषद के

कलाकारों द्वारा समकालीन कला जगत को दिए गए महत्वपूर्ण योगदान के फलस्वरूप ही राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा इसके संस्थापक सदस्य चित्रकार गोवर्धन लाल जोशी(चित्र–153), मोनी सान्याल व परमानन्द चोयल(चित्र–154) को 'कलाविद्' सम्मान से सम्मानित किया गया व इनके कृतित्व पर मोनोग्राफ्स भी प्रकाशित किये गये।

राजस्थान का कलाकार मात्र वार्षिक प्रदर्शनियों में भाग लेने व पुरस्कृत होने तक ही सीमित नहीं रहा, उसने संगठित होकर भारत के विभिन्न कला आयोजनों में भी अपनी भागीदारी निभाई। कला में नित नये प्रयोग करने के मानस से कुछ कलाकारों द्वारा एक प्रयोगधर्मी कलाकार संगठन का निर्माण किया गया जो कि टखमण–28 के नाम से जाना गया। टखमण–28 ने यहाँ के सृजनशील कलाकारों को पारम्परिक रूपाकारों से विद्रोह कर विषय, आकार, माध्यम एवं तकनीक में नवीन प्रयोग कर आधुनिक कला सृजन की प्रेरणा दी। टखमण–28 के द्वारा राज्य के बाहर संगठन के सदस्य कलाकारों की कृतियों का प्रथम प्रदर्शन किया गया जो कि राजस्थान के समकालीन कला इतिहास में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। संगठन ने कलाकारों की एकल प्रदर्शनियों का आयोजन करना भी आरम्भ किया। जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम अफसर हुसैन की प्रदर्शनी का आयोजन टखमण–28 के द्वारा किया गया था। टखमण–28 ने सदैव समसामयिक कला आन्दोलन में पहल की है। प्रदर्शनियों के अतिरिक्त कला गोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ व शिविर भी संगठन ने आरम्भ किए और राजस्थान के कलाकारों ने नई चेतना व ऊर्जा को महसूस किया और अपने शिविरों व कार्यशालाओं में देश के प्रसिद्ध कलाकारों को आमन्त्रित कर उनकी रचनात्मक पद्धति व चित्रण शैलियों, तकनीकों का राजस्थान के कला जगत को साक्षात्कार करवाया जिससे राजस्थान के कलाकारों का भारतीय कला परिवेश से परिचय हुआ। टखमण–28 ने जो शिविर व कार्यशालाएँ आयोजित की उनमें छापा चित्रण कार्यशालाओं का आयोजन उल्लेखनीय है। छापा चित्रण, शिल्प एवं चित्रण के समकक्ष स्वतंत्र विधा है लेकिन बीती सदी के सातवें दशक तक राजस्थान में यह विधा शैशव अवस्था में ही थी। टखमण–28 ने छापा–शिविरों के द्वारा इस माध्यम के प्रति राजस्थान के कलाकारों को प्रेरित कर रूचि पैदा करने में योगदान दिया। यद्यपि राज्य के विश्वविद्यालयों में ऐच्छिक विषय के रूप में इस माध्यम को पढ़ाया जा रहा था किन्तु इस विषय को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा था। इस माध्यम की महत्ता को, इसके विकसित स्वरूप को टखमण–28 ने ही राज्य के कलाकारों के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसमें छापा–चित्रण की विधि तकनीक यथा ऐचिंग, एक्वटिंट, ड्राइपेन्ट, एन्थग्लियों, मेजोटिंट, सीरीग्राफी, सिल्क स्क्रीन, लिथोग्राफी आदि को

उजागर किया। जिसका राज्य के कलाकारों ने भरपूर लाभ उठाया। इसी तरह टखमण–28 ने छापा–कला को प्रोत्साहित करने के उद्धेश्य से छापा प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जिसमें देश के अनेक महत्वपूर्ण कला केन्द्रों बड़ौदा, चेन्नई, लखनऊ तथा राजस्थान के कलाकारों के प्रिन्ट्स प्राप्त हुए। प्रदर्शनी में एक महत्वपूर्ण भाग देश के जाने माने छापा चित्रकारों का रहा जिन्हें अतिथि कलाकारों के रूप में आमंत्रित किया गया। ख्याति प्राप्त कलाकारों के निर्णायक मण्ड़लों द्वारा इन प्रिन्ट्स का चयन कर इन्हें टखमण–28 के द्वारा पुरस्कृत किया गया। यह प्रदर्शनियाँ कलात्मक विविधता को लिए हुए थी जिनमें भिन्न–भिन्न प्रदेशों के छापा चित्रकारों के निजी संवेदन व सृजन को एक साथ वृहद रूप में देखने का राजस्थान के कला प्रेमियों को अवसर मिला। छापा चित्रों की यह प्रदर्शनियाँ राजस्थान के लिए यादगार बनी रहेगी। टखमण–28 ने मोलेला में मृण्य शिल्प शिविरों के माध्यम से टेराकोटा में नवीन प्रयोग किये जो राजस्थान के कलाकारों के लिए महत्वपूर्ण व उपयोगी सिद्ध हुए। टखमण–28 ने इन मृण्य शिल्प शिविरों में भारत के ख्यातनाम कलाकारों को यहाँ आमंत्रित कर राजस्थान की इस लोक–कला को एक नई पहचान दी। कलाकारों को सृजन हेतु उपर्युक्त वातावरण राज्य के प्रयोगधर्मी कलाकारों के संगठन टखमण–28 ने उपलब्ध करवाया है, आज उदयपुर शहर में टखमण–28 का स्वयं का स्टूड़ियों, वर्कशॉप व प्रदर्शनी दीर्घा है। टखमण–28 इनका उपयोग विभिन्न कार्यशालाओं व शिविरों के आयोजन करने के साथ–साथ कला शिक्षकों, विद्यार्थियों व कला जिज्ञासुओं के कार्य, प्रशिक्षण व प्रदर्शन के लिए करता है। टखमण–28 ने अपने परिसर में मूर्तिशिल्प कार्यशाला की स्थापना की जिसके अन्तर्गत मूर्तिशिल्प के लिए स्कल्पचर यार्ड बनाया तथा मूर्तिशिल्प से सम्बन्धित सम्पूर्ण उपकरणों को संगठन द्वारा क्रय किया गया जिसके परिणामस्वरूप संगठन के सदस्य मूर्तिकारों व यहाँ आने वाले अन्य मूर्तिकारों का कार्य करना आसान हो सका। टखमण–28 के प्रयोगशील कलाकार सुरेश शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, शब्बीर हसन काजी, विद्यासागर उपाध्याय, दिलीप सिंह चौहान आदि ने राजस्थान में अमूर्तन व छापा कला को विकसित करने में अपना विशेष योगदान दिया है। राजस्थान के आधुनिक कला के विकास के सन्दर्भ में टखमण–28 के कलाकारों के योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। आधुनिक कला में दिये गये इसी योगदान के फलस्वरूप इसके संस्थापक सदस्य सुरेश शर्मा को राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'कलाविद्' उपाधि प्रदान की गई (चित्र–155) व इसके प्रमुख कलाकार विद्यासागर उपाध्याय, शब्बीर हसन काजी, दिलीप सिंह चौहान, गगन बिहारी दाधीच आदि राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर कई अकादमियों व संस्थाओं द्वारा सम्मानित किये जा चुके है।

राजस्थान के क्रियाशील कलाकारों के संगठनों में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर का नाम भी जाना पहचाना है। प्रगतिशील विचारों को सृजन में स्थान देने में इस ग्रुप का विशेष योगदान रहा है। ग्रुप द्वारा राज्य में कला–समृद्धि के लिए विविध कला गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से जन–सामान्य में कला के व्यवहारिक एवं सैद्धान्तिक पक्षों के प्रचार–प्रसार करने, कला चेतना उत्पन्न करने और अन्य प्रान्तों के साथ सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किये गये है जिनका राज्य के सांस्कृतिक जागरण में विशिष्ट योगदान रहा है। इसी क्रम में प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर ने राजस्थान में कला दीर्घा के अभाव को महसूस किया और राजस्थान में कला दीर्घा स्थापना के आरंभिक प्रयास किये। ग्रुप ने राजस्थान के समाचार–पत्रों में कला समीक्षाओं के अभाव को भी महसूस किया तथा समाचार–पत्रों के प्रभारी सम्पादकों से सम्पर्क कर कला–समीक्षाओं को समाचार पत्रों में उचित स्थान दिलवाने में अपना योगदान दिया, जिसके फलस्वरूप कला समीक्षकों के रूप में सर्वप्रथम त्रिलोकी प्रसाद शर्मा उर्फ आकाश रंजन (दैनिक राष्ट्रदूत), किशन शर्मा (दैनिक नवज्योति), मणि मधुकर, हर्षवर्धन, ओम शर्मा तथा तारादत्त निर्विरोध ने पहल की तथा इन्होंने यहाँ के उदीयमान कलाकारों की कलाकृतियों का विश्लेषण कर उनका परिचय प्रस्तुत कर जन–सामान्य के मध्य उनकी कला को प्रचारित–प्रसारित किया। बीसवीं शताब्दी के छठें दशक तक राजस्थान की समसामयिक कला विषय पर पुस्तकों का नितान्त अभाव रहा था। इस ग्रुप ने इस ओर भी अपना कदम बढ़ाया और केन्द्रीय ललित कला अकादमी व राजस्थान ललित कला अकादमी के सहयोग से इस अभाव की पूर्ति करने का प्रयास किया। ग्रुप द्वारा प्रकाशित प्रमुख पुस्तकों में 'राजस्थान के कलाविद् कलाकार', 'राजस्थान की महिला चित्रकार', 'AVANT GARADE ARTIST OF RAJASTHAN', 'मोहन' आदि है। राज्य के कलात्मक वातावरण सृजित करने के उद्देश्य से समय–समय पर चित्रकला, कोलोग्राफी, लीथोग्राफी, छापाचित्र शिविरों का आयोजन किया एवं राज्य व राज्य के बाहर कला प्रदर्शनियों का आयोजन किया। इनमें राज्य व ग्रुप के वरिष्ठ कलाकारों स्व. भूर सिंह शेखावत, स्व. मोहन शर्मा, व स्व. डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी की स्मृति में आयोजित कला प्रदर्शनियाँ अनूठी रही। इन कला प्रदर्शनियों के माध्यम से सुधी कलाजन अतीत में दिए गये इनके कलात्मक योगदान से परिचित हो सका। पैग, जयपुर ने अपने कलाकारों को मात्र कला शिविरों व प्रदर्शनियों तक ही सीमित नहीं रखा अपितु उन्हें राष्ट्रीय व सामाजिक सरोकारों से भी जोड़ने का प्रयत्न किया। भारत–पाक युद्ध (1971 ई.) व नेपाल–भारत में आए भूकम्प (2015 ई.) के अवसर पर पैग, जयपुर के करूणाशील व राष्ट्र प्रेम से ओत–प्रोत कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों

का प्रदर्शनियों के माध्यम से विक्रय कर, प्राप्त राशि को प्रधानमंत्री राहत कोष में प्रदान की। पैग ग्रुप के सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यक्रमों में बच्चों में चित्रकला में अभिरूचि के विकास की दिशा में आयोजित बाल–चित्र प्रदर्शनी व प्रतियोगिताओं का आयोजन भी महत्वपूर्ण हैं। पैग, जयपुर ने जयपुर आर्ट समिट के आयोजन से भी बहुत ख्याति अर्जित की है। इस आर्ट समिट के माध्यम से राज्य के कलाकारों व कला–समीक्षकों का परिचय राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जगत के ख्यातनाम कलाकारों व कला समीक्षकों से हो सका। पैग, जयपुर के कलाकार मोहन शर्मा, आर.बी. गौतम, डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, डॉ. जगमोहन माथोड़िया व सुभाष केकरे ने राजस्थान में अमूर्तन कला के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पैग, जयपुर के ही वरिष्ठ सदस्य चित्रकार डॉ. नाथूलाल वर्मा, कन्हैया लाल वर्मा ने नव–पारम्परिक कला व रणजीत सिंह ने नव यथार्थवादी कला में अपना योगदान दिया है वहीं, डॉ. राजीव गर्ग ने जलरंगों की पारदर्शी तकनीकों में विभिन्न प्रयोग करके अपनी एक नई सृजन शैली का परिचय राजस्थान के समकालीन कला–जगत को करवाया है। इस ग्रुप के कलाकार डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी(चित्र–156), मोहन शर्मा, आर.बी. गौतम(चित्र–157), रणजीत सिंह चूडावाला व कन्हैयालाल वर्मा को राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा कलाविद् (फैलोशिप) उपाधि से अलंकृत व मोनोग्राफ्स प्रकाशित कर इनके द्वारा समकालीन कला में दिए गए योगदान को ही एक तरह से प्रमाणित किया है। इस ग्रुप के डॉ. नाथू लाल वर्मा, डॉ. भवानी शंकर शर्मा, डॉ. राजीव गर्ग, डॉ. जगमोहन माथोड़िया व डॉ. ममता चतुर्वेदी आदि कलाकारों को भी कई राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त हुए हैं जो इनके द्वारा समकालीन कला में किये जा रहे प्रयासों का समर्थन करते हैं।

इसी तरह राज्य में कला सृजन को 'कलावृत्त संगठन' ने नये आयाम दिए है। आरम्भ में इस संगठन की गतिविधियाँ एकल व समूह प्रदर्शनियों के आयोजन तक ही सीमित रही किन्तु बाद में 'कलावृत्त' नाम से ही कला–पत्रिका के प्रकाशन को संगठन ने कला के प्रचार–प्रसार का माध्यम चुना। इस पत्रिका के अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित होते रहे हैं जो कि कला जिज्ञासुओं के लिए पठनीय व संग्रह योग्य होते थे। कलावृत्त ने अब तक पचास विशेषांक प्रकाशित करके कला साहित्य में श्री वृद्धि की है। राजस्थान में मूर्तिकारों के हित में कार्य करने की पहल भी कलावृत्त के द्वारा की गई। कलावृत्त द्वारा अब तक अखिल भारतीय स्तर पर लगभग सत्ताईस मूर्तिकला शिविरों का आयोजन किया गया है। इन शिविरों के माध्यम से राज्य के मूर्तिकारों को केवल कार्य करने का एक सम्मानित

मंच ही नहीं मिला अपितु उनकी कला की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान भी बन सकी। इन मूर्तिकार शिविरों के द्वारा राज्य का कला जगत अन्य राज्यों के मूर्तिकारों के कार्य कौशल से भी परिचित हो सका। कलावृत्त ने राज्य के प्रमुख स्थानों पर महापुरूषों की मूर्तियों की स्थापना भी की है। कलावृत्त के रामगोपाल विजयवर्गीय ने नव–पारम्परिक कला में विभिन्न धार्मिक, पौराणिक, सामान्य जनजीवन के विषयों को चित्रित कर व सुरेश चन्द्र राजोरिया ने प्रकृति के विविध रूपों को चित्रित कर राजस्थान की समकालीन कला में अमूल्य योगदान दिया है। वहीं सुमहेन्द्र ने नव–पारम्परिक व मूर्तिकला के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समसामयिक कला में दिए गये योगदान के फलस्वरूप कलावृत्त के प्रमुख कलाकार रामगोपाल विजयवर्गीय को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री व राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'कलाविद्' से विभूषित किया गया (चित्र–158) तथा इसके सदस्य चित्रकार सुरेश चन्द्र राजोरिया को भी राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा 'कलाविद्' उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सुमहेन्द्र को भी कई राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। कला–प्रकाशन व मूर्तिकला के क्षेत्र में कलावृत्त संगठन द्वारा राजस्थान की समसामयिक कला को दिया गया योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

दृश्य कलाओं के साथ–साथ प्रदर्शनकारी कलाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उदयपुर के 'आज' नामक कला संगठन का योगदान भी कला जगत में सराहनीय रहा है। 'आज' संगठन ने अन्य कला संगठनों की भाँति प्रान्तीय व अखिल भारतीय स्तर पर कला शिविरों, समूह व एकल प्रदर्शनियों, कला गोष्ठियों के आयोजन, चित्र पारदर्शियों के प्रदर्शन आदि विविध गतिविधियों के माध्यम से प्रदेश में कलात्मक वातावरण के निर्माण में महत्वपूर्ण प्रयास किये है। कला के विभिन्न तकनीकी व सैद्धान्तिक पक्षों, कला प्रयोगों आदि की जानकारी के आदान–प्रदान के उद्देश्य से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के ख्यातनाम कलाकारों व कला निर्देशकों की फिल्मों, स्लाइड शो व कला वार्त्ताओं का आयोजन भी 'आज' द्वारा किया गया। इन आयोजनों में डॉ. रतन परिमू, लक्ष्मण पै, प्रो. लोवेट, जॉन मार्कक्यूज के स्लाईड शो; डेविड होकनी, टॉम फिलिप्स, हेनरी मूर की कलात्मक फिल्में; आर.बी. भास्करन, रॉबर्ट हॉपर, सेलवान न्यूकिओं के कला विषयक व्याख्यान; मिस–रोसालिया की कला वार्त्ता व जापानी कला प्रशंसक आक्यूमारा के साथ की गई कला गोष्ठि प्रमुख है। इस सन्दर्भ में आज द्वारा उदयपुर में फ्रेन्च दूतावास के सांस्कृतिक विभाग के सहयोग से फ्रान्स के लूव्र संग्रहालय की 'चित्रमय फ्रान्स' नामक प्रदर्शनी का आयोजन भी उल्लेखनीय है। इस प्रदर्शनी में लूव्र संग्रहालय फ्रान्स के काल्कोग्राफी के चित्र प्रदर्शित

किये गये थे। इस प्रदर्शनी के माध्यम से राजस्थान के कलाकारों को फ्रान्स के काल्कोग्राफी के नमूने देखने को मिले। इन आयोजनों ने राजस्थान के कलाकारों को नये दृष्टिकोण से अपने कार्य करने के लिए प्रेरित किया। 'आज' ने चित्रकला, ग्राफिक्स, सिरेमिक्स, म्यूरल शिविरों के माध्यम से राजस्थान की समसामयिक कला का संवर्धन कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके साथ–साथ 'आज' द्वारा विशेष बालकों के लिए भी कला आयोजन किये गये जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष (1979 ई.) के असवर पर 'आज' द्वारा विशेष बालकों को चित्रकला के लिए आमंत्रित किया जाना व विकलांगता दिवस (1981 ई.) के असवर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना भी समसामयिक कला जगत के लिए यादगार बना रहेगा। 'आज' ने प्रदर्शनकारी कलाओं के विकास में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'आज' की प्रदर्शनकारी इकाई के द्वारा 'पशु–गायत्री', काल–कथा', 'अमर–बीज' आदि नाटकों का सफल मंचन किया गया है। 'आज' नामक इस रंगमण्ड़ल से आदिवासी व शहरी नाट्यकर्मी जुड़े हुए है। यह रंग मण्डल अपनी सफल नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल हुआ है। 'आज' के कलाकार शैल चोयल ने राजस्थान की नव–पारम्परिक कला का पोषण कर उसे पल्लवित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, वहीं सुरजीत चोयल ने 'फोटोरियल्ज़िम' व किरण मुर्ड़िया ने 'प्रकृति के अमूर्तांकन' से राजस्थान के समसामयिक कला जगत को परिचित करवाया है। 'आज' के बसन्त कश्यप व अब्बास बाटलीवाला ने राजस्थान के जनजीवन एवं जनकला के मिश्रण से अपनी स्वयं की एक शैली सृजित कर राजस्थान की समकालीन कला में अपना यथेष्ठ योगदान प्रदान किया है। 'आज' के शैल चोयल, भानु भारती, किरण मुर्डिया(चित्र–159), प्रभाशाह, सुरजीत चोयल आदि कलाकार प्रान्तीय स्तर ही नहीं वरन् राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रशंसित व पुरस्कृत हुये है। 'आज' कला संगठन व इसके कलाकारों द्वारा समसामयिक कला को दिये गये विशिष्ट योगदान के लिए सदैव सराहा जाता रहेगा।

इसी तरह से राजस्थान के इन संगठनों की भाँति ही अन्य प्रमुख कला संगठनों ने भी राज्य की कला सवंर्धन व कलाकारों को मान्यता दिलवाने के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस दिशा में बच्चों में सांस्कृतिक चेतना जागृत करने व मौलिक कला प्रतिभा को मुखरित करने को लेकर 'राजस्थान कला केन्द्र' व 'आदर्श लोक' कला संगठनों के द्वारा दिए गये योगदान भी महत्वपूर्ण है। राज्य के कोटा जिले में कला प्रदर्शनियों हेतु ललित कला अकादमी, जयपुर द्वारा कला दीर्घा का निर्माण किया गया जिसके प्रयासों का श्रेय रंगबोध कला संस्थान, कोटा को जाता है। इस संस्थान ने एक लम्बे संघर्ष के बाद यह

उपलब्धि प्राप्त की। रंगबोध संस्थान द्वारा महिला चित्रकारों व युवा कलाकारों की प्रदर्शनियों का आयोजन भी महत्वपूर्ण रहा है। इस संस्थान से चित्रकार सुभाष केकरे, रमेश सत्यार्थी, शरद इन्द्रा आदि का जुड़ाव रहा है। इनका भी समसामयिक राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र की कला में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। वहीं कोटा की ही साहित्य कला मन्दिर संस्था के द्वारा किये गये कलात्मक कार्यों में ललित कला के उत्थान, प्रख्यात कलाकारों के सम्मान व कला छात्रों को कला प्रशिक्षण देने सम्बन्धी कार्यक्रम भी उल्लेखनीय है।

चित्रकार रमेश सत्यार्थी के प्रयासों द्वारा बूंदी में स्थापित 'कलम' नामक संस्था ने बूंदी के लघुचित्रों की गरिमा बनाये रखते हुए बून्दी शैली के उन्नयन में अपना योगदान दिया। वही जयपुर में पद्मश्री कृपाल सिंह शेखावत (चित्र–160) व समदर सिंह खंगारोत 'सागर' (चित्र–161) के प्रयासों से अस्तित्व में आयी फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसाइटी ने भी राज्य में सृजनशीलता को नये आयाम प्रदान किये एवं राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान की पारम्परिक व समसामयिक कला की विशिष्ट पहचान बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। 'धोरा' और 'चितेरा' नामक संस्थाओं ने पश्चिमी राजस्थान में कला की अलख जगाई है। पश्चिमी राजस्थान की कला प्रतिभाओं को निखारने में इन संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी तरह अजमेर के 'अलंकृति', 'कैनवास' व 'आकार' संगठनों के प्रयासों से अजमेर के कलाकारों को प्रोत्साहन एवं राज्य व राज्य के बाहर अपनी पहचान बनाने का अवसर मिला है। 'अलंकृति' व 'कैनवास' कला संगठनों से जुड़े कलाविद् राम जैसवाल व 'आकार' कला संगठन से सम्बद्ध चित्रकार डॉ. अनूपम भटनागर, लक्ष्यपाल सिंह राठौड़ का कलात्मक योगदान भी समसामयिक कला जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

राजस्थान में कला सम्बन्धी शोध कार्य को प्रोत्साहित करने के क्षेत्र में विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स (वास्ट) ने कला शोध पत्रिका का प्रकाशन कर राज्य में कला सम्बन्धित शोध प्रकाशनों की रिक्तता की पूर्ति का प्रयास किया है। इस संस्थान से राज्य के लगभग सभी विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों के कला शिक्षक सम्बद्ध है। इसमें कला सम्बन्धित शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन कर राजस्थान के समसामयिक कला जगत में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी तरह राजस्थान के अन्य कला संगठनों में 'मयूर–6'(चित्र–162), 'चितेरी', 'अकंन', 'आयाम', 'आकृति', 'हस्ताक्षर', 'वी' व 'जोधपुर कलाकार परिषद', 'बून्दी ब्रश' आदि ने भी कला के विकास और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में अपना यथेष्ठ योगदान दिया है।

विगत चार दशकों में कला संगठनों ने अपनी अनवरत गतिविधियों के द्वारा प्रांतीय कला क्षितिज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिन आस्थाओं और विश्वास के बलबूते पर इन संगठनों ने अपने पैर जमाये थे वह इन संगठनों से जुड़े रचनाशील, प्रयोगधर्मी कलाकारों की ऊर्जा बनकर कला जगत के लिए एक अनुभव के रूप में सामने आया। इन संगठनों ने कलाकारों की एक ऐसी लम्बी श्रृंखला पैदा कर दी जिन्होंने प्रान्त की आधुनिक कला संवेदनाओं को समृद्ध करने तथा विकसित करने की जबरदस्त पहल की है। इन संगठनों से जुड़े कलाकारों के योगदान को भी कभी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा। इन संगठनों के कलाकारों ने सृजनशीलता एवं प्रयोगधर्मिता में विश्वास रखते हुए राजस्थान व राजस्थान के बाहर प्रमुख कला दीर्घाओं में अपनी श्रृंखलाबद्ध समूह व एकल प्रदर्शनियाँ आयोजित कर समस्त देश में राजस्थान के कला परिदृश्य को स्थापित किया और राजस्थान के कला जगत की राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। जहाँ एक ओर इन संगठनों ने अपनी नित–नवीन सृजनात्मक व प्रयोगात्मक गतिविधियों से राजस्थान के समसामयिक कला संसार को प्रभावित किया वही ऐतिहासिक कला धरोहर के संरक्षण के प्रति भी सजगता दिखाई। इन संगठनों के सदस्य कलाकारों को राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय एवं राज्य प्रदर्शनियों, सेमिनारों, शिविरों व कार्यशलाओं में आमंत्रित किया जाता रहा है। कई अन्तर्राष्ट्रीय–राष्ट्रीय व राज्य पुरस्कारों से इनको विभूषित किया गया। इन कला संगठनों के प्रमुख कलाकारों की कलाकृतियों को देश–विदेश, राज्य की प्रमुख कला अकादमियों, कला दीर्घाओं व संग्रहालयों में देखा जा सकता है। राजस्थान के इन कला संगठनों के द्वारा दिए गये कलात्मक योगदान से सम्पूर्ण राजस्थान का कला जगत गौरवांवित हुआ है।

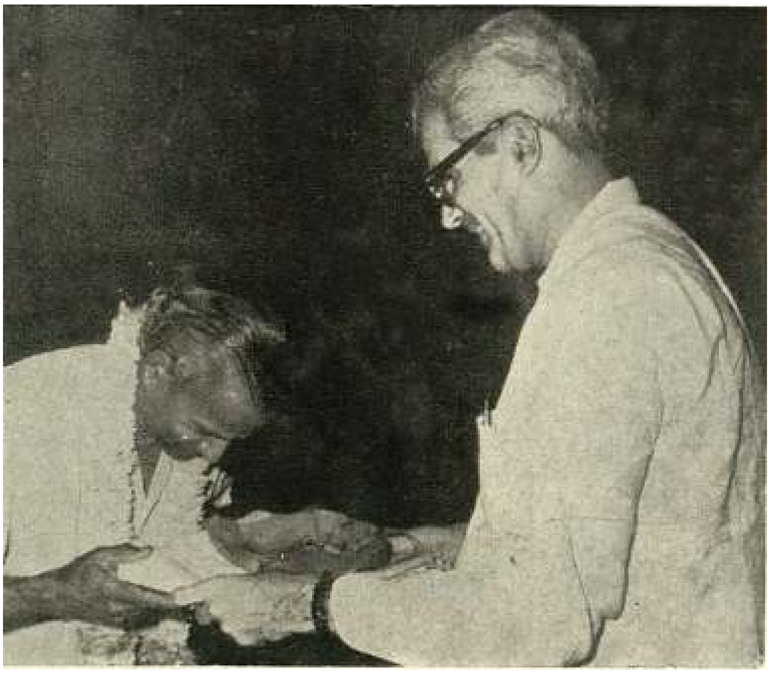

fp=&153 ¼ rfydk dykdkj ifj"kn] mn;ij d lLFkkid lnL; xko/kuyky tk'kh
dk ^dykfon* ¼1972&73 b-½ dh mikf/k l lEekfur djr g,
jktLFkku yfyr dyk vdkneh d rRdkyhu v/;{k Jh jkefuokl fe/kk

fp=&154 ¼ rfydk dykdkj ifj"kn] mn;ij d lLFkkid lnL;
ik- ih-,u- pk;y dk ^dykfon* ¼1981&82 b-½ dh mikf/k
l lEekfur djr g, i[;kr fp=dkj d-d- gCckj

fp=&155 % V[ke.k&28 d lLFkkid lnL; lj'k 'kek dk
^dykfon*@Qykf'ki ¼1984&85 b-½ dh mikf/k l
lEekfur djr g, jkefuokl fe/kk

fp=&156 % ikxflo vkfVLV xi] t;ij d lfØ; lnL;
Mk- iepUn xkLokeh dk ^dykfon* ¼1986&87 b-½ dh mikf/k l
lEekfur djr g, jktLFkku fo/kku lHkk d rRdkyhu
v/;{k Jh fxjkt ilkn frokMh

fp=&157 % ikxflo vkfVLV xi] t;ij d lLFkkid lnL; Mk- vkj-ch- xkre dk ^dykfon* ¼1995&96 b-½ dh mikf/k l lEekfur djr g, iùJh jkexkiky fot;oxh;

fp=&158 % dykoÙk lLFkku d lLFkkid v/;{k Jh jkexkiky fot;oxh; dk ^dykfon* ¼1970 b-½ dh mikf/k l lEekfur djr g, rRdkyhu f'k{kk e=h Jh f'kopj.k ekFkj

fp=&159 % vkt lxBu] mn;ij dh lLFkkid lnL;
fdj.k efM;k dk dUnh; yfyr dyk vdkneh] ub fnYyh
d jk"Vh; dyk ijLdkj ¼1989 b-½ ls lEekfur djr g,
rRdkyhu mi&jk"Vifr Mk- 'kdj n;ky 'kek

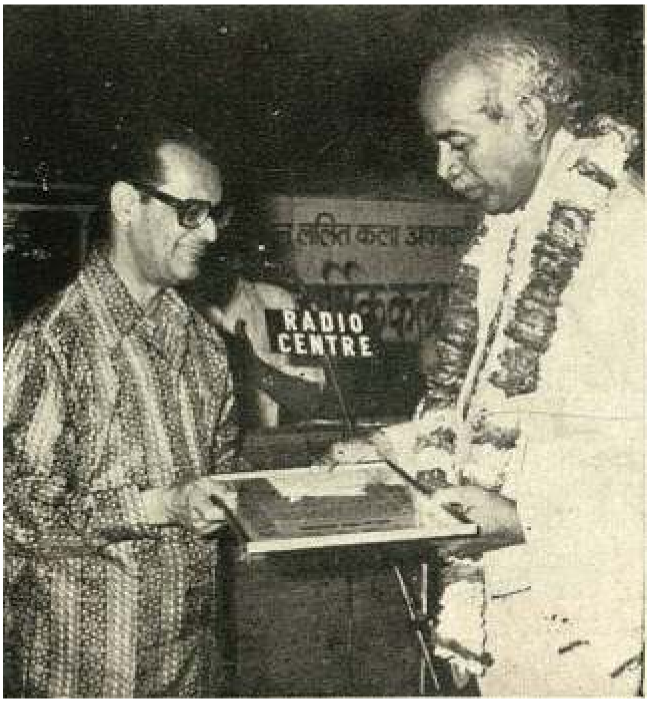

fp=&160 % Qkbu vkV ,Dl i'ku lklk;Vh ¼Ql½] t;ij
d lj{kd iùJh —iky flg 'k[kkor dk
^dykfon* ¼1979&80 b-½ dh mikf/k ls lEekfur djr g,
jktLFkku d rRdkyhu e[; lfpo Jh ekgu e[kth

fp=&161 ½ Qkbu vkV ,Dli'ku lklk;Vh ¼Ql½] t;ij d lfpo o
vkV dkfly vkQ jktLFkku] t;ij d l=/kkj lenj flg [kxkjkr ^lkxj*
dk QMj'ku vkQ jktLFkku g.MhØk¶V ,DlikVl&2005 b- dk ijLdkj l
lEekfur djr g, rRdkyhu mijk"Vifr egkefge Jh Hkjkflg 'k[kkor

fp=&162 ½ e;j&6] ouLFkyh d lLFkkid lnL;
ik- nodh unu 'kek dk ^dykfon* ¼1980&81 b-½
dh mikf/k l lEekfur djr g, rRdkyhu egkefge
jkT;iky j?kdy fryd

संदर्भ ग्रंथ सूची

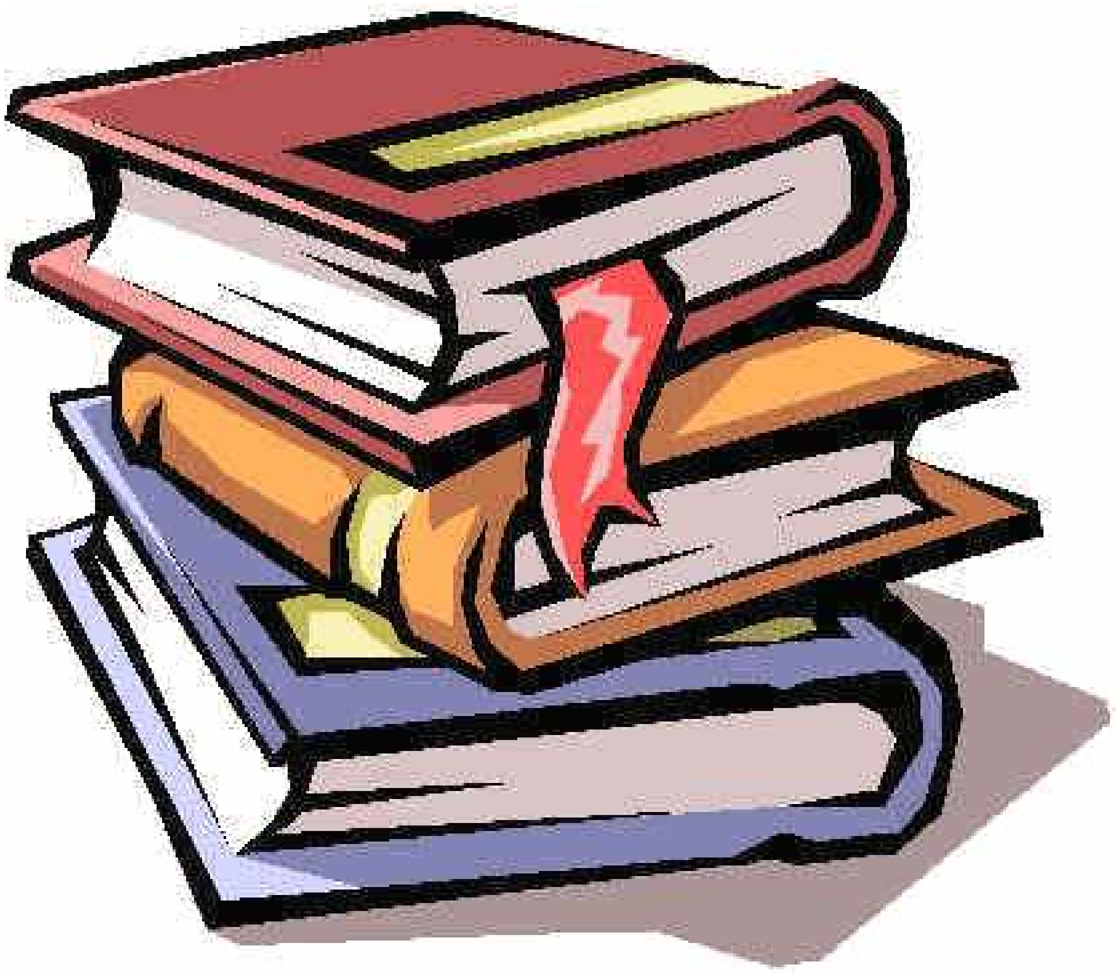

हिन्दी सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, आर.ए. : कला विलास–भारतीय चित्रकला का विकास, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1984 ई.
  भारतीय चित्रकला का विवेचन, लायल बुक डिपो, मेरठ 2002 ई.
- अग्रवाल, आर.ए.; शर्मा, एस.के. : रूपप्रद कला के मूलाधार, लायक बुक डिपो, मेरठ, 2000 ई.
- अग्रवाल, आर.ए. एवं चोयल, पी.एन. : चित्र संयोजना, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1981 ई.
- अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम, अशोक प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 1980 ई.
- अग्रवाल, श्याम बिहारी (सम्पादक) : रूप शिल्प, इलाहाबाद, 1986 ई.
- आर्य, विनोद कुमार : भारतीय कला की कहानी, अंकुर बुक डिपो, अजमेर, 2001 ई.
- उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर : भारतीय कला की कहानी, दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी, जयपुर, 1994 ई.
- उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर (सम्पादक) : राजस्थान के रंग, जवाहर कला केन्द्र एवं राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1998 ई.
- ओझा, डॉ. गो.ही. : राजपूताना का इतिहास, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1986 ई.
- कक्कड़, कृष्ण नारायण : समकालीन कला–सन्दर्भ तथा स्थिति, ललित कला अकादमी, दिल्ली, 1980 ई.
- कौशिक, विधु : कला चिंतन, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2002 ई.
- गणेशन, एस.एन. : अनुसंधान प्रविधि सिद्धान्त और प्रक्रिया लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007 ई.

- गुर्टू, शचिरानी : कला के प्रणेता, बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली, 1965 ई.
- गैरोला, वाचस्पति : भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, 1963 ई.
- गोस्वामी, डॉ. प्रेमचन्द्र : राजस्थान संस्कृति, कला एवं साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010 ई.

  रूपप्रद कला के मूलाधार; अनन्त पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2000 ई.
- गौत्तम, आर.बी.; भटनागर, शैलेन्द्र : राजस्थान की महिला चित्रकार, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, राजस्थान एवं ललित कला अकादमी, नई दिल्ली; 1991 ई.
- गौतम, डॉ. त्रिलोकी नाथ : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, ज्ञान मन्दिर, जयपुर 2010 ई.
- चन्द्र, मोती : प्राचीन भारत के प्रसाधन, निर्जालंकार, 1958 ई.
- चतुर्वेदी, डॉ. ममता : भारतीय समकालीन कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 ई.

  सौन्दर्यशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 ई.
- चौहान, दिलीप सिंह, (सम्पादक) : दस समसामयिक कलाकार, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर 1990 ई.
- जैन, डॉ. पी.सी. : संगठनात्मक व्यवहार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010 ई.
- जोशी, ज्योतिष : आधुनिक भारतीय कला, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, 2007 ई.
- दमामी, ए.एल. : राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद्, हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, 2004 ई.

- नीरज, डॉ. जयसिंह : राजस्थानी चित्रकला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2009 ई.
- पनगड़िया, डॉ. बी.एल. : राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1985

  लोक संस्कृति रूप और दर्शन (भाग 1–2), बीकानेर
- बसु, नन्दलाल : शिल्प चर्चा (बंगला) विश्वभारती ग्रन्थालय, कोलकाता
- भारद्वाज, विनोद : कला का रास्ता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011 ई.

  बृहद् आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009 ई.

  समकालीन भारतीय कला एक अन्तरंग अध्ययन, नई दिल्ली, 1982 ई.
- भावसार, डॉ. वीरबाला : सौन्दर्य–दर्शन, साहित्यागार, जयपुर 2012 ई.
- मागो, प्राणनाथ : भारत की समकालीन कला, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 2006 ई.
- मेहता, नानालाल चिमनलाल : भारतीय चित्रकला, हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद, 1933 ई.
- राय, कृष्णदास : भारत की चित्रकला, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1963 ई.
- वर्मा, कन्हैयालाल : मेघदूत–चित्रण, जयपुर, 2013 ई.
- वर्मा, भंवरलाल; बज, धन्नालाल : दृश्यांकन के मूलाधार; अंकुर बुक डिपो, अजमेर 1999 ई.
- वाजपेयी, डॉ. राजेन्द्र : सौन्दर्य, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2009 ई.
- विजयवर्गीय, रामगोपाल : राजस्थानी चित्रकला, विजयवर्गीय कला मण्डल, जयपुर, 1957 ई.

अभिसार निशा, राजस्थान साहित्य अकादमी, जयपुर, 1963 ई.

- व्यास, डॉ. राजेश : कलावाक्, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर; 2010 ई.
- वशिष्ठ, डॉ. राधाकृष्ण : राजस्थान की आधुनिक कला और कला सर्जक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2015 ई.
- शुक्ल, प्रयाग : आज की कला, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008 ई.
- शुक्ल, रामचन्द्र : कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1977 ई.
- शर्मा, एम.के. 'सुमहेन्द्र' (सम्पादक) : जयपुर कला और कलाकार, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1978 ई.
- साखलकर, र.वि. : आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1972 ई.

  कला कोष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1998 ई.

  कला के अन्तः दर्शन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2004 ई.

  राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर; 1998 ई.
- हल्दार, असित कुमार : भारतीय चित्रकला, लखनऊ, 1963 ई.

शोध ग्रन्थ (अप्रकाशित)

- गर्ग, राजीव : आधुनिक भारतीय जलरंग चित्रण परम्परा : एक समीक्षात्मक अध्ययन, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, 1995 ई.
- काजी, एस.एच. : टखमण 28 एवं राजस्थान की समसामयिक कला, मोहन लाल सुखाड़िया, विश्वविद्यालय, उदयपुर, 1998 ई.
- गोयल, निशी : राजस्थान के कलात्मक वैभव में प्रदेश की कला शिक्षण संस्थाओं का महत्व एवं योगदान, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, 2000 ई.
- नरूका, योगेन्द्र सिंह : कलाविद् डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी : कृतित्व व व्यक्तित्व (लघु शोध प्रबन्ध), महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, 2008 ई.
- रघुनाथ : राजस्थान की समकालीन कला में दृश्य कला विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के योगदान का प्रदेश के अन्य समकक्ष विभागों से तुलनात्मक अध्ययन, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, 2012 ई.

प्रमुख हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ एवं ग्रन्थ

- अमृत बाजार पत्रिका, कोलकाता
- अखिल भारतीय, कला द्वैवार्षिकी एवं रेखांकन प्रदर्शनी विवरणिकाऐं 1991 से 2015 ई. राजस्थान ललित कला, अकादमी, जयपुर
- आकृति मासिक–त्रैमासिक, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर
- आकृति समाचार बुलेटिन मासिक राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर
- आभार, राजस्थान ललित कला अकादमी व पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर, 1998 ई.
- इतवारी पत्रिका, राजस्थान पत्रिका, जयपुर
- कला किरण, सं. अरूणा शेखावत त्रैमासिक पत्रिका, वैशाली नगर, जयपुर
- कला संवाद, समसामयिकी एवं कटेम्परॅरि आर्ट, ललित कला अकादमी, दिल्ली

- तूलिका कलाकार परिषद, उदयपुर; टखमण 28, उदयपुर; प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप, जयपुर; कलावृत, जयपुर; आज, उदयपुर आदि की विभिन्न एकल एवं समूह प्रदर्शनी विवरणकाएँ, 1958 से 2015 ई.
- दैनिक नवज्योति, अजमेर
- दैनिक भास्कर, जयपुर
- धर्मयुग एवं साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली
- फिल्मांकन, जयपुर
- फुटपाथ (साप्ताहिक), उदयपुर
- मधुमती, राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी, उदयपुर, मासिक पत्रिका
- मनीषी—वार्षिक पत्रिका, 1965 एवं 1966, दयानन्द कॉलेज, अजमेर
- मोनोग्राफ, राजस्थान के सभी सम्मानित चित्रकार, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर
- मोनोग्राफ, भारत के सभी सम्मानित चित्रकार, केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली
- राजस्थान की समसामयिक कला, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, 1989
- राजस्थान के रंग, राजस्थान ललित कला अकादमी तथा जवाहर कला केन्द्र, जयपुर, 1998
- राजस्थानी चित्राधार, जोधपुर
- राजस्थान पत्रिका, जयपुर
- रूपांकन, पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ, जयपुर, 1991
- वार्षिक प्रदर्शनी विवरणिकाऐं 1958 से क्रमशः ललित कला अकादमी, दिल्ली
- वार्षिक प्रदर्शनी विवरणिकाऐं 1958 से 2015 ई. राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर
- विश्वभारती पत्रिका, कोलकाता
- शिविरा मासिक पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर
- सज्जन कीर्ति सुधाकर गजेटियर मेवाड़ राज्य, 1882—1948 ई.
- समकालीन कला : ललित कला अकादमी, नई दिल्ली
- सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशालय, जयपुर (द्वैमासिक)
- 'त्रिए' कला पत्रिका, शोध विशेषांक, आगरा, 1989
- 'त्रिए' इण्डिया कन्टेम्परॅरि आर्ट रिसर्च जर्नल, आगरा, 1993

Bibliography

- Alexander, Carter : Educational Research, Columbia University, New York, 1929.
- All, Maslow : Motivation and Personality, Harper and Row New York, 1954.
- Almack, J.C. : Research and Thesis Writing, Houghton mifflin company, Boston, 1930.
- Anand, Mulk Raj : Hindu View of Art, Asian Publishing House, Bombay, 1957.
- Anderson, J., Durston, B.M. and Poole, Millicent : Thesis and Assignment writing, wiley eastern Ltd. New Delhi, 1970.
- Andrew, J. Dubrin : The practice of Managerial Psychology, Pergamon Press, Elmsford, New York, 1972.
- Appasamy, Jaya : Sailoz Mukherjee, ed., Lalit Kala Akademi, New Delhi, 1966.
  Gopal Ghose, ed., L.K.A., New Delhi. 1966.
- Arhheim, R. : Art and Visual Perception, California Press, 1960.
- Ari, Kier : A Strategy for Handing Executive Stress, Nelson-Hall, Chicago,1975.
- Arnason, H.H. : History of Modern Art, Prentice-Hall, Inc. N.Y., 1977.
- Baron and Green : Behaviour in Organisations: Understanding and Managing the Human Side of Work, Allyn and Bacon, 1990.

- Barr, A.H. : Masters of Modern Art, N.Y.,1937.
- Batra, H.C. : The Relations of Jaipur State with the East India Company, Delhi 1971.
- Bernard, Dunstan : Painting in Progress, New York, 1976.
- Best, John : Research in Education, Prentice Hall of India Pvt. Ltd. New Delhi, 1983.
- Bharatha, Iyer K. : Indian Art : A Short Introduction, Bombay, 1958.
- Bhattacharya, Vivek : Tagore : The Citizen of the World with an Introduction by S.
- Blacker, J.F. : The A B C of Indian Art, Stanley Paul & Co., London, 1922.
- Bohura, G.N. : Catalogue of Manuscripts in the Maharaja of Jaipur Museum, Jaipur, 1971.
- Brown, Percy : The Heritage of India : Indian Painting, Calcutta, 1930.
- Canaday, John : Mainstreams of Modern Art, London, 1959.
- Champawat, Fatehsingh : A Brief History of Jeypore, Jaipur, 1899.
- Charles, R. Jonsen : Studying Art History, Prestice Hall, U.S.A., 1968.
- Charles, Tomlinson : Cyclopaedia of Useful Arts & Manufactures, The Great Britain Leaving Diverpoal George Virtue, London, 1853.
- Chris, Argyris : Personality and Organisation. Harpe and Row, New York, 1957.

- Coomaraswamy, A.K. : The Aims of Indian Art, E.H.P., Broad Campden, 1908.
- Dasgupta, S.N. : Fundamefttals of Indian Art, B.V.B., Bombay,1960
- Datta, Ella : Lines and colours-Discovering Indian Art, National Book Trust of India, New Delhi, 2005.
- David, A. Whetten and Kim S. Cameron : Developing Management Skills, PH1, New Delhi, 2008.
- David, J. Lawless : Organisational Behaviour : The Psychology of Effective Management, Prentice Hall, N.J., 1979.
- Desai, Dr. Vishaka : Life at Court—Art for Indias Ruleres, U.S.A., 1987.
- Earnest, Chesneau : The English School of Painting, London, 1891.
- Edger, H. Schein : Organisational Culture and Leadership, Jossery-Bass, San Franscisco, 1985.
- Elwes, A.T. : Animal Drawing, London, 1882.
- Feldman, E.B. : Varieties of Visual Experience, N.J., 1972.
- Fred, Luthans : Organisational Behaviour, McGraw Hill, 2002.
- Gangoly, O.C. : Masterpieces of Rajput Painting, "Rupam", Calcutta, 1926.
  The New Indian School of Painting, J.I.A., 1916.
- Gauttam, R.B. (Ediror) : Mohan, Progressive Artists Group, Jaipur, 1982.
- Ghose, Sanker : Indian National Congress, Its History and Heritage, All India

Congress Committee, New Delhi, 1975.

- Gibson, Lvaneewich and Donnerly : Organisation, Structure, Behaviour and Process Business Publications, Texas, 1970.
- Goswamy, B.N. : Essence of Indian Art, San Francisco, 1986.
- Gray, Basil : Treasures of Asia—Indian Painting, Skira Publication, Geneva, 1978.
- Grosser, M. : The Painter's Eyes : A Mentor Book, New American Library.
- Hackman : Behaviour in Organisation, McGraw Hill., 1975.
- Handley, T.H. : Jaipur Portfolio, Jaipur, 1898.
- Havell, E.B. : A Handbook of Indian Art, Lodnon, 1908.
- Henry, Blackburn : Illustrated Catalogue, British Fine Art Section, London, 1989.
- Henry, N. Rasmusen : Art Structure —The Text Book of Creative Design, New York, 1950.
- Herbert, Read : A Concise History of Modern Painting, London, 1959.
- Hicks and Gullett : Organisation : Theory and Practice McGraw Hill., New York, 1965.
- Hillway, Tyrus : Introduction to Research, Houghton mifflin company, Boston, 1956.
- Hoding, J.P. : The Dilemma of Modern Drawing, London, 1956.

- Hospers, John : Artistic Expression, Meredith Corporation, N.Y., 1971.
- Hugh, Honour : A World History of Art, Macmillan, London, 1956.
  Ideals of Indian Art, London, 1920.
  Indian Sculpture & Painting, London, 1908.
  Introduction to Indian Art, T.P.H. Adya, Madras, 1956.
- Iverson, Margaret, R. : Research Papers Simplified, Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi, 1970.
- Jacobs, Michal : The art of composition Primatic Art Co. Rumson N.J., 1956.
- Jain, J.L. & Ajmera, K.L. : The Jaipur Album or All about Jaipur, Rajasthan Directory Pub. House, 1935.
  Jaipur Trials, The Detailed account of Jhootaram and others, Calcutta, 1857.
- Jean, Casson, : The Sources of Modern Art, Thames & Hudson, London, Emili & N.P. 1959.
- Jeanclay & Realites : Impressionism, Octopus Books Ltd., London, 1977.
- Joseph, Emile : A Century of Modren Painting, Muller & P.E. Thame and Hudson, London, 1972.
- Kallen, N.M. : Art & Freedom, 2 Vols., N.Y., 1943.
- Kanji lal, Kajal : History of Indian Art, New Saraswati House (India) Pvt. Ltd., New Delhi, 2015.

- Karunakaran, K.P. : Modern Indian Political Tradition, New Delhi, 1962.
- Keith, Davis : Human Behaviour at Work : Organisational Behaviour, Tata McGraw, New Delhi, 1985.
- Kelly, J. : Organisational Behaviour, Richard D. Irwin, Homewood Inc., 1974.
- Khandalawala, K. : Amrita SherGill, Bombay, 1944.
- Knobler, N. : Visual Dialogue, New York, 1971.
- Kramrisch, S. : The 'Art of India, London, 1954.
- Krishnan, S.A. : Artists Directory, Lalit Kala Academy, New Delhi, 1981.

  Kshitindra Nath Majumdar, ed., L.K.A., New Delhi, 1967.
- Lal, Kanhaia : Indian Woman and Art in Life, Bombay, 1933.

  Later Mewar, Jaipur, 1985.
- Lawrence and Lorsh : Handbook of Organisational Behaviour, Prentice Hall, 1987.

  Laxman Pai, ed., L.K.A., New Delhi, 1971.

  Lekha XXXI I-2, 1961.
- Majumdar, Ray & Datta : An Advanced History of India, London, 1965.
- Manohar, Kaul : Trends in Indian Painting, New Delhi, 1961.
- Mathias, Duval : Artistic Anatomy, London, Paris & Melborne, 1895.
- Mauricede, Sausmarez : Basic design, The Dynamics of Visual Form, N.Y., 1971.

  Metropolitian Book Co., 1961.

- Mishra, B.S. : The Indian Middle Classes, Their Growth in Modem - Times, London, 1961.
- Mooketjee, Ajit : Modern Art in India, Oxford Book Co., Calcutta, 1956.
- Mukherjee, K.K. : Creative Art in all aspects of Design, Khurja, 1951.
- Naik, Neeta Satish : Kala Kird—Art & artists directory Bombay, 1986.
  Nand Lal Bose, L.K.A., New Delhi, 1984.
- Nicholas : Introduction to Behaviour Science, John Wiley and Sons. New York, 1969.
- Pardesi, D.B. : The History & Development of Sir J.J. School of Art, Bombay (Thesis), 1982.
- Parimoo, Ratan : The Paintings of three Tagores- Awnindra Nath, Gagnendra Nath, Ravindra Nath, Chronology and Comparative Study, M.S. University, Baroda, 1973.
- Paul, Hursey and Blanchard : Management of Organisational Behaviour, prentice Hall, New Delhi, 1989.
- Peter, F. Drucker : Managing in Turblent Times, Harper and Row, New York, 1980.
- Peter, F. Drucker : The Practice of Management, Harper and Row, New York, 1954.
- Philippe, Garner : Art Nouveau for collectors- Hamlyn, London, 1974.

- Ramchandra, Rao P.R. : Modern Indian Painting, Madras, 1953.
  Contemporary Indian Art, Hyderabad, 1969.
- Rao, Bahadur N.S. : A Brief History of Jaypore, Jaipur, 1939.
- Rawald, B. : Art in East & West, Combridge, 1954.
- Rawlinson, M.G. : India A Short Cultural History, London, 1948.
- Reddin, W.J. : Effective Management, Tata McGraw, New Delhi, 1987.
- Rewald, J. : The History of Impressionism, 4th Ed., N.T., 1973.
- Robert, H. Miles : Macro Organisational Behaviour, Goodyear, Santa Monica, Calf, 1980.
- Robert, P. Vecchio : Organisational Behaviour, Dryden, Chicago, 1988.
- Room for Wonder : Indian Painting
  during the British Period, New York, 1979.
- Rosenblum, R. : Tranformations in Late Eighteenth Century Art, Princeton, 1967.
  Sankho Chaudhuri, ed., L.K.A., New Delhi, 1979. Delhi, 1980.
- Saxena, K.S. : The Political Movement and Awakening in Rajasthan,
- Sharma, G.N. : Social Life in Medieval Rajasthan, Agra, 1968.
- Sharma, Lokesh Chandra : Indian Painting, Goel Publishing House, Meerut, 2011.

- Sivararna, Murti C. : Indian Painting, N.B.C., New Delhi, 1980.
- Somani, R.V. : History of Mewar, Jaipur, 1976.
- Srivastawa, V.S. : Cultural Contours of India, Abhinav Publications, New Delhi, 1981.
- Stephen, P. Robbins : Organisational Behaviour, Prentice Hall, New Delhi, 2007.
- Steven, L. Mcshane, Glinow, Von and Sharma Radha, R., : Organsational Behaviour, Tata McGraw, New Delhi, 2006.
- Subramanyam, K.G. : Folk Art & Modern Artists in India, L.K.A., 1969.
- Syilagyi and Wallance : Organisational Behaviour and Performance,Scott, Foresman, Glenview, 1987.
- Vashistha, R.K. : Art & Artists of Rajasthan, Abhinav Publications, New Delhi, 1994.
- Venkatachalam, G. : Contemporary Indian Painters, Bombay.
- Welch, Stuart Cary : Indian Drawings & Painted Sketches, N.Y., 1976.
- Wilenski, R.H. : The Modern Movement in Art, London, 1976.
- Zimmer, H. : The Art of Indian Asia, 2 Vols., New York, 1955.

Journals, Catalogues & Encyclopedias

- Art Bulletin, Vol. XLVIII, 1966.
- Art News (Monthly) All India Fine Arts & Crafts Society, New Delhi.

- Amrit Bazar Patrika, Calcutta.
- Apollo 1909-10, Russian Magazine, Munich
- Black & White, London (Weekly), 1896-97.
- The Bombay Art Society, Bombay.
- Centenary Souvenir, Sir J.J. School of Art, Bombay 1857-1957.
- Centenary, Government College of Art & Craft, Calcutta, 1864-1964.
- Catalogue—German Expressionist Painting—National Gallary of Modern Art, New Delhi, 1982.
- Encyclopedia of World Art, Vol. II to XIV, McGraw Hill.
- Journal of the Indian Society of Oriental Art, Calcutta.
- The Jaipur Pocket Directory, Jaipur, 1935
- Notes on Jaypore for the guidance of visitors—Ajmer Rajputana Mission Press, 1899.
- The Jaipur Civil List Part-I, Allahabad, 1946.
- Kalavritt, Jaipur, 1980 and others.
- Lalit Kula Contemporary (Quarterly), New Delhi.
- Leonardo—Great Britain, A Journal of International Society.
- Marg, Marg Publication, Bombay.
- Modern Review (Monthly), Calcutta.
- Pictorial Space on Contemporary Indian Art, L.K.A., 1977.
- Post Centennial Silver Jubilee Sir J.J. School of Art, 1857-1982.
- The Quarto, A Quarterly Pub. for Slade, London, 1896.
- Roopam (Quarterly), Calcutta.
- Roop Lekha (Quarterly), AIFACS, New Delhi.
- Report of the year 24 November, 57—Oct. 58 R.L.K.A., Jaipur.
- Raja Ravi Varma, New Perspective Editor, National Museum, N.D., 1993.
- Story of Sir J.J. School of Art, Bombay, 1857-1957
- Seminar on Art Education 1956, L.K.A., New Delhi.
- The Visvabharati Quarterly, Vol. 47-No. 2., 1981
- "The Desert and Beyond", presented by the British Council at the Queen's Gallery, The British Council, New Delhi.
- Vast & Vision, Visual Art Society for Teacher, Udaipur.
- "We 13 Printmakers" Exhibitation of Prints, 2000-2001.

Websites

- artcollegechd.nic.in
- bharatbhawan.org
- delhi.gov.in
- heymuseums.in>Birla-Academy-of-Art
- https://en.m.wikipedia.org>wiki>Auction house
- https://en.m.wikipedia.org>wiki>Lucknow college of Arts
- https://en.m.wikipedia.org>wiki>National Gallery of Modern Art, New Delhi
- https://en.m.wikipedia-org>wiki>college of fine Arts Kerala, Trivandrum
- https://mikebrandlyauctioneer.wordpress.com
- lalitkala.gov.in/grahi.html
- lalitkala.gov.org
- mohileparikhcenter.org
- rbu.ac.in
- www.aiface.org.in
- www.artnewsnviews.com
- www.artsocietyof india.org
- www.bhu.ac.in
- www.birlaart.com
- www.bombayartsociety.org
- www.chitralekha.org>articles>Sarada ukil
- www.chitralekha.org>mukul-dey>quinquennial report of the government school of art, 1927-1932
- www.criticalcolletive.in>Artist Ginner
- www.karnatakachitrakalaparishath.com
- www.Saatchigallery.com>art college> college of fine Arts Bangalore
- www.Sodelhi.com>museums-art-galleries
- www.takhmn.com

परिशिष्ट

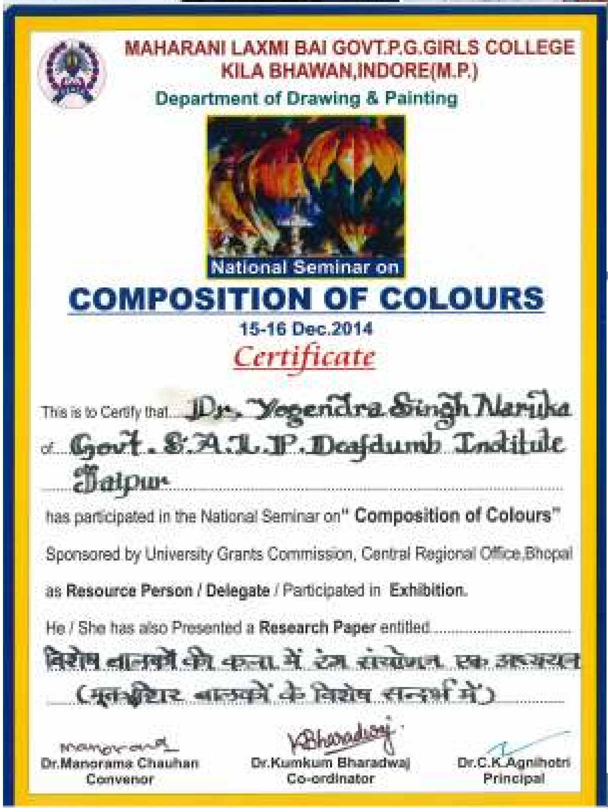

MAHARANI LAXMI BAI GOVT.P.G.GIRLS COLLEGE
KILA BHAWAN,INDORE(M.P.)
Department of Drawing & Painting

National Seminar on
COMPOSITION OF COLOURS
15-16 Dec.2014
Certificate

This is to Certify that Dr. Yogendra Singh Naruka
of Govt. S.A.L.P. Deafdumb Institute
Jaipur
has participated in the National Seminar on " **Composition of Colours**"
Sponsored by University Grants Commission, Central Regional Office,Bhopal
as **Resource Person / Delegate** / Participated in **Exhibition.**
He / She has also Presented a **Research Paper** entitled
विशेष बालकों की कला में रंग संयोजन एक अध्ययन
(मूकबधिर बालकों के विशेष सन्दर्भ में)

Dr.Manorama Chauhan
Convenor

Dr.Kumkum Bharadwaj
Co-ordinator

Dr.C.K.Agnihotri
Principal

RAJASTHAN
LALIT KALA AKADEMI
J-15, Jhalana Institutional Area, Jaipur-302017

CERTIFICATE

This is to certify that
Yogendra Singh Naruka, Lecturer
of Govt. S.A.L.P. Deaf Dumb Institution Jaipur
has participated in All India Art Seminar & 18th Kala Mela held from 12th to 16th March 2015 at Jawahar Kala Kendra, Jaipur
The organizers of the event places on record their gratitude for the kind gesture of active participation.

18 कला मेला

Convenor

Secretary

ifjf'k"V&1

Hkkjr d iе[k dykdkjk] dyk y[kdk ,o dyk leh{kdk l 'kk/kkFkh }kjk lk{kkRdkj

fp=dkj 'kkfUr no d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj tfru nkl d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj xkih xtokuh d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj ,l-Mh- okl no d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj Jh/kj v¸;j d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj t; >kjfB;k d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj ,o dyk yf[kdk ik- ohjckyk Hkkolkj
d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj vU tuh jMMh d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj nhid f'kUn d lkFk 'kk/kkFkh

fp=dkj ljUniky tk'kh l lk{kkRdkj
djr g, 'kk/kkFkh

dyk&leh{kd i;kx 'kDy d lkFk 'kk/kkFkh

dyk&leh{kd foukn Hkkj}kt d lkFk 'kk/kkFkh

ifjf'k"V&2

jktLFkku d iqe[k dyk lxBuk d lLFkkidk ,o mud iqe[k dykdkjk l 'kk/kkFkh }kjk lk{kkRdkj

rfydk dykdkj ifj"kn] mn;iqj d iFke lfpo
Mk- ch-,y- 'kek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

rfydk dykdkj ifj"kn d oreku lfpo
johUn nk;ek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;iqj d lLFkkid lnL; dykfon
lj'k 'kek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;iqj d lLFkkid lnL;
,y-,u- oek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;iqj d lnL; dykdkj
Mk- 'kCchj glu dkth l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;iqj d lnL; dykdkj
Mk- fo|klkxj mik/;k; l lk{kkRdkj djr g,

V[ke.k&28 o okLV] mn;ij d lnL; dykdkj
Mk- j?kukFk 'kek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;ij d lnL; dykdkj
Mk- fo".k ekyh l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

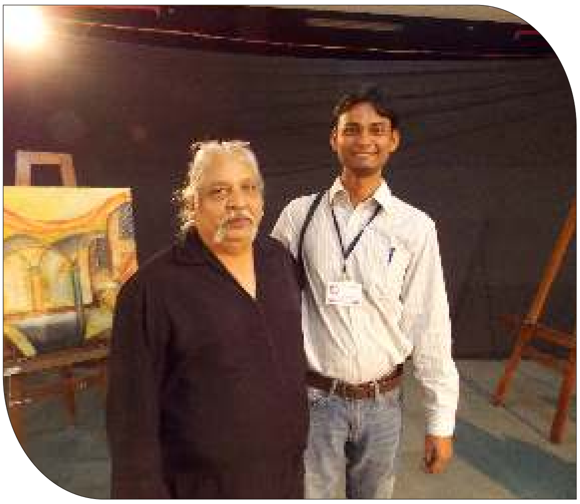

V[ke.k&28] mn;ij d lnL; dykdkj pj.k 'kek
d lkFk 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;ij d lnL; fp=dkj
Mk- xxu fcgkjh nk/khp l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;ij d lnL; dykdkj
lj'k tk'kh l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;ij d lnL; dykdkj
ik- geUr f}onh l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

V[ke.k&28] mn;ij d lnL; dykdkj
fou; 'kek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj dykfon
j.kthr flg p.Mkokyk l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj dykfon
Mk- iepUn xkLokeh l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj Mk- jk/kk—".k of'k"B
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lLFkkid lnL; dykfon
Mk- jk/kkcYyHk xkre l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj dykfon
dUg;k yky oek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj o
jktLFkku yfyr dyk vdkneh d v/;{k jg
ik- Hkokuh 'kdj 'kek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj Mk- ukFk yky oek
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj o jxck/k] dkVk
d lfpo lHkk"k ddj l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj o bl 'kk/k icU/k
d fun'kd Mk- jktho xx l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj ykypUn ekjkfB;k
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; fp=dkj Mk- txekgu ekFkkfM;k
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

ix] t;ij d lnL; dykdkj foukn Hkkj}kt
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

dykoÙk] t;ij d lLFkkid lnL; egUn dekj 'kek
^legUn* l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vkt] mn;ij d lLFkkid lnL; dykdkj
vEckyky neken l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vkt] mn;ij d lLFkkid lnL; 'ky pk;y
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vkt] mn;ij dh lLFkkid lnL; dykdkj
fdj.k efM;k l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vkt] mn;ij dh lLFkkid lnL; dykdkj
ljthr pk;y l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vkdkj dyk leg] vtej d lLFkkid lnL; dykdkj y{;iky flg jkBkM l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vkdkj dyk leg] vtej d lLFkkid dykdkj igykn 'kek l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vy—fr vkj duokl xi] vtej d lLFkkid v/;{k dykfon jke tloky l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

vy—fr dykdkj leg] vtej d lnL; dykdkj fcjnh pUn xgykr l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

okLV] mn;ij d lj{kd(vk;ke] t;ij d v/;{k o jktLFkku yfyr dyk vdkneh d v/;{k jg ik- fpUe; egrk l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

okLV] mn;ij d lLFkkid lnL; dykdkj ik- enu flg jkBkM l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

Qkbu vkV ,Dli'ku lklk;Vh] vkV dkfly vkQ
jktLFkku d lLFkkid lnL; o jktLFkku yfyr dyk
vdkneh] t;ij d lfpo jg lenj flg [kxkjkr ^lkxj*
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

oh] dkVk dh lnL; dykdkj Mk- efDr ikjk'kj
l lk{kkRdkj djr g, 'kk/kkFkh

परिशिष्ट 3

भारत के प्रमुख कला शिक्षा संस्थान

क्र.सं.	संस्थान का नाम	पता
1	फेकल्टी ऑफ विजुअल आर्ट्स, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय	एमरॉल्ड बोवर कैम्पस 56/ए, बी.टी.रोड़, कोलकाता–700050 पश्चिम बंगाल
2	इंस्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स, कला भवन, विश्व भारती विश्वविद्यालय	बोलपुर, शान्तिनिकेतन शान्तिनिकेतन–731235 पश्चिम बंगाल
3.	गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट, कोलकाता	28, जे.एल.एन. रोड, कोलकाता – 700016 पश्चिम बंगाल
4	कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, पटना	विद्यापति मार्ग पटना–800001 बिहार
5	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, असम विश्वविद्यालय	पोस्ट बॉक्स नं. 63 सिल्चर – 788011, असम
6	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स मणिपुर विश्वविद्यालय	कांचीपुर इम्फाल–795003 मणिपुर
7	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स गुवहाटी विश्वविद्यालय	गोपीनाथ बार्डोर्ली मार्ग गुवहाटी –781014 असम
8	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स उत्कल विश्वविद्यालय	भुवनेश्वर – 751004 ओड़िशा
9.	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, एम.एस. विश्वविद्यालय, वडौदरा	सियाजी बाग, मेन रोड, काला घोड़ा सर्किल, सियाजीगन्ज, वडौदरा–390002 गुजरात
10	सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुम्बई	78/3, डॉ. डी. एन. रोड, मुम्बई–400001 महाराष्ट्र

11	भारती (कला महाविद्यालय) कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, पुणे	बीवी कैम्पस, कटराज धनकवाड़ी कैम्पस, पुणे–सतारा रोड़, पूणे–411043 महाराष्ट्र
12	कॉलेज ऑफ आर्ट्स, गोआ	आल्टिनो, पणजी, गोआ
13	कॉलेज ऑफ आर्ट, दिल्ली	20–22, तिलक मार्ग, नई दिल्ली–110001
14	फैकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय	मौलाना मौहम्मद अली जोहर मार्ग, जामिया नगर, नई दिल्ली–110025
15	गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स, चण्डीगढ़	सेक्टर–10, सी, चण्डीगढ़–160011 पंजाब
16	फैकल्टी ऑफ विजुअल आर्ट्स, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय	वाराणसी–221005, उत्तर प्रदेश
17	गवर्नमेन्ट (देवलालीकर) इन्स्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स, इन्दौर	472, एम.जी. रोड़, इन्दौर–452007 मध्य प्रदेश
18	गवर्नमेन्ट इन्स्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स, ग्वालियर	धर्म मन्दिर रोड, ग्वालियर – 474009 मध्य प्रदेश
19	कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय	गौमती मार्ग, अलीगंज लखनऊ–226001 उत्तर प्रदेश
20	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय	खैरागढ़–491881 छत्तीसगढ़
21	इलाहाबाद विश्वविद्यालय	इलाहाबाद–211002 उत्तर प्रदेश

22	एपीजे कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स, जालन्धर	भगवान महावीर मार्ग, न्यू जालन्धर नगर, जालन्धर–144001 पंजाब
23	यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास	छापन्क, चेन्नई–600005 तमिलनाडु
24	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, राजस्थान विश्वविद्यालय	जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर (राजस्थान)
25	राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर	राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल, जयपुर (राजस्थान)
26	गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, चेन्नई	131, पी.एच.रोड़ पार्क टाउन, चेन्नई–500003 तमिलनाडु
27	फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट्स, जवाहर लाल नेहरू टेक्नीकल विश्वविद्यालय	कुकथपल्ली, हैदराबाद–500072 (आन्ध्र प्रदेश)
28	क्षेमराज एकेडमी ऑफ विजुअल आर्ट्स, मैसूर	सियाजीराव रोड, मैसूर (कर्नाटक)
29	कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, कर्नाटक चित्रकला परिषद	आर्ट काम्पलेक्स कुमारकृपा रोड, बेंगलुरू – 560001 कर्नाटक
30	गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, त्रिवेन्द्रम	एम.जी. रोड राष्ट्रीय राजमार्ग सं. 47 त्रिवेन्द्रम, (केरल)
31	इन्स्टीट्यूट ऑफ म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट्स, जम्मू	तालाब टिल्लो, पुंछ हाउस, जम्मू–180002 (जम्मू एण्ड कश्मीर)
32	इन्स्टीट्यूट ऑफ म्यूजिक एण्ड फाइन आर्ट्स, श्रीनगर	हजरतबल, श्रीनगर–190006 (जम्मू एण्ड कश्मीर)
33	अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय	अलीगढ़–7202002 उत्तर प्रदेश

परिशिष्ट 4

भारत के प्रमुख कला केन्द्र

क्र.सं.	प्रमुख कला केन्द्र	पता
1	इण्डियन सोसायटी ऑफ ओरियन्टल आर्ट, कोलकाता (ISOA)	15, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता–700016
2	बिड़ला एकेडमी ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर, कोलकाता (BAAC)	108–109, 'डा', कोलकाता–700019
3	रवीन्द्रनाथ टैगोर सेन्टर, कोलकाता (RTC)	ICCR, 9 A Hochi Minh Sarani, कोलकाता – 700071, पश्चिम बंगाल
4	पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता (EZCC)	IA-290, सेक्टर–III, मिजोरम हाउस व विजन भवन के सामने, स्टाफ लेक, कोलकाता–700017, पश्चिम बंगाल
5	आर्ट सोसायटी ऑफ इण्डिया, मुम्बई (ASI)	गिरगोन चौपाटी, मुम्बई, महाराष्ट्र
6	मोहिले परीख सेन्टर फॉर आर्ट, मुम्बई (MPCA)	दोराबजी टाटा रोड, नरीमन पाइण्ट मुम्बई–400021, महाराष्ट्र
7	केमलिन आर्ट फाउण्डेशन, मुम्बई (CAF)	केमलिन लि., हिल्टन हाउस, 48/2, सेन्ट्रल रोड, एम.आई.डी.सी., अंधेरी (ईस्ट), मुम्बई–400093, महाराष्ट्र
8	नाग फाउण्डेशन, पुणे	3, बोट क्लब रोड, पुणे–411001 महाराष्ट्र
9	दक्षिण मध्य सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर (SCZCC)	56/1, सिविल लाइन्स, एम.एल.ए. हॉस्टल के सामने, नागपुर – 440001, महाराष्ट्र
10	केरकर काम्पलेक्स, गोआ	गौरा वाडो हॉलीडे स्ट्रीट, कालेगयूट, बार्डज, गोआ–403516
11	ऑल इण्डिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी, नई दिल्ली (AIFACS)	रफी मार्ग–1, नई दिल्ली

12	रासेजा फाउण्डेशन, नई दिल्ली	एच–38, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली–110048
13	इण्डियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एण्ड कल्चर हेरिटेज, नई दिल्ली (INTACH)	71, लोदी एस्टेट नई दिल्ली
14	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी स्टूडियो/वर्कशॉप (रीजनल सेन्टर गढ़ी)	आर्टिस्ट्स कार्नर, नीयर ईस्ट ऑफ कैलाश, कालका देवी मार्ग, नई दिल्ली–110065
15	आर्ट माल	5, शिवाजी मार्ग, नई दिल्ली–110015
16	इन्दिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट	सी.वी. मेस, जनपथ, नई दिल्ली–110001
17	श्रीराम सेन्टर फॉर आर्ट एण्ड कल्चर	4, सफदर हाशमी मार्ग, मण्डी हाउस, नई दिल्ली–110001
18	उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पाटियाला (NZCC)	शीश महल, पोस्ट बॉक्स नं. 80, पाटियाला–147001, पंजाब
19	माधवन नायर फाउण्डेशन म्यूजियम, गैलरी एण्ड लाइब्रेरी, केरल	एडापल्लि, एर्नाकुलम, केरल
20	चोला मण्डल आर्टिस्ट्स विलेज, चेन्नई	इन्जम्बक्कम, थिरूवन्मिमूर, चेन्नई–600041, तमिलनाडु
21	दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, तंजौर (SZCC)	मेडिकल कॉलेज रोड, तंजौर–613004, तमिलनाडु
22	आइडियल फाइन आर्ट सोसाइटी, गुलबर्ग	गुलबर्ग डिस्ट्रिक्ट, गुलबर्ग, कर्नाटक
23	हचिसिंग सेन्टर ऑफ विजुअल आर्ट, अहमदाबाद	——————
24	पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर (WZCC)	बागौर की हवेली, उदयपुर–313001, राजस्थान
25	उत्तर–मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद (NEZCC)	14, सी.एस.पी. सिंह मार्ग, इलाहाबाद–211001, उत्तर प्रदेश

26	उत्तर–पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, दीमापुर (NEZCC)	पोस्ट बॉक्स नं. 98, दीमापुर–797112, नागालैण्ड
27	नीताई गॉराज आर्टिस्ट रेजीडेन्सी स्टूडियो, मुम्बई (NITAAI GAURAS)	कोठारी वेयर हाउस, गेट नं. 3, सी–10, 27, आकरे, गौरव स्वीट्स के सामने, टिकुजीनी वाड़ी के पास, मानपाड़ा, ठाणे (वेस्ट), मुम्बई–400607, महाराष्ट्र

परिशिष्ट 5

भारत की प्रमुख कला दीर्घाएँ

क्र. सं.	प्रमुख कला दीर्घाएँ	पता
1	ताज आर्ट गैलरी	द ताजमहल होटल, कोलाबा, मुम्बई
2	ब्रिटिश काउन्सिल गैलरी	मित्तल टॉवर, सी–विंग नरीमन पाइन्ट, मुम्बई
3	बिड़ला सेन्चुरी आर्ट गैलरी	सेन्चुरी भवन, डॉ. एनी बिसेन्ट रोड, वर्ली, मुम्बई–400018
4	नेहरू सेन्टर आर्ट गैलरी	नेहरू सेन्टर, डॉ. एनी बिसेन्ट रोड़, वर्ली, मुम्बई–400018
5	टाओ आर्ट गैलरी	165, डॉ. एनी बिसेन्ट रोड, वोर्ली, मुम्बई – 400007
6	पन्डोल आर्ट गैलरी	369, डी.एन.रोड, फ्लोरा फाउंटेन, वोर्ली, मुम्बई–400007
7	पीरामल आर्ट गैलरी	हिल्टन टॉवर के पास, नरीमन पाईन्ट, मुम्बई–400021
8	सिमरोजा आर्ट गैलरी	72, मोकभाई देसाई रोड, ब्रीज केन्डी, मुम्बई–400026
9	बॉम्बे आर्ट गैलरी	19, रूइया हाउस, एम.बी.रोड, मालाबार हिल, मुम्बई–400006
10	मोक्ष आर्ट गैलरी	काला घोड़ा, मुम्बई 400023
11	एट्रेक्शन आर्ट गैलरी	94, धानुका भवन, नेहरू रोड, विले पार्ले (ईस्ट), मुम्बई–400023
12	बोधि आर्ट गैलरी	28, के. दुबाश मार्ग, काला घोड़ा, फोर्ट, मुम्बई–400001
13	जहाँगीर आर्ट गैलरी	161–13, एम.जी.रोड, काला घोड़ा, मुम्बई–400001
14	आर्ट हेरिटेज गैलरी श्री धरनी आर्ट गैलरी त्रिवेणी आर्ट गैलरी	एन–205, त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली–110001

15	आई.एच.सी. विजुअल आर्ट गैलरी	गेट नं. 2, इण्डिया हेबिटेट सेन्टर, साईं बाबा मन्दिर के पास, लोदी रोड, नई दिल्ली–110001
16	धूमिमल आर्ट गैलरी	8–ए, कनॉट पैलेस, नई दिल्ली–110001
17	धूमिमल आर्ट गैलरी	जी ब्लॉक, 42, मुनिरका, कनॉट पैलेस, नई दिल्ली–110001
18	द हिताची आर्ट गैलरी	ए–239, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–110027
19	बढ़ेरा आर्ट गैलरी	डी–178, ओखला नई दिल्ली–110020
20	बोधि आर्ट गैलरी	13–25, कुतुब इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली–110016
21	रवीन्द्र भवन आर्ट गैलरी	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–110001
22	आईफैक्स आर्ट गैलरी	रफी मार्ग–1, नई दिल्ली
23	गवर्नमेंन्ट म्यूजियम एण्ड आर्ट गैलरी	सेक्टर 10–सी, चण्डीगढ़–160011
24	द इण्डियन अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स	एम.एम. मालवीय रोड, अमृतसर–143001
25	अम्दावाड़ नी गुफा एण्ड हॉरविट्स गैलरी	कस्तूभाई लालभाई केम्पस, (हुसैन दोषी गुफा) अहमदाबाद
26	मार्वल आर्ट गैलरी	एफ–2, शा पथ, राजपथ क्लब के सामने, बोडकदेव, अहमदाबाद–380015
27	स्टेट आर्ट गैलरी	रविशंकर रावल कला भवन, एलिस ब्रिज, जिमखाना, अहमदाबाद–380006
28	अप्पाराव गैलरीज	7, वालेक गार्डन, तीसरी स्ट्रीट, नुनगाम्बाक्कम, चेन्नई–600006, तमिलनाडु
29	चोला मण्डल	इन्जाम्बाक्कम, थिरूवान्मियूर, चेन्नई–600041, तमिलनाडु
30	रवि वर्मा आर्ट गैलरी	47, मन्डावेलि, चेन्नई–600028, तमिलनाडु
31	दरबार हॉल गैलरी, कोची	डी.एच.रोड, कोची, केरल

32	नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट, बेंगलुरू	49, मनिक्यावेलु मैन्शन पैलेस रोड, बेंगलुरू–560052, कर्नाटक
33	नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट, मुम्बई	श्री कवास जी जहांगीर पब्लिक हॉल, एम.जी. रोड, फोर्ट, मुम्बई–400032, महाराष्ट्र
34	नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट, नई दिल्ली	जयपुर हाउस, इण्डिया गेट, नई दिल्ली–110001
35	कर्नाटक चित्रकला परिषद्	कुमारा पार्क ईस्ट, शेषाद्रिपुरम्, बंगलुरू, कर्नाटक
36	टाईम एण्ड स्पेस फॉर कन्टम्परेरी आर्ट	55, एस.एस. लावेले रोड, बेंगलुरू–560001
37	क्रिमजन आर्ट गैलरी	28, इन्फान्ट्री रोड, दूसरी फ्लोर, बेंगलुरू–560001
38	सुकृति आर्ट गैलरी, चतुर्दिक आर्ट गैलरी, सुरेख आर्ट गैलरी, सुदर्शन आर्ट गैलरी	जवाहर कला केन्द्र, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर (राजस्थान)
39	आर्ट चिल गैलरी	अम्बर पैलेस, जयपुर
40	समन्वय आर्ट गैलरी	351, गणपति प्लाजा, तीसरी मंजिल, एम.आई. रोड, जयपुर–302001
41	चित्रकूट आर्ट गैलरी	55, गरिहट्ट रोड, कोलकाता
42	चित्रालय सेन्टर	3/7, पोद्दार नगर, कोलकाता
43	आकार–प्रकार	पी–238, हिन्दूस्तान पार्क, कोलकाता–29
44	गोहाटी गिल्ड गैलरी	चांदमारी, गोहाटी, असम
45	ओंग्काल आर्ट गैलरी	ए.सी.एम.एस. बिल्डिंग, टी.आर.पी.रोड, जोरहट, असम–785001
46	केरल ललित कला एकेडमी आर्ट गैलरी	डी.सी. किजाकेमुरी एड़क, गुड शेफर्ड स्ट्रीट, कोट्टायम
47	हॉज खास विलेज गैलरीज	हॉज खास, नई दिल्ली–110016
48	नन्दलाल बोस गैलरी, जामिनी रॉय गैलरी, अवनीन्द्र नाथ टैगोर गैलरी, रामकिंकर बैज स्कल्पचर कोर्ट	आईसीसीआर, 9ए,द होची मिन्ह सरणी, कोलकाता–700071

परिशिष्ट 6

भारत की प्रमुख कला अकादमियाँ

क्र.सं.	नाम अकादमी	पता
1	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली	रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली–11001
2	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, रीजनल सेन्टर, गढ़ी	आर्टिस्ट्स कार्नर, नीयर ईस्ट ऑफ कैलाश कालकादेवी मार्ग, नई दिल्ली–110065
3	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, रीजनल सेन्टर, कोलकाता	361, केयाटला लेन, कोलकाता–700029
4	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, रीजनल सेन्टर, चेन्नई	4, ग्रीम्स, रोड, चेन्नई–600006
5	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, रीजनल सेन्टर, लखनऊ	1, एकता विहार अलीगंज, लखनऊ–226024
6	राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, रीजनल सेन्टर, भुवनेश्वर	111/4, खारवेला नगर, यूनिट–3, भुवनेश्वर–750001
7	केरल ललित कला अकादमी, थ्रिशूर	चेम्बुक्काबु, थ्रिशूर–680020
8	जम्मू एण्ड कश्मीर एकेडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजेज	कनाल रोड़, जम्मू
9	एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट, कोलकाता	2, कथेड्रल रोड, कोलकाता–700016, पश्चिम बंगाल, एम.एम. मालवीय रोड, अमृतसर, पंजाब
10	इण्डियन एकेडमी ऑफ फाइन आर्ट, अमृतसर	एम.एम. मालवीय रोड, अमृतसर, पंजाब
11	चण्डीगढ़ ललित कला अकादमी	पहली मंजिल, स्टेट लाइब्रेरी, सेक्टर–34ए, चण्डीगढ़–160022
12	उत्तर प्रदेश राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ	लाल बारादरी भवन, हाइकोर्ट के पास, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
13	राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर	झालाना डूंगरी, जयपुर, राजस्थान
14	कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन	विश्वविद्यालय मार्ग, उज्जैन मध्य प्रदेश–456010

परिशिष्ट–7

राजस्थान के कलाविद्/फैलोशिप प्राप्त वरिष्ठ चित्रकार एवं मूर्तिकार

क्र.सं.	कलाविद्/फैलोशिप प्राप्त वरिष्ठ चित्रकार	सम्मान प्राप्ति वर्ष
1.	रामगोपाल विजयवर्गीय	1970 ई.
2.	गोवर्धन लाल जोशी 'बाबा'	1972–73 ई.
3.	बी.सी. गुई	1973–74 ई.
4.	द्वारका प्रसाद शर्मा	1978–79 ई.
5.	कृपाल सिंह शेखावत	1979–80 ई.
6.	देवकीनन्दन शर्मा	1980–81 ई.
7.	परमानन्द चोयल	1981–82 ई.
8.	मोनी सान्याल	1982–83 ई.
9.	नारायण आचार्य	1983–84 ई.
10.	सुरेश शर्मा	1984–85 ई.
11.	ज्योति स्वरूप	1985–86 ई.
12.	डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी	1986–87 ई.
13.	मोहन शर्मा	1987–88 ई.
14.	आर.वी. साखलकर	1988–89 ई.
15.	रमेश गर्ग	1994–95 ई.
16.	आर.बी. गौतम	1995–96 ई.
17.	राम जैसवाल	1996–97 ई.
18.	रणजीत सिंह चूडावाला	1997–98 ई.
19.	सुरेश चन्द्र राजोरिया	1998–99 ई.
20.	वीरबाला भावसार	2013–14 ई.
21.	कन्हैयालाल वर्मा	2013–14 ई.

क्र.सं.	कलाविद्/फैलोशिप प्राप्त मूर्तिकार	सम्मान प्राप्ति वर्ष
1.	गोपीचन्द मिश्रा	1977–78 ई.
2.	उषा रानी हूजा	1989–90 ई.
3.	हरिदत्त गुप्ता	1991–92 ई.
4.	लल्लूनारायण शर्मा 'गौतम'	1992–93 ई.

परिशिष्ट–8

राजस्थान के प्रमुख कला संगठन

क्र. सं.	प्रमुख कला संगठन	पता
1	तूलिका, कलाकार परिषद, उदयपुर	एच–20, भूपालपुरा, उदयपुर–313001
2	टखमण–28, उदयपुर	चरक हॉस्टल के पास, चरक मार्ग, ओ.टी.सी. स्कीम, उदयपुर–313001
3	प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, जयपुर	21, माधव नगर, दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन के पास, जयपुर–302018
4	कलावृत्त, जयपुर	2–ट–8, जवाहर नगर, जयपुर
5	आज, उदयपुर	321, एल.1 रोड, भूपालपुरा, उदयपुर–313001
6	रंगबोध, कोटा	'आर्शीवाद' रंगपुर रोड नं. 4, कोटा–324002
7	फाइन आर्ट एक्सप्रेशन सोसायटी, जयपुर	'सज्जन महल' 55, गुरू जम्बेश्वर नगर–बी, गांधी पथ, वैशाली नगर, जयपुर–302021
8	आकार कला समूह, अजमेर	138, स्वप्नलोक, कृष्णा विहार, कुन्दन नगर, अजमेर
9.	अंकन, भीलवाडा	2–डी–11, 12, आर.सी. व्यास, कॉलोनी, भीलवाडा
10	अलंकृति कलाकार समूह, अजमेर	'कला–लक्ष्मी', न्यू कॉलोनी, रामगंज, अजमेर
11	सरस्वती कला केन्द्र, जयपुर	बाबा हरिशचन्द्र मार्ग, जयपुर
12	विजुअल आर्ट सोसायटी फॉर टीचर्स, उदयपुर	'देवरूप' 355, ए–ब्लॉक, चित्रकूट नगर, उदयपुर
13	आयाम कला एवं संस्कृति संस्थान, जयपुर	6–ख 20, जवाहर नगर, जयपुर
14	आकृति कला संस्थान, भीलवाड़ा	ए–74, आजाद नगर, महाराणा कुम्भा छात्रावास के पीछे, भीलवाडा–311001

परिशिष्ट 9

शोधार्थी द्वारा विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध–पत्र

List of Published Paper, Seminars and Conferences Full Research Paper Published with ISSN and ISBN No. :-

(1) ''राजस्थान में कला का क्रमिक विकास व समकालीन कला के विकास में राजस्थान के कला संगठनों की भूमिका''

Periodic Research, A multi-Disciplinary international Journal, Published by-Social Research Foundation, Kanpur; Vol-1, ISSUE-IV, May-2013; ISSN No. 2231 - 0045

(2) "Rajasthani Contemporary Art Organisation Progressive Art Group, Jaipur".

Recent Trends and Challenges in Commerce, Management and Social Sciences; Published by-Choice College of Art and Commerce, Pune, ISBN-978-81-923835-2-1, Edition-2013

(3) "Role of Aaj (Society of Visual & Performing Arts) in the Progress of Rajasthani Contemporary Art & Artist".

Asian Resonance, International Journal,

Published by- Social Research Foundations, Kanpur.

Vol. - III, ISSUE-III, July-2014, ISSN No. 2349-9443.

(4) विशेष बालकों की कला में रंग संयोजन एक अध्ययन (मूक–बधिर बालकों के विशेष सन्दर्भ में) चित्रकला विभाग, महारानी लक्ष्मी बाई शासकीय स्नातकोत्तर बालिका महाविद्यालय, किला भवन, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

ISSN No. (O) 2350-0530, ISSSN(P) 2394-3629

Abstracts Published :-

(1) ''राजस्थानी राजपूत लघु चित्रशैली का नवीन विभाजन''

Department of Drawing & Painting, University of Rajasthan (29-31-Dec. 2013).

(2) ''भारत के समकालीन मूक–बधिर चित्रकार एक विवेचना''

Rajasthan School of Art, Jaipur (31-Jan.-2 Feb. 2014)

(3) "Role of AAJ (Society of Visual & Performing Arts) in the progress of Rajasthani Contemporary Art & Artist", Department of History of Art; Banaras Hindu University, Varanasi, U.P. (20-22-Feb.-2014).

ISSN No. 2231-0045 VOL.-I, ISSUE-IV, MAY-2013
Periodic Research

राजस्थान में कला का क्रमिक विकास व समकालीन कला के विकास में राजस्थान के कला संगठनों की भूमिका

सारांश
[illegible]

[illegible]

ISSN No. 2231-0045 VOL.-I, ISSUE-IV, MAY-2013
Periodic Research

[illegible]

ISSN No. 2231-0045 VOL.-I, ISSUE-IV, MAY-2013
Periodic Research

का अभिप्राय बना कर समाज में सांस्कृतिक एवं सौन्दर्यबोध जागृत करने के उद्देश्य से 1979 ई. में 'आज' कला संगठन की स्थापना हुई। इस संगठन ने कला के विभिन्न तकनीकी व सैद्धान्तिक पक्षों, कला प्रयोगों आदि की जानकारी के आदान–प्रदान के उद्देश्य से प्रान्तीय एवं अखिल भारतीय कला शिविरों का भी उल्लेखनीय आयोजन किया जिनमें कला शिविर, मोलेला (1979), चित्रकला शिविर (1980), सिरेमिक शिविर (1981), ग्राफिक शिविर (1982), म्यूरल शिविर (1984) और ग्राम्य चित्रकार शिविर (1991) प्रमुख हैं। वर्तमान में यह संगठन प्रदर्शनकारी कलाओं के विकास के लिए भी कार्य कर रहा है।

इसके बाद 1980 ई. में मयूर–6, 1982ई. में 'फेस', 1991ई. में 'आकार', 1997 ई. में 'आकृति', 2002 ई. में 'वास्प' आदि कला संगठन एक के बाद एक अस्तित्व में आते गये और राज्य में सृजनशीलता को नये आयाम प्रदान करने एवं राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान की पारम्परिक व समसामयिक कला की विशिष्ट पहचान बनाने में भागीदार बनते गये।

संक्षेप में, राजस्थान के कला संगठनों ने राज्य में कला के उत्थान और सामान्य जन पर कला से एकात्म स्थापित करने की दिशा में विशिष्ट प्रयास किये हैं। वर्तमान सृजनशीलता का वातावरण और राज्य की कला का राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थान इसका प्रमाण है।

सन्दर्भ
1. डॉ. ममता चतुर्वेदी : समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, वर्ष 2008, पृष्ठ – 21
2. वही, पृष्ठ – 23
3. शिवानन्द उपाध्याय : आकृति, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष – 1987, पृष्ठ – 53
4. आर.बी. गौतम : राजस्थान की समसामयिक कला, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर, वर्ष–1989, पृष्ठ–48

ISBN: 978-81-[illegible]

RAJASTHANI CONTEMPORARY ART ORGANISATION
PROGRESSIVE ART GROUP, JAIPUR

[illegible] Singh Rawala

Introduction:

In the field of painting, Rajasthan has a very rich tradition and the attempts to give shape to a modernist movement in painting have yielded mixed results. There were fundamentally three possibilities open to the art enthusiasts of the state. First, the enlargement of the existing tradition by giving expression to new developments and changes in society. However this not only a shift of attention from the stereotype had to be done in order to pick up subjects and scenes related to the revival of our glorious past, which had become one of the principal objectives of our national movement.

Composition and style remaining the same, the captivating colour schemes and division of the space more or hardly changed. The advanced wash technique initiated by Bengal School, had been successfully and speedily adopted by painters of Rajasthan. The display of tempera technique was already prevalent in Rajasthan and the artists under this impact were more or less contributing in the Renaissance of the Indian Painting. Kripal Singh Shekhawat, Bhoorlal [illegible] Gehlot, Ram Gopal Vijayvargiya, Devki Nandan Sharma, Govardhan lal Joshi and Ram [illegible] were the carrier of the most enduring influence which living art mastered could have exercised upon the new generation of artists. And fortunately the PROGRESSIVE ARTISTS GROUP, also had among its members, one or two young artists well trained in this background. [illegible] miniature style work on larger canvases & hard boards in oil colour & tempera by Kanhiya lal Verma, Chandu Lal Chauhan, Lal Chand Marothia and others were among those which attracted the attention of art loving people in the state and outside. It was not the representative banner of PAG in general either, as the majority of this group belonged to the experimental tendencies and were directly in touch with the international movements of modern art. This major section consisted of Shailendra Bhatnagar, R.B. Gautam, [illegible], Mohan Sharma, Bhawani Shankar Sharma, Gopal Varman, [illegible] Yadav etc.

The second possible consequence of a living tradition for modern sensibility was to make proper use of the cannot technique of miniature art, sometimes in the matters of division of space, or elsewhere adhering to the minutest details of the principal figures and maintaining the happiest display of blending and contrasting tones of colours. Although a good number of young artists of Rajasthan [illegible] in this section, it is mainly represented by two prominent artists of the group Ranjeet Singh and Kanhiya lal Verma.

The third transformation of the tradition lies in the intelligent use of art motifs of Miniature Paintings, in order to enrich their expression. Bhawani Shankar Sharma and Mohan Sharma have very capably channelized the force of tradition, to make it a new dynamic source of energy for authentic communication. But Mohan Sharma's preference for geometric composition and absence of any human drama in his paintings fairly conceals his echoing influence of the tonal variation of colours in miniature, and he apparently seems to be more modern than the others creating crystallized cubical impressions of city scapes.

But in fact, no significant impact emerged and on the contrary, Modernity in the contemporary art scene of Rajasthan came in [illegible] at last in the early 60s, when a few experimental artists such as [illegible], Prem Chandra Goswami, R.B. Gautam etc. tried to break the ice and started to break the ice and started to express themselves in the modern idioms.

For the artists who were born in the wake of modern sensibility, the very meaning of being modern was to respond to any international movement of art. Developed by the creative genius of our time. In this they had somehow to choose a way for their own pursuits, from the already established contemporary art traditions of Neo-Impressionism, Fauvism, Cubism, [illegible], Surrealism and a recent College, Pop and Op styles of art. As each of these movements has a distinct expressive style of its own, any young talented artist attempting one of these styles would automatically enlist himself in the category of contemporary artists, whatever meager artistic skill and training he might have got to prove himself worthy of such identification.

But there are genuine artists who have a sincere faith in the fast approaching phase of modernity and who believe that art of all ages would progress only, if it has a necessity of change and its inherent capacity to replace the old with the growing need of society. They certainly do not adapt traditional methodology but they give equal importance to the skill and craftsmanship to attain perfection and that [illegible] display their very traits wedded to new ideology, technique and expression in the maximum possible manner.

Though avant garde artists of Rajasthan started expressing themselves in the modern idiom, started a bit late in expressing themselves in the form of group exhibitions, in sharing the modern consciousness in art and creating an [illegible] collectively. PAG is one of such art institutions. It is committed to expand modern sensibility in painting and sculpture. For this purpose it does all auxiliary activities, which would promote art consciousness among the people of the state and contemporary art enthusiasts as well.

As early as 1968, in the very year of its foundation, PAG organized a group Art Exhibition at [illegible] presenting the works of stalwarts as well as promising young artists of the state. Most of the artists represented here were known for having assured a national significance. It is worth mentioning here that it was the founder members of PAG, who tried to associate in the form of a group. Initiated the movement of art consciousness among the common people and created an art gallery at the premises of Information Centre Jaipur. It stirred the publicity of contemporary art activities and a new dimension in creating a curiosity for modern art, which was earlier a difficult puzzle for common people.

Like other modern art association of the state PAG is not entirely a new organization, it has its link with the Progressive Artists Group of [illegible] established in the [illegible] by the cooperative group of artists like [illegible], Souza, Ara, Gade, Hebbar etc. most of them having a force of [illegible] bent of mind. The members of PAG Rajasthan had no such intentions nor did they claim to have such ideological base. Nevertheless, on a number of occasions of national crisis, the group came forward in raising funds, arousing national appeal and personally contributing social service through its member artists.

The PAG artists search for expressions of contemporary experience has not blinded them to the centuries old cultural traditions of Rajasthan. In fact, the group is keenly aware of the [illegible] links between tradition and the contemporary developments in the art of painting and sculpture.

Main Artist of PAG:

Mohan Sharma was a highly sophisticated colourist, who preferred to paint various architectural forms of city scapes in crystalline manner. He has echoes of cubism, which is his closest affinity with the contemporary style of European origin. [illegible] is neither his limit nor his pursuit showing cross section of the soul of the objective perspective, more [illegible]. He simply utilized the technique in order to prevail his internal cool awareness of painting styles of his own time, but without breaking from his own tradition. The use of transparent brilliance of various tones of colour which he derives from miniature is absent in cubist art. He has very skillfully combined the spray technique with [illegible] effect to his crystalline clarity or cubical cross sections of his colourful city landscapes.

Impressions of city emerge in his mind in consequence of a total abstraction from the numerous forms of dwelling rooms, streets buildings, bridges and rivers etc. Mohan's creative skill also brings about a metamorphosis by exploiting wider and transparent casting of those very colours, of which these objects are made.

Mohan Sharma has done geometric abstraction of some of the [illegible] places like the scenes of Bridge Over River Thames, The Fort Of Jaisalmer made of golden yellow marble, The [illegible], The Eiffel Tower and a number of city scapes of [illegible]. But his most common theme is the Drawing room of our day to day life.

The short span of 45 years of his life time, Mohan's breath taking creations, his fluent, forthright & flawless line and his striving energy & vitality leave one awe struck.

Ranjeet Singh- Tradition no doubt conditions mediocrity severely, but it is also a great liberating force. When a creative artist is ready to take off, tradition inspires him to soar higher and higher. Ranjeet Singh is one of those few artists, who utilise the latent power of colours & rhythm of lines capable of producing a theme in the language of [illegible]. He has utilized the miniature for bolder dimensions and has introduced sheen of realism in drawing on his objects.

This approach places him on a different footing from fellow [illegible] and he consequently he seeks for word. His latest THE [illegible], has a [illegible] realism. Scores of bottles lying on sand dunes before an old man with a cup & bottle sitting like an emperor give a factual impression, but the crows sitting on the dried branches of the tree symbolizes a bad omen [illegible] over seeing the old man [illegible] his last approaching end.

Of his paintings, SRI YANTRA, is a vain attempt to modernize the secret power of the yantra as devised in the [illegible]. Artist's attempt to paint the theme showing Chakra composed of Astradal and the [illegible] standing so fast to produce the cosmic power, reveals his courage and integrity to resist influences he can not assimilate.

Dr. Prem Chandra Goswami: He is an [illegible] from abstract paintings. He experimented with the figure in his works substantiating modern approach to art, as early as 1960. His vision of abstraction the images was more of an impressionistic type but he neither produced any village landscape, like an impressionist, nor a city scape like a cubist. He picked up some fancies of his own imagination and translated them into art work depicting fleeting mass of atmosphere, like a dim impressions of a [illegible] entity of its own. In his earlier paintings he made use of direct colours, but as it was proving to be commercial, he concentrated on the application & use of mixed colours – more expressively the greys, the [illegible] and the browns. His initial abstractions titled RANG SHAGUN – "The flying colour series" – [illegible] him into limelight and the only figures he exhibited were either cigarette or an ashtray on a fading impression of green, blue & pinkish red background. He continued to paint his canvases in the acclaimed style of his own, till mid 80's. After a period of over fifteen years, but then suddenly he shifted to figuration just when he was expected to take a big leap forward. This deviation removed him from the main stream. He however, has retrieved much the lost ground since early 90's and now [illegible] with his recent [illegible]. [illegible], there is something genuinely primitive about him.

Dr. R.B.Gautam: To be modern, an artist must first of all feel contemporary. If he has a contemporary sensibility, the modern trend automatically follows. R.B. Gautam endowed with a lot of such sensibility. His thematic approach and unflinching faith in modernity initially drove him to distortion. His early training and skill in tempera & decorative art, has never stood a barrier for his creative expressions.

The [illegible] character of materialistic society today, the hitherto unexpressed [illegible] hidden in the depths of our soul, the ugly being the fundamental reality of our inner self, have got an intellectual outlet in Gautam's expressions. His early paintings very [illegible] highlight this trend. He evidently sensuous compositions, utilizing the space with distorted figures evolved a distinct style of his own, which is certainly not meant to [illegible] values only for style.

Some similarity, however, of early paintings may be traced in the fleshy & distorted figures of Ram [illegible] & Anupam Sood, but their approach is fundamentally different from Gautam's. Of his paintings, [illegible] presents three forms – symbolizing the lover, the beloved and the intruder, whereas the jungle symbolizes the complicated miseries through which love desires to be fulfilled [illegible], in his paintings, he [illegible] of alien symbols and arrives at a synthesis. Understanding of colour and form with true emphasis on design can be a serious challenge to any artist realizing it. He arrives at a [illegible] of his desire in recent years. His [illegible] first to his figure from fig [illegible] of [illegible].

Gopal Varman: Artists, who were born in the wake of modern sensibility, some times find it difficult to assert their identity and establish modernity's relevance to the [illegible] of [illegible] to come to the grips with the compositions of an art of dissent. Gopal Varman, despite of being decorative designer, has successfully established his identity of being near to the contemporary idiom. He relies in abstraction of nature. His abstraction is a sort of metamorphosis of the impressions of natural phenomenon often resulting in some what psychedelic figuration. Some times the echoes of surrealism resounds in his paintings.

Kanhaiya Lal Verma, the other veteran artist of the group, has his roots in the miniature & traditional art. But he has utilized the space of his canvas for rebuilding the compositional setting of dancing and [illegible] forms found in miniatures and bringing about a new surprising [illegible] of them. It is a sort of progressive reconstruction of the mystery & beauty of ever haunting tradition. [illegible] done earlier by some of the [illegible] like Kripal Singh Shekhawat & Ram [illegible] Sharma with such [illegible]. They left a legacy of number of young artists, Kanhaiya Lal Verma is one of the carriers of that legacy.

The NAYAK NAYIKA series, set in typically old palatial architectural pattern with cenotaphs, balconies, terraces and tripolia with [illegible]; the [illegible] quadrangular [illegible] based painting of [illegible] Ganesh with Riddhi – Siddhi reminds of a mixture of miniature and an early fresco painting technique. His painting [illegible] – depiction of Ragini – portrays three running [illegible], [illegible] swinging [illegible] – full moon shining in the background, two girls chatting. It is the closest of the rare technical [illegible] of the traditional miniature, which Kanhaiya Lal has acquired. One sees in it, a preparation for transforming the old conventions and technique in to a new one, which would enrich his audience's experience.

Bhawani Shankar Sharma: For the direct exposure to modernity, an artist has to evolve his own idiom and forms. An idiom that is contemporary, not only in style or technique but also in spirit. Bhawani Shankar owes a lot of such idioms. He is a prolific artist, who can tackle any blank space with confidence, skill and empathy. He has fancy for colour and background white space. He often uses pen and ink. His pen sketches blended together with bold spontaneous brush strokes in a typical style of his own produce a lyrical effect on viewer. His compositions being [illegible] at length, justify his creative freedom to generate a poetic rhythm in his paintings.

[illegible] was [illegible] since his take off as a [illegible] artist. Drawing being [illegible] vital in composition, he has strong [illegible] in the [illegible] of drawing. His inclination towards figures [illegible] clearly visible in his earlier paintings, [illegible] has now driven him into surrealistic expressions.

Nathu Lal Verma [illegible] tradition, no doubt is self restraining, but it is also a great inspiring force. When a creative artist is ready to take all, tradition inspires him to scale [illegible] & [illegible]. Nathu Lal Verma is one of [illegible] belonging to classical tradition. Being an ardent disciple of Kripal Singh Shekhawat, he is influenced by Ajanta and Bengal School of Art. He is just [illegible] in depicting the finest [illegible] and detail of flora & fauna. His painting thus [illegible] of colourful [illegible] of [illegible] the theme of the painting. Various lilas of lord Krishna have been his main [illegible], one [illegible] his paintings portray [illegible] in the classical [illegible].

[illegible] Chand Marothia Traditionalism in art can be transformed into contemporary, but it has to be [illegible] sincere. Art may become merely a [illegible] or gimmick, unless the development and evolution are totally natural and unselfconscious. [illegible] Chand Marothia is also in the line of neo traditionalists, experimenting with traditional motifs & symbols through linear abstraction, [illegible] geometric setting, with a slight touch of impressionistic style.

He started off as a [illegible] painter concentrating on study of lines of mughal & Persian styles. Then he did a realistic study of lines [illegible] animals, [illegible] & trees. Later he developed a neo-traditional style of [illegible] for him to make intelligent use of [illegible] to enrich his expressions.

Dr. Rajeev [illegible] is one of the most active senior painters of Rajasthan who accepted challenges in changing the contemporary art scene of his state, and became one of the most [illegible] defenders of modern art. Dr. [illegible] was born in 1953 at [illegible] and completed Ph.D in Drawing and Painting from Agra University, Agra. He has won several awards as PAG: National [illegible] Award [illegible]; State Award Rajasthan Lalit Kala Akademi 1996, [illegible] Kala [illegible] Award 1999. He has participated in many exhibitions which include Annual Exhibition of Art Rajasthan Lalit Kala Akademi since 1980, All India Exhibition [illegible] & 1990, Contemporary Art Exhibition Goa 1995, Art [illegible] of Rajasthan 1992, Group exhibition of PAG at New Delhi, Kolkata, Chandigarh, Bhopal, Chennai & Bangalore; Regional Art Exhibition [illegible] 2005-06 and Photography Exhibition [illegible] Jaipur 2007.

Manju Mishra [illegible] motifs and symbols have always been her main [illegible]. Manju has consistently tried to work with folk motifs. She [illegible] the [illegible] of African folk figures and forms combined with [illegible] folk symbols.

She [illegible] [illegible] ranging from reliefs [illegible]. Her paper [illegible] pieces [illegible] but are quite capable to give genuine aesthetic pleasure.

[illegible] Lal Verma being a descendant of the traditional [illegible] family, Arjun Lal Verma [illegible] the requisite [illegible] & skill in carving images of Gods & Goddesses and also of [illegible]. But his artistic [illegible] could not get satisfaction [illegible] professional creations [illegible] experimenting. In due course he has developed a distinctive [illegible] of his own, where he would easily [illegible] to create an impression with minimum possible [illegible] & [illegible].

His initial attempts of simplifying figurative versions, gradually arrived at a point near to abstraction but [illegible] the basic grounding of the [illegible]. His experimentation [illegible] with realistic art is visible in most of his works, stone as well as wooden sculptures.

[illegible] Kabra There are very few artists, who create collages seriously. It seems to be much easier to many people [illegible] can do it. Whether one thing is [illegible] in creative art. [illegible] collages are all like paintings where scissors are used like a brush and paper pieces instead of paint.

[illegible] Kabra is a creator of collages. The only material he uses to make them, are printed [illegible], illustrations, photographs, [illegible] adhesive and [illegible]. But the range of his visual conceptions and sense of depth in the creations have a haunting effect on the onlooker. His themes range from [illegible] to surrealistic, some times having a touch of [illegible]. His collages [illegible] approach to [illegible]. The [illegible] of pictorial [illegible] through the [illegible] & [illegible] of cut out material.

Kabra [illegible] the illusion by fooling the eye into believing that magazine or newspaper illustrations glued to his canvases are original paintings.

Shailendra [illegible] What is exciting in pure painting is line, pattern, colour and balance of space. Which constitute the quintessence of composition. Shailendra's canvases in [illegible] & manner are [illegible] compositions, [illegible] the [illegible] experience of [illegible]. An exotic flavor is [illegible] into his broken up but conspicuously arranged forms. It is difficult to give a definite [illegible] exotic climes, and probably for the obvious reason most of his paintings are UNTITLED, but they make their identity felt by the [illegible].

Exhibition of one layer after the other at the side of irregular objects emerging out of block, creates an illusion of tension in [illegible], whereas in other similar forms are [illegible] from their base to infinite sky in a typical manner [illegible]. This is the novelty of his work which can be symbolized in [illegible] words to say.

[illegible] started off as a realist, [illegible] of realism [illegible] him into expressing felt experience to the [illegible] of [illegible] experiences. He seems to be much closer to being the contemporary [illegible], searching the inner self, which would ultimately end into a new meaning.

[illegible] Nathdwara is a great [illegible] force. It has nothing to do with success or failure. Mukut Nathdwara [illegible] in the [illegible] of the modern movement in Rajasthan. Though he is no longer in [illegible], he continues to be as actively creative as ever before. He [illegible] marble using religious & tantric symbols, primarily the [illegible]. [illegible] are capable to hold spectator's attention and one sees his intelligent use of religious & Tantric motifs & symbols reduced [illegible]. His marble [illegible] are well finished and have a sophistication of their own.

Rajendra [illegible] beauty, if the basic [illegible] of the [illegible] has been experience. Rajendra Mishra has done it superbly. He has brought a simple, chaste style of flowing lines and gentle curves. His chaste style is visible in most of his sculptures. He has used [illegible] & [illegible] for carving out exotic themes of TANTRA and religious myths. His marble pieces are simple yet exquisite and elegant to touch the [illegible].

[illegible] Lal Chhatiwal The miniature [illegible] way of dealing with space, something that can hardly be called realistic. An object or a figure that is farther away is merely placed at the top. [illegible] sense of abstract. Chandulal is a miniaturist, who has carried enduring [illegible] of [illegible] art. The decorative representation of socio-cultural themes of [illegible] has been his main allurement and he [illegible] tries to translate them into contemporary idiom. In this very attempt although he switched over from traditional [illegible] to tempera [illegible] yet adhering to his formal base, makes his difference from neo traditional painters.

Vinod Bhardwaj No good art is ever merely illustrative. Vinod Bhardwaj's collages at first [illegible] remind a seen experience but [illegible] they are able to create a certain feeling or inspire a particular mood & [illegible], irrespective of the pictorial element of it. His collages are more of mixed media technique, as he [illegible] space on his canvases. He uses magazine & newspaper illustrations, photographs and also brush & [illegible] for his expressions.

As of his collages, his paintings [illegible] have capability to communicate [illegible] their condensed colour surfaces and arrangement of space.

Paras Bhansali is a fanciful, rather expressionist artist. His fanciness is visible in his early paintings of [illegible] style, as well as in his op-pop and psychedelic designs of today. The leading romantic figures in his earlier paintings carrying the facial expressions and gestures of miniature heroines, were the representative of his fanciness, where he dealt with the space [illegible]. [illegible] tried to join the contemporaries. He adopted op-pop [illegible] psychedelic designs [illegible] collages, when collage element [illegible] attain popularity.

His non-representative works display experimentations, rather depiction of themes & subjects, where his lyrical compositions, forms and arrangements of space attain new dimensions spontaneously.

Reference

1. Chaturvedi,Dr. Mamta;Samkalin Bhartiya Kala; Rajasthan Hindi Granth Akademy,Jaipur,2008
2. Chohan,Dilip Singh,Ten Contemporary Artists; Rajasthan Lalit Kala Akademy,Jaipur,1969
3. Exposition2012, Progressive Artists Group, Jaipur: 2012
4. Gautam, Dr. R.B.; Avant Garde Artists of Rajasthan, Progressive Artists Group,Jaipur,1999
5. Gautam, Dr. R.B.; [illegible] Rajasthan Lalit Kala Academy,Jaipur,1969
6. [illegible], Dr. [illegible]; Bhartiya Chitrakala evam Murtikala ka Itihas, Rajasthan Hindi Granth Akademy,Jaipur,2004
7. Sumaherana,Balawant, Jaipur,Oct-Dec.1995
8. Upadhyay,Dr.Vidhya Sagar,Aakriti Silver Jubilee Edition: Rajasthan Lalit Kala Akademy,Jaipur,1987
9. Upadhyay,Dr.Vidhya Sagar,Aadhar;West Zone Cultural Center, Udaipur & Rajasthan Lalit Kala Akademy,Jaipur: 1998
10. Vyas, Dr.Rajesh: Kalavrit; Rajasthan Lalit Kala Akademy,Jaipur,2010

P: ISSN No. 0976-8602 RNI No. UPENG/2012/42622 VOL.-III, ISSUE-III, JULY-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Asian Resonance

Role of Aaj (Society of Visual & Performing Arts)in the Progress of Rajasthani Contemporary Art & Artist

Yogendra Singh Naruka
Lecturer & HOD
(Drawing & Painting)
Government S.A.L.P. Deaf
Dumb Institution, Jaipur
Rajasthan

Rajiv Garg
Rtd. Principal,
Gov.P.G.College,
Tonk, Rajasthan

Abstract

Rajasthan has a great tradition of visual and performing miniature painting, architecture and the music from rajasthan have already been acknowledged throughout the world. But unfortunately, the contemporary art traditions have not yet found their right ful place in the history of rajasthani art. Contemporary traditions are around by the influence of traditional paintings.

Keywords: Organization Particulary, Biographed

Introduction

'AAJ' was set up in 1979 by a organisation of eminent artists in the field of visual and performing arts.

The objective was to evolve an indigenous idiom for the contemporary Indian art. It was felt that to create a national culture, it was necessary to interact at the grass root level of society and assimilate the indigenous cultural experiences.

AAJ has been able to achieve this objective. Particularly in the field of painting, printmaking and theatre, AAJ has produced works which were results of a long drawn interaction with the rich traditions in the respective fields. These works have received acclaim at the national and international level for their freshness and ingenuity. Some of the members of AAJ like Shail Choyal, Bhanu Bharti, Basant Kashyap, Kiran Murdia, Surjeet Kaur and Abbas Batliwala have been recognised for their distinct contribution in the field of visual and performing arts. AAJ has always aimed at the interaction between the present and past for the creation of a new future.

In a short span of a decade, AAJ has carved out a place among the premier art institutions in the country. Apart from channelizing the energies of its members towards a pursuit of indigenous idiom of artistic expression, AAJ has also organised camps, Seminars, symposia and workshops at the national level for wider interaction and participation. Even local performers and rural potters have been part of these interactions.

Today, AAJ has a full time theatre repertory, a graphic workshop and a rich documentation of folk and tribal arts and crafts available in the region of Mewar in Rajasthan. The society has also acquired an old haveli in the heart of the city of Udaipur to house its various activities. The haveli has an engrossing architecture and provides a magnificent view of the entire city.

In future, AAJ plans to build a regular Art gallery a theatre, studios, workshops and archives. It also aims at regular theatre performances and art shows not only in Udaipur but other places as well.

P.N. CHOYAL[2]- b. January 4, 1924.

Painter, academician and educationist P.N. Choyal had his early art education in the disciplines of wash, tempera and the miniature schools. After his diploma from Jaipur school of Arts he pursued his studies at J.J. School and then at the Slade College, London. Beginning from the miniature School, wash and tempera, he journeyed to the western academicism, impressionism and the stylised transformation of images. In seventies he evolved a style using thin lucid and luminous colors with controlled brush strokes. Thereafter, he painted series on the themes like women, window seat, perceptions of Bundi, Udaipur, Chittor and Mandu etc.

The stunned and shattered human bodies on his canvases appear to represent the modern world of violence and loss of human values. His women are middle aged. Obsessed with protruding tummy around which are thrown sarees carelessly hugging on to the round form. He interpolates the tragedy of a woman's body and vehemently underlines the ugly truth.

P: ISSN No. 0976-8602 RNI No. UPENG/2012/42622 VOL.-III, ISSUE-III, JULY-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Asian Resonance

In perception series, he has painted the decaying past with a feeling of tyranny and bitterness creating a strong tactile and visual impact.

A veteran, P.N. Choyal has held several also shows in different capital cities of India, received ten prestigious awards including the Lalit Kala Academy award in 1967 and has participated in innumerable group shows in India, Algeria, Japan, Moscow, Sao Paulo, Lisbon and Cuba. He has extensively toured the European, Latin American, and the South East Asian Countries. He visited Bulgaria in 1966 as a cultural delegate and Cuba as an Indian commissioner in 1969.

He was the head of the Department of Drawing and Painting Sukhadia University, Udaipur, till his retirement as an associate professor in 1984.

Basant Kashyap[4]-b. January 28, 1962

In a short time, Basant Kashyap has earned a considerable reputation in the Indian art world for his unusual compositions of robust, decorative and dramatic exuberance. He uses extremely simple imagery from the rural settings, but his treatment is dramatic. By mixing the real with the imaginary and melting the solid into abstract and turning the abstract into solid he achieves a surrealistic effect which is unique of him.

Kashyap acquired his Master's degree in painting from University of Udaipur in 1974. He has participated in several art exhibitions which include the shows abroad organised by National Gallery of Modern Art, 6th Triennale, and National exhibitions by LKA and all India Exhibitions. He has participated in several Art camps at various Places and has till now. Received 12 prestigious awards in different exhibitions. Including the Lalit Kala Award in 1966. Recently, he has been deputed as one of the International Commissioners to compile Indian section by 7th Bushan Biennale Authorities, Korea.

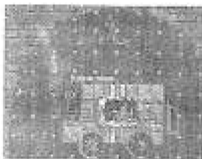

Shail Choyal[3] – b. November, 9, 1945.

Painter, printmaker and a teacher, shail choyal is known for a distinctive miniature style of his own through which he has carved a niche for himself in the contemporary art scene in the country. Exploiting the inherent aesthetic motifs and the multiple division of space of Rajasthani traditional painting, he has evolved a nostalgic art with an utmost modern sensibility.

Having completed his Master's degree from the University of Udaipur. He went to study printmaking at the Slade College, London and after return to homeland did his Doctoral thesis on "Nathdwara Painting.

Recipient of the National Scholarship from the Ministry of Culture, and British Council Fellowship, Shail Choyal has won 22 awards in various prestigious exhibitions held in India, which include the National award from Lalit kala Academy, New Delhi. He has held several one man shows in India, London, France, U.S.S.R., and Indonesia. He has also participated in Group and Travelling Exhibitions held in Western and Eastern European Museums and Galleries organized by the Indian Council for Cultural Relations, India Festival in U.S.A. India Through Prints, Tropen Museum, Amsterdam and several other prestigious and celebrated exhibitions like Cannes Sumer Festival, France, 3rd Havana biennale, Cuba, 6th Asian Art Festival, Tokyo, 1st Asian Art Festival, Indonesia, and International Exhibitions at Japan, Korea and Latvia.

He has extensively toured Europe, U.S.S.R. and South East Asia.

He has participated in innumerable Art Camps and Workshops in India, Indonesia and Soviet Union.

P: ISSN No. 0976-8602 RNI No. UPENG/2012/42622 VOL.-III, ISSUE-III, JULY-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Asian Resonance

Neel Kamal[6] – b. 1949

After obtaining M.A. in painting from the University of Udaipur, Neel kamal teaches art in a School in Udaipur. She was honored with the awards on Teachers day in 1975 as well as women's year in 1975. She held her solo show in Agra and has participated in several art exhibitions and group shows since 1974.

Neel kamal's imagery is derived from the simple life around her. She concentrates on blues, greens and yellows attempting to capture the mysterious impact of nature and its sensuality.

Prabha Shah[7]-b. January 12, 1947

Prabha Shah has acquired a considerable place in the field of contemporary art scene of India. Deaf and dumb, Prabha Shah's soundless serenity, soundless turmoil and her innate tranquil vision reveals to us a painting of isolation her continuing search and yearning for the visual phenomenon of sound explores the truth which is unique in its sensibility. In the beginning her visual vocabulary was drawn from Rajasthani architecture and the human life around her with the passage of time. She developed and incessant love for the geometric and rhythmic patterns. The centrifugal points of her works are accentuated by an abstract delineation of tiny twinkling flora. Her compositions, therefore, have soothing and subtle nuances which enhance the aesthetic pleasure.

Prabha Shah has earned around fourteen awards and honors in different exhibitions and has had several individual and group shows in India and abroad. She also received a scholarship from the Ministry of Culture and research grant from Lalit Kala Academy, New Delhi.

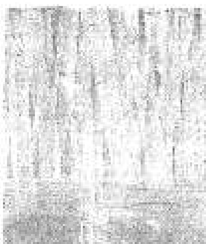

Abbas Batliwal[7]-b. Sept. 18, 1959 Udaipur

Born in a business family, Abbas has distinguished his peers and fellow artists by his keen artistic expressions.

His journey led him on the abstraction to the present symbolic representational imagery deriving the inspiration form the tribal sculpture and rural setting. His palette is warm and lucid, the shapes are simple and bold, but unlike folk art his compositions are not decorative and complex.

His imagery is simple and easily found around the town of Udaipur. In his works, an archaic stiffness is affected with an arbitrary rejection of naturalistic drawing creating desired distortions.

Abbas acquired Master's degree from the University of Udaipur in 1980 and has earned some of the prestigious awards which include the All India award. He has been participating in all the important exhibitions held in the country.

He is a freelancer with an incessant, unquenchable thirst for search.

P: ISSN No. 0976-8602 RNI No. UPENG/2012/42622 VOL.-III, ISSUE-III, JULY-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Asian Resonance

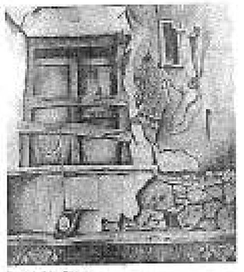

Painting by Abbas Batliwala

Surjeet Kaur[9]-b. September 24, 1948

A Photo realist, Surjeet Kaur attempts a psycho thematic expression through a very personal world of fantasy. Yet her paintings have a definite social comment. A very ordinary locale transcends into a rarer artistic experience.

After passing her post-graduation in painting in 1969 from the University of Udaipur, She pursued her studies at the M.S. Faculty of fine arts at Baroda. She has participated in all the major art exhibitions held in the country and has won awards at Rajasthan Lalit Kala Academy, Academy of Fine Arts, Amritsar, mahakaushal Kala Parishad and "Nehru and Women" award conferred by the Airports Authority of India, New Delhi. She has attended several art camps and has toured several European countries.

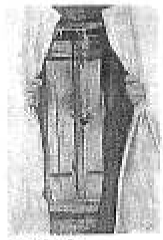

Painting by Surjeet Kaur

Kiran Murdia[10] – b. March 28, 1951, Udaipur

Over the years, Kiran Murdia has been able to develop a distinctive style of her own, mainly based on the inherent values of traditional Rajasthani painting. Through the subtle use of multiple perspective and miniature like delineation, she evokes the tender effect of nostalgia for a visionary romantic place i.e., Udaipur, which has nurtured her psyche, as well as personality. In her present works she has established intimate contacts with the beautiful objects such as hills, rocks, boulders, water springs, the flora and fauna of Udaipur region.

She received her Master's degree in painting from the University of Udaipur and has earned awards from Rajasthan Lalit Kala Academy and National award from Lalit Kala Academy, new delhi.

She has attended several art camps and seminars, participated in 3rd Triennale, Bharat Bhavan Prints biennale, "Nature and Environment" exhibition on Nehru Centenary by LKA and Bangladesh Biennale. Recipient of the research grant by LKA in 1985-86, Kiran Murdia has workshops on print making convened by Prof. Pomack who, later, invited her for a solo show of her paintings and prints at Berlin.

P: ISSN No. 0976-8602 RNI No. UPENG/2012/42622 VOL.-III, ISSUE-III, JULY-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Asian Resonance

Kumar Ashok[11]-b. 1961

Kumar Ashok obtained his Master's degree in Drawing and Painting from Sukhadia University, Udaipur in 1984.

Since childhood, Ashok has helped his uncle in executing folk murals on the walls of Udaipur and had acquired a considerable spontaneity of brush and rhythmic vitality even before he started pursuing his studies in art. Using elephants, horses and fairies as his main motifs, Ashok has been able to blend beautifully the folk vigor in his paintings.

Ashok has participated in national and State Art exhibitions group shows and art camps. He has received the awards of Rajasthan Lalit kal Academy and inter-college competitions.

Om Chauhan[11]-b. Jodhpur.

Om chauhan's Predilection for non-representational art vouch for intuitive search of expressive images which do not exist in the visible world. His imagery is the result of a spontaneous, intuitive and even accidental delineation. His ultimate interest is to create a language of pure form and color for which he has chosen the technique of viscosity.

Om Chauhan did his post-graduation in Drawing and Painting from University of Udaipur in 1978 and has taught art at the Department of Painting at Nathdwara College. He preferred to shift over to banking service for his livelihood and he has participated in all the known exhibitions including the National Exhibition of Art.

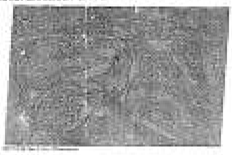

Trilok Srimali[11]-b. Kankroli, October 22,1961.

In Trilok's work, natural images are not the focus of interest. The motifs' are broken up, stylized and attenuated and turned into almost all the All India Art Exhibitions, group shows and has won four awards in various competitive exhibitions.

Trilok Srimali obtained his Master's Degree in Painting from Sukhadia University. He has been participating in almost all the All India Art Exhibitions,

P: ISSN No. 0976-8602 RNI No. UPENG/2012/42622 VOL.-III, ISSUE-III, JULY-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Asian Resonance

group shows and has won four awards in various competitive exhibitions.

[illegible] is a [illegible] of the cultural scholarship from the Ministry of Human Resources, Government of India. He has attended many Artist Camps also.

Harsh Chhajed[11]-b. March 12, 1948.

The elements of time, motion, [illegible] and perception are the major concerns of Harsh Chhajed who has a deep interest in [illegible] art. His sculptures seem to lead to [illegible], yet all [illegible] unique [illegible] from the viewer. [illegible] his [illegible] sculptures emerge from the pedestals [illegible] they also hang or protrude from ceilings or side walls. Harsh has always used [illegible] [illegible] for his paintings [illegible] sculptures. His [illegible] multiple views and [illegible] by using [illegible] cubes, cones and cylindrical shapes.

[illegible] Harsh Chhajed has exhibited [illegible] all the known exhibitions and has won awards. His works are in the collection of the National Gallery of Modern Art, Lalit Kala Academy, Rajasthan Gallery of Modern Art, Rajasthan Lalit Kala Academy, New Delhi. His works are [illegible] in several private [illegible] in India and abroad.

Alka Murdia[11] b. June 12, 1962, Udaipur

A [illegible] Philosophy Alka Murdia developed an [illegible] in drawing in the company of her [illegible] Kiran Murdia. She started drawing [illegible] Lal got [illegible] involved. By 1983 she received the [illegible] Academy Award and participated in several national exhibitions.

Alka draws her [illegible] most minutely and with [illegible]. Unlike other figurative [illegible] of [illegible] she is abstract and non-figurative in her approach. One can read her work from corner to corner [illegible] shapes created by the point of the [illegible] on a wide field where the viewer's eye can wander through and form his own interpretation of each [illegible] shape. Alka has participated in several group shows and camps. She runs a [illegible] Art Gallery at Udaipur.

Sheela Sharma[11]

Sheela Sharma draws her imagery from the folk and tribal [illegible] in Rajasthan. Being the wife of an anthropologist she has [illegible] chances of [illegible] which inspired her creative imagination. Her delineations are [illegible] [illegible] for linear delineations [illegible] build the [illegible] using [illegible] over the picture surface. Her naive treatment of figures evokes the ethos of folk and tribal vigor.

Sheela Sharma did her post-graduation in Fine Arts from Sukhadia University and her Ph.D. on the Arts and Crafts of [illegible] in Southern Rajasthan.

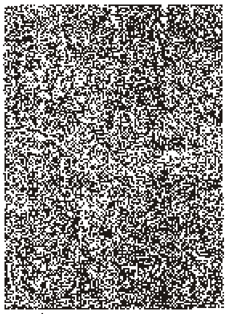

C.M. Mishra[11]-b. 1938, Dehradun.

A [illegible] by profession C.M. Mishra derives his interesting imagery from the [illegible] and [illegible]. A painter, sculptor and a print maker, Mishra [illegible] rhythmical movement of [illegible] [illegible] shapes [illegible] forms. His expression [illegible] is subtle, spontaneous and [illegible] plastic.

C.M. Mishra has had six solo shows at Calcutta, [illegible], Jodhpur and has participated in most of the exhibitions in India including the NEA. He has also served on the General Council of Rajasthan Lalit Kala Akademi.

Bhanu Bharti[12] – b. 1947 Ajmer, Rajasthan

[illegible] in the theatre world of [illegible] Bhanu Bharti was born in Ajmer, Rajasthan in 1947. After graduating from the National School of Drama, New Delhi. In 1972, he studied traditional Japanese theatre in the University of Tokyo.

AAJ is not merely his theatre group, it is also his [illegible] struggle for [illegible] and emotion. With over [illegible] productions to his credit, and a long string of honours, including the Sangeet Natak Academy Award, Bhanu Bharti does not cease to experiment. And his dedication to theatre does not fail to inspire. "Look at me," he says "three decades and still struggling."

Bhanu Bharti has directed several national cultural programmes such as the mega event in Delhi's Vijay Chowk on the 50th Anniversary of India's Independence, the [illegible] celebrations for the [illegible] in 2006, the Bharat [illegible] in Delhi for the celebration of India's 50th anniversary of Independence, etc.

P: ISSN No. 0976-8602 RNI No. UPENG/2012/42622 VOL.-III, ISSUE-III, JULY-2014
E: ISSN No. 2349-9443
Asian Resonance

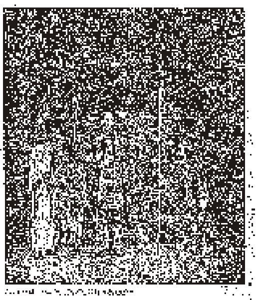

Every year, Aaj Theatre Company has been presenting a theatre festival of its own productions in Delhi. Its reputation has spread internationally and Bhanu Bharti is now viewed as one of the most innovative directors of his time.

Refrence

1. Shri Chhaya [illegible], Bisha Natya Samiti [illegible], 200[illegible], p.9
2. Shri Chhaya, Udaipur [illegible] Samvad AAJ, Udaipur, Rajasthan, 1[illegible], p.4
3. Rekha Parmar, [illegible] Chitra Aalekh-State Academy of Art, [illegible] & West Zone Cultural Centre, Udaipur Rajasthan, 1998, p.4-46
4. [illegible] Eswal Jasani [illegible] Abhinav [illegible], Aakriti, New Delhi-State Academy of Art Jaipur, Rajasthan, Nov-[illegible], p.7-8
5. Dr. [illegible] Chaturvedi, Samkalin Bharatiya Kala, Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur, 2008, p.112
6. AAJ Brochure, Udaipur, Rajasthan, 1994, p.4
7. [illegible] Dutt, [illegible] Shah, Aakriti-State Academy of Art, Jaipur, Rajasthan, Nov-Dec. 1992, p.1-5
8. Dr. [illegible] Rajasthan ki Samsamayik Kala Aandolan, Aakriti [illegible]-State Academy of Art, Jaipur, Rajasthan, 1991-97, p.67
9. Narendra Kumar, [illegible] Aakriti-State Academy of Art, Jaipur, Rajasthan Dec 1991, p.7
10. Dr. Devdatt Sharma, [illegible], Rajasthan Sujas, Department of Information and Public Relationship, Jaipur, Rajasthan, Oct.2000, p.78
11. Editor Samuel Abraham AAJ, AAJ Publication Udaipur, Rajasthan, 1990, p.18
12. Editor Samuel Abraham AAJ, AAJ Publication, Udaipur, Rajasthan, 1990, p.[illegible]
13. AAJ Brochure, Udaipur, Rajasthan, 1997, p.7
14. Dr. Vidhyasagar Upadhyay, Rajasthan ke [illegible], [illegible] Kala Kendra, Jaipur & State Academy of Art, Jaipur, Rajasthan, 1995, p.85
15. Editor Samuel Abraham AAJ, AAJ Publication, Udaipur, Rajasthan, 1990, p.[illegible]
16. AAJ Brochure, Udaipur, Rajasthan, 1994, p.4
17. Editor Samuel Abraham AAJ, AAJ Publication, Udaipur, Rajasthan, 1990, p.25
18. Om Shanti [illegible] ke [illegible] Bharti, Rajasthan Sujas, Department of Information and Public Relationship, Jaipur, Rajasthan, July-2012, p.58-59

विशेष बालकों की कला में रंग संयोजनः—एक अध्ययन
(मूक—बधिर बालकों के विशेष सन्दर्भ मे)

योगेन्द्र सिंह नरुका फूलैता
राज.से.आ.ला.पो.मूक बधिर संस्थान, जयपुर (राजस्थान)

विशेष बालकों (मानसिक,विकलांग,मूक—बधिर,अंध) से कला सृजनकार्य करवाना अपने आप में एक चुनौती पूर्ण कार्य है। उनमें रंगों की समझ पैदा करना, उनके सार्थक उपयोग को समझाना और फिर उसे सृजनात्मकता की ओर अग्रसर करना श्रम साध्य कार्य है। विशेष बालकों के रंग संयोजन को समझने के लिए सर्वप्रथम उन्हें रंग, कैनवास और ब्रश के साथ कुछ चित्रित करने के लिए अकेले छोड़ देना चाहिए। कुछ समय बाद उनके रंग—संयोजन को दृष्टिगत करना चाहिए।

रंगों से विशेष बालकों की मानसिक भावनाओं और संवेगों को समझा जा सकता है। पीले व बैंगनी रंग का अधिक उपयोग करने वाले बालकों में प्रफुल्लता और खुशी के भाव देखे जा सकते है वहीं लाल रंग का अधिक प्रयोग करने वाले बालकों में उग्रता व क्रोध के लक्षण दिखाई देते है। हरे रंग का प्रयोग करने वाले बालक प्रसन्नता और निश्चिंता लिए होते है। इसी तरह नीले रंग का अधिक प्रयोग करने वाले बालक शान्त व स्थिर प्रकृति के होते है। मनोविश्लेषकों और वैज्ञानिकों ने अपने अनेक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया है कि रंगों का विशेष बालकों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। रंगों में वह शक्ति है जो इन्हें भावनात्मक व मानसिक रूप सें मजबूत बनाती है। खेल—खेल में रंगों के प्रयोगो द्वारा विशेष बालकों के समीप आया जा सकता है तथा इनसे मित्रता की जा सकती है।रंगों के बेहतर संयोजन से हम इनके संवेगात्मक स्तर को सुधार सकते है। रंगों के प्रयोग से हम इन्हे प्रसन्न भी कर सकते है और उदास भी। यदि हम आँखों को चुभने वाले या बुझे रंगों का बार—बार उपयोग इन बालकों के बीच करते रहेगें तो यह बच्चे जल्दी ही ऊब जायेगे। रंगों का अपना मनोवैज्ञानिक प्रभाव है। एक ही रंग भिन्न—भिन्न रूपों में भिन्न—भिन्न प्रभाव उत्पन्न करता है। जैसे—यदि लाल रंग में गुलाब का चित्रण किया जाये तो वो प्रेम का प्रतीक बन जाता है और यदि उसी लाल रंग को किसी युद्ध के दृश्य में घायल सैनिकों के शरीर में से निकलते हुए रक्त के रूप में बना दिया जाये तो वो घृणा व विभत्सता भी पैदा करता है। रंग एक ही है लेकिन उसका उपयोग कहाँ किस रूप में होता है यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। अक्सर बालकों को दृश्यगत रंगयोजना समझाते समय कला—शिक्षक उन्हे यह सीखाता है कि पेड़ की पत्तियों का रंग हरा होना चाहिए, पानी का रंग नीला होना चाहिए व फूल पीला या लाल रंग का होना चाहिए लेकिन विशेष बालकों पर रंग योजना थोपी नही जानी चाहिए। उन्हे उनके मन से कार्य करने देना चाहिए। आप पायेगें कि उनकी रंगयोजना की कल्पना कैसी है? उनके बनाये चित्रों में आसमान का रंग लाल हो सकता है, पानी हरा हो सकता है तथा—पेड़ पत्तियों का रंग नीला हो सकता है। विशेष बालकों की कल्पनाशक्ति भी विशेष प्रकार की होती है। इसी कारण उनका रंग संयोजन भी अद्वितीय रहता है। वो रंगों के सन्तुलन—असन्तुलन के बीच कैनवास पर ऐसा कुछ सृजन करने की क्षमता रखते है जो आज की आधुनिक कला का चलन है। विशेष बालको की कलाकृतियों में देखते ही सम्मोहित करने की कला होती हैं। जो ईश्वरीय उपहार के रूप में इन्हे प्राप्त होती है। विशेष बालकों की रंगों के प्रति समझ भी अद्भुत होती है तथा उनके चाक्षुश प्रभाव भी मन मोहने वाले होते है। कभी—कभी विशेष बालक अपनी कलाकृतियों में रंगों को सांकेतिक रूप में भी प्रस्तुत करता है। जैसे—यदि कोई व्यक्ति उससे बुरा व्यवहार करता है तो वो उसका चित्र काले या मटमैले रंग से चिढ़ाने वाली स्थिति में बनायेगा तथा जिससे वो बहुत प्यार करता है उसका चित्र वो बड़े ही आकर्षक ढ़ग से बनायेगा। विशेष बच्चा(मानसिक विकलांग) कभी हुबहू व्यक्ति चित्रन नही करता वो सिर्फ चित्रकार वान गो की तरह उसके व्यक्तित्व का चित्रण करता है। विशेष बालक रंगों को लेकर हमेशा प्रयोगात्मक स्थिति में रहते है तथा उनके चित्रण की विधि भी अपने आप में कौतूहल पैदा करने वाली होती है। इन बालकों की कला से अक्सर मॉर्डन आर्ट में कार्य करने वाले कलाकार प्रेरणा लेते रहते है तथा इनकी कला उन कलाकारों के लिए भी प्रेरणादायक है जो हर समय सृजनात्मक रूप की तलाश में रहते है।

मूक—बधिर बालकों के विशेष सन्दर्भ में—मूक—बाधिर बालक सामान्य बालकों की तरह समझ रखते है। इनके बीच संवाद सेतु हेतु सांकेतिक भाशा का ज्ञान आवष्यक हैं यदि आप हाव—भाव, हाथ व आँखों के संकेतो को जानते है तथा उनके द्वारा अपनी बात व्यक्त कर सकते है तो यह बालक आपके विचार समझ जाते हैं। मूक—बधिर बालक सामान्य बालकों की तरह समझ रखते है। बधिर बालक किसी भी चित्र की हुबहू नकल कर सकने में सक्षम होते है तथा उसके समान ही रंग संयोजित कर सकते है। ऐसे बालकों को कला सामग्रीयों का परिचय तथा कला के विभिन्न माध्यमों के प्रयोग का तकनीकी ज्ञान आवष्यक होता है। सामान्य बालकों की तरह दिया गया प्रशिक्षण इनके लिए पर्याप्त होता है लेकिन इन्हें समझाने का माध्यम सांकेतिक भाशा होती है। इन बच्चों मैंनकल की भावना विकसित न हों इसलिए कला शिक्षक के लिए आवष्यक है कि वो ऐसे बालकों को मौलिक सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करे। उनसें किसी विशय पर चित्र बनाने से पहले विशय की पूर्ण समझ उनमें पैदा करना आवष्यक है। यदि ऐसा नही किया और बिना विषय समझाये आपने उस पर आधारित कोई एक चित्र उदाहरणस्वरूप बनाकर दिखा दिया तो बालक भी उसी चित्र को बना देगा। ऐसा करना तब ज्यादा नुकसानदायक हो जाता है जब यह बालक किसी विशय आधारित प्रतियोगिता में जाते है तब सभी के एक जैसे चित्र बनने की सम्भावना अधिक हो जाती है। ऐसे में कलशिक्षक को चाहिए की उनमें सबसे पहले विशय के प्रति गहन समझ विकसित करे फिर कोइ उदाहरणस्वरूप चित्र बना कर बताये।

सन्दर्भ—गोस्वामी, डॉ. प्रेमचन्द्र : रूपप्रद कला के मूलाधार; अनन्त पब्लिकेशन, जयपुर; वर्ष 2000
1 *पाठक, डॉ. कृष्णाकान्त : शिक्षा और चिन्तन; माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर; वर्ष 2014*
2 *Shanker, Dr.Hari: Indian Art Through The Ages; Rajasthan School of Art, Jaipur; year 2014*

राजस्थानी राजपूत लघु चित्रशैली का नवीन विभाजन

Yogendra Singh Naruka
SAP I DD
Jaipur
ynjhmcs@rediffmail.com
+91 9461627191

वर्तमान मे राजस्थानी राजपूत लघु चित्रशैली को क्षेत्र के आधार पर विभाजित करके जोधपुर शैली , बीकानेर शैली, कोटा शैली आदि रूपो मे अध्ययन अध्यापन करवाया जा रहा है । जो कि त्रुटिपूर्ण है । इस अध्ययन से न तो उस प्रमुख शैली – उपशैली के उद्भव का ही अनुमान हो पाता है और न ही उसके कमिक विकास कम का ही ज्ञान हो पाता है। उदाहरणस्वरूप देखे तो वर्तमान विभाजन के आधार पर प्रचलित शैली विभाजन मे कोटा शैली के मूल उद्भव की ओर ध्यान दे तो हमे ज्ञात होगा कि इसका मूल उद्भव बूंदी शैली से हुआ है । यहाँ तक की इनकी विशेषताओ मे भी समानता है । इसका मुख्य कारण इसका एक ही राजवंश 'हाडा' से संबंध होना है। इसी तरह बीकानेर व किशनगढ शैली के मूल उद्भव मे जोधपुर शैली हैं । और इसका संबंध राठौड राजवंश से है । वर्तमान मे व्यापक शोध के अभाव मे हम क्षेत्र आधारित विभाजन मे उनकी शैलीगत विशेषताएँ व अन्तर का तुलनात्मक अध्ययन तो कर रहे है लेकिन उनके मूल उद्भव व कमिक विकास पर सटिक अध्ययन नही हो पा रहा है । इसी को दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी ने राजस्थानी राजपूत लघु चित्रशैली का नवीन विभाजन प्रस्तुत किया है ।

भारत के समकालीन मूक–बधिर चित्रकार –एक विवेचना

योगेन्द्र सिंह नरूका 'फूलैता'
व्याख्याता व विभागाध्यक्ष (चित्रकला विभाग)
राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार
मूक–बधिर संस्थान, जयपुर
मो0 9461627191

बधिर बच्चा आजीवन समस्याओं से ग्रस्त रहता है। उसकी ये समस्यायें न केवल उसे अपितु उसके परिवार, शिक्षक और समाज को भी प्रभावित करती हैं। यदि परिवार, शिक्षक और समाज तीनों ही उनके प्रति सजग रहें तो यह विशेष बालक भी ऐसा कुछ विशेष रच सकते हैं जो सामान्य बालक शायद कल्पना भी नहीं कर सकते।

भारत के ऐसे ही मूक बधिर चित्रकार सतीश गुजराल व प्रभा शाह ने न केवल भारत की समकालीन कला में अपना एक नया संसार रचा है अपितु विदेशों में भी समकालीन भारतीय कला को एक विशेष पहचान दी है।

चित्रकार सतीश गुजराल व प्रभाशाह की जिंदगी का सफरनामा गंभीर शारीरिक कमियों और आत्मविश्वास के बीच हुए संघर्ष की एक असमान्त गाथा है। अभाव और प्रतिकूल परिस्थितियों से अपनी रचनात्मक जिजीविषा के बल पर जूझते हुए समकालीन कला जगत में वे जिस मुकाम पर पहुँचे हैं वह विशेषजन के लिए ही नहीं अपितु सामान्य जनमानस के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए मैंने अपना यह शोध–पत्र तैयार किया है जो भावी कलाकारों का सदैव आत्मविश्वास से लबरेज रखेगा।

Role of AAJ (Society of Visual & Performing Arts) in the Progress of Rajasthani Contemporary Art & Artist

Yogendra Singh Naruka,
Lecturer & HOD (Drawing & Painting)
Government S.A.L.P. Deaf Dumb Institution, Jaipur (Rajasthan)
ynjhmcs@rediffmail.com

Theoretical focus

Rajasthan has a great tradition of visual and performing miniature painting; architecture and the music from rajasthan have already been acknowledged throughout the world. But unfortunately, the contemporary art traditions have not yet found their rightful place in the history of Rajasthani art. Contemporary traditions are eroded by the influence of traditional paintings.

'AAJ' was set up in 1979 by a organisation of eminent artists in the field of visual and performing arts.

The objective was to evolve an indigenous idiom for the contemporary Indian art. It was felt that to create a national culture, it was necessary to interact at the grass root level of society and assimilate the indigenous cultural experiences.

AAJ has been able to achieve this objective, Particularly in the field of painting, printmaking and theatre, AAJ has produced works which were results of a long drawn interaction with the rich traditions in the respective fields. These works have received acclaim at the national and international level for their freshness and ingenuity. Some of the members of AAJ, like Shail Choyal, Bhanu Bharti, Basant kashyap, Kiran Murdia, Surjeet Kaur and Abbas Batliwala have been recognized for their distinct contribution in the field of visual and performing arts. AAJ has always aimed at this interaction between the present and past for the creation of a new future.

Objectives

- Contemporary art of Rajasthan.
- Contemporary artist of Rajasthan.
- Role of AAJ (Society of visual and performing art) in the progress of Rajasthani Contemporary art of Rajasthan art & artist.

Study Area

Study area is Udaipur (Rajasthan)

Data and Research methods

In this research work use of data and research methods-Descriptive method, Interview method, Questionnaire method, Surveyor method, etc.

Expected finding and signification

This is truly anonymous art, which much of the art of rajasthan has been. Hence its signification in the context of the rajasthani aesthetics that interests us today in the lively and many sided, view of contemporary rajasthani art which we may barely touch on so comprehensive is its embrace and so particular, its motivations.

परिशिष्ट 10

शोधार्थी द्वारा विभिन्न शोध संगोष्ठियों में भागीदारी के प्रमाण–पत्र

(1) All India Art Seminar During Jaipur Art Summit 13 (8-9 November 2013) Organized by PAG, Jaipur.

(2) "International Conference on Miniature Paintings", 2013 (29-31 December 2013), Organized by Department of Drawing & Painting, University of Rajasthan, Jaipur.

(3) "National Art Seminar-2014", (31 January to 2 Feb., 2014). Organized by Rajasthan School of Art (Rajkiya lalit Kala Mahavidyalaya Vikas Samiti, Jaipur)

(4) "International Seminar on Sir Alexander Cunningham and the Art Heritage of India" (20-22 Feb., 2014). Organized by Banaras Hindu University, Banaras, (U.P.).

(5) National Seminar on composition of Colours (15-16 Dec. 2014) organized by Mharani Laxmi Bai Govt. P.G. Girls College, Kila Bhawan, Indore (M.P.)

(6) "All India Art Seminar 18th Kala Mera" (12-16 March 2015) Organized by Rajasthan Lalit Kala AKademi, Jaipur.

[illegible], Mansarovar Nagar, Opp. Durgapura Railway Station, Jaipur-302018
Phone : 9829707356 | Email : info@artsummit.com

ART SUMMIT'13

Certificate of Participation

This is to Certify That Mr. Yogendra Singh Naruka (Research Scholiar) attended All India Art Seminar on 8 - 9 November 2013 during JAIPUR ART SUMMIT'13 @ Hotel Clarks Amer, Jaipur.

For JAIPUR ART SUMMIT'13

R. B. Gauttam

Coordinator - Seminar

Sadaa®

(Society for Analysis, Dialogue, Application and Action)

(Regn. No. 254/Jaipur/2009-10)

&

Department of Drawing & Painting, University of Rajasthan, Jaipur

Sadaa® International Conference on Miniature Paintings, 2013

(29-31 December 2013)

"Timeless Miniature Paintings"

This is to certify that Yogendra Singh Naruka of SAPIDD Jaipur participated in ***Sadaa® International Conference on Miniature Paintings, 2013*** held in association with Department of Drawing & Painting, University of Rajasthan, Jaipur on the theme *"Timeless Miniature Paintings"* on 29-30-31 December 2013. He/ She presented a paper titled– राजस्थानी राजपूत लघु चित्रशैली का नवीन विभाजन

(Dr. L P Mahawar)	(Dr. Tanuja Singh)	(Dr. O P Joshi)
Convener	Organizing Secretary	E. President

Rajasthan School Of Art

Rajkiya Lalit Kala Mahavidyalaya Vikas Samiti, Jaipur

Reg. No. 885 Jaipur/2008-09

National Art Seminar- 2014

CERTIFICATE

Certified that Mr./Ms. Yogendra Singh Naruka "Phooleta"
of Seth Anandi lal Poddar Mook - Badhir Sansthan, Jaipur *has participated/ presented a paper / Chaired a session / worked as member of the Organising Committee in Indian Art Through The Ages, a three-day National Seminar, 31st Jan. to 2nd Feb., 2014.*

Title of the paper भारत के समकालीन मूक-बधिर चित्रकार - एक विवेचना

Dr. Hari Shanker	*Suneet Ghildial*	*Dr. Bandana Chakrabarty*
Convener National Seminar	*Secretary (Vikas Samiti)*	*Principal / President*

ISSACAHI-2014

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय BANARAS HINDU UNIVERSITY

AN INSTITUTION OF NATIONAL IMPORTANCE ESTABLISHED BY AN ACT OF PARLIAMENT

Certificate of Participation

This is to certify that

Mr. Yogendra Singh

from

Naruka Lecturer & HOD (Drawing & Painting) Government S.A.L.P. Deaf Dumb Institution, Jaipur (Rajasthan)

participated in the INTERNATIONAL SEMINAR on

Sir Alexander Cunningham and the Art Heritage of India

February 20-22, 2014 in collaboration with Archaeological Survey of India and DST sponsored SPECIAL SESSION on

Advances in Science and Technology after Cunningham and Their Implications in the Study of Indian Art and Archaeology

February 21, 2014

Organized by

Department of History of Art, Banaras Hindu University, Varanasi, INDIA and presented a paper/poster titled

Role of Aaj (Society of Visual & Performing Arts) in the Progress of Rajasthani Contemporary Art & Artist

Prof. A.K. Singh	**Prof. Atul Tripathi**
Chairman, ISSACAHI-2014	Organizing Secretary, ISSACAHI-2014
Head, Dept. of History of Art	Dept. of History of Art
Banaras Hindu University, Varanasi, India	Banaras Hindu University, Varanasi, India

MAHARANI LAXMI BAI GOVT.P.G.GIRLS COLLEGE
KILA BHAWAN,INDORE(M.P.)

Department of Drawing & Painting

National Seminar on

COMPOSITION OF COLOURS

15-16 Dec.2014

Certificate

This is to Certify that Dr. Yogendra Singh Naruka

of Govt. S.A.L.P. Deafdumb Institute Jaipur

has participated in the National Seminar on "**Composition of Colours**"

Sponsored by University Grants Commission, Central Regional Office,Bhopal

as **Resource Person / Delegate** / Participated in **Exhibition.**

He / She has also Presented a **Research Paper** entitled

विशेष बालकों की कला में रंग संयोजन एक अध्ययन (मूकबधिर बालकों के विशेष सन्दर्भ में)

Dr.Manorama Chauhan	Dr.Kumkum Bharadwaj	Dr.C.K.Agnihotri
Convenor	Co-ordinator	Principal

RAJASTHAN LALIT KALA AKADEMI

J-15, Jhalana Institutional Area, Jaipur-302017

CERTIFICATE

This is to certify that

Yogendra Singh Naruka, Lecturer

of Govt. S.A.L.P. Deaf Dumb Institution Jaipur

has participated in All India Art Seminar & 18th Kala Mela held from 12th to 16th March 2015 at Jawahar Kala Kendra, Jaipur

The organizers of the event places on record their gratitude for the kind gesture of active participation.

18 कला मेला

Convenor	Secretary